UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+

MASTER OF ARTS
IN HINDI

SEMESTER-II

कथा साहित्य: उपन्यास और कहानी

CREDIT: 4

Paper - 2.4
BLOCK: 1,2,3 & 4

AUTHOR

Dr. Laxmidhar Dash

C.D.O.E

ଦୂର ଓ ଅନ୍‌ଲାଇନ ଶିକ୍ଷା କେନ୍ଦ୍ର, ଉତ୍କଳ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ

CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION
UTKAL UNIVERSITY

UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+
CDOE

ABOUT THE UNIVERSITY

Founded in 1943, Utkal University is the 17th University of the country and the first of Orissa. It is the result of the efforts of Pandit Nilakantha Dash, Maharaja Krushna Chandra Gajapati, Pandit Godavarish Mishra and many others who envisioned a progressive education system for modern Odisha.

The University started functioning on 27 November 1943, at Ravenshaw College, Cuttack. It originated as an affiliating and examining body but shifted to its present campus spread over 400 acres of land at Vanivihar in Bhubaneswar, in 1962.

A number of Postgraduate Departments and other centres were established in the University campus. There are presently more than two hundred general affiliated colleges under the University. It has eleven autonomous colleges under its jurisdiction, twenty-eight constituent postgraduate departments, 2 constituent law colleges and a Directorate of Distance & Continuing Education. It boasts of a centre for Population Studies, a School of Women's Studies, an Academic Staff College, a pre-school and a high school. The University also offers a number of self-financing courses.

NAAC accredited in its 3rd cycle with A+ status in 2023. It is a member of the Indian Association of Universities and the Commonwealth Association of Universities.

UTKAL UNIVERSITY
NAAC ACCREDITED A+
CDOE

CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION
UTKAL UNIVERSITY: VANI VIHAR
BHUBANESWAR:-751007

From the Director's Desk

The Centre for Distance and Online Education, originally established as the University Evening College way back in 1962 has travelled a long way in the last 52 years. **'EDUCATION FOR ALL'** is our motto. Increasingly the Open and Distance Learning institutions are aspiring to provide education for anyone, anytime and anywhere. CDOE, Utkal University has been constantly striving to rise up to the challenges of Open Distance Learning system. Nearly one lakh students have passed through the portals of this great temple of learning. We may not have numerous great tales of outstanding academic achievements but we have great tales of success in life, of recovering lost opportunities, tremendous satisfaction in life, turning points in career and those who feel that without us they would not be where they are today. There are also flashes when our students figure in best ten in their honours subjects. Our students must be free from despair and negative attitude. They must be enthusiastic, full of energy and confident of their future. To meet the needs of quality enhancement and to address the quality concerns of our stake holders over the years, we are switching over to self instructional material printed courseware. We are sure that students would go beyond the course ware provided by us. We are aware that most of you are working and have also family responsibility. Please remember that only a busy person has time for everything and a lazy person has none. We are sure, that you will be able to chalk out a well planned programme to study the courseware. By choosing to pursue a course in distance mode, you have made a commitment for self improvement and acquiring higher educational qualification. You should rise up to your commitment. Every student must go beyond the standard books and self instructional course material. You should read number of books and use ICT learning resources like the internet, television and radio programmes etc. As only limited number of classes will be held, a student should come to the personal contact programme well prepared. The PCP should be used for clarification of doubt and counseling. This can only happen if you read the course material before PCP. You can always mail your feedback on the course ware to us. It is very important that one should discuss the contents of the course materials with other fellow learners.

We wish you happy reading.

DIRECTOR

Centre for Distance and Online Education, Utkal University, Bhubaneswar.

Program Name: Master of Arts in Hindi Program Code: 010308

Course Name: Katha Sahitya: Upanyas aur Kahani Course Code: HIN 2.4

Semester: II Credit: 4 Block No. 1 to 4 Unit No. 1 to 16

EXPERT COMMITTEE: -

Dr. Smarapriya Mishra
Rtd. Prof. from Ravenshaw University

Dr. Ravindranath Mishra
Retired Prof. & former HOD,
Visva Bharati,Santiniketan

Dr. Snehalata Das
Reader in Hindi
Rama Devi Women's University , Bhubaneswar

Dr. Sudhansu Ku. Nayak
Retd. Reader, Berhampur University

COURSE WRITER:

Dr. Laxmidhar Dash
Retd. Principal, HTTI, Cuttack

COURSE EDITORS:

Dr. Manju Modi
Retd. Reader in Hindi
S.B. Women's College, Cuttack

Dr. Shankarlal Purohit
Retd. Reader in Hindi,
Utkal University

Dr. Pragyan Paramita
Faculty in Hindi, CDOE, Utkal University

PUBLISHED BY

Center for Distance and online Education(CDOE), Utkal University
Bhubaneswar-751007

M.A. (Hindi) Semester - II

PAPER - 8

कथा साहित्य: उपन्यास और कहानी

Block No	Block	Unit No.	Unit
1	**गोदान**- प्रेमचंद	1	गोदान का कथासार
		2	भारतीय किसानों की स्थिति
		3	आर्थिक और सामाजिक शोषण
		4	राष्ट्रीय आंदोलन
2	**राग दरबारी**- श्रीलाल शुक्ल	5	राग दरबारी का कथासार
		6	स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजनैतिक परिदृश्य
		7	राग दरबारी में व्यंग्य
		8	सामाजिक स्थिति, शिक्षा व्यवस्था, गबन और घूसखोरी
3	**हिंदी कहानी संग्रह** - सं. भीष्म साहनी	9	कहानी की विकास यात्रा
		10	कोसी का घटवार
		11	बादलों के घेरे
		12	वापसी
4	**हिंदी कहानी संग्रह** - सं. भीष्म साहनी	13	मलवे का मालीक
		14	परिंदे
		15	जहाँ लक्ष्मी कैद है
		16	खोयी हुई दिशाएँ

UNIT - I

गोदान -प्रेमचन्द

इकाई -1 इकाई की रूपरेखा :

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 कथा सार

1.3 भारतीय किसान की स्थिति

1.4 गाय का महत्व

1.5 शोषण - आर्थिक (ऋण समस्या), सामाजिक, यौन

1.6 राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वराज की चेतना

1.7 चरित्र -चित्रण

1.8 व्याख्याएँ

1.9 अभ्यास प्रश्न

उद्देश्य

8.0. उद्देश्य

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने अपने यथार्थपरक उपन्यास 'गोदान' की रचना सन् 1936ई. में की थी । इसमें भारतीय किसान की जीवन -गाथा अत्यन्त हृदयस्पर्शी ढंग से वर्णित है । यह आज के संदर्भ में भी प्रासंगिक है । इसे पढ़ने के बाद आप -

भारतीय किसान की आर्थिक और सामाजिक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

नारी -उत्पीड़न, नारी के शोषण, नारी की मानसिकता का पता कर लेंगे ।

गोदान के मूल में गाय को पालने की लालसा, उसके लिए अर्थ का जुगाड़ करने की कोशिश, गाय के धार्मिक महत्त्व आदि से परिचित होने के साथ-साथ होरी के दर्दनाक अंत को जान सकेंगे ।

पूँजीपतियों के षडयंत्र के परिणाम स्वरूप ग्रामीण लोगों का जीवन कितना दयनीय हो जाता है, उस पर विवेचन कर सकेंगे ।

कर्ज, लगान और खेती - ये तीनों कष्ट झेलते हुए कैसे गाँव के लोग धूप की तरह जल-जलकर नि:शेष हो जाते हैं, उस पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगे ।

8.1 प्रस्तावना :

प्रेमचन्द ने हिन्दी कथासाहित्य भंडार को पुष्ट किया है । पंच परमेश्वर उनकी पहली कहानी है । यह 1905 ई. में प्रकाशित हुई । उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं । 'मानसरोवर' नाम से चार खंडों में इनका प्रकाशन हुआ है । सवा सेर गेहूँ, दो बैलों की कथा, बलिदान, कफन, मुक्तिमार्ग, पूस की रात, उनकी श्रेष्ठ कहानियों में हैं ।

उनका प्रथम उपन्यास 'सेवा सदन' सन् 1916 ई. में प्रकाशित हुआ । उनके अन्य उपन्यास हैं - प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान,

सन् 1903 ई. में प्रेमचन्द ने एक लेख में लिखा था - ऐसा बहुत कम संयोग हुआ है कि एक शांति प्रेमी किसान के रोजाना हालात विस्तार के साथ लिखे हुए मिल सकते हों या उनमें किस्सों की-सी दिलचस्पी और अजब -अनोखी बातें पाई जाती हों ।

इस इच्छा को उन्होंने होरी-धनिया को नायक-नायिका बनाकर 'गोदान' उपन्यास लिखकर पूरा किया । इसमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश का परिचय मिल जाता है तथा गाँव में सरल, सदाचारी, भाग्यवादी जनता कैसे गाँव के मुखिया, महाजन, पुरोहित और जमींदार मिल-मालिक किसानों का हर प्रकार से शोषण करके उनको जिन्दगी का जुआ ढोने को विवश कर देते हैं । रसहीन जीवन में उनके सपने को साकार होने का मौका नहीं मिलता । गोदान में प्रेमचन्द ने गाँव की दरिद्रता, भुखमरी, धर्मांधता सरल विश्वास आदि का बारीकी से चित्रण किया है ।

8.2. कथासार :

अवध प्रांत में पांच मिल के फासले पर दो गाँव हैं : सेमरी और बेलारी । होरी बेलारी में रहता है और राय साहब अमर पाल सिंह सेमरी में रहते हैं । खन्ना, मालती और डॉ. मेहता लखनऊ में रहते हैं ।

गोदान का आरंभ ग्रामीण परिवेश से होता है । धनिया के मना करने पर भी होरी रायसाहब से मिलने बेलारी से सेमरी जाता है । उसे लगता है कि रायसाहब से मिलते रहने से कुछ सामाजिक मर्यादा बढ़ जाती है । वह कहता है, ''यह इसी मिलते-जुलते रहने का परसाद है कि अब तब जान बची हुई है ।'' वह समझता है कि इनके पाँवों तले अपनी गर्दन दबी हुई है । इसलिए उन पाँवों के सहलाने में ही कुशल है ।

रास्ते में उसे पड़ोस के गाँव का ग्वाला भोला मिलता है । उसकी गायों को देखकर होरी के मन में एक गाय रखने की लालसा उत्पन्न होती है । वह विधुर भोला के मन में फिर से सगाई करा देने का लालच देता है । भोला उसे अस्सी रुपये की गाय उधार पर ले जाने का आग्रह करता है और अपने पास भूसे की कमी की बात करता है । होरी अभाव में पड़े आदमी से गाय ले लेने को उचित न मानकर फिर ले लूंगा । कहकर गाय लेने से मना कर देता है, पर भूसा देने का वायदा कर सेमरी में पहुँचता है ।

रायसाहब अपनी असुविधाओं को बता कर चाहते हैं कि टैक्स की वसूली में होरी उनकी सहायता करे । होरी उनकी बातों में आ जाता है । इस समय एक आदमी आकर राय साहब को बताता है कि मजदूर बेगार करने से मना कर रहे हैं । यह सुनकर राय साहब आग बबूला हो जाते हैं और उन्हें हंटर से ठीक करने की कह उठकर चले जाते हैं ।

घर पर पहुँकर होरी रायसाहब भी तारीफ करता है तो बेटा गोबर उन्हें 'रंगा सियार' कहकर उनसे अपनी नफरत जाहिर करता है । होरी बताता है कि उसने भोला को भूसा देने का वचन दिया है । यह सुनकर गोबर और धनिया उस पर बिगड़ते हैं । होरी जब बताता है कि भोला धनिया की प्रशंसा कर रहा

था, तब धनिया कुछ नरम पड़ जाती है । भोला भूसा लेने आता है । धनिया तीन खोंचे भूसा भरवाकर पति और बेटे को उसके घर तक भूसा पहुँचाने को कहती है ।

भोला के घर पर उसकी विधवा बेटी झुनिया है । उससे गोबर की मुलाकात होती है । दोनों परस्पर के प्रति आकर्षित हो जाते हैं । भोला होरी से दूसरे दिन गाय ले लेने को कहता है ।

दूसरे दिन गोबर भोला के घर से गाय लाता है । झुनिया उसे छोड़ने बेलारी के निकट तक आती है । फिर मिलने का वायदा करके लौट जाती है ।

गाय के आते ही होरी के घर में आनन्द की लहर उमड़ती है । गाय का भव्य स्वागत किया जाता है । गाय के लिए आँगन में नाँद गाड़ी जाती है । गाँववाले आकर गाय के लक्षण भी और होरी की खुशकिस्मती की तारीफ करते हैं । केवल अलग्योझा हो गए उसके दो भाई हीरा और शोभा नहीं आते । इससे होरा को बड़ा दु:ख होता है । वह जब हीरा को बुलाने जाता है तो सुनता है कि हीरा शोभा के सामने होरी की निंदा कर रहा था । होरी धनिया को यह बताता है । धनिया यह सुनकर उससे झगड़ती है ।

सेमरी में राय साहब के घर पर उत्सव है । उसमें धनुषयज्ञ नाटक में होरी जनक के माली का अभिनय करता है । उत्सव के लिए होरी को पांच रुपये नजराना देना है । राय साहब के मेहमानों में गाँव और शहर के लोग हैं । शहर के मेहमान हैं - बिजली पत्र के संपादक पं. ओंकारनाथ, वकील तथा दलाल मि. तंखा, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. मेहता, मिल मालिक मि. खन्ना, उनकी धर्मपत्नी कामिनी (गोविन्दी), डाक्टर मिस मालती और मिर्जा खुर्शीद ।

वहाँ बातचीत में रायसाहब जमींदारी प्रथा के शोषण की निंदा करते हैं । डॉ. मेहता और रायसाहब की कथनी और करनी के अंतर के प्रति व्यंग्य करते हैं । भोजन के समय मांस-मदिरा का स्थान छोड़कर ओंकारनाथ अलग से फलाहार करना चाहते हैं । पर मिस मालती अपनी बातों से ओंकारनाथ को भुलावे में डालकर शराब पिलवा देती है और वायदे के मुताबिक एक हजार रुपये इनाम लेती है । उसी समय पठान के वेश में डॉ. मेहता आकर रुपये मांगते हैं और धमकी देते हैं कि रुपये न मिले तो वे गोली चला देंगे । अंत में होरी वहाँ प्रवेश करके पठान को गिराकर उसकी मूँछें उखाड़ लेता है । पठान के वेश में आए मेहता की नाटकबाजी वहीं खतम हो जाती है ।

उसी समय सब शिकार खेलने जाने का कार्यक्रम बनाते हैं । तीन टोलियाँ बनती हैं । पहली टोली में मेहता और मालती जाते हैं । मालती मेहता के प्रति आकर्षित है, पर मेहता को इस ओर कोई आकर्षण नहीं है । मेहता को शिकार की चिड़िया पानी से लाकर एक जंगली लड़की देती है और दोनों को अपने घर तक ले जाकर मधुर व्यवहार से खुश कर देती है । इससे मालती ईर्ष्या करती है तो वह

मेहता की नजर में गिर जाती है । दूसरी टोली के रायसाहब और खन्ना के बीच मिल के शेयर के बारे में बातचीत होती है । रायसाहब शेयर खरीदने की बात टाल देते हैं । तीसरी टोली में तंखा और मिर्जा हैं । मिर्जा एक हिरन का शिकार करते हैं । हिरन को एक ग्रामीण युवक को देते हैं । सब मिलकर उस युवक के गाँव में जाते हैं । खा-पीकर खुशी से सारा दिन वहाँ बिताकर शाम को लौट आते हैं ।

होरी के घर पर गाय आ जाने से सब खुश थे । इतने में रायसाहब का कारिंदा कहता है कि नोखेराम बाकी लगान न चुकाने वाले खेत में हल नहीं जोत सकेंगे । होरी पैसे का इंतजाम करने के लिए साहूकार झींगुरीसिंह के पास पहुँचता है । झींगुरी सिंह की आँख गाय पर थी । उसने गाय ले लेने का चक्कर चलाया और कर्ज न लेकर लाचार होकर गाय बेचकर लगान चुकाने के लिए वह राजी हो जाता है और धनिया को भी राजी कर लेता है । रात को घर के भीतर उमस होने के कारण वह गाय को बाहर लाकर बांधता है और बीमार शोभा को देखकर लौटते समय गाय के पास हीरा को देखकर ठिठक जाता है । उसी रात को विष दिए जाने से गाय मर जाती है तो होरी धनिया को हीरा पर शक होने की बात बता देता है तो धनिया हीरा को गालियाँ देती है और सारे गाँव में कोहराम मचा देती है । होरी भाई को बचाने के लिए सच को छिपाकर गोबर की झूठी कसम खा लेता है । जाँच पड़ताल करने दरोगा गाँव में आता है । गाँव के मुखिया लोग इस विपत्ति का फायदा उठाने के लिए हीरा पर जुर्माना लगाते हैं । कुर्की से बचने तथा परिवार की इज्जत बचाने होरी झिंगुरी सिंह से कर्ज लेकर रिश्वत के पैसे लाता है, पर धनिया के कारण वह दारोगा को मिल नहीं पाता । दारोगा मुखिया लोगों के घर की तलाशी लेने की धमकी देकर उनसे भी रिश्वत के पैसे बसूल करके चला जाता है ।

गोहत्या करके पाप के डर से हीरा घर से भाग जाता है । होरी हीरा की पत्नी पुनिया का खेत संभालता है । बीच में एक महीने तक बीमार भी पड़ जाता है ।

एक रात होरी कड़कती सर्दी में खेत की रखवाली कर रहा था कि धनिया वहाँ पहुँच जाती है और बताती है कि पांच महीने का गर्भ लेकर झुनिया घर में आ गई है । होरी पहले उसे निकाल देने की बात तो करता है, बाद में धनिया के समझाने पर उसे अपने घर में रहने का आश्वासन देता है । अब फिर से पंचायत को होरी का गला दबाने का मौका मिल जाता है । झुनिया के एक लड़का होता है । बिरादरी में ऐसे पाप के लिए गाँव की पंचायत होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज का डाँड लगाती है । धनिया पंचायत पर बहुत फुफकारती है । पर होरी झिंगुरी सिंह के पास मकान रेहन पर रखकर अस्सी रुपये लाता है और डाँड चुकाता है ।

गोबर -झुनिया को चुपके से अपने घर में छोड़कर लोकलज्जा के भय से लखनऊ शहर भाग जाता है । वह मिर्जा खुर्शीद के यहाँ महीने के पंद्रह रुपये वेतन पर नौकरी करता है । उनकी दी कोठरी में रहता है ।

डाँड में सारा अनाज दे देने के बाद होरी के पास कुछ नहीं बचता । इसी समय पुनिया उसकी सहायता करती है । वर्षा के अभाव से उसकी ईख सूख जाती है । भोला गाय के रुपये लेना चाहता है । होरी रुपये दे नहीं पाता । भोला होरी के बैल खोलकर ले जाता है । गाँववाले इसका विरोध करते हैं, पर धर्म के भय से मर्यादावादी और ईमानदार होरी विवश होकर इसकी अनुमति दे देता है ।

मालती राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहने वाली महिला है । उसके प्रत्यत्न से मेहता वीमेन्स लीग में भाषण देने के दौरान महिलाओं को समान अधिकार की मांग छोड़कर त्याग, दया, क्षमा अपनाने का सुझाव देते हैं, जो गृहस्थ जीवन के लिए निहायत जरूरी है ।

मालती मेहता से सहमत होती है । वह मेहता को अपने घर पर खाने बुलाती है । उसी समय मेहता आरोप लगाते हैं कि उसी के कारण मि. खन्ना ,मिसेज खन्ना से अच्छा बर्ताव नहीं करते । यह सुनकर मालती बिगड़ जाती है और अपने घर चली जाती है ।

रायसाहब को पता चल जाता है कि होरी से वसूल किए गए डाँड के सारे के सारे पैसे गाँव के मुखिया लोग खा गए । वे नोखेराम से रुपये देने को कहते हैं तो चारों महाजन 'बिजली' के संपादक ओंकारनाथ को सूचना दे देते हैं कि रायसाहब आसामियों से जुर्माना वसूल करते हैं । ओंकारनाथ रायसाहब को बताते हैं कि वे अपनी पत्रिका में ऐसी सनसनीखेज खबर छापने जा रहे हैं । रायसाहब सौ ग्राहकों का चंदा रिश्वत के रूप में भरकर किसी तरह इसे छापने से रोक लेते हैं ।

जब गाँव में बुवाई शुरू हो जाती है तब होरी के पास बैल नहीं हैं । होरी की लाचारी का फायदा उठाकर दातादीन होरी से साझे में बुवाई करने का प्रस्ताव देकर होरी को मजदूर के स्तर तक ले जाता है ।

उधर दातादीन का बेटा मातादीन झुनिया को प्रेम-पाश में फँसाने के लिए प्रयास करता है । लेकिन बीच में सोना पहुँच जाने से मामला गड़बड़ होने से बच जाता है ।

होरी ईख बेचने जाता है तो मिल मालिक से मिलकर महाजन सारा रुपया कर्ज के लिए वसूल कर लेते हैं ।

मि. खन्ना और उसकी पत्नी गोविंदी के स्वभाव में आकाश - पाताल का अंतर है । गोविंदी सादा जीवन पसन्द करती है तो मि. खन्ना विलासमय जीवन । एक बार पति-पत्नी में बेटे के इलाज के लिए भिन्न -भिन्न डाक्टरों को बुलाने के मतांतर पर झगड़ा हो जाता है । क्रोध से गोविंदी पार्क में चली जाती है । वहीं उसकी मुलाकात मेहता से होती है । मेहता उसकी प्रशंसा कर के उसे समझाबुझा कर घर लौटा लाते हैं । होरी दातादीन की मजूरी करने लगता है ।

होरी दातादीन की मजदूरी करने लगता है । ऊख काटते समय कड़ी मेहनत करने के कारण वह बेहोश हो जाता है । उधर गोबर अब नौकरी छोड़कर खोंचा लगाने के काम में लग जाता है । उसके पास दो पैसे हो जाते हैं । वह एक दिन गाँव में पहुँचता है । वह सभी के लिए सामान लाता है । गाँव में गोबर महाजनों की बड़ी बेइज्जती करता है । होली के अवसर पर गाँव के मुखिया लोगों की नकल करके अभिनय किया जाता है । फलस्वरूप गोबर सभी महाजनों के क्रोध का शिकार बन जाता है । जंगी को शहर में नौकरी कराने का लोभ दिखाकर उसे प्रभावित कर देते हैं । वह भोला को मना कर उससे अपने बैल ले आता है । दातादीन को तीस रुपये उधार के लिए सत्तर रुपये देना चाहता है । नोखेराम को लगान वसूल करके रसीद न देने पर उसे अदालत की धमकी देता है । झुनिया को फुसलाकर शहर जाते समय माँ से झगड़ा हो जाता है । माँ के पांव में सिर न झुकाकर बिलकुल उद्दंड और स्वार्थी बनकर बालबच्चों को लेकर शहर चला जाता है ।

राय साहब की कई समस्याएँ थीं । उनको कन्या का विवाह करना था, अदालत में एक मुकदमा करना था और सिर पर चुनाव भी थे । कुंवर दिग्विजय सिंह के साथ शादी तय हुई थी । राजा साहब के साथ चुनाव लड़ना था । पैसों की कमी थी इसीलिए वे तंखा के पास उधार मांगने के लिए जाते हैं । वे मना करते हैं तो वे खन्ना के पास जाते हैं । खन्ना पहले आनाकानी करके बाद में कमीशन लेकर पैसों का इंतजाम कर सकने की बात बताते हैं । बातचीत के दौरान मेहता महिलाओं की व्यायामशाला के लिए चंदा मांगने पहुँचते हैं । खन्ना कुछ देने से मना करते हैं । गोविंदी को भी व्यायामशाला की नींव रखने के लिए मना करते हैं । रायसाहब पांच हजार लिख देते हैं । फिर मालती पहुँचती है तो खन्ना से एक हजार का चैक लिखवा लेती है ।

मातादीन की रखैल सिलिया अनाज के ढेर से कोई सेर भर अनाज दुलारी सहुआइन को दे देती है तो मातादीन उसे धिक्कारता है । निकल जाने को कहता है । सिलिया दु:खी होती है । सिलिया के बाप हरखू के कहने पर उसके साथी मातादीन के मुँह पर हड्‌डी डालकर उसे जातिभ्रष्ट कर देते हैं । धनिया सिलिया को अपने घर पर रख लेती है । सिलिया मजदूरी करके गुजरबसर करती है । सोना सत्रह साल की हो गई थी । उसके विवाह के लिए पैसों की जरूरत थी । सोना को मालूम हुआ कि पिता विवाह के लिए दुलारी से दो सौ रुपये लाएँगे । सोना सिलिया को भावी पति मथुरा के पास भेजती है । ससुरालवाले बिना दहेज के बहू लेने को तैयार हो गए । लेकिन धनिया अपनी मर्यादा बचाने के लिए दहेज देना चाहती है ।

भोला एक जवान विधवा नोहरी से विवाह करता है । नोहरी के साथ बहुओं से नहीं पटती । पुत्र कामना भोला को घर से भगा देती है । नोखेराम नोहरी की लालसा से भोला को नौकर रख लेता है । नोहरी गाँव की रानी की जाती का है । लाला पटेश्वरी साहूकार मंगरू शाह को भड़काकर होरी की सारी

ईख नीलाम कर देता है । इससे उगाही की उम्मीद न होने से दुलारी होरी को शादी के लिए दो सौ रुपये नहीं देती है । इतने में सहानुभूति दिखाकर नोहरी होरी को दो सौ रुपये देकर अपनी दयाशीलता का परिचय देती है ।

शहर में परिवार लाकर गोबर देखता है कि जहाँ वह खोंचा लगाता था, वहीं दूसरा बैठने लगा है । उसको कारोबार में घाटा हुआ तो वह मिल में नौकरी कर लेता है । झुनिया को गोबर की कामुकता पसंद नहीं आती । गोबर का बेटा मर जाता है । झुनिया गर्भवती है । गोबर नशा करने लगा है । झुनिया को पीटता है, गालियाँ देता है । चुहिया की सहायता से झुनिया एक बेटे को जन्म देती है । मिल में झगड़ा हो जाने से गोबर घायल हो जाता है । मिल गोबर की सेवा करने के दौरान पति पत्नी में फिर संबंध स्वाभाविक हो जाता है ।

मातादीन नोहरी के प्रति फिर से आकर्षित होता है । वह सिलिया के लिए छोटी को दो रुपये देता है । रुपये पाकर सिलिया खुश होती है । यह समाचार देने सोना के ससुराल पहुँचती है । मथुरा नोहरी से प्रेम-निवेदन करता है । दोनों पास-पास आ जाते हैं तो सोना की आवाज से पीछे हट जाते हैं । सोना सिलिया को बहुत फटकारती है ।

मिल में आग लग गई थी । मिल में नए मजदूर ठीक से काम नहीं कर पा रहे थे । इसलिए पुराने मजदूर ले लिए जाते हैं । खन्ना - गोविंदी का मनमुटाव मिट जाता है । मेहता से प्रेरित होकर मालती सेवा-व्रत में लगी रहती है । एक दिन मेहता और मालती होरी के गाँव में पहुँचकर लोगों से मिलते हैं । सहायता करते हैं । राय साहब की लड़की की शादी हो जाती है । मुकदमे और चुनाव में भी जीत होती है । वे लोग होम मेंबर भी बन जाते हैं । राजा साहब रायसाहब के पुत्र रुद्रप्रताप से अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव भेजते हैं पर रुद्रप्रताप मालती की बहन सरोज से विवाह करके इंग्लैंड चला जाता है । फिर रायसाहब की बेटी और दामाद में विवाह विच्छेद हो जाता है । मालती देखती है कि दूसरों की सेवा करने के कारण ऊँची वेतन के बावजूद उन पर कर्ज है । कुर्की भी आई है । तब मालती मेहता को अपने घर पर ले आती है । उनकी सहायता करती है । मालती गोबर को माली रख लेती है । उसके बेटे की चिकित्सा और सेवा भी करती है । मालती मेहता से विवाह करना अस्वीकार करके मित्र बनकर रहने को पसंद करती है ।

मातादीन सिलिया के बालक को प्यार करता है । वह निमोनिया में मर जाता है । मातादीन सिलिया के प्रति आकर्षित होता है । सारा जाति-बंधन तोड़कर उसके साथ रहता है ।

होरी की आर्थिक दशा दिनोंदिन गिरती जाती है । तीन साल तक लगान न चुकाने से नोखेराम बेदखली का दावा करता है । मातादीन होरी को सुझाव देता है कि अधेड़ रामसेवक मेहता से रूपा की शादी करके बदले में कुछ रुपए ले लें और खेती करे । होरी यह सुनकर बड़ा दुःखी होता है । पर अंत

में होरी और धनिया राजी हो जाते हैं । गोबर को शादी में आने की खबर दी जाती है । गोबर झुनिया को लेकर गाँव में पहुँचता है । रूपा की शादी होती है । मालती भी शादी में शरीक होती है । गोबर गाँव में झुनिया को छोड़कर लखनऊ चला जाता है ।

रूपा ससुराल में समृद्धि देखकर पिता की गाय की लालसा की बात सोचकर दु:खी होती है । मैके जाते समय वह एक गाय ले जाने की बात सोचती है । होरी पोते मंगल के लिए गाय लेना चाहता था । इसलिए वह कंकड़ खोदने की मजदूरी करता है । रात को बैठकर धनिया के साथ सुतली कातता है । एक दिन हीरा आकर पहुँचता है और होरी से माफी मांगता है । होरी खुश हो जाता है । होरी कंकड़ खोदते समय दोपहर की छुट्टी के समय लेट जाता है । उसको कै होती है । उसे लू लग जाती है ।

धनिया भाग कर आती है । सब इकट्ठे हो जाते हैं । शोभा और हीरा होरी को घर पर ले गए । होरी की जबान बंद हो गई । धनिया घरेलू उपचार करती है । सब बेकार जाता है । हीरा गो-दान करने को कहता है । दूसरे लोग भी यही कहते हैं । धनिया सुतली बेचकर रखे बीस आने पैसे पति के ठंडे हाथ में रखकर ब्राह्मण दातादीन से बोलती है - महाराज घर में न गाय है न बछिया, न पैसा । यही इनका गोदान है ।

1.3 भारतीय किसानों की स्थिति :

'गोदान' उपन्यास में बेलारी गाँव के किसान होरी के जीवन संघर्ष का चित्रण भारतीय किसान के संघर्ष को उजागर करता है । होरी की समस्याएँ प्रत्येक भारतीय किसान की समस्याएँ हैं । इसमें कृषक - जीवन के अंधकार पक्ष यानी केवल करुण -गाथा का चित्रण मिलता है । वास्तव में आर्थिक विपन्नता अशिक्षा और ऋण का बोझ मिलकर किसान की रीढ़ की हड्डी तोड़ देते हैं । वे दोनों समस्याएँ राक्षसी सुरसा की तरह मुँह फैलाए भारतीय किसान को निगल रही हैं ।

गोदान 1936 ई की रचना है । इसमें तत्कालीन समय के ग्राम्य जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है । होरी सामंतवाद और पूँजीवाद के शोषण के चक्र में फंसता हुआ भी उससे निकलने के लिए संघर्ष करता है । छटपटाता है । अंत में टूट जाता है और काल के गाल में समा जाता है । धनिया पंच और विरादरी के अन्याय से साहसपूर्ण संघर्ष करती है । बेटा गोबर अशिक्षा, अज्ञानता और धर्मांधता का विरोध करता है । साहूकार के छल को पहचानता है । उसका विद्रोही तेवर किसान के जागरण की चेतना प्रदान करता है और आशा संचार करता है कि किसान का भविष्य मंगलमय और सुखकर होगा । लेखक भी समतामूलक समाजवाद की प्रतिष्ठा की आशा करता है ।

होरी और धनिया के सामने जमींदार, साहूकार, पटवारी, दारोगा, मिल-मालिक, पंच, विरादरी

की एक प्रबल शत्रु-सेना खड़ी है और वे साहसपूर्वक उससे लोहा लेते हैं । होरी मर-मिट जाता है, पर समझौता नहीं करता ।

गोदान में प्रेमचन्द का आदर्शवादी दृष्टिकोण आकर यथार्थवादी बन गया है । दमन और उत्पीड़न के युद्ध में शोषण का चक्र कैसे राष्ट्रीय विकास में बाधा पहुँचाता है उसे किसान की दयनीय स्थिति के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है । सभी शोषण चाहे वह जमींदार का हो या साहूकार, मिल-मालिक हो या धर्म-ध्वजाधारी पुरोहित, अपना भाई हो या बिरादरी सभी अवसर की ताक में रहकर किसानों का शोषण करते हैं । वे किसान के पसीने की कमाई से हिस्सा लेकर चैन की जिन्दगी बिताते और समाज में अपनी धाक जमाना चाहते हैं ।

गाँव का जमींदार किसानों को लगान न चुकाने की स्थिति में खेत से बेदखल कर देते हैं । जमींदार अपना कोई उत्सव मनाते समय लोगों से बेगार करवाते हैं । शहर के मिल-मालिक साहूकार से षडयंत्र करके किसानों का सारा गन्ना ले लेते हैं और उनके सपनों को चकनाचूर कर देते हैं ।

गाँव में किसान आर्थिक अभाव की चक्की में पिस जाते हैं । वे प्राय: अशिक्षित हैं । इसलिए अंधविश्वास से मुक्त नहीं हो पाते । अपनी गरीबी को पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम और जमींदारों की धनाढ्यता को पूर्वजन्म का पुण्य मानकर संतुष्ट रहना किसानों की नियति बन जाती है । पुरोहित वर्ग, ब्राह्मण वर्ग उनको अभिशाप दे सकते हैं । प्रतिकार के लिए धार्मिक विधान करना आवश्यक है - ऐसे विचार रखनेवाले किसान शोषणतंत्र से मुक्त नहीं हो सकते ।

गाँव में संयुक्त परिवार टूट जाते हैं । भाई-भाई पर संदेह करता है । अपना उल्लू सीधा करना चाहता है । ईर्ष्या करके भाई सर्वनाश भी करता है । गाँव में लड़ाई - झगड़ा आम बात है । होरी धनिया को, हीरा - पुनिया को, कामता - भोला को, मथुरा का बाप मथुरा को, गोबर -झुनिया को पीटते हैं । पुरुष का नारी को मारना -पीटना और नारी का उसे सह जाना और पुरुष -प्रधान समाज में अपनी आवाज न उठा पाना उस समय के समाज का एक नग्न चित्र है ।

समाज में प्रतिष्ठित उच्च वर्ग के लोग अन्याय करते हैं, दुराचार करते हैं । लेकिन ऐसा कार्य कोई गरीब या निम्न वर्ग का आदमी करता है, तो गाँव भर में भूकंप हो जाता है । मातादीन एक चमारिन के, झींगुरी सिंह एक ब्राह्मणी के, नोखेराम एक अहीरिन को रखे हुए हैं । चमार मातादीन के मुँह में हड्डी डाल देते हैं । तो वे तीन सौ रुपये खर्च करके काशी पंडित के द्वारा प्रायश्चित करके शुद्ध हो जाते हैं । पर गोबर विधवा झुनिया को घर ले आता है तो पंच की दृष्टि से बहू-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ जाती है । इस अपराध के लिए होरी को आर्थिक दण्ड भुगतना पड़ता है ।

गाँव में आर्थिक समस्या किसान के जीवन को नरक तुल्य बना देती है । धनिया छतीसवें वर्ष की उम्र में बूढ़ी जैसी लगती है । होरी को साठ तक पहुँचने की उम्मीद नहीं है । घी-दूध तो अंजन लगाने

तक को भी नहीं मिलता । होरी दु:खी है कि उनके बेटे गोबर को दूध नहीं मिलता । होरी पोते के लिए दूध की व्यवस्था करने वह एक गाय खरीदना चाहता है । इसलिए किसानी छोड़कर वह मजदूरी करता है ।

जमींदार द्वारा समय-समय पर किसानों को जमीन से बेदखली की जाती है । लगान चुकाने पर भी उन्हें रसीद नहीं मिलती । साहूकार पचास रुपये देकर सौ लिखा लेता है और वसूल करते समय दो सौ ले लेता है ।

गाँव में कुछ सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं, जो गरीबों में भी सुख का संचार कर देती हैं । होली के अवसर पर सब खुलकर नाटक खेलते हैं और अन्याय पर व्यंग्य करते हैं । होरी की गाय को देखने सब गाँववाले आते हैं । हीरा जब गाय देखने नहीं आता तो होरी उसे बुलाना चाहता है । गाँव में सभी किसान ईमानदार होते हैं । होरी सभी को पैसे चुकाता है । वह आदर्श पर अडिग रहता है । वह अपने बेटे से कहता है -'' नीति हाथ से न छोड़नी चाहिए बेटा । अपनी-अपनी करनी अपने-अपने साथ है ।''

भारतीय किसान गाय को देवता मानता है । होरी कहता है - गऊ से ही तो द्वार की शोभा है । सवेरे -सवेरे गऊ के दर्शन हो जाएँ तो क्या कहना ?'' गाय की लालसा में ही होरी की मौत हो जाती है ।

गाँव के किसान धर्म के प्रति बड़ी निष्ठा रखते हैं । इसी धर्म के डर से वे साहूकार को पाई-पाई चुका देते हैं । वे पाप-पुण्य में विश्वास करके सारी यातनाएँ सहते हैं । अंत में होरी की मुक्ति के लिए धनिया गोदान करने में असमर्थ होकर भी दातादीन को सुतली बेचने से मिले बीस आने पैसे को गोदान के रूप में दे देती है । भारतीय किसान जीवन भर मेहनत करने पर भी अपनी सामान्यतम इच्छा को पूर्ण नहीं कर पाता ।

1.4. गाय का महत्त्व :

'गोदान' उपन्यास की कथा के केंद्र में नायक होरी के मन में एक गाय रखने की लालसा है । प्रेमचन्द ने लिखा है कि - हर एक गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आती थी । यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न, सबसे बड़ी साध थी ।

होरी रायसाहब अमर पाल सिंह से मिलने बेलारी से सेमरी जाते समय पगडंडी के दोनों ओर ईख के पौधों की लहराती हुई हरियाली देखकर मन ही मन कहता है - भगवान कहीं गौ से बरखा कर दें और डांडी भी सुभीते से रहे, तो एक गाय जरूर लेगा । वह पछाई गाय लेगा । उसकी खूब सेवा करेगा । कुछ नहीं तो चार-पांच सेर दूध होगा । गऊ से ही तो द्वार की शोभा है । सवेरे -सवेरे गऊ के दर्शन हो

जाएँ तो क्या कहना । न जाने कब यह साध पूरी होगी, कब वह शुभ दिन आएगा ।

रास्ते में भोला की गायों को देखकर होरी का मन ललचाता है । वह भोला की खुशामद करते हुए उससे कहता है -''धन्य है तुम्हारा जीवन । गऊओं की इतनी सेवा करते हो ! हमें तो गाय का गोबर भी मयस्सर नहीं । गिरस्त के घर में एक गाय भी न हो, तो कितनी लज्जा की बात है ।''

होरी बातचीत के दौरान भोला की प्रशंसा कर देता है । वह भोला को उसकी सगाई करा देने का झूठा आश्वासन देता है । भोला खुश होकर होरी को एक कजरी गाय अस्सी रुपये में, वह भी उधार पर देने को राजी हो गया ।

वह होरी के हाथ में गाय की पगहिया देकर गाय उसके घर तक पहुँचा देने को कहता है । वह गो-सेवा को परम धर्म मानने वाले के हाथ में गाय बेचने को उचित मानता है । वह होरी से कहता है - '' हाकिमों को गऊ की सेवा से क्या मतलब ? वह तो खून चूसना -भर जानते हैं । जब तक दूध देती, रखते, फिर किसी के हाथ बेच देते । किनके पल्ले पड़ती, कौन जाने । रुपया ही सब कुछ नहीं है भैया । कुछ अपना धरम भी तो है । तुम्हारे घर आराम से रहेगी तो ।''

होरी को जब मालूम हुआ कि भोला के पास भूसा नहीं है । वह आर्थिक संकट में है, तब होरी संकट की चीज लेने को पाप मान कर फिर कभी गाय लेने का वादा करके भोला से गाय नहीं लेता । वहाँ से जाने के समय होरी पीछे मुड़कर देखता है कि कबरी गाय पूँछ से मक्खियाँ उड़ाती सिर हिलाती, मस्तानी, मंद गति से झुमती चली जाती थी । जैसे बांदियों के बीच में कोई रानी हो । होरी कल्पना करता है - कैसा शुभ होगा वह दिन जब यह कामधेनु उसके द्वार पर बंधेगी ।

घर पर चर्चा होती है तो गोबर कहता है -'' साफ-साफ तो बात है अस्सी रुपये की गाय है, हमसे बीस रुपये का भूसा ले लें और गाय हमें दे दें । साठ रुपये रह जाएँगे, वह हम धीरे-धीरे दे देंगे ।''

होरी सोचता है कि -मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सेंत-सेंत में हाथ आ जाए । कहीं भोला की सगाई ठीक करनी है बस । दो-चार मन भूसा तो खाली अपना रंग जमाने को देता हूँ ।

गोबर भोला की गाय देखकर कैसा खुश हो जाता है उसका वर्णन लेखक ने किया गोबर की आँख उसी गाय पर लगी हुई थी और मन ही मन वह मुग्ध हुआ जाता था । गाय इतनी सुन्दर और सुडौल है । इसकी उसने कल्पना भी न की थी ।

गोबर होरी से नांद गाड़ने कह कर गाय लाने चला जाता है । गोबर के लौटने में देर होती है तो वह बेचैन हो जाता है । गाय के आने से पहले होरी नांद गाड़ना नहीं चाहता । उसे आशंका है कि अगर भोला बदल जाएगा तो सारा गाँव तालियाँ पीटने लगेगा । रूपा चाहती है कि गाय आ जाएगी तो वह गोबर थापेगी और दूध दुहेगी । दूर से भैया को गाय लाते हुए देखकर सोना और रूपा दोनों दौड़ी हुई

आकर सभी को यह सूचना देती हैं । किसने पहले भैया को देखा । इस पर दोनों बहनों में झगड़ा हो जाता है ।

गाय पहुँचती है तो होरी जल्दी नांद गाड़ना चाहता है । धनिया आटा और गुड़ घोलकर गाय को पिलाना चाहती है । क्योंकि गाय धूप में चलकर आने से प्यासी हो गई होगी । गाय को कहीं नजर न लग जाए इसलिए धनिया दुकान से काला डोरा मंगवाकर उसके गले में बांधना चाहती है । वह घर में कहीं पड़ी हुई घंटी भी ढूंढती है । गाय लेकर गोबर आता है तो उसके पीछे गाँव के लड़के चले आते हैं । दौड़कर गाय के गले से लिपट जाता है । धनिया देर न करके एक पुरानी साड़ी का काला किनारा फाड़कर गाय के गले में बाँध देती है । दूसरों की नजर न लगे , इसलिए धनिया आँगन में नांद गाड़ा जाना चाहती है । होरी नांद बाहर गाड़ना चाहता है । वह चाहता है कि गाय को द्वार पर बाँधे देखकर लोग पूछें कि यह किसका घर है । आखिर नांद आँगन में गाड़ी जाती है ।

होरी श्रद्धा से गाय को देख रहा है । वह मानता है कि यह गाय नहीं मानो साक्षात देवी ने घर में पदार्पण किया हो । गाय के चरणों से घर पवित्र हो गया । यह सौभाग्य बड़े पुण्य-प्रताप से मिला है । उसके लिए गाय केवल श्रद्धा -भक्ति की वस्तु नहीं । सजीव संपत्ति भी है ।

गाँव में अस्सी रुपए की गाय तो दूर -पचास -साठ रुपये की गाय का आना भी अभूतपूर्व बात थी । सब दौड़कर गाय देखने आते हैं । पंडित दातादीन गाय के सींग, थन, पुट्ठा देखकर गाय के लक्षण अच्छा बताते हैं । वे होरी से कहते हैं -''भगवान चाहेंगे तो तुम्हारे भाग्य खुल जाएँगे ।''

गाय के देखने होरी के दो भाई हीरा और शोभा नहीं आते तो होरी दोनों को बुलाकर गाय दिखाना चाहता है । हीरा गाय को देखकर जलता है । होरी हीरा और शोभा की बातचीत सुनकर हीरा के मन की दुर्भावना को जान जाता है । वह अब गाय को लौटा देने का निश्चय करता है । होरी और गोबर गाय के आधी-आधी रोटियाँ खिलाने आते हैं, पर गाय नहीं खाती । रूपा गाय का मुँह सहलाती है ।

झींगुरी सिंह होरी की गाय पर नजर रखता है । एक दिन होरी कर्जा लेने झींगुरीसिंह के पास पहुँचता है तो वह उसे सुनहला मौका जानकर उसके गाय बेच देने का प्रस्ताव देता है । गाय बेचने की बात सुनकर सोना कहती है कि मुझे बेच दो, पैसे ज्यादा मिल जाएँगे ।

होरी जानता है कि रूपा गाय को बहुत चाहती है । होरी यह भी समझता है कि एक मित्र से उधार पर गाय लेकर उसे बेच देना अधर्म है । पर परिस्थिति के सामने वह लाचार हो जाता है । किसी भी तरह होरी धनिया और गोबर को गाय बेचने को राजी करा देता है और तय होता है कि दोनों लड़कियाँ रात को सो जाने के बाद गाय को झींगुरी सिंह के पास पहुँचा दिया जाएगा ।

वह रात को जाकर गाय के पास खड़ा होता है तो उसे लगता है कि गाय की आँखों में आँसू भरे

हुए हैं । गाय उसे याद दिला देती है कि उसने गाय न बेचने का वचन दिया था । होरी फिर निश्चय कर लेता है किसी भी हालत में वह गाय नहीं बेचेगा । यह सुन धनिया खुश हो जाती है ।

भीतर बड़ी उमस हो रही थी । गाय को आराम पहुँचाने के लिए होरी उसे बाहर बांध देता है । फिर अपने भाई शोभा से मिलने जाता है । कोई ग्यारह बजे लौटते समय वह गाय के पास हीरा को देखता है । वह गाय को जहर खिला देता है । गाय मर जाती है । गाय का कर्जा उतर नहीं पाता । होरी की फिर गाय खरीदने की सामर्थ्य नहीं रहती ; तमन्ना अधूरी रह जाती है ।

रूपा पति रामसेवक के घर पर गायों को देखती है तो उसकी स्मृति फिर सजीव हो जाती है - उस गाय की याद अभी भी उसके दिल में हरी थी, जो मेहमान की तरह आई थी और सबको रोता छोड़कर चली गई थी ।

होरी अपने पोते के दूध के लिए एक गाय लेना चाहता है । वह किसान की मर्यादा छोड़कर मजदूरी करता है । वह कहता है - ठेकेदार से रुपये मिले और गाय लाया ।

मृत्यु के समय भी होरी को गाय याद आती है । वह कल्पना से देखता है एक कामधेनु -सी गाय उसके सामने आ जाती है । उसका दूध दुहकर मंगल को पिलाते समय गाय एक देवी बन जाती है । धनिया के पुकारने पर वह अर्धचेतन अवस्था में कहता है - तुम आ गए गोबर ! मैंने मंगल के लिए गाय ले ली है । वह खड़ी है देखो ।

होरी धनिया से कहता है - मेरा कहा-सुना माफ कर देना धनिया । अब जाता हूँ । गाय की लालसा मन में ही रह गई । अब तो गाय के रुपये क्रिया-करम में जाएँगे ।

होरी की मरणासन्न स्थिति में हीरा रोते हुए कहता है -'' भाभी ! दिल कड़ा करो । गो-दान करा दो । दादा चले ।'' बहुत से लोग यही सुझाव देते हैं - हाँ गोदान करा दो यही समय है ।

धनिया सुतली बेचने से मिले बीस आने पैसे लाई और उसे पति के ठंडे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोलती है -''महाराज ! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं । यही इनका गो-दान है ।''

निर्धनता, अंध-विश्वास, धार्मिक भय और शोषण सब मिलकर होरी की एक गाय रखने की कामना को अपूर्ण रख देते हैं । होरी जीवन भर जुझारू योद्धा की तरह जीवन -संग्राम में लड़कर अंत में काल के गाल में समा गया है ।

1.5. गाँव का सामाजिक जीवन/शोषण :

गोदान में शहरी समाज और ग्रामीण सामाज का चित्रण किया गया है । शहर के संदर्भ में

सत्याग्रह-संग्राम, शक्कर मिल, पत्रिका -प्रकाशन, कौन्सिल के चुनाव, हिज ऐक्सेलेन्सी गवर्नर, अंग्रेज सरकार से पदक प्राप्ति, शेयर खरीद -बिक्री, समाज -सेवा, महिलाओं की व्यायामशाला, वीमेन्स लीग, मजदूर आंदोलन आदि बातों की चर्चा होती है । पर प्रेमचन्द का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण वातावरण में पले किसान की सामाजिक स्थिति को उजागर करके कर्ज, धर्म, जाति, भाग्य की आड़ में उनके प्रति हो रहे शोषण का एक नग्न चित्र प्रदर्शन करना था ।

गाँव के भाग्य की डोर शहर में है । जमींदार अमरपाल सिंह के कारण शहरी और ग्रामीण कथाएँ जुड़ती है । जमींदारी प्रथा ही गाँव की आर्थिक स्थिति नियंत्रण करती है । होरी ग्रामीण किसान के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होता है ।

उपन्यास में पहले होरी जमींदार की खुशामद करने अपना कुशल मानता है । वह जानता है कि जब दूसरे के पांव तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है ।

समय-समय पर जमींदार की डांड, बेगार, दस्तूरी, शगुन और नजराने के रूप में पैसे देने पड़ते हैं । रायसाहब के घर पर उत्सव है तो मजदूर बेगार करते हैं । होरी को पांच रूपये नजराना देने हैं । यही परंपरा है । रामसेवक कहता है -''यहाँ तो जो किसान है, वह सबका नरम चारा है । पटवारी का नजराना और दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल । जमींदार के चपरासी और कारिंदों के पेट न भरे तो निबाह न हो ।''

गाँव में थानेदार दारोगा ऊधम मचाते हैं । वे गाँव में आते हैं तो गाँववालों का कर्त्तव्य है कि वे उनका आदर -सत्कार करें । इसकी अवहेलना होने से गाँव का गाँव बंध जाएगा ।

हीरा पर हुए गोहत्या मामला को समाप्त करने के लिए होरी को तीस रुपए रिश्वत देने की नौबत आती है । गाँव के मुखिया दातादीन झिंगुरी सिंह, नोखेराम और लाला पटेश्वरी बिचौलिए बनते हैं । वे दरोगा मिलकर यह रिश्वत तय करते हैं । रिश्वत का आधा हिस्सा दरोगा और आधा हिस्सा चार मुखिया लेने पर समझौता होता है । झिंगुरी सिंह होरी को कर्जा देता है । यह रिशव्त देने से पहले धनिया पैसा होरी से छीन लेती है । लेकिन दरोगा महाजनों को तलाशी की धमकी देकर उनसे रिश्वत ले लेता है ।

होरी अपने घर पर ब्याहता न होते हुए भी गर्भवती बहू झुनिया को रख लेने से पंचायत बैठती है । होरी पर सौ रुपये नकद और तीस मन अनाज डाँड लगाया जाता है । बहू को पटेश्वरी हरजाई कहता है ।

डाँड लगानेवालों में झिंगूरी सिंह है । जिनकी दो जवान पत्नीयाँ घूँघट की आड़ में सब कुछ गलत काम करती थी । ठाकुरसाहब के डर से कोई कुछ नहीं करता था ।

धनिया पंचायत को डांटती है अभिशाप देती है । पर बिरादरी के भय से धर्म की रक्षा के लिए होरी डाँड भरता है ।

होरी रुपयों के लिए घर गिरवी रखता है और हाल में पैदा हुआ अनाज डाँड में दे देता है । उसे बिरादरी का भय था । लेखक ने लिखा है - ''बिरादरी का वह आतंक था कि अपने सिर पर लादकर अनाज ढो रहा था । मानो अपने हाथ अपनी कब्र खोद रहा हो । जमींदार साहूकार, सरकार किसका इतना रौब था । कल बाल-बच्चे क्या खाएँगे, इसकी चिंता प्राणों को सोख लेती थी ; पर बिरादरी का भय पिशाच की भाँति सिर पर सवार आंकुस दिये जा रहा था ।

गोबर दातादीन को अदालत की धमकी देकर ऊँची दर से ब्याज न देने की चेतावनी देता है । दातादीन अदालत में न जाकर ब्राह्मणत्व और धर्म के बल पर पूरे रुपये वसूल करना चाहता है । झिंगुरी सिंह कानून के बारे में कहता है -''कानून और न्याय उसका है, जिसके पास पैसा हो ।''

ब्राह्मण की अपनी जजमानी में अपना कुशल मानते हैं । दातादीन कहते हैं -''जमींदारी मिट जाए, बंकघर टूट जाए, लेकिन जजमानी अंत तक बनी रहेगी ।''

रायसाहब दोहरी नीति अपनाकर कभी जमींदारी को बुरी प्रथा मानकर उसकी निन्दा करते हैं तो कभी अपनी मजबूरी बताते हैं - ''हम बिच्छू नहीं हैं कि अनायास ही सबको डंक मारते फिरें । न गरीबों का गला दबाना कोई बड़े आनन्द का काम है । परंतु करें क्या । अफसरों को दावत कहाँ से दूँ, सरकारी चंदे कहाँ से दूँ ? ... आएगा तो असामियों के ही घर से ।'' वे कहते हैं कि अफसरों को डालियाँ न देने से जेल हो जाएगा । राय साहब स्वार्थी और अवसरवादी हैं ।

रायसाहब का शोषण किसी के ध्यान में नहीं जाता । सारा दोष कारिंदों पर मढ़ दिया जाता है । लेकिन राय साहब ऐसे समय में बकाया लगान वसूल करना चाहते हैं, जब उन्हें लगता है कि किसान लगान दे नहीं सकेंगे । तब बेदखली का डर दिखाते हैं फिर भी होरी कहता है -''राय साहब को क्या दोष दें, भाग्य का खेल है ।''

होरी अपनी बदहाली के लिए पूर्वजन्म के कर्मफल पर विश्वास करता है । गोबर का कथन कि भगवान ने सभी को बराबर करके जन्म दिया है, होरी के गले से नीचे नहीं उतरता । होरी परंपरागत मान्यता से मुक्त नहीं हो पाता, इसलिए उसका चौतरफा शोषण होता है और इस शोषण का विरोध करने की आवाज उसमें नहीं है । वह ऐसी गरीबी झेलता है कि पत्नी को, बेटियों का तन ढकने के लिए वस्त्र दे नहीं पाता । दो बेर भोजन उनके लिए जुटा नहीं पाता ।

समाज में जाति व्यवस्था इतनी उत्कृष्ट है कि उससे मुक्ति मिलना मुश्किल है । मातादीन सिलिया चमारिन को भोग लालसा से रखैल के रूप में रखता है । पर उसके हाथ का बनाया हुआ खाना नहीं खाता । इससे उसे विश्वास है कि उसका ब्राह्मणत्व सुरक्षित है । उसके मुँह में चमार हड्डी डाल

देते हैं तो वह जातिभ्रष्ट हो जाता है । फिर काशी जाकर प्रायश्चित करके पुन: ब्राह्मणत्व वापस पा जाता है । पर अंत में उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है । जिस सिलिया को उसने घर से निकाल दिया था, उसे तथा उसके बच्चे को पुन: स्वीकार करके चमार बने रहने को पसंद करता है ।

होरी को अपनी किसानी पर गर्व है । वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए रायसाहब से अच्छा संबंध बनाए रखता है । किसान से मजदूर बन जाने में वह अपनी बेइज्जती समझता है । किसान के रूप में रहने के लिए वह कड़ी मेहनत करता है । लगान बेबाक नहीं हो पाता । ऋण - भार नहीं उतरता । थोड़ा फायदा पाने की लालसा से वह भाइयों के साथ बेइमानी करके बीच में कुछ दलाली के रुपये लेना चाहता है । अपनी छोटी बेटी रूपा को दो सौ रुपये में बेच कर एक अधेड़ रामसेवक के साथ विवाह कर देता है । वह गाय खरीदने की लालसा से कंकड़ तोड़ने के लिए मजदूर बन जाता है । वह अपनी जमीन को सही सलामत बचाने का प्रयास करता है । लेखक उसकी एक दर्दनाक तस्वीर इस प्रकार खींचते हैं - हारे हुए महीप की भाँति उसने अपने को इन तीन बीघे के किले में बंद कर लिया था और उसे प्राणों की तरह बचा रहा था । फाके सहे, बदनाम हुआ, मजदूरी की, पर किले को हाथ से न जाने दिया, मगर अब वह किला भी हाथ से निकला जाता था । ... कहीं से रुपये मिलने की आशा न थी । जमीन उसके हाथ से निकल जाएगी और उसके जीवन के बाकी दिन मजूरी करने में कटेंगे । भगवान की इच्छा ।

महाजन, पुरोहित, जमींदार, शासन -तंत्र उस पर चौतरफा आक्रमण करते हैं । होरी धनिया का भगीरथ - प्रयास निष्फल जाता है । जीवन -संग्राम में निरंतर हार उसे दबोच लेती है । फिर भी संग्राम में वह हारनेवाला योद्धा नहीं है । हार में भी उसकी विजय होती है । भाइयों में अलगोझा हो जाना, अपने भाई की खुशहाली और संपन्नता से ईर्ष्यालु होकर गोहत्या तक अपराध कर बैठना, धर्म और बिरादरी के भय से गाँव से भाग जाना, फिर अंत में भाई से क्षमा मांगकर अपने मन को हल्का करना हीरा की नियति है ।

चाहे शहर की पार्टियों में हो, चाहे गाँव के भोज में शराब का खुलकर इस्तेमाल होता है ।

मिर्जा खुर्शीद वेश्याओं का उद्धार करने के लिए संगीत मंडली बनाते हैं । इस पर मेहता कहते हैं -'' जब तक समाज की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक बदल न डाली जाय, इस तरह की मंडली से कोई फायदा न होगा ।

राय साहब की पुत्री मीनाक्षी का अपने पति से नहीं पटना । वह क्लब जाती है, पति पर गुजारे का दावा करती है, पति के घर पर आकर हंटर से उसकी पिटाई करती है ।

यौन - शोषण :

नारी में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की कमी अपने स्वाभिमान के प्रति निराशाजनक दृष्टिकोण, पुरुषवर्चस्व समाज, ऊँची जाति का छोटी जाति की स्त्रियों के साथ गलत यौन -संबंध रखने में अपना अधिकार भावना और दंभ , छोटी जाति में अपनी इज्जत बनाए रखने के लिए आवश्यक दृढ़ता का अभाव, गरीबी की मजबूरियाँ आदि कई कारण हैं, जिनके परिणाम -स्वरूप यौन-शोषण की परंपरा चलती आ रही है ।

झुनिया के साथ यौन -शोषण होने के दो अवसर दिखाए गए हैं । वह बहुत सरल है, इसलिए पहली मुलाकात में प्रेमी गोबर को बताती है कि घर में घरवाली की अनुपस्थिति में तिलक -मुद्रा लगाने वाले एक पंडित ने किवाड़ बंद करके उसकी बेइज्जती करने की कोशिश की तो झुनिया उनको गालियाँ देकर, पीठ में दो लातें जमाकर भाग आई थी ।

एक दिन मातादीन होरी के घर पर आकर एकांत का फायदा उठाकर झुनिया से चिकनी-चुपड़ी बातें करता है । झुनिया असहायता का बोध करके रोने लगती है । मातादीन धीरे से उसका हाथ पकड़ लेता है, पर झटके से हाथ न छुड़ाकर दो चांटे न लगाकर वह आहिस्ता से हाथ छुड़ाती है । इस समय सोना के पहुँच जाने से 'मातादीन पगहिया मांग रहे थे' कहकर झुनिया स्थिति को संभाल देती है ।

झुनिया को दूध लेकर बाजार जाते रहते समय भिन्न -भिन्न लोगों से मुलाकात होती थी । कोई उसकी छाती पर हाथ रखकर न तरसाने की विनती करता था तो कोई रुपये, गहने दिखाकर फँसाना चाहता था । लगता है ये साधारण घटनाएँ जैसी थीं, वरन् इससे थोड़ी देर के लिए मनोरंजन हो जाता था । इसे झुनिया मंगनी चीज मानती थी । गाँवों में उत्पीड़न वर्ग निम्न जाति का यौन -शोषण करते हैं और इसे अपना अधिकार मानते हैं । इस अपराध के लिए वे समाज में दंडित नहीं होते । सरकार बहादुर के नौकर पटेश्वरी अपनी विधवा कहारिन को रखा हुआ है ।

रायसाहब का कारिंदा नोखेराम भोला की असहायता का फायदा उठाकर उसे काम दे देता है और उसकी नई पत्नी नोहरी को अपने घर रख लेता है ।

झिंगुरी सिंह, पटेश्वरी और नोखेराम के बेटे जब दशहरे की छुट्टी पर गाँव आते हैं, तब छैले बनकर घूमते हैं । होरी की बेटी सोना को देखने के लिए होरी के द्वार को ताकते हुए निकलते हैं ।

परंपरागत मानसिकता के कारण दलित समाज की अस्मिता और अस्तित्व के प्रति सचेतनता खतरे में पड़ जाती है । भाग्यवाद और कर्मफल विद्रोह का गला घोंट देते हैं ।

नारी उत्पीड़न :

गरीब और निम्न परिवार में नारी को पीटकर पुरुष अपना गुस्सा उतारता है और अपने पौरुष की

विजय मानता है । नारी इसका विरोध नहीं कर पाती । उसे कुछ गुस्सा आता है । सभी के सामने यह घटना घटने से अपमान बोध होता है, कुछ दिनों तक बातचीत बंद हो जाती है, पर कुछ समय या दिन के पश्चात सारी बातें स्वभाविक हो जाती हैं । केवल ऐसी स्थिति में जमींदार के परिवार में तलाक तक पति-पत्नी उतर आते हैं, जैसे कि रायसाहब की पुत्री और दामाद के बीच हुआ । गरीब परिवार में पारिवारिक विघटन की स्थिति नहीं आती ।

गोबर ने शहर जाते समय दंपति को आपस में झगड़ते हुए देखा । पति पत्नी को घर जाने को कह रहा था । पत्नी मना कर रही थी । पति गुस्से से पत्नी को घसीटटा है । गोबर पति का पक्ष लेता है तो पत्नी कहती है - तुम क्यों लड़ाई करने पर उतारू हो जी, अपनी राह क्यों नहीं जाते ? यहाँ कोई तमाशा है ? हमारा आपस का झगड़ा है । कभी वह मुझे मारता है, कभी मैं उसे डाँटती हूँ । तुमसे मतलब ?

बाँस बेचे जाते समय दमड़ी बंसीर से पुनिया झगड़ती है । हीरा -पुनिया के बीच मारपीट हो जाती है । वह कभी -कभी उसे इतना मारता है कि वह कई दिनों तक खाट से उठ नहीं पाती । उसने झगड़ा करके भाइयों में अलगौझा कर दिया था । पिटे जाने पर भी वह हीरा को अपने इशारे पर चलाती थी । गोबर -झुनिया में झगड़ा होता है । कुछ दिन दोनों में अबोला रह जाता है । पर विपत्ति के समय सब धुल जाता है ।

होरी आवेश के कारण धनिया को पीटता है । धनिया को बड़ा दु:ख होता है कि सभी के सामने होरी ने उसे पीटा । बातचीत बंद हो जाती है, पर दुर्दिन में, रोग में यह झगड़ा याद नहीं रहता । नारी पति सेवा में लीन हो जाती है ।

मातादीन -सिलिया का झगड़ा, मारपीट कर घर से निकाल देना, आपस में समझौता कर देना गाँव में स्वाभाविक प्रक्रिया है । ग्रामीण महिलाएँ अवहेलना, अपमान और उत्पीड़न को चुपचाप सह जाती हैं । वे पुरुष के अधीन रहती हैं । यह उनकी नियति है । मुक्ति नहीं । आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से वे बंदी हैं ।

ऋण समस्या :

गोदान में ऋण -समस्या एक प्रमुख समस्या है । यह समस्या होरी के जीवन की गति को बदनसीबी की ओर धकेलकर उसका अंत कर देती है । यह समस्या ग्रामीण कृषक -समाज की समस्या नहीं है, बल्कि शहर के जमींदारों और बुद्धिजीवियों की भी समस्या है । साहूकार और बैंकर ऋण देते हैं ।

होरी ऋण-भार से इतना दबा हुआ है कि जवानी में भी उसे बुढ़ापा आ गया है । बड़ी मुश्किल से ऋण के पाटों के बीच वह गृहस्थी की गाड़ी खींचने का प्रयास कर रहा है ।

वह ऋण पर गाय लेता है । गाय को मार दिया जाता है तो उस पर कहर टूट पड़ता है । घर की तलाशी से बचने के लिए उसे रिश्वत देनी पड़ती है । रिश्वत के लिए ऋण भी लेना पड़ता है, पर धनिया के कारण स्थिति सुधरती है । पर वह किसान से मजदूर बनता है, कन्या-बिक्री करनी पड़ती है और अंत में प्राणों की आहुति दे देता है ।

गोबर शहर जाकर पहले दूसरे को ऋण तो देता है पर उसकी आर्थिक स्थिति बाद में बिगड़ जाती है तो वह ऋण चक्र में फंस जाता है और ध्वस्त हो जाता है ।

उसकी पत्नी धनिया समझ गई है कि चाहे कितनी कतरव्योंत करो, कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौड़ी को दाँत से पकड़ो, मगर लगान -बेबाक होना मुश्किल है । ऋण भार से उसके बाल पक गए हैं । सिर्फ छत्तीस साल की उम्र में देह पर झुरियाँ पड़ गई हैं ।

शहर में रायसाहब ऋण लेकर अपनी प्रतिष्ठा बचाते हैं । वे कर्ज लेकर चुनाव लड़ते हैं । रायसाहब रुपयों की कमी के कारण एक बार मि. तंखा और एक बार मि. ओंकारनाथ की भी मिन्नत कर चुके हैं ।

कुंवर दिग्विजय सिंह और राजा सूर्यप्रताप पर भी भारी कर्ज है । तंखा, मि. खन्ना, मेहता, मालती के पिता कोई भी ऋण से मुक्त नहीं हैं ।

मालती के पिता कहीं से कुछ न मिलता था तो एक महाजन से अपने बंगले पर प्रोनोट लिखकर हजार -दो हजार ले लेते थे । महाजन उनका पुराना मित्र था, जिसने उनकी बदौलत लेन-देन में लाखों कमाए थे । पर पचीस हजार का कर्ज चढ़ चुका था । गाँववाले ईख बेचने मिल में पहुँचते हैं तो मुनिम से मिलकर गाँव का महाजन झिंगुरी सिंह कर्ज में दिया रुपये वसूल कर लिए क्योंकि जिस खन्ना बाबू की मिल है उसी खन्ना बाबू की महाजनी कोठी भी है । दोनों एक हैं । गाँव में साहूकार किसानों का शोषण करते हैं । दातादीन बिना लिखा-पढ़ी के ऋण देता है । वह रुपए वसूल करते समय ब्राह्मणत्व और शाप की धमकी देकर काम निकाल लेता है ।

दातादीन ने होरी को तीस रुपए आलू बोने के लिए ऋण दिया । आठ-नौ साल में वह सौ हो गए । गोबर एक रुपए के हिसाब से ज्यादा ब्याज देने की बात कहता है ।

दातादीन अदालत में जाने से डरता है । पर धमकाता है - मैं ब्राह्मण हूँ । मेरे रुपये हजम करके तुम चैन न पाओगे ।

होली के अवसर पर गाँव में जो नाटक खेला जाता है, उसमें दिखाया जाता है कि ठाकुर दस

रुपये का दस्तावेज लिखाकर पांच रुपये देता है । वे एक रुपए नजराने का, एक तहरीर का, एक कागद का, एक दस्तूरी का और सूद का काट लेते हैं ।

किसान उसी पांच रुपए को लौटाकर कहता है - छोटी ठकुराइन के नजराने और पान खाने के लिए एक-एक रुपया, बड़ी ठकुराइन के नजराने और पान खाने के लिए एक-एक रुपया और अपने क्रिया कर्म के लिए बाकी एक रुपया रख लीजिए ।

यह साहूकारों के चरित्र पर एक व्यंग्य दर्शाता है ।

नोहरी भी कुछ रुपये जमा करती है जो उसे किसी को कर्जा देना चाहती है । उसे होरी अच्छा देनदार लगता है । होरी को सोना के विवाह में दिल खोलकर खर्च करने को उकसाकर दो सौ रुपए कर्जा देती है ।

दुलारी सहुकारिन भी कर्जा देती है । गाँव में ऐसा कोई घर न था , जिस पर आपके कुछ रुपए न आते हों । झिंगुरी सिंह पर भी उसके बीस रुपए आते थे । होरी ने उससे चालीस रुपए लिए थे , जो ब्याज सहित लगभग सौ रुपए हो गए थे । कारिंदा नोखेराम बिना रसीद दिए लगान के पैसे ले लेते हैं । गोबर जब उससे गंगाजलि उठवाकर अदालत में दोबारा पैसे देने की धमकी देता है तो वह सीधे रास्ते पर आता है ।

दातादीन जब बताता है कि सरकार महाजनों से सूद का दर घटाने को कहेगी तब झिंगुरी सिंह कहता है -''पंडित मैं तो एक बात जानता हूँ, तुम्हें गरज पड़ेगी तो सौ बार हमसे रुपये उधार लेने आओगे, और हम जो ब्याज चाहेंगे, लेंगे । वह सौ में पचीस पहले काट लेने की बात कहता है । महाजन लात और जूते से बात करते हैं । प्रौढ़ आदमियों को कुछ फायदा देकर अपने पक्ष में लेकर दूसरों की गर्दन दबाने का तरीका बताकर वह साहूकारों की कलई खोल देते हैं ।

होरी जब कहता है कि हमने जिस ब्याज पर रुपए लिए, वह तो देने ही पड़ेंगे । फिर ब्राह्मण ठहरे । यह सुनकर गोबर कहता है - ''और कौन यह कह रहा है कि ब्राह्मण का पैसा दबा लो ! मैं तो यही कहता हूँ कि इतना सूद नहीं देंगे । बैंकवाले बारह आने सूद लेते हैं । तुम एक रुपया ले लो । और क्या किसी को लूट लोगे ?

वह पिता से दातादीन के बारे में कहता है -'' किसी को सौ रुपए उधार दिए और उससे सूद में जिन्दगी भर काम लेते रहे । मूल ज्यों का त्यों । यह महाजनी नहीं है, खून चूसना है ।''

होरी ने मंगरू शाह से पांच साल पहले साठ रुपए कर्ज लिया था । सौ रुपए भी वह दे चुका था । पर उस पर साठ रुपए का कर्ज बना हुआ था ।

लगान और सूद के अलावा शोषक वर्ग किसानों का दूसरे ढंग से शोषण करते थे । किसानों को

बेगार, नजराना, डाँड, दस्तूरी, शगुन आदि के रूप में रुपए देने पड़ते थे ।

पुलिस रिश्वत लेती थी । उसमें गाँव के मुखिया लोगों के साझे में यह काम चलता है ।

1.6. राष्ट्रीय आन्दोलन :

प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के प्रति गोदान में विशेष रुचि नहीं दिखाई है । केवल सत्याग्रह संग्राम की चर्चा करके वे भारत में सुराज आने और एक समानता मूलक समाज -व्यवस्था लागू होने की ओर संकेत किया है । इसमें उन्होंने दिखाया है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति रुचि केवल शहरी पात्रों की है । ग्रामीण पात्र इससे प्रभावित नहीं हैं ।

केवल धनिया गाँव के मुखिया लोगों के षडयंत्र का पर्दापाश करती हुई कहती है -'' ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं । गरीबों का खून चूसनेवाले । सूद-ब्याज, डेढ़ी -सवाई, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो । उस पर सुराज चाहिए । जेल जाने से सुराज नहीं मिलेगा । सुराज मिलेगा धरम के न्याय से ।''

इस कथन के अलावा और किसी ग्रामीण पात्र के मुँह से सुराज की बात नहीं कही गई है ।

गोबर शहर जाकर कुछ बातें सीख जाता है, वह सभाओं में आते - जाते रहने से कुछ राजनीतिक ज्ञान हासिल कर लेता है । गाँव में आता है तो मुखिया लोगों के अन्याय का विरोध करने की हिम्मत करता है । होली के अवसर पर मुखिया का मखौल उड़ाता है । तब होरी सोचता है -''लड़के की अक्ल जैसे खुल गई है । कैसी बेलाग बात कहता है ।''

रायसाहब जमींदार होने के नाते सरकार और असामियों से अच्छा संबंध बनाए रखना चाहते थे । इसलिए पिछले सत्याग्रह संग्राम में रायसाहब ने बड़ा यश कमाया था । कौंसिल की मेम्बरी छोड़कर जेल चले गए थे । तब से उनके इलाके के असामियों को उनसे बड़ी श्रद्धा हो गई थी ।

इसके बावजूद हुकूमत से उनका कोई विरोध नहीं था । ''अपनी नजरें और डालियाँ और कर्मचारियों की दस्तूरियाँ जैसी अभी आती थीं ।'' उनकी दुरंगी नीति मेहता को अखरती है ।

मि. खन्ना भी जेल गए हैं । पर वे खद्दर नहीं पहनते । वे प्रेम से शराब पीते हैं । पर जेल में उन्होंने शराब नहीं छुई । जेल में 'ए' क्लास में रहकर भी 'सी' क्लास की रोटियाँ खाई । देशप्रेमी होने का विश्वास उत्पन्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

मिस मालती भी एक बार जेल जाती है । वहाँ नगर कांग्रेस कमेटी की सभानेत्री चुनी जाती है ।

कुँवर नारायण लुकछिपकर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते हैं । फिर भी अधिकारियों को वह बात मालूम पड़ गई थी । फिर भी उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । साल में एक-दो बार गवर्नर साहब भी उनके

मेहमान हो जाते थे ।

मि.तंखा अपनी मित्र मंडली में कौंसिल की चर्चा करते हुए मालती से कौंसिल के लिए चुनाव लड़ने को कहते हैं । वे कहते हैं -''मेरी इच्छा केवल यह है कि कौंसिल में ऐसे लोग जाएँ जिन्होंने जीवन में कुछ अनुभव प्राप्त किया हो और जनता उपयुक्त उम्मीदवार मानती है तो मिर्जा खुर्शीद अपनी भावना व्यक्त करते हैं -'' मेरा बस चले तो कौंसिल में आग लगा दूँ । जिसे हम डेमोक्रेसी कहते हैं, वह व्यवहार में बड़े-बड़े पूँजीपतियों और जमींदारों का राज्य है और कुछ नहीं ।''

मि. तंखा राय साहब की प्रशंसा करते हुए कहते हैं -'' अबकी तो आपने कौंसिल में प्रश्नों की धूम मचा दी । मैं तो दावे के साथ कह सकता हूँ कि किसी मेंबर का रिकार्ड इतना शानदार नहीं है ।''

मि. तंखा दांव-पेच के आदमी थे । चुनाव के अवसर पर उम्मीदवारों को खड़ा करके उनके लिए काम करते थे और अपने लिए दस-बीस हजार कमा लेते थे ।

मिर्जा खुर्शीद हैट पहनते थे । वोटिंग के समय चौंक पड़ते थे और नेशनलिस्टों की तरफ से वोट देते थे ।

मालती बिजली के संपादक ओंकारनाथ से पूछती है -''तो आपके पत्र में विदेशी वस्तुओं के विज्ञापन क्यों होते हैं ? मैंने किसी भी दूसरे पत्र में इतने विदेशी विज्ञापन नहीं देखे । आप बनते तो हैं आदर्शवादी और सिद्धांतवादी, पर अपने फायदे के लिए देश का धन विदेशों में भेजते हुए आपको जरा भी खेद नहीं होता ।''

राय साहब को लगता है कि स्वतंत्र भारत में जमींदारी प्रथा का लोप हो जाएगा । पर वे अपनी दुहरी चाल में सफल होते हैं । एक तरफ असामियों को लूटते हैं, पर वे रायसाहब को अच्छा इन्सान समझते हैं । रायसाहब सत्याग्रह में भाग लेते हैं, उस तरफ अफसरों को डालियाँ डालते हैं ।

1.7 चरित्र -चित्रण:

✻ होरी :

होरी गोदान उपन्यास का नायक है । इसमें आदि से अंत तक होरी की दयनीय और संघर्ष पूर्ण गाथा कही गई है । वह भारतीय कृषक वर्ग का प्रतिनिधि है, जो सदैव शोषक-वर्ग के हाथों यातना सहने को मजबूर है ।

परिवार का मुखिया - बेलारी गाँव का होरी अपने परिवार का मुखिया है । उसके पास पांच बीघा जमीन है । पविार में बेटा गोबर, दो बेटियाँ सोना और रूपा तथा पत्नी धनिया हैं । वह कमर तोड़ मेहनत करके फसल उपजाता है । फिर भी उसे दो वक्त भरपेट भोजन नसीब नहीं होता । अपनी आवश्कयताओं को पूरा करने के लिए उसे समय - समय पर महाजनों से कर्ज लेना पड़ता है । हालांकि

वह जानता है कि इस अंधी गली से छुटकारा पाना मुश्किल है, फिर भी परिस्थिति से लाचार बन जाता है ।

वह सोचता है कि अगर दोनों भाई अलग न हुए होते तो, आज उसके खेत में भी हल चल रहे होते । उसके बच्चों को दूध मिलता । धनिया की जवानी असमय न ढल गई होती ।

धनिया जब गोहत्या का दोष देकर हीरा की तौहीन करता है, तो भाई की इज्जत बचाने होरी बेटे के सिर पर हाथ रखकर सफेद झूठ बोल देता है । पुलिस की तलाशी लेने को वह घर की बेइज्जती समझता है । इसलिए कर्जा लेकर दरोगा को रिश्वत देने को तैयार हो जाता है ।

हीरा गाँव छोड़कर चला जाता है तो होरी उसकी खेती कमाता है । वह इसे अपना धर्म मानकर काम करता जाता है ।

बेटा भाग जाने पर भी बहू झु निया को अपने घर पर रखकर उसके कारण समाज में उठे बवंडर का मुकाबला करता है ।

वह कर्जा लेकर बड़ी बेटी सोना की शादी मथुरा से कर देता है और अभाव के समय बड़े अंतर्द्वंद्व के बाद वर पक्ष से दो सौ रुपये लेकर अधेड़ रामसेवक को देता है, लेकिन इस पैसे को कर्ज मानकर बाद में चुका देने की मानसिकता बना लेता है ।

गोबर के बेटे के लिए दूध जुटाने के लिए एक गाय खरीदना चाहता है । इसलिए कंकड़ तोड़ने का काम करता है । उसके दोनों भाइयों के अलग हो जाने पर भी होरी उनसे पहले की तरह सद्भावना रखता था । हीरा की पत्नी पुनिया को बहू मानता था, यद्यपि वह बहुत झगड़ालू स्वभाव की औरत थी ।

दमड़ी बँसौर चौधरी पुनिया को धक्का देता है तो होरी का खून खौल उठता है । वह चौधरी को एक लात जमाकर बोलता है - अब अपना भला चाहते हो चौधरी तो यहाँ से चले जाओ, नहीं तुम्हारी लाश उठेगी । तुमने अपने को समझा क्या है ? तुम्हारी इतनी मजाल कि मेरी बहू पर हाथ उठाओ ? अलग होने पर भी एक खून के होने से वह पुनिया के अपमान को अपना अपमान समझता है ।

वह भाई हीरा की सहायता करने के लिए पत्नी धनिया को छोड़ने को तैयार हो जाता है । वह सोचता है - धनिया से अब मेरा कोई संबंध नहीं, जहाँ चाहे जाए । वह जब इज्जत बिगाड़ने पर आ गई, तो इस घर में कैसे रह सकती है ।

खेती में पुनिया की सहायता करने पर भी होरी की बदनामी होती है कि उसने उसकी सारी उपज अपने घर ले ली है । एहसान के बदले कलंक लगने पर भी वह अपनी नेकनामी से मुँह नहीं मोड़ता । अपना कर्त्तव्य करता जाता है ।

व्यवहारकुशल - होरी रायसाहब के यहाँ बराबर आता-जाता रहता है ताकि उनकी शुभ -दृष्टि उस पर बनी रहे । उनसे मिलने में वह गर्व का अनुभव करता रहता है । वह सोचता है - मालिकों से मिलते -जुलते रहने का ही तो यह प्रसाद है कि सब उसका आदर करते हैं, नहीं तो पांच बीघे के किसान की औकात क्या है ?

किसी भी समय जरूरत पड़ जाने पर कर्जा मिल सके, इसलिए वह महाजनों से अच्छा संबंध बनाए रखता है । वह साहूकारों से हँसी - मजाक करके कर्जे देनो को फुसलाता है । वह पटेश्वरी और साहूकार की खुशामद करता है तो वसूली के तकाजे नरम पड़ जाते हैं और पुराना कर्ज रहने पर भी नया कर्ज मिल जाता है । होरी रायसाहब के नाटक धनुष यज्ञ में माली की भूमिका में अभिनय करके सबको खुश कर देता है । वह पठान के वेष में आए मेहता को अपने काबू में इसलिए ले जाता है कि वह रायसाहब को सुरक्षा दे सके ।

गरीब - होरी बहुत गरीब है । गरीबी ने उसकी रीढ़ तोड़ दी है । दवादारु न हो सकने से उसके तीन लड़के बचपन में ही मर गए थे । उसके सोलह साल के लड़के गोबर के लिए दूध तक नहीं मिल सका था । लगभग चालीस साल की उम्र में उसके गिरते स्वास्थ्य की ओर संकेत करते हुए धनिया कहती है -तुम्हारी दशा देखकर मैं सूखी जाती हूँ कि भगवान यह बुढ़ापा कैसे कटेगा ? किसके द्वार पर भीख मांगेंगे । होरी कहता है - साठे तक पहुँचने की नौबत न आ पाएगी धनिया । इसके पहले ही चल देंगे ।

वह जब पुनिया के मटर के खेत की मेंड पर अपनी मडैया में रात को सोने जाता है, तो अपने साथ जन्म के पहले के कंबल और पांच साल पहले बनवाई गई फटी मिर्जई ले जाता है, फिर भी बुढ़ापे का साथी था विवाई के फटे पैरों को पेट में डाल कर और हाथों को जाँघों के बीच में दबाकर और कंवल से मुँह चिपाकर अपनी गर्म साँस से अपने को गर्म करने की चेष्टा करता है ।

किसान से मजदूर बन जाना उसके जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी थी । मातादीन के यहाँ वह मजदूरी करते समय उसकी झिड़कियाँ सहता है । वह काम करते समय बेहोश भी हो जाता है ।

ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करते समय उसे लू लग जाती है । जो उसके जीवन का अंत कर देती है । जीवन संघर्ष में बार-बार हारने के बावजूद वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है ।

खेती की मर्यादा का रक्षक - होरी आदर्श कृषक है । हर हालत में किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है । वह जानता है कि खेती करने से उसके एक दिन की मजदूरी एक आने से भी कम होती है । फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर रहना चाहता है ।

उसके लिए संघर्ष करता है । वह पुत्र गोबर से कहता है -''खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है ।

भ्रातृप्रेम में महान –अलग हो जाने पर भी होरी अपने दोनों भाई हीरा और शोभा से प्रेम करता है । सब जब उसके घर पर गाय देखने आते हैं, वह चाहता है कि उसके दोनों भाई भी गाय देखने आ जाएँ । हीरा उस पर झूठा आरोप लगाता है कि उसने घर के पैसों का गबन किया है । हीरा उसकी गाय को मार डालता है, फिर भी भाई को बचाने के लिए वह कहता है - मेरा सुबहा किसी पर नहीं है, सरकार । गाय अपनी मौत से मरी है । बूढ़ी हो गई थी वह भाई के लिए झूठ बोलता है कि हीरा ने गाय को नहीं मारा । हीरा भाग जाता है तो वह दु:खी होता है । उसके परिवार का भार संभालता है । साढ़े पांच साल बाद जब हीरा लौटकर अपनी राम कहानी सुनाकर भाई से माफी मांगता है, तब होरी को बेहद खुशी होती है ।

उदार पिता – होरी एक आदर्श पिता है । वह हर समय बच्चों का खयाल रखता है । वह सोचता है -गोबर को यदि दूध मिल पाता तो कितना अच्छा जवान बन जाता । गोबर घर छोड़कर चला जाता है । अपने मन में पुत्र के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है । वह नोहरी से दो सौ रुपये कर्जा लेकर सोना की शादी कर देता है । मजबूरी में दो सौ रुपये लेकर रामसेवक से रूपा की शादी कर देता है ।

सीधासादा आदमी – होरी स्वभाव से सरल है । वह छल-छेद की उड़ती हुई धूल से दूर रहता है । वह किसी के जलते हुए घर में हाथ सेंकना नहीं जानता । भोला के पास भूसा न होने की बात सुनकर बह बिदक जाता है । वह गाय की रस्सी भोला को लौटाते हुए कहता है - रुपया तो दादा मेरे पास नहीं । हाँ थोड़ा-सा भूसा बचा है । वह तुम्हें दूँगा । चलकर उठवा लो । भूसे के लिए तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा । मेरे हाथ न कट जायेंगे । अपने घर में भूसे की कमी होने के बावजूद वह भोला के घर पर तीन खौंचा भूसा पहुँचा देता है ।

यथार्थ चरित्र – समस्त गुण-दोषों को लेकर एक यथार्थ चरित्र के रूप में होरी पाठकों के सामने आता है । कुछ फायदों के लिए होरी सामान्य आदमी की तरह कुछ भूल कर बैठता है ।

वह भोला को सगाई का झूठा आश्वासन देकर गाय हथियाना चाहता है । फिर भी उसकी आत्मा उसे धिक्कारती है । वह कहता है -'' किसी भाई का नीलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है, वह इस समय तुम्हारी गाय लेने में है । होरी समझता था कि संकट की चीज लेना पाप है ।

वह सोचता है कि अगर वह समय पर भोला के पैसे चुका नहीं सका, तो भोला तगादा करने आएगा, बिगड़ेगा, गालियाँ देगा । इससे उसे शर्म नहीं आएगी । उसे लगता है कि सिद्धि के लिए थोड़ा-सा छल करना जायज है । वह मानता है कि अपने पास कुछ पैसे होने पर भी महाजन से झूठ कहना, बेचते समय सन को गीला करना, रूई में बिनौले भरना आदि दरिद्रता की मजबूरियाँ हैं और ये बुरी बातें नहीं हैं ।

होरी बाँस बेचते समय अपने भाई से ढाई रुपये की बेइमानी करने के लिए दमड़ी बंसोर से सांठ-गांठ कर लेता है । आखिर चौधरी वह दलाली के पैसे न देकर साढ़े सात रुपए होरी के हाथ थमाकर कहता है -''ढाई रुपये पर अपना ईमान बिगाड़ रहे थे । मुझे उपदेश देते हैं । अभी परदा खोल दूं तो सिर नीचा हो जाए । '' इस घटना से होरी बहुत पछताता है । वह कितना लोभी और स्वार्थी है, आज पता चला ।

खलिहान में जब सारा अनाज तुल जाता है, जमींदार और महाजन अपना हक ले जाने के बाद उसके पास केवल पांच सेर अनाज बचता है । इसलिए वह चुपके से रातोंरात भूसा छिपा लेता है ।

पुनिया पर हाथ उठाने से होरी चौधरी को लात मारता है पर खुद सभी के सामने धनिया को पीटता है । पर इससे उसे पश्चात्ताप है और वह मरते समय धनिया से माफी मांग लेता है ।

भोला को गाय के रुपए लौटाने में देर होने से वह गाली सहने को तैयार है, फिर सोचता है - जो आदमी ऊपर इतना विश्वास करे उससे दगा करना नीचता है । एक समय वह गोबर को आलसी मानता । है फिर कहता है कि इस उम्र में यह स्वाभाविक है ।

भाग्यवादी – होरी भाग्य और कर्म पर अखंड विश्वास रखता है । वह मानता है कि उसकी गरीबी और दु:ख -दुर्दशा सभी पूर्व जन्म के पाप का फल है । सब प्रकार का सुख -भोग रायसाहब के पूर्वजन्म के पुण्य का फल है । पाखंडी दातादीन का होरी इसलिए सम्मान करता है कि वह ब्राह्मण है । ब्याज की दर अधिक जानते हुए भी वह कर्जे की पाई-पाई चुका देना चाहता है । उसका दृढ़ विश्वास है कि ब्राह्मण का पैसा हरगिज नहीं पचेगा ।

वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर के प्रतिनिधि मानकर उनके अनुचित फैसले को सिर झुका कर मान लेता है । इसलिए वह खलिहान का सारा अन्न दण्ड के रूप में दे देता है । वह कहता है ''पंच में परमेश्वर रहते हैं । उसका जो न्याय है वह सिर आँखों पर ।''

भोला जब उसके घर से बैल खोलकर ले जाने लगता है और सभी गाँववाले होरी के पक्ष में तर्क रखते हैं, तब होरी कहता है -''अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोल लो ।'' सचमुच भोला बैल ले जाता है इसे भाग्य का विधान मानकर होरी सहने को विवश हो जाता है ।

वह बेटे गोबर को समझा देता है कि छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं । संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है ।

कर्ज के शोषण से घायल –कर्जा तो मुँह बाये होरी को निगल जाने को सतत तैयार रहता है । उसके साहूकार हैं - दातादीन, मंगरू, साहुआइन, नोहरी, रामस्वरूप । बिरादरी में नाक न कटे . इसलिए अपनी औकात के हिसाब से वह सामाजिक कार्यों में खर्च करता है । भाइयों से अलग होते

समय उसने जो कर्जा लिया था, वह बढ़ता जाता है । उसने दातादीन से तीस रुपए लेकर आलू बोए थे । आलू चोर ले गए । अब कर्जा ब्याज सहित दो सौ रुपए हैं । वह सोचता है इस तरह सूद बढ़ता जाएगा तो उसका घर द्वार सब नीलाम हो जाएगा । वह मजदूरी से एक अधेड़ रामसेवक से रूपा की शादी करके दो सौ रुपये लेता है । उसे बाद में चुकाने को मन बना लेता है फिर भी इस कार्य से उसकी अंतरात्मा विलाप करती है ।

धर्म की मर्यादा का रक्षक – राय साहब गोचर के लिए चारागाह छोड़ देते हैं तो होरी उन्हें प्रजापालक मानता है ।

वह स्वयं धर्म की मर्यादा की रक्षा करने के लिए बहू झुनिया को घर में रखकर सारी कठिनाइयाँ झेलता है, पर उसे घर से निकालने को तैयार नहीं होता ।

बिरादरी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए वह सारा गल्ला सिर पर ढोकर पंचों को दे देता है । वह मकान को गिरवी रखकर दंड भरता है ।

मातादीन जब सिलिया का परित्याग कर देता है, होरी उसे शरण देता है । वह मानवता का आँचल कभी नहीं छोड़ता, चाहे उसके लिए उसे कितनी ही विपत्ति क्यों न सहनी पड़े ।

होरी धनिया की फटकार सहता है । पुत्र का व्यंग्य -बाण सहता है । महाजन की गालियाँ, मालिक की धमकियाँ सब कुछ सहकर वीर योद्धा की तरह जीवन संग्राम में लड़ता है । अंत में वह मिट जाता है । उसकी हार हार नहीं है, कर्म के लिए प्रेरणा है । वह मर जाता है पर मरकर अमर हो जाता है । सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक तंगी उसे मिलकर लहू-लुहान कर देती है । फिर भी एक कृषक के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखने में वह आप्राण प्रयास करता है ।

लेखक की राय में - जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ, मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं । कौन कहता, जीवन -संग्राम में वह हारा है । यह उल्लास, यह हर्ष, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं । इन्हीं हारों में उसकी विजय है । उसके टूटे -फूटे वस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं ।

होरी अकेले में पलायनवादी लगता है, विरोधी मनोवृत्ति वाला लगता है, अपने निर्णय बदलते हुए दिखाई देता है । वह अपने -आप में अधूरा लगता है । पर उसके चरित्र को धनिया पूर्णता देती है । पति-पत्नी मिलकर वह पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

✻ धनिया :

धनिया होरी की पत्नी है । गृहस्थ की भट्टी में सब कुछ झोंककर वह छत्तीस साल की उम्र में वृद्धा बन गई है । उसके सारे बाल पक गए हैं । चेहरे पर झुरियाँ पड़ गई हैं । सुन्दर गेहुंआ रंग सांवला हो गया है । आँखों को कम सूझता है ।

उसके तीन संतानों की मौत हो गई । अब बेटा गोबर सोलह साल, बारह साल की सोना और सात साल की रूपा है । उसका मन कहता है कि अगर दवादारु ठीक से होती तो वे बच जाते ।

साहसी – धनिया गरीब है, पर किसी से नहीं डरती । जो सही हो और जो मन में आए, वह उसे बे रोक टोक बोल देती है । उसे लोग मुँहजोर और लड़ाकू मानते थे । वह जब अपनी बात पर अड़ जाती है, तब सामाजिक बंधन की परवाह नहीं करती ।

पुत्र गोबर जब विधवा झुनिया को गर्भवती बनाकर शहर भाग जाता है, धनिया साहस दिखाकर झुनिया को अपने घर में रख लेती है । समाज के डर से उसे बाहर नहीं करती वरन् पुत्र की कायरता को धिक्कारती है । मातादीन जब अपनी रखैल चमारिन सिलिया को घर से निकाल देता है तब वह सिलिया को अपने घर में शरण देती है । गाय की ईर्ष्या करने वाले देवर हीरा के लिए करती है -सवेरा होते ही लाला को थाने नहीं पहुँचा दूँ तो असल बाप की नहीं ।

पुलिस दारोगा और पंच होरी से रिश्वत लेते समय धनिया अंगोछे को झटक देती है तो रुपये जमीन पर बिखर जाते हैं । वह नागिन की तरह फुफकारती है - अंजुरी भर रुपये लेकर चला है, इज्जत बचाने । ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत । वह दारोगा की तलाशी की धमकी से नहीं डरती ।

दारोगा जब कहता है कि इस शैतान की खाला ने हीरा को फंसाने के लिए स्वयं जहर दिया है, तब धनिया इसका मुँह तोड़ जवाब देती है - हाँ दे दिया, अपनी गाय को मार डाला । तुम्हारी तहकीकात में यही निकलता है तो यही लिख दो । पहना दो मेरे हाथ में हथकड़ियाँ । देख लिया तुम्हारा न्याय और तुम्हारी अक्ल की दौड़ । वह ललकार कर कहती है -मैं दमड़ी भी नहीं दूंगी , चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े ।

वह वहाँ के उपस्थित मुखिया, पटवारी, साहूकार किसी की परवाह नहीं करती । वह कहती है- यह हत्यारे गाँव के मुखिया हैं । गरीबों का खून चूसनेवाले सूद-ब्याज डेढ़ी-सवाई, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो । उस पर सुराज चाहिए । जेल जाने से सुराज न मिलेगा, सुराज मिलेगा धरम से, न्याय से । दरोगा धनिया को कहता है - औरत दिलेर है । दातादीन झुनिया को घर पर रखकर मुसीबत मोल न लेने का सुझाव देता है तो धनिया निर्भीकता से व्यंग्य कसती है - हमको कुल प्रतिष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते । वह उनसे कहती है

जो काम बड़े-बड़े आदमी करते हैं उनसे कोई कुछ नहीं बोलता । उनको कलंक नहीं लगता । पर छोटे आदमी उसे करते हैं तो उनकी मर्यादा बिगड़ जाती है । उनकी नाक कट जाती है । पंचों के अन्याय और दंड का विरोध करते हुए धनिया कहती है - पंचो ! गरीब को सताकर सुख न पाओगे । इतना समझ लेना, हम तो मिट जाएँगे । कौन जाने इस गाँव में रहें, या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको भी जरूर ही जरूर लगेगा ।

होरी डाँड स्वीकार करने को कहता है तो धनिया दाँत किटकिटाकर कहती है - मैं न एक दाना दूँगी न एक कौड़ी डाँड । जिसमें बूता है चलकर मुझसे ले ले ।

बिरादरी से निकाल दिए जाने की धमकी उस पर असर नहीं करती है । वह कहती है -''बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत नहीं हो जाएगी । अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खाएँगे । ''

होरी पंचों को सारे रुपये दे देता है तो धनिया उसको फटकारते हुए कहती है - न हुक्का खुलता तो हमारा क्या बिगड़ जाता । मेरे सामने बड़े बुद्धिमान बनते हो । बाहर तुम्हारा मुँह क्यों बन्द हो जाता है ? वह चाहती है कि होरी को पंचों के अन्याय का विरोध करके कहना था कि 'तुम कहाँ के बड़े-बड़े धर्मात्मा हो' जो दूसरों पर डाँड लगाते फिरते हो । तुम्हारा तो मुँह देखना भी पाप है ।'

वह पंचों को राक्षस मानती है । वे डाँड के बहाने गरीबों की जमीन -जायदाद छीन लेना चाहते हैं । वह पति को समझाती है - ''तुम इन पिशाचों से दया की आशा करते हो । सोचते हो दस-पांच मन निकालकर दे देंगे । मुँह धो रखो ।

सत्य की शक्ति उसे निडर बना देती है । वह अपने निर्णय में अडिग रहती है ।

आदर्श माता – धनिया स्वभावत: स्नेहशील है । वह गोबर, सोना और रूपा से बहद प्यार करती है । उनके ऊपर कोई भी संकट आने नहीं देती । बहू झुनिया से वह बेटी की तरह प्यार करती है । भोला होरी के घर पर आकर झुनिया को भलाबुरा कहता है तो जब झुनिया घर से निकल जाने को तैयार होती है तो धनिया का मातृप्रेम उमड़ पड़ता है । उसे घर के भीतर जाने का आदेश देकर पूरा संरक्षण देती है । झुनिया इस घटना से इतनी प्रभावित होती है । वह अपनी अभिलाषा व्यक्त करती है - भगवान मुझे फिर जन्म दें तो तुम्हारी कोख में दें ।''

बाद में जब गोबर झुनिया को शहर ले जाने को चाहता है, धनिया इसका विरोध करती है । पुत्र को दोषी न मानकर झुनिया को नागिन मानती है वह सोचती है कि यह डाइन बनकर पुत्र को उससे छीन लेती है ।

वह पोते को बहुत प्यार करती है । उसे उबटन मलती, काजल लगाती, सुलाती और प्यार करती है । पर वह दूर चले जाने पर उसकी आत्मा रो उठती है ।

गोबर उसे भला-बुरा कहता है । जाते समय माँ के पैर छूने से इनकार कर देता है । गोबर चला जाता है तो धनिया रो पड़ती है । उसे इतना दुःख हो रहा है मानो कोई उसके हृदय को चीर रहा हो ।

हीरा गाय को विष दे देता है तो पहले वह उसे विश्वास नहीं कर पाती, क्योंकि उसने हीरा को पाला है । स्नेह दिया है ।

रामसेवक के साथ अपनी बेटी को विवाह देना वह नहीं चाहती थी । पर मजबूरी से बाद में राजी हो जाती है ।

आदर्श पत्नी - सहनशील - धनिया दूसरों के लिए कष्ट सहती है । संयुक्त परिवार में देवर-देवरानियों के लिए कष्ट सहती है । आराम की रोटी नहीं मिलती फिर भी कर्त्तव्य से कभी नहीं डिगती । झुनिया और सिलिया को अपने घर शरण देती है । उनके लिए कष्ट सहती है, पर हँसते -हँसते दुःख के विष को पी जाती है । होरी यथार्थ रूप से उसके लिए कहता है -''बेचारी जब से घर में आई, कभी भी आराम से बैठी । डोली से उतरते ही सारा काम सिर पर उठा लिया । तब देवरों के लिए मरती थी । अब बच्चों के लिए मरती है ।

धनिया को घर के लिए पेट-तन काटना पड़ा है । एक-एक लत्ते के लिए जीवन भर तरसी है । उसने एक-एक पैसा प्राणों की तरह संचित किया है । अभाव में सभी को खिलाकर उसे पानी पीकर सोना पड़ा है ।

होरी आवेश में आकर धनिया की ओर लपकता है । सभी के सामने बेइज्जती होने से धनिया को ठेस लगती है । पर जब होरी को ज्वर आया तो उसकी ममता जागती है - वह सोचती है - लाख बुरा हो, पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं । सुख किया है तो उसीके साथ, दुःख भोगा है तो उसी के साथ । अब चाहे वह अच्छा है या बुरा, अपना है ।

वह गाय खरीदने की लालसा से पति के साथ देर रात तक सुतली कातती है । काम करते समय होरी को लू लग जाती है । धनिया दौड़कर आती है । वह होरी को छूती है तो उसका कलेजा सन से हो गया । वह रोती है, आम भूनकर पना बनाकर पिलाती है । होरी के शरीर पर गेंहूँ की भूसी की मालिश करती है । लोग गोदान के लिए कहते हैं । वह सुतली बेचकर रखे गए बीस आने पैसे पति के ठंडे हाथ में रखकर दातादीन से कहती है -''महाराज , घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा । यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है ।'' फिर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ती है । धनिया जो कष्ट सहती है, वह अपने लिए नहीं, वरन् परिवार के लिए और न्यायपथ पर चलने वाले असहायों के लिए । वह असहायों के लिए जितना कोमल है, अत्याचारियों के लिए उतना कठोर है । वह स्वाभिमानी और साहसी होने के नाते सभी

अन्यायों का डटकर विरोध करती है । गाँव की सारी घटनाओं के केंद्र में वही है । वह उपन्यास की नायिका है । होरी की सहधर्मिणी और सहकर्मिणी भी है । वह होरी के चरित्र को पूर्णता प्रदान करती है । उसके बिना होरी का जीवन अधूरा लगता है ।

जब होरी पर संकट मंडराता है, धनिया बेचैन हो जाती है । उसकी रक्षा करने तैयार रहती है । वह चाहती है कि उसका सर्वस्व चले जाने पर भी पति सकुशल रहें । मजाक में होरी कहता है वह साठ साल की उम्र तक रह नहीं पाएगा । यह सुनकर धनिया काँप जाती है । वह जैसे अपने नारीत्व के संपूर्ण तप और व्रत से अपने पति को अभयदान दे रही थी ।

धनिया यौवन काल में बहुत सुन्दर थी । उसके द्वार पर पटेश्वरी झिंगुरी सिंह चक्कर लगाते थे । किसी को कुछ कहने का साहस न था । पटेश्वरी को उसने ऐसा मुँह तोड़ जवाब दे दिया था कि उसे वह भूल न सका ।

वह स्वयं पतिव्रता थी । इसलिए पतिव्रता सिलिया को अपने घर में जगह देती है ।

वह पति का पथ-प्रदर्शन करती है । पर सरल होरी धर्म, बिरादरी, मर्यादा और पंचों आदि के डर से सब अनसुना कर देता है और कष्ट सहता है ।

धनिया पति को डांटती है, पति के कारण भाग्य पर रोती है । लेकिन वह दूसरों के सामने पति की रक्षा करती है । पति का पक्ष लेकर गोबर से बिरादरी में रहने की मजबूरी पर प्रकाश डालती हुई कहती है - ''बेटा तुम भी अंधेर करते हो । हुक्का पानी बंद हो जाता, तो गाँव में निर्वाह होता ! जवान लड़की बैठी है । उसका भी कहीं ठिकाना लगाना है कि नहीं ?''

अनुभव संपन्न नारी -धनिया गाँव के लोगों की ईर्ष्या और पर -दुःख विभोरता आदि गुणों से परिचित है । इसलिए गाय को सही सलामत रखने के लिए आँगन में नाँद गड़वाना चाहती है ।

हीरा से झगड़ा होने पर हीरा उसे जूते मारने की धमकी देता है तो सब हीरा के खिलाफ हो जाते हैं । धनिया इस अवसर का फायदा उठाकर हीरा को धक्का देकर गिरा देती है । इससे उसका फौलादी व्यक्तित्व उभर कर सामने आ जाता है ।

वह मानती है कि जमींदार के जेल जाने से सुराज नहीं मिलता । धर्म और न्याय पर आधारित समाज में गरीबों को कुछ राहत मिलेगी तो वही सुराज होगा ।

वह भोला को सजग करा देती है कि तुमने नोहरी से शादी करके अच्छा नहीं किया । वह कहती है -औरत को अपने वश में रखने का बूता न था, तो सगाई क्यों की थी ? वह स्पष्ट कर देती है कि वह पत्नी सेवा कर सकती है, जिसने तुम्हारे साथ जवानी का सुख उठाया हो ।

कभी-कभी धनिया के चरित्र में विरोधाभास मिलता है । गाय आने पर वह खुश होती है । पर अनागत विपत्ति की शंका से डर जाती है । गाय मर जाती है तो कहती है -''इस निगोड़ी गाय का पैर जिस दिन से आया, घर तहस-नहस हो गया ।

होरी के विचार से सहमत न होकर वह पति पर बिगड़ती है तो दूसरे क्षण में उसकी असहायता देखकर द्रवित हो जाती है ।

होरी को बहुत प्यार करती है । स्वयं मिटकर उसे सही सलामत रखना चाहती है, पर कभी-कभी भला-बुरा कह देती है ।

कभी गोबर को प्यार करती है, कभी दोष देती है । कभी बहू को प्यार करती है, कभी नागिन कहती है ।

वह एक बहिर्मुखी पात्र है । मन के दुःख को क्रोध रूप में प्रकट कर देती है, लेकिन एक आदर्श गृहणी के रूप में अपना कर्त्तव्य सही रूप से निभाती है ।

✻ गोबर :

गोबर होरी और धनिया का बेटा है । उसका स्वभाव अपने पिता से विपरीत है । वह प्रत्येक अन्याय का विरोध करता है । वह नई पीढ़ी के असंतोष का प्रतीक है । धर्मभीरुता, सरलता और भाग्यवादिता के कारण तथा साहूकार के कर्जे की चक्की में पिस जाने के कारण पिता की असहायता देखकर गोबर विद्रोही मनोभाव संपन्न नवयुवक बन जाता है । उसके चरित्र में विभिन्न घात-प्रतिघात के बीच विकास दिखाई पड़ता है । उसे किसानी में कोई मर्यादा दिखाई नहीं पड़ती । उसका सिद्धांत है कि पैसा ही सब कुछ है । उसके विचार से ''जिसके साथ चार पैसे गम खाओ वही अपना । खाली हाथ तो माँ-बाप भी नहीं पूछते ।''

सरल युवक – गोबर एक सरल युवक है । भोला के घर पर भूसा लेते समय और गाय लाते समय उसकी विधवा बेटी झुनिया से उसका प्रेम -संबंध स्थापित हो जाता है । झुनिया से उसके मिलने की पूर्व स्थिति इस प्रकार थी - उसकी दृष्टि में अभी उसके यौवन में केवल फूल लगे थे, जब तक फल न लग जाएँ उस पर ढेले फेंकना व्यर्थ बात थी और किसी ओर से प्रोत्साहन न पाकर उसका कौमार्य उसके गले से चिपका हुआ था ।

वह झुनिया से शारीरिक संबंध रखकर उसे जब गर्भवती कर देता है, तब माँ-बाप, समाज किसी का सामना करने की ताकत उसमें नहीं रह जाती । वह फुसलाकर झुनिया को अपने घर तक पहुँचाकर छुपकर शहर भाग जाता है । वह समझता है कि वह धन कमाकर घर लौटेगा तो धन के बल पर

गाँववालों का मुँह बंद कर देगा और दादा-अम्मा उसे कुल-कलंक न समझ कर कुल तिलक समझेंगे ।

मिर्जा खुर्शीद की रक्षा करते हुए हड़ताल में वह पिट गया । बुरी तरह घायल हुआ । हाथ की हड्डी टूट गई । झुनिया उसकी सेवा करती है । गोबर को लगता है कि पत्नी को सताने का फल उसे मिला है ।

झुनिया मजदूरी करके परिवार चलाने लगती है । तो गोबर का हृदय परिवर्तन हो जाता है । वह मानो प्रायश्चित करने को तैयार हो जाता है । उसके जीवन का रूप बदल जाता है । उसके मन में पूँजीवादी समाज -व्यवस्था के प्रति आक्रोश है, पर मानसिक दृढ़ता के अभाव में वह क्रांतिकारी नहीं बन पाता ।

व्यवहार कुशल – गोबर अपनी व्यवहार कुशलता से भोला का क्रोध शांत कर देता है । वह जब कहता है - 'काका, मुझसे जो कुछ भूल-चूक हुई, उसे क्षमा करो तब भोला प्रसन्न हो जाता है ।

वह नोखेराम को क्रोध दिखाकर और सारी बातें जमींदार रायसाहब अमरसाल सिंह तक पहुँचाने की धमकी देकर सीधे रास्ते पर ले आता है । दुबारा लगान वसूल करने के विचार से नोखेराम विरत हो जाता है । गोबर अपनी मित्र मंडली से मिलकर नाटक खेलकर सभी का प्रिय पात्र बनता है ।

निर्दय – वह झुनिया को गर्भवती करके अपने घर तक पहुँचाकर शहर भाग जाता है । जिसका जीवन भर साथ देने का वादा किया था, उसे भूल-सा जाता है । शहर जाते समय अपनी माँ से झगड़ता है, पाँव नहीं छूता, माँ के दिल को दु:ख पहुँचाता है । पिता को भी जली-कटी सुनाता है । उनकी सरलता की खिल्ली उड़ाता है । बहाना बनाकर झुनिया को पीटता है । गर्भवती झुनिया की संतान के जन्म होने की कोई सावधानी नहीं बरतता है । अपने बेटे की मौत उसे उतना नहीं खलती ।

अन्याय के प्रति विद्रोही तेवर – गोबर जानता है कि जमींदार , साहूकार शोषण और अन्याय का जाल फैलाकर गाँव के निरीह किसानों की दशा बदतर कर देते हैं । इसलिए वह नहीं चाहता कि पिता जमींदार की चापलूसी करे । वह उनसे कहता है - ''यह तुम रोज -रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों जाते हो ? बाकी न चुके तो प्यादा आकर गालियाँ बकता है । बेगार देनी ही पड़ती है । नजर-नजराना सब तो हमसे भराया जाता है । फिर किसी को क्यों सलाम करें ।

जमींदार अमरपाल सिंह अपनी स्थिति से असंतोष व्यक्त करते हैं । किसानों के पक्ष में होने की बात करते हैं । वे असल में शोषक वर्ग के हैं । गोबर उनकी चाल समझ सकता है । वह कहता है कि यदि जमींदार अपनी स्थिति से असंतुष्ट है तो वह अपना इलाका दे दे और बदले में उसके खेत, बैल हल और कुदाल ले ले । वह जमींदार की धूर्तता की ओर संकेत करते हुए कहता है -'' जिसे दु:ख होता है, वह दर्जनों मोटर नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा पूरा नहीं खाता और न नाच-रंग में लिप्त रहता है ।''

वह जानता है कि जिसके हाथ में रहती लाठी है, वह गरीबों को कुचल डालता है ।

कारिंदा नोखेराम होरी से लगान वसूल कर लेता है, पर रसीद नहीं देता । वह लगान दुबारा लेने की मंसा लेकर होरी के यहाँ प्यादा भेजता है तो गोबर आग बबूला होकर जाकर नोखेराम को डाँटता है । वह नोखेराम से कहता है कि मैं अदालत में गंगाजली उठवाकर रुपये दूँगा । तुम रसीद न देने का प्रमाण कर दूँगा । इतना सुनकर नोखेराम नरम पड़ जाता है, तुम थोड़े से रुपए के लिए झूठ थोड़े ही बोलोगे कह कर उसकी खुशामद करता है ।

भाग्य में अविश्वास – गोबर भाग्यवादी नहीं है । वह मानता है कि किसानों के दु:ख का कारण भाग्य नहीं, बल्कि महाजनों-साहूकारों का कुचक्र है । वह ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड और भाग्यविधान पर विश्वास नहीं करता । वह पिता से कहता है कि भगवान ने सभी को बराबर बनाया है । वह मानता है कि हमें अपना भाग्य स्वयं बनाना होगा । अपनी बुद्धि और साहस से इन आफतों पर विजय पाना होगा ।''

धनवान वर्ग के धर्म-भाव और पूजा-पाठ को वह पाखंड मानता है । वह चुनौती देता है कि यदि वे भूखे-नंगे रहकर पूजा-भजन करें, तो हम देखें । एक दिन खेत में ईख गोड़ना पड़े तो वे सारी भक्ति भूल जायेंगे ।

साहसी – गोबर साहसी है । वह रायसाहब के दोषों की आलोचना करता है । दातादीन को धमकाता है । नोखेराम की गलतियों का भंडाफोड़ करता है । उसे देखकर चौपाल के साहूकार वर्ग भयभीत हो जाते हैं ।

कानून का जानकार – वह शहर में रहकर राजनीतिक और कानूनी दृष्टि से सजग हो जाता है । सभाओं में आने-जाने से राष्ट्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है । सामाजिक रूढ़ियों और लोक -निंदा का भय उसमें कम हो जाता है । दातादीन को हिसाब लगाकर उसके ब्याज का परिमाण बता देता है लगान चुकाते समय रसीद लेने पर जोर देता है । वह पिता से कहता है कि यदि वह रसीद नहीं देता तो डाक से रुपया भेजो ताकि -धांधली न हो पावे । वह साहूकारों की करतूतों को उजागर करने के लिए उन्हें अदालत में खींचने की धमकी देता है । होली पर मुखिया का व्यंग्य करता है तो होरी सोचता है - लड़के की अक्ल जैसे खुल गई है । कैसी बेलाग बात कहता है ।

स्वार्थी – गोबर अपने आचरण से सरल होते हुए भी स्वार्थी प्रतीत होता है । वह झुनिया को गर्भवती कर देता है । उसे अपने घर पहुँचा कर देर से आने का वादा करके चुप से शहर चला जाता है । वह खबर नहीं रखता कि झुनिया का फिर क्या हुआ ?

वह शहर में जाकर पहले मिर्जा खुर्शीद के पास काम करता है, उनके यहाँ रहता है । पर बाद में

जब मिर्जा खुर्शीद से पांच रुपया उधार मांगता है, तो वह पैसे नहीं है कहकर बात टाल देता है । वह अहसान नहीं मानता । पैसे वापस नहीं मिलेंगे, यह जानकर बहाना बना देता है । वह उसी समय अल्लादीन को रुपए उधार देता है ।

पिता उसका पालन-पोषण करके उसे बड़ा करते हैं । वह उनके मुँह पर कहता है कि वह लावारिस की तरह बढ़ा है । गोबर स्वार्थी बन कर माँ-बाप के सपने चूर-चूर कर देता है ।

माँ-बाप कितनी मेहनत करते हैं । कितना कष्ट उठाते हैं । पर वह माँ से झगड़ता है । शहर जाते समय माँ से बात नहीं करता । पांव नहीं छूता । क्रोध से यहाँ तक कह देता है कि मैं उसे अपनी माता नहीं समझता । वह साफ कह देता है कि मैं पिता का कर्जा नहीं चुका सकता और बहनों की शादी नहीं कर सकता । गोबर नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है । मालती -मेहता के संपर्क में आकर उसके आचरण मार्जित होता है । उसे अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति उसकी इच्छा को साकार होने नहीं देती । वह पलायनवादी बन जाता है ।

* डॉ. मेहता :

डॉ. मेहता युनिवर्सिटी में दर्शन शास्त्र के अध्यापक हैं । वे आधुनिक शिक्षित और बुद्धिजीवी हैं । समाज में उपस्थित सभी समस्याओं पर वे अपना विचार रखते हैं । वे शहरी पात्रों की मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

उनके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

लज्जाशीलता – मेहता अविवाहित हैं । वे महिलाओं की सभा सोसाइटी में घबरा जाते हैं । लेखक ने उनके बारे में बताया है बिना ब्याहे और नवयुग की रमणियों से पनाह मांगते थे । पुरुषों की मंडली में खूब चहकते थे । मगर ज्योंही कोई महिला आई , आपकी जबान बंद हुई ; जैसे बुद्धि पर ताला लग जाता था । स्त्रियों से विशिष्ट व्यवहार करने तक की सुधि न रहती थी ।

स्पष्टवादी – मेहता स्पष्टवादी हैं । वे सच बोलने से कभी नहीं कतराते । वे किसी की निरर्थक खुशामद भी नहीं करते । वे मालती में अच्छाई देखकर उसका लिहाज करते हैं और उसकी ओर आकृष्ट भी हो जाते हैं । परंतु शिकार खेलने के अवसर पर एक कलूटी जंगली स्त्री के साथ मेहता जब मधुर बातचीत करते हैं, तब मालती ईर्ष्यान्वित हो जाती है । इस पर मेहता नि:संकोच अपनी टिप्पणी देते हैं - कुछ बातें तो उसमें ऐसी हैं कि अगर तुम में होती तो तुम सचमुच देवी हो जाती ।

लेखक प्रेमचन्द मेहता के भाषण के संबंध में कहते हैं -''मेहता को कटु सत्य कहने में संकोच न होता था । मेहता साहब स्त्रियों की सभा में जो भाषण देते हैं और स्त्रियों के सामने जो उनकी कटु और

निष्ठुर आलोचना करते हैं, वह भी उनकी स्पष्टवादिता का प्रमाण है ।''

मेहता शादी के संबंध में अपना स्पष्ट विचार रायसाहब को सुना देते हैं -''क्षमा कीजिएगा आप ऐसा प्रश्न लेकर आए हैं कि उस पर गंभीर विचार करना मैं हास्यास्पद समझता हूँ । आप अपनी शादी के जिम्मेदार हो सकते हैं, लड़के की शादी का दायित्व क्यों अपने ऊपर लेते हैं, खासकर जब आपका लड़का बालिग है और अपना नफा-नुकसान समझता है । कम से कम मैं तो शादी जैसे महत्व के मुकाबले में प्रतिष्ठा का कोई स्थान नहीं समझता ।''

मेहता दोहरी जीवन -दृष्टि से नफरत करते हैं । उनका विचार है कि अगर मांस खाना पसंद है तो खुलकर खाओ । बुरा समझते हो तो मत खाओ । पर बुरा समझना और छिपकर खाना धूर्तता है, कायरता है ।

वे रायसाहब से कहते हैं -'' मानता हूँ आपका अपने आदमियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव है, मगर प्रश्न यह है कि उसमें स्वार्थ है या नहीं । उसमें एक कारण क्या यह नहीं हो सकता कि मध्यम आँच में भोजन स्वादिष्ट पकता है । गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा कहीं अधिक सफल हो सकता है ।''

भावुक और संवेदनशील – मेहता भावुक और संवेदनशील व्यक्ति हैं । गोविंदी के दु:ख से द्रवित होकर वे कहते हैं -'' मुझे न मालूम था आप उनसे इतनी दु:खी हैं, मेरी बुद्धि का दोष, आँखों का दोष, कल्पना का दोष और क्या कहूँ, वरना आपको इतनी वेदना क्यों सहनी पड़ती ?''

धन – मेहता की दृष्टि से धन केवल जीवन -निर्वाह के साधन के रूप में महत्त्व रखता है । सामाजिक विषमता को केवल धन के समान वितरण से मिटाया नहीं जा सकता । क्योंकि छोटे-बड़े का भेद केवल धन से नहीं होता । धनकुबेर भिक्षुओं के पांव पड़ते हैं । राजा भी रूप के सामने विनय -भाव दिखाते हैं ।

विवाह – विवाह के संबंध में मेहता ओंकारनाथ को बताते हैं -'' मैं समझता हूँ मुक्त भोग आत्मा के विकास में बाधक नहीं होता । विवाह तो आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बंद कर देता हैं ।''

''विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है , न स्त्री को । समझौता करने के पहले स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं । मेहता समाज की दृष्टि से विवाहित जीवन को और व्यक्ति की दृष्टि से अविवाहित जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं ।

जीवन – मेहता की राय में प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच में सेवा -मार्ग जीवन को सार्थक बना सकता है । मेहता जीवन के संबंध में गोविंदी को बताते हैं -'' जीवन मेरे लिए आनन्दमय क्रीड़ा है, सरल, स्वच्छन्द, जहाँ कुत्सा, ईर्ष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं । मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता । मेरे लिए वर्तमान सब कुछ है ।''

स्त्री की परिभाषा – मेहता मिर्जा खुर्शीद को स्त्री की परिभाषा इस प्रकार बताते हैं -'' स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है, शांतिसंपन्न है । सहिष्णु है । संसार में जो कुछ सुन्दर है, उसी की प्रतिमा को में स्त्री कहता हूँ । मैं उससे यही आशा रखता हूँ कि उसे मार ही डालूँ तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें न आए । अगर मैं उसकी आँखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूँ, तो भी उसकी ईर्ष्या न जागे । ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पड़ूँगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूँगा ।''

स्त्री पुरुष की यथार्थ स्थिति के संबंध में मेहता का विचार इस प्रकार है -'' मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी बेजबानी से, अपनी कुर्बानी से अपने को बिलकुल मिटाकर पति की आत्मा का अंश बन जाती है ।'' मिसेज खन्ना की तारीफ करते हुए मेहता कहते हैं -'' मैं ऐसी बीबी चाहता हूँ जो मेरे जीवन को पवित्र और उज्वल बना दे, अपने प्रेम और त्याग से ।''

स्त्रियों के पाश्चाशत्य रूप का विरोध करते हुए मेहता कहते हैं -''मुझे खेद है - हमारी बहिनें पश्चिम का आदर्श ले रही हैं, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गई है । पश्चिम की स्त्री स्वच्छन्द होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके । हमारी माताओं का आदर्श कभी विलास नहीं रहा ।''

वे पश्चिम की अंधी नकल न करके अच्छी चीजों को ग्रहण के पक्ष में रहते हैं । पश्चिम की स्त्रियों का भोग-लालसा में उच्छृंखल हो जाना और आमोद-प्रमोद के मोह में अपनी लज्जा और गरिमा खो बैठना उनको अखरता है ।

वीमेन्स लीग में भाषण देते हुए मेहता स्त्री का गुणगान करते हुए कहते हैं - स्त्री पुरुष से उतनी श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधेरे से । मनुष्य के लिए क्षमा और त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं । नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है ।

परिश्रमी – मेहता समय के पाबन्दी हैं । वे समय के दुरुपयोग को पाप समझते हैं । वे आधी रात को सोते थे और घड़ी रात रहे उठ जाते थे । कैसा भी काम हो, उसके लिए कहीं न कहीं समय निकाल लेते थे ।

बहुमुखी प्रतिभा – मेहता हर काम में रुचि रखते थे । वे कभी कबड्डी खेलते हैं तो कभी मजदूर -आन्दोलन में भी भाग लेते हैं । वे शिकार खेलने जाते समय मालती को कंधे पर बिठाकर नाला

पार करते समय रोमांटिक प्रवृत्ति का परिचय देते हैं । उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से मालती उन पर फिदा हो जाती हैं । वे मि. खन्ना और मिसेज खन्ना के बीच समझौता करा देते हैं । वे अपने विषय के अच्छे जानकार हैं । वे किसी भी समस्या पर अपना सुलझा हुआ दृष्टिकोण रख सकते हैं ।

वोट- वीमेन्स लीग में सरोज और अन्य युवतियाँ मांग रखती हैं कि हमें पुरुषों के बराबर वोट मिलना चाहिए । मेहता वोट पर अपनी राय देते हैं - ''वोट नए युग का मायाजाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है, उसके चक्कर में पड़कर आप न इधर की होंगी न उधर की । संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से मिलता है । वह आपको मिले हुए हैं ! उन अधिकारों के सामने वोट कोई चीज नहीं ।''

प्रेम – वीमेन्स लीग में सरोज के प्रेम -संबंधी प्रश्न के उत्तर में मेहता कहते हैं कि जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत रूप, उसी तरह जैसे संन्यास केवल भीख मांगने का संस्कृत रूप है । वह प्रेम अगर वैवाहिक जीवन में कम है, तो मुक्त विलास में बिलकुल नहीं है । सच्चा आनन्द , सच्ची शांति केवल सेवा -व्रत में है । सेवा सीमेंट की तरह है जो दंपति को जीवन पर्यान्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है । जहाँ सेवा का अभाव है, वहीं विवाह -विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है ।

मालती ने मेहता से पूछा कि तुम कैसे प्रेम से संतुष्ट होगे ? उत्तर में महेता ने कहा -'' बस यही कि जो मन में हो, वही मुख पर हो । मेरे लिए रंग रूप, हाव-भाव और नाजो-अन्दाज का मूल्य बस उतना ही है, जितना होना चाहिए ।'' प्रेम संबंध में मेहता कहते हैं -प्रेम जब आत्मा -समर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है । उसके पहले ऐयाशी है ।

दानशील – मेहता मासिक एक हजार रुपए वेतन पाने पर भी छात्रों, विधवाओं और असहायों की मदद कर देते हैं । इस कार्य के लिए उनको कर्जा भी लेना पड़ता है ।

शोषक समाज से घृणा – मेहता शोषक - समाज से घृणा करते हैं । इसलिए वे मिल मालिक मि. खन्ना को ऊँची नजर से नहीं देखते । पर खन्ना के मिल में आग लगने के बाद उन्हें पश्चाताप होने से मेहता खन्ना की इज्जत करते हैं ।

इस प्रकार मेहता एक आदर्श प्रस्तुत करके समाज में अपना प्रभाव डालते हैं और पाठक वर्ग उनका अनुसरण करने को प्रेरित होते हैं ।

✻ रायसाहब :

रायसाहब अमरपाल सिंह जमींदार हैं । वे सेमरी में रहते हैं । वे अपने समय के उन जमींदारों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो वास्तव में शोषक और प्रजापीड़क होते हुए भी प्रजा-हितैषी और समाज - सेवक होने का दिखावा करते थे ।

सखा कृषक होरी को अपने पक्ष में रखकर अपना उल्लू सीधा करना उनका कुटिल मकसद है । वे जानते हैं कि होरी जैसे भोले-भाले लोग उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा करेंगे और अपने भाग्य की सराहना करेंगे । वे यह आशा भी रखते हैं कि ऐसे लोगों के माध्यम से लगान सगुन के लिए अनुकूल वातावरण भी मिल जाएगा । वे जिस समय होरी से आत्मीयता भरी बातें करते हैं, उसी समय अरदली आकर बताता है कि बेगारी लोग भूखे रहकर काम करने से इनकार कर रहे हैं । यह सुनकर रायसाहब आग बबूला होकर कहते हैं -''चलो, मैं इन दुष्टों को ठीक करता हूँ । जब कभी खाने को नहीं दिया गया, तो आज नई बात क्यों ?''

रायसाहब देशप्रेमी होने का दिखावा करते हैं । वे सत्याग्रह संग्राम में हिस्सा लेकर यश कमा लेते हैं ; कौन्सिल की मेंबरी छोड़कर जेल जाते हैं । इससे आसामियों की उन पर बड़ी श्रद्धा है । यद्यपि उनके इलाके में कोई रियायत नहीं की जाती, डाँड या बेगार की कड़ाई कम नहीं होती, पर सारी बदनामी मुख्तारों पर जाती है । उनकी कीर्ति-पताका चारों ओर उड़ती रहती है । वे आसामियों से हँसकर बोल लेते हैं तो वे लोग कृतकृत्य हो जाते हैं ।

वे अवसरवादी व्यक्ति हैं । वे शहर के बुद्धिजीवियों, बैंकरों, संपादक ओंकारनाथ को दावत देते हैं, उन्हें शिकार पर ले जाते हैं । ये सब वे इसलिए करते हैं कि मौके पर उनसे फायदा उठाया जा सके । वे सरकारी अफसरों, पुलिस और अंग्रेजों को समय-समय पर दस्तूरी भेंट और डाली देकर उन्हें खुश रखते हैं ।

रायसाहब धूर्त हैं । वे अपने व्यवहार में दुहरी नीति अपनाते हैं । वे एक तरफ जेल जाकर देशप्रेमियों की तालिका में अपना नाम दर्ज करा देते हैं तो दूसरी तरफ सरकार को खुश करके रायबहादुर की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं । वे मुँह में स्वदेश नीति की प्रशंसा करते हैं तो व्यवहार में पाश्चात्य ढंग से रहते हैं । वे किसानों से नजराना लेते हैं, तो दूसरी ओर आदर्शवाद की बात करते हैं । वे ओंकानाथ को इसलिए रिश्वत देते हैं कि उनकी छवि को धूमिल करने वाली ऐसी खबर न छपे ।

रायसाहब अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए ओंकारनाथ से कहते हैं -''मुझे किसानों के साथ जीना-मरना है । मुझसे बढ़कर दूसरा उनका हितेच्छु नहीं हो सकता । लेकिन मेरी गुजर कैसे हो ?'' वे स्पष्ट कर देते हैं कि दावत और चंदे के लिए असामियों के घर से ही वे खर्च निकालेंगे । यह सुनकर

व्यंग्य से मेहता कहते हैं-'' गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा सफल हो सकता है ।''

रायसाहब गाँव और शहर को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में आते हैं ।

रायसाहब अंग्रेज हुकूमत के स्तावक हैं । देश -सेवा करने के मोह से उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया । लेकिन इसके लिए वे नहीं पछताते हैं, वे कहते हैं -'' मैं अपने को रोक न सका जेल गया और लाखों रुपयों की जेरबारी हुई और अभी तक उसका तावान दे रहा हूँ । मुझे उसका पछतावा नहीं है, बिलकुल नहीं ।''

बाद में रायसाहब उसके लिए पछतावा करके कहते हैं -'' कांग्रेस में शरीक हुआ उसका तावान अभी तक देता जाता हूँ । काली किताब में नाम दर्ज हो गया ।''

बाद में जब रायसाहब अंग्रेजों की स्तुति करने लगते हैं, परिणाम -स्वरूप हिज मैजेस्टी के जन्मदिन के अवसर पर उन्हें 'राजा ' की पदवी मिल जाती है । जिस समय हिज ऐक्सेलेन्सी गवर्नर ने उन्हें पदवी प्रदान की उस समय उनका मन हर्ष से विभोर हो गया । वे कहते हैं -'' विद्रोहियों के फेर में पड़कर व्यर्थ बदनामी हुई थी । जेल गए, अफसरों की नजर में गिर गए । जिस डी.एस.पी. ने उन्हें पिछली बार गिरफ्तार किया था, उस वक्त वह उनके सामने हाथ बांधे खड़ा था और शायद अपने अपराध के लिए क्षमा मांग रहा था ।''

रायसाहब पतनोन्मुखी जमींदारों के प्रतीक हैं । उनकी पुत्री का तलाक हो जाता है ; पुत्र से झगड़ा हो जाता है । वे जीवन भर कर्जे के बोझ से दबे रहते हैं, फिर भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने के लिए दूसरों को दावत देते रहते हैं । फिर भी उनके लिए अनुकूल समय आता है । वे बरबाद होने से संभल जाते हैं । उनके तीन मंसूबे पूरे हो जाते हैं । उनकी कन्या की शादी हो जाती है । उन्हें होम मेंबरी मिल जाती है और मुकदमे में जीत हासिल होने से ताल्लुकदारों में प्रथम श्रेणी का स्थान प्राप्त कर लेते हैं ।

✻ झुनिया :

झुनिया भोला की विधवा बेटी है । गोबर जब भोला के घर पर भूसा का खोंचा लेकर पहुँचता है । वहीं झुनिया से उसकी मुलाकात होती है । वह विधवा होने पर भी सुन्दर है । उसका रूप-वर्णन लेखक इस प्रकार करते हैं -''उसकी आँखें लाल थीं और नाक के सिरे पर भी सुर्खी थी । मालूम होता था अभी सोकर उठी है । उसके मांसल स्वास्थ्य सुगठित अंगों में मानो यौवन लहरें मार रहा था । मुँह बड़ा और गोल था, कपोल फूले हुए, आँखें छोटी और भीतर धंसी हुई, माथा पतला, पर वक्ष का उभार और गाल का वही गुदगुदापन आँखों को खींचता था । उस पर छपी हुई गुलाबी साड़ी उसे और भी शोभा प्रदान कर रही थी ।''

पहली मुलाकात में गोबर झुनिया दोनों हँसी-मजाक करते हैं तो सहसा झुनिया को अपने बैधव्य की याद आ जाती है और वह सजग हो जाती है । लेखक झुनिया की मनोदशा का चित्रण इस प्रकार करते हैं -'' वह विधवा है । उसके नारीत्व के द्वार पर पहले उसका पति रक्षक बना बैठा रहता था । वह निश्चिंत थी । अब उस द्वार पर कोई रक्षक न था, इसलिए वह उस द्वार को सदैव बंद रखती है । कभी-कभी घर के सूनेपन से उकता कर वह द्वार खोलती है ; पर किसी को आते देखकर भयभीत होकर दोनों पट भेड़ लेती है ।''

झुनिया एक गृहस्थ की बालिका थी । लोग उससे परिहास करते हैं । ससुराल में दूध पहुँचाने ग्राहकों के घर जाते समय और विधवा होने पर भी दही बेचने उसे बाहर जाना पड़ता है । इसी समय तरह-तरह के लोगों के साथ उसका काम पड़ता था । वे उससे परिहास करते थे । इसमें उसे दो-चार रुपये मिल जाते थे और घड़ी भर के लिए मनोरंजन हो जाता था । लेकिन वह जानती थी कि यह आनन्द मंगनी की चीज है । उसमें टिकाव नहीं है, समर्पण नहीं है । अधिकार नहीं है । वह ऐसा प्रेम चाहती है जिसके लिए वह जिए और मरे, जिस पर वह अपने आपको समर्पित कर दे ।

वह गोबर को इस योग्य मानती है इसलिए उससे कहती है कि तुम मुझे मोल ले सकते हो ।

झुनिया बहुत सरल है । वह चाहती है कि मैं जिसकी हो जाऊँगी, उसकी जन्मभर के लिए हो जाऊँगी ; सुख में, दु:ख में, संपत में विपत में, उसके साथ रहूँगी । वह गोबर से कहती है -'' न रुपयों की भूखी हूँ, न गहने -कपड़े की । बस भले आदमी का संग चाहती हूँ , जो मुझे अपना समझे और जिसे मैं अपना समझूँ ।''

वह गोबर को बताती है कि कैसे लोग उसे भोग करने को तरसते हैं ; कैसे एक पंडित ने पचास रुपये देकर उसका भोग करना चाहता था । उसने सभी को सबक सिखाया । उसे दूसरे मर्दों के साथ रुपए - गहनों के लिए किसी औरत का घूमना फिरना बिलकुल पसन्द नहीं है । उसका विचार है -''एक के साथ मोटा-सोटा खा-पीकर उमर काट देना, वह बस अपना ही तो राग है ।''

झुनिया का विचार है कि मर्द ही औरतों को बिगाड़ते हैं । जब मर्द इधर-उधर ताक-झांक करेगा तो औरत भी आँख लड़ाएगी । झुनिया सरल गोबर को अपने प्रेम में फंसा लेती है ।

जब झुनिया पाँच माह की गर्भवती हो जाती है तो गोबर उसे अपने घर पर रात को छोड़कर शहर चला जाता है । एक विधवा को बहू बनाकर रखने से होरी का गाँव में हुक्का-पानी बंद हो जाता है । उसे पंचायत का जुर्माना भरना पड़ता है । झुनिया होरी और धनिया के आश्रय में रहती है । धनिया उसे माँ जैसी लगती है । उसके बेटा होता है ।

भोला जब होरी को धमकाता है कि तुम झुनिया को घर से निकाल दो, नहीं तो मैं तुम्हारे बैल खोलकर ले जाऊँगा, तब होरी की रक्षा करने झुनिया गोद में बच्चे को लिए घर से निकल आती है और

बोलती है-''काका, लो, मैं इस घर से निकल जाती हूँ और जैसे तुम्हारी मनोकामना है, उसी तरह भीख मांगकर अपना और बच्चे का पेट पालूँगी, और जब भीख भी न मिलेगी तो कहीं डूब मरूँगी ।'' तब धनिया उसे बहू कहकर घर चलने को कहती है, तब कृतज्ञता से झुनिया रोती हुई बोलती है-''अम्मा ! जब अपना बाप होकर मुझे धिक्कार रहा है, तो डूब ही मरने दो । मुझ अभागिन के कारण तो तुम्हें दु:ख ही मिला । जब से आई तुम्हारा घर मिट्टी में मिल गया । तुमने इतने दिन मुझे जिस प्रेम से रखा, माँ भी न रखती । भगवान फिर मुझे जनम दे तो तुम्हारी कोख से दें, यही मेरी अभिलाषा है ।''

लेकिन दूसरी परिस्थिति में वह कृतज्ञता भूल कर स्वार्थी बन जाती है । गोबर गाँव आ जाता है और झुनिया को अपने साथ ले जाना चाहता है । धनिया आरोप लगाती है कि झुनिया शहर जाना चाहती है और बेटे को उसने ही मंत्र पढ़ा दिया है । इससे झुनिया झल्लाकर कहती है-''अम्मा, जुलाहे का गुस्सा दाढ़ी पर न उतारो । कोई बच्चा नहीं है कि उन्हें फोड़ लूँगी । अपना-अपना भला बुरा सब समझते हैं । आदमी इसलिए नहीं जन्म लेता है कि सारी उम्र तपस्या करता रहे और एक दिन खाली हाथ मर जाए । सब जिन्दगी का कुछ सुख चाहते हैं, सबकी लालसा होती है कि हाथ में चार पैसे हों ।''

लेकिन घर छोड़ते समय झुनिया सौजन्य नहीं भूलती । वह सास के पास जाकर उसके चरणों को आंचल से छूती है । शहर जाकर झुनिया कठिन परिस्थिति का सामना करती है । उसे दूसरा बच्चा होने वाला है । गोबर का व्यवहार उसे खलता है । स्तन में दूध न उतरने से दो साल का बेटा भी क्रोधित हो जाता था कुछ दिन बाद बेटे को दस्त आने लगे और एक सप्ताह के बाद वह मर गया । अब झुनिया का मातृहृदय विलाप कर उठता है ।

गोबर को शराब का चस्का लग जाता है । वह कोई बहाना बनाकर झुनिया को गालियाँ देता है, मारता है, और घर से निकालने लगता है तो झुनिया को इस अपमान के लिए पश्चात्ताप होता है कि वह क्यों रखैली बनी ? वह ब्याहता होती तो बिरादरी उसके प्रति न्याय करती ।

झुनिया के मन में गोबर की भलमनसाहत के प्रति शंका उत्पन्न हो जाती है । कपटी के साथ घर से निकल भागने को वह अपनी भूल मानती है । अब वह गोबर को अपना दुश्मन समझने लगती है । उसे लगता है गोबर यदि बराबर इसी तरह मारता - पीटता रहेगा तब उसका जीवन नरक हो जाएगा । गोबर के मारते समय वह गुस्सा से उसका गला छुरे से रेत डालने का विचार करती है । पड़ोसिन चुहिया की सहायता से वह एक बच्चे को जन्म देती है ।

झुनिया को लगता है कि गोबर पक्का मतलबी है । मुझे केवल भोग की वस्तु समझता है । अब दोनों में नहीं पटती थी । पर हड़ताल में घायल होकर जब गोबर को उसके घर पर पहुँचा दिया जाता है, तब झुनिया का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वह सारे अनर्थों की जड़ खुद को मानती है । वह जी-जान से गोबर की सेवा में लग जाती है । घर चलाने के लिए वह घास छीलने का काम करती है ।

बाद में वह गोबर और बेटे मंगल के साथ मालती की दी हुई कोठरी में रहने लगती है । मंगल को चेचक निकल आती है तो मालती उसकी खूब सेवा करती है । रूपा की शादी के समय वह फिर ससुराल में आ जाती है । उसका मन और शहर जाने को नहीं चाहता । कुछ दिन सास-ससुर के साथ रहना वह चाहती है । और वह रुक भी जाती है । फिर उसके जीवन में स्थिरता आ जाती है ।

✻ मालती :

मालती एक विकसशील चरित्र है । उपन्यास के आदि से अंत तक वो एक कौतूहल के रूप में दिखाई देती है । मालती एक शहरी पात्र है । इंग्लैंड से डाक्टरी पढ़कर लखनऊ में प्रैक्टिस कर रही हैं । उनके रहन-सहन पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है । वो बाहर से फैशनवाली लगने पर भी भीतर से उदात्त चरित्रवाली है ।

उनके पिता शराबी हैं, रोगी हैं । उसके दो बहनें हैं । पिताजी पर पच्चीस हजार रुपयों का कर्ज होने पर भी वे उस ओर लापरवाह हैं । मालती अविवाहित है । वो खुद परिवार का सारा बोझ ढोती है । यह जिम्मेदारी उन्हें विवाह पर सोचने नहीं देती ।

वे पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार हैं । वे आमोद -प्रमोद को जीवन का सार तत्व समझती है । वे पुरुषों को लुभाने और रिझाने में प्रवीण है । पुरुषों के बीच तितली की भाँति घूमने -फिरने में उन्हें कोई संकोच नहीं है । विवाहित जीवन की अपेक्षा अविवाहित जीवन में वे सफलता की किरणें देख पाती हैं । गोविंदी उनके चाल -चलन से नाराज होकर कहती है -‘‘ऐसी औरतें समाज में रहेंगी तो पुरुषों के कान तो गर्म करती रहेंगी ।’’

वे बहुत हँसमुख और मिलनसार हैं । ताल्लुकदारों के महलों तक उनका बहुत प्रवेश है । मेक-अप करने में उन्हें कोई संकोच नहीं है । विनोद में वे ओंकारनाथ को शराब पिलाकर मूर्ख बना देती हैं । वे इसलिए विनोद करती हैं कि इससे उनका कर्त्तव्य भार कुछ हल्का हो जाता है । बाहर से वे पश्चिमी संस्कृति की उपासिका मालूम पड़ती हैं । वास्तव में वे भीतर से भारतीय आदर्श की उपासिका हैं । इसलिए लेखक उनके लिए कहते हैं -‘‘ मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है ।’’

मेहता के प्रति आकर्षित - मालती के मित्रों में खन्ना , रायसाहब, मिर्जा, तंखा आदि हैं । खन्ना उन पर पूरी तरह लट्टू है । लेकिन मालती मेहता के पौरुष के प्रति उस समय आकर्षित हो जाती हैं जब मेहता पठान के भेष में उन्हें जबरदस्ती उठा लेने की चुनौती देते हैं । शिकार में जाते समय मेहता को जंगली महिला की सहानुभूति मिलती है तो मालती ईर्ष्यान्वित होती है । उससे मेहता मालती की ओर आकर्षित नहीं हो पाते । मालती मेहता की ओर जितना आगे बढ़ती है, मेहता उतना पीछे हट जाते हैं ।

एक बार खन्ना मालती से कह देते हैं -‘‘ अब तक मैंने तुम्हारे पीछे हजारों लुटा दिए ।’’ मालती व्यंग्य भरा उत्तर देती है-‘‘ मैं रूपवती हूँ । तुम ही मेरे अनेक चाहनेवालों में हो । यह मेरी कृपा थी कि जहाँ मैं औरों के उपहार लौटा देती थी, तुम्हारी सामान्य से सामान्य चीजें भी धन्यवाद के साथ स्वीकार कर लेती थी ।’’ वे धन से उन्मत्त न होने की चेतावनी देती हुई कहती हैं-‘‘ धन ने न आज तक किसी नारी के हृदय पर विजय पाई और न कभी पाएगी ।’’

मालती खन्ना से प्रेम नहीं करती । पर जब मेहता आरोप लगाते हैं कि मिसेज खन्ना मालती के कारण दु:खी हैं और मालती उन पति-पत्नी में झगड़े का कारण बनती है, तो मालती कड़ा जवाब देती है -‘‘आपने यह अनुमान कैसे लगा लिया कि मैं खन्ना और गोविंदी के बीच आना चाहती हूँ ।’’ वह खन्ना के प्रति अपना विचार इस प्रकार स्पष्ट कर देती है -‘‘मैं खन्ना को अपनी जूतियों की नोंक के बराबर भी नहीं समझती ।’’

मेहता से खिन्न होकर वे कहती हैं -‘‘ आपको मुझ पर आक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है ।’’

मालती मधुमक्खी की तरह है । वे मेहता की सेवा, नि:स्वार्थ -भावना, वीरता, आदर और आदर्श से प्रभावित होकर उन्हें चाहने लगती है । पर मेहता कोई हरा संकेत नहीं देते । वे मालती के संबंध में अपना विचार स्पष्ट करते हुए उनसे कहते हैं -‘‘ तुम सब कुछ कर सकती हो ; बुद्धिमती हो ; चतुर हो ; प्रतिभावान हो ; दयालु हो ; चंचल हो, स्वाभिमानी हो, त्याग कर सकती हो; लेकिन प्रेम नहीं कर सकती ।’’ जब मेहता मालती को स्वीकार करना चाहता है, तब मालती विवाह -बंधन में बंध जाना नहीं चाहती । वे लोकहित के लिए व्यापक क्षेत्र में बंधन-मुक्त होकर काम करना चाहती हैं । अपने संपूर्ण जीवन को समाज के लिए समर्पित कर देने की भावना विकसित हो जाने के बाद वे विवाह के सीमित और स्वार्थपूर्ण दायरे को ठुकरा देती हैं ।

विकसनशील चरित्र – पहले मालती की दृष्टि परिवार तक, धन-उपार्जन तक सीमित थी । बदलती परिस्थिति उनके मानसिक धरातल को व्यापक बना देती है । शारीरिक सौन्दर्य और ठाटबाट से दृष्टि हटकर परहित और परसेवा में केन्द्रित हो जाती है । वे नागरिक -जीवन की सीमा से निकल कर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए दु:ख दैन्य निकटता से समझने लगती हैं । वे उनके विकास के लिए प्रयत्न करती हैं । वे जान जाती हैं कि शहरी सभ्य महिलाएँ सब कुछ अपने भोग -विलास के लिए चाहती हैं, पर ग्रामीण महिलाएँ त्यागमय जीवन बिताती हैं । मालती ग्रामीण महिलाओं के उदात्त -विचारों से प्रेरित होकर आत्म -विस्तार करती हैं । मेहता मालती के संबंध में कहते हैं -‘‘ वह(मालती) आग में पड़कर चमकने वाली वस्तु है ।’’

मेहता अपने प्रेम को खूँखार शेर बताते हैं तो मालती कहती है-'' अगर प्रेम खूँखार शेर है तो मैं उससे दूर ही रहूँगी । प्रेम देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है । वह संपूर्ण आत्म-समर्पण है ।''

अविवाहित रहने का संकल्प करने वाली – मालती मेहता को पैसों की तंगी के समय अपने घर ले जाती हैं ; उनके किराये चुका देती हैं, पर उनसे विवाह करना नहीं चाहतीं ; वे अपना फैसला सुनाती हैं -'' तुम मेरे पथ-पदर्शक हो ; मेरे देवता हो ; गुरु हो । यह वरदान मेरे जीवन को सार्थक करने को काफी है । यह मेरी पूर्णता है ।'' वे मानती हैं कि मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बन कर रहने से कहीं सुखकर है । वे मेहता को प्रेरित करती हुई कहती हैं - 'संसार को तुम जैसे साधकों की जरूरत है, जो अपने पथ को इतना फैला दे कि सारा संसार अपना हो जाए ।'' विवाहित जीवन की अपेक्षा अविवाहित जीवन में वे सफलता की किरणें देख पाती हैं ।

नेतृत्व लेने का गुण – मालती समाज में नेतृत्व लेने की योग्यता रखती है । वे नगर - कांग्रेस कमेटी की सभानेत्री चुनी जाती हैं । उनमें क्रांतिकारी चेतना भी है । इसलिए वे सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेकर एक बार जेल भी जाती हैं ।

स्त्री के समान अधिकार की पक्षधर – मालती स्त्री के समान अधिकार संबंधी बहस में भाग लेती हैं । वे कहती हैं -'' फिर अभी यह कौन जानता है कि स्त्रियाँ जिस रास्ते पर चलना चाहती हैं, वही सत्य है । संभव है, आगे चलकर हमें अपनी धारणा बदलनी पड़े ।''

सेवा-भाव – मालती ग्रामीण लोगों के संपर्क में आकर समझ जाती हैं कि उनमें लगन, समर्पण-वृत्ति श्रेय के प्रति सम्मान, सरलता है, जो शहरी लोगों के पास नहीं है । वे उनकी सेवा करने को परम कर्त्तव्य समझती हैं । वे गोबर के बेटे को चेचक निकलने पर न केवल उसकी चिकित्सा करती है, बल्कि माँ-जैसी सेवा भी करती हैं । वे गाँव में सेवा के लिए पहुँचती हैं तो गाँव की स्त्रियाँ उनकी तारीफ करती है ।

मालती को लगता है कि समाज में शोषण का आतंक फैला हुआ है । गाँव में अंधविश्वास, धर्म-शोषण, आर्थिक शोषण, स्वार्थांधता है, जिनको दूर करना उचित है । इसलिए वे सामाजिक परिवर्तन लाने को कटिबद्ध हो जाती है । वे मेहता से कहती है -''अपनी विद्या और बुद्धि जोर के साथ उसी रास्ते पर ले जाओ । मैं भी तुम्हारे पीछे चलूँगी । अपने साथ मेरा जीवन भी सार्थक कर दो ।''

मालती समाज सेवा का आदर्श अपनाने पर भी उसे व्यावहारिक नहीं बना पाती है । लेकिन वे एक स्वाभिमानी और पुरुष -प्रधान समाज में एक प्रेरणादायक पात्र के रूप में अपना विशिष्ट स्थान बना लेती हैं ।

✽ सिलिया :

सिलिया चमारिन है और ब्राह्मण मातादीन के साथ रहती है । वह उसकी ब्याहता नहीं -रखैल है । मातादीन सिलिया का यौन -शोषण करता है, जिसे वह अपना अधिकार मानता है । वह अपनी जाति को सुरक्षित रखने के लिए सिलिया के हाथ का खाना नहीं खाता ।

सिलिया मेहनत -मजदूरी करके अपना पेट पालती है । मातादीन के घर उसे केवल खाने -पहनने की छूट है । अनाज में हाथ लगाने का अधिकार उसे नहीं मिलता है । दुलारी साहुकारनी को उसका बकाया चुकाने के लिए जब वह कोई सेरभर अनाज ढेर में से निकालकर दे देती है, तब मातादीन झपट आता है और उससे पूछता है कि तू कौन होती है मेरा अनाज देनेवाली ? सिलिया पूछती है -'' तुम्हारी चीज में मेरा कुछ अख्तियार नहीं है ?'' मातादीन साफ-साफ सुना देता है कि तुम्हें कोई अख्तियार नहीं है । काम करने के लिए खाती है । अगर तुझे परता न पड़ता हो तो कहीं चली जा ।

सिलिया यह अपमान सह जाने को विवश है । सिलिया समझती है कि वह ब्याहता न होकर भी संस्कार और व्यवहार में तथा मनोभावना में ब्याहता है । मातादीन चाहे उसे मारे या काटे । उसे दूसरा आश्रय नहीं है, दूसरा अवलंब नहीं है ।

वह भाग्य और कर्म पर पूरा भरोसा करके अपने जातिगत शोषण का वह विरोध न करकेउसे चुपचाप सह जाती है । यहाँ तक कि उसकी माँ उसे अपने साथ ले जाना चाहती है, धमकाती है, पीटती है । पर बाप के पैर पकड़कर विनती करती है -''उसका घर लेकर तुम्हें क्या मिला ? अब तो वह भी मुझे न पूछेगा । लेकिन पूछे, न पूछे, रहूँगी तो उसी के साथ । वह मुझे चाहे भूखा रखे, चाहे मार डाले, पर उसका साथ न छोड़ूँगी । उसकी सांसत कराके छोड़ दूँ । मर जाऊँगी, पर हरजाई न बनूँगी । एक बार जिसने बांहे पकड़ ली, उसी की रहूँगी ।'' उसमें न अपमानबोध है न कोई अनुशोचना । फिर मातादीन जब कहता है कि मैं तेरा न मुँह देखूँगा। मेरा तुझ से कोई वास्ता नहीं है, तब वह मातादीन से पूछती है -'' वास्ता कैसे नहीं है ? जो रस्सी तुम्हारे गले में पड़ गई है, उसे तुम लाख चाहो नहीं छोड़ सकते और न मैं तुम्हें छोड़कर कहीं जाऊँगी । मजूरी करूँगी, भीख मांगूँगी, लेकिन तुम्हें न छोड़ूँगी ।''

उसके बाद धनिया और होरी उसे अपने घर में शरण देते हैं । वहीं उसके एक बेटा होता है । वह सोना को बताती है कि उसने मातादीन की जितनी सेवा की है, उसका फल उसे जरूर मिलेगा । वह सोना से कहती है-'' अभी मान-मरयाद के मोह में वह चाहे मुझे छोड़ दे, लेकिन देख लेना, फिर दौड़ा आएगा ।'' अपने धर्म पर उसे पूरा भरोसा है । वह कहती है-'' अपना-अपना धरम अपने -अपने साथ है । वह अपना धरम तोड़ रहा है, तो मैं अपना धरम क्यों तोड़ूँ ?''

सिलिया बहुत समझदार है । वह सोना के होनेवाले पति और उसके बाप गौरी मेहता के सामने सोना की प्रशंसा करके उन्हें बिना दहेज शादी पक्की करने को मना लेती है ।

एक बार मातादीन होरी के हाथों दो रुपया सिलिया के लिए भेजता है । सिलिया इस खुशी को बांटने रात में नदी नाले पार करके सोना के घर पहुँच जाती है । मथुरा से एकांत में उसकी भेंट होती है । मथुरा के प्रेम निवेदन को वह ठुकरा नहीं सकती है । तो दोनों प्रेम के दुर्बल मुहूर्त में पहुँच जाते हैं । सिल्लो का मुँह मथुरा के मुँह के पास आ जाता है और दोनों की साँसें और आवाज और देह में कंपन होती है कि सहसा सोना की आवाज सुनाई पड़ती है । परिणाम स्वरूप सिलिया चारित्रिक पतन से बच जाती है ।

मातादीन प्रायश्चित करके अपनी जाति में पुन: मिल जाता है । पर उसे अपने पुत्र के प्रति मोह सिलिया के साथ रहने को विवश कर देता है । मातादीन -सिलिया का पुनर्मिलन होता है ।

सिलिया यहाँ दलित -नारी का प्रतिनिधित्व करती है । उसे अपनी बिरादरी से तथा अपने परिवार से अलग रहने में कोई अनुशोचना नहीं है । वह अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति कतई जागरूक नहीं है । फिर भी अपने प्रेम की निश्छलता और सेवा-धर्म पर विश्वास के फल-स्वरूप उसे प्रेम में सफलता मिलती है ।

1.8 व्याख्याएँ :

१. आसामियों से वह हँसकर बोल लेते थे । यही क्या कम है ? सिंह का काम तो शिकार करना है, अगर वह गरजने और गुर्राने के बदले मीठी बोली बोल सकता, तो उसे घर बैठे मनमाना शिकार मिल जाता, शिकार की खोज में जंगल में न भटकना पड़ता ।

संदर्भ – जमींदार रायसाहब बहुत लोकप्रिय हैं । उनकी जमींदारी व्यवस्था पूर्ववत् चली आ रही थी । किसी को रियायत नहीं दी जाती थी । लगान वसूल किया जाता था, डाँड और बेगारी ली जाती थी । लोग इसे व्यवस्था का अंग मानकर स्वाभाविक रूप से सह जाते थे । अगर कुछ बदनामी होती थी, वह मुख्तारों के सिर जाती थी । रायसाहब की आमदनी और अधिकार में कमी नहीं आती थी, उनका यश बढ़ता जाता था ।

व्याख्या - असामियों से जो लेना है । उसे जमींदार रायसाहब के मुख्तार ले लेते हैं । लेकिन रायसाहब धूर्त हैं । वे असामियों से हँसकर बात कर लेते हैं । इससे असामी कृतकृत्य हो जाते हैं । इस हँसी को भी बहुत बड़ी कृपा मान लेते हैं ।

२. जमींदार सिंह जैसे हैं । सिंह का काम है शिकार करना । जमींदार का काम है जमींदारी को चलाना, लगान वसूल करना, डाँड लेना, बेगारी लेना आदि । यह कार्य कोई जमींदार कठोर वचन बोलकर कर सकता है या मीठे वचन से कर सकता है । कठोर वचन और कठोर व्यवहार सिंह का

गरजना, गुर्राना जैसा है । अगर वह मीठे वचन से घर बैठे आराम से सारा काम आसामियों से निकाल सकता है तो यह घर बैठे शिकार मिल जाता है । घर बैठे शिकार मिल जाने से सिंह को शिकार की खोज में जंगल में जाना नहीं पड़ता । जैसे रायसाहब अपना सारा काम मुख्तारों के माध्यम से करा लेते हैं । बदनामी उनके सिर डाल स्वयं सबके श्रद्धा भाजन बने रहते हैं । उनकी कीर्ति बढ़ती जाती है । वे बहुत चालाक हैं । लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द हमारे वर्ग की हस्ती मिट जानेवाली है । मैं उस दिन का स्वागत करने को तैयार बैठा हूँ । ईश्वर वह दिन जल्द लाएँ । वह हमारे उद्धार का दिन होगा । हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं । यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक संपत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, जब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मंडराता रहेगा हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है ।

संदर्भ – जमींदार रायसाहब जानते हैं कि समाज में जमींदारों की शोषण प्रवृत्ति बढ़ गई है और धीरे-धीरे समाज में इसके प्रति विरोध और असंतोष बढ़ रहा है । इसलिए वे परिस्थिति की मांग के अनुरूप अपने को परिवर्तन करते हैं और जमींदारी प्रथा के उन्मूलन को स्वाग करने को तैयार हो जाते हैं ।

व्याख्या – रायसाहब का विचार है कि अभी समाज में जमींदारी प्रथा के खिलाफ आवाज उठने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं यदि आंदोलन हुआ तो हमारी यह प्रभुता जल्दी समाप्त हो जाएगी । रायसाहब खुद भी यह परिवर्तन चाहते हैं । वे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जल्द से जल्द वह परिवर्तित दिन आएँ । वे मानते हैं कि परिस्थिति का का दास बनकर हम जमींदार हैं और आसामियों पर जो शोषण हो रहा है, उसे करने के को हम मजबूर हैं । इससे हमारा सर्वनाश हो रहा है ।

३. राय साहब मानते हैं कि हमारा अंतिम लक्ष्य है - मानवता का पद पाना । यह तब तक संभव नहीं होगा, जब तक हम सिर पर जमींदार होने का अभिशाप ढोते रहेंगे और जमींदारी को संपत्ति की बेड़ी हमारे पैरों पर पड़ी रहेगी । यह संपत्ति हमारे लिए अभिशाप है । यह हमें मानवता का ऊँचा पद नहीं दे पाती । हम अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए प्रजा का शोषण करने को मजबूर होते हैं । हम सच्चे इनसान बन नहीं पाते हैं । जब यह जमींदारी प्रथा समाप्त हो जाएगी - वह दिन हमारे उद्धार का दिन होगा । हम भी मुक्ति की सांस लेंगे । हम उस दिन सच्चे अर्थ में मानवता के उपासक बन जाएँगे । विपन्नता से इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी । इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी मानो झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा । बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना शक्ति आ गई थी । काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है ?

संदर्भ – होरी रायसाहब के गाँव जाने की तैयारी कर रहा है । हँसी-मजाक में वह पत्नी धनिया को बताता है कि मर्द साठे पर पाठे होते हैं । धनिया यथार्थ का अनुभव करके कहती है कि तुम -जैसे मर्द साठे पर पाठे नहीं होते । होरी भी इस यथार्थ को स्वीकार करता हुआ कहता है - साठ तक पहुँचने की नौबत न आने पाएगी धनिया ! इसके पहले ही चल देंगे ।

यहाँ लेखक होरी के चले जाने के बाद यह सुनकर धनिया की मन:स्थिति क्या होती है उसका वर्णन करते हैं -

व्याख्या – होरी का यह कथन -साठ तक पहुँचने की नौबत नहीं आएगी - धनिया के हृदय में आतंकमय कंपन उत्पन्न कर देता है । उसके लिए आर्थिक दुरवस्था और विपन्नता एक अथाह सागर जैसी थी । भारतीय नारी होने के नाते धनिया की मंगल-कामना व्रत नारीत्व की तपस्या -सुहाग उसे सहारा देने वाला तृण था । जिसके आधार पर वह इन कठिनाइयों को पार करना चाहती थी ।

४. होरी ने जो कुछ हँसी -मजाक में कह दिया, वह यथार्थ के निकट था । होरी की उम्र चालीस से अधिक न होने पर भी जीवन -संघर्ष में वह जर्जर हो चुका था । असमय बुढ़ापा ने उसे घेर लिया था । लेकिन यह यथार्थ सत्य धनिया की भावना को एक झटका देता है कि लगता है वह तृण का सहारा भी और नहीं रहने वाला है और यह यथार्थ उसके हाथ से तृण के सहारे को छीन लेगा । अर्थात् उसके कहीं साठ साल की उम्र पार करने से पहले होरी जीवन संघर्ष से हारकर संसार से बिदा लेना न पड़ जाए । यही सोचकर धनिया का हृदय वेदना से भर जाता है । वह पति की मंगल कामना और दीर्घायु कामना करके व्याकुल हो उठती है । यह स्वाभाविक है कि हमें सत्य अधिक प्रभावित और आंदोलित करता है । काने को काना कहने से उसे अपार कष्ट होगा, क्योंकि व्यापार सत्य है । आँखोंवाले से काना कहने वह हँस देगा, क्योंकि वह असत्य है । होरी का कहना सत्य था, इसलिए धनिया को वह अपार कष्ट देता है । उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति से स्थायी सहयोग है - वृक्षों में फल लगते हैं, उन्हें जनता खाती है ; खेती में अनाज होता है, वह संसार के काम आता है ; गाय के थन में दूध होता है, वह खुद पीने नहीं जाती, दूसरे पीते हैं; मेघों से वर्षा होती है, उससे पृथ्वी तृप्त होती है । ऐसी संगति में कुत्सित स्वार्थ के लिए स्थान कहाँ ? होरी किसान था और किसी को जलते हुए घर में हाथ सेंकना उसने सीखा ही न था ।

संदर्भ – भोला होरी को गाय उधार पर देने को राजी हो जाता है । उसके पास भूसा नहीं है, इसलिए वह अब होरी से केवल दस-बीस रुपए भूसे के लिए भी नकद चाहता है । एक मनुष्य के रूप में होरी में कुछ स्वार्थ भावनाएँ हैं लेकिन एक किसान के रूप में उसका जीवन त्याग से भरा है ।

व्याख्या – हीरा अपनी स्वार्थ मनोवृत्ति का परिचय देता था । कुछ खरीदते समय मोल-तोल करना ऋण चुकाते समय कुछ ब्याज छुड़ाने के लिए महाजन की चिरौरी करना, जब तक पक्का विश्वास न हो जाए तब तक किसी के फुसलाने में नहीं आना उसके स्वाभाविक गुण है ।

५. लेकिन उसका संपूर्ण जीवन प्रकृति के साथ सहयोग पूर्वक आगे बढ़ता है । वह प्रकृति की तरह परोपकारी है । वृक्ष में फल लगते हैं । वृक्ष स्वयं फल नहीं खाता । दूसरे खाते हैं ; खेत में उपजा अन्न प्राणी मात्र खाता है । गाय अपना दूध खुद नहीं पीती दूसरे पीते हैं । बादल वर्षा करके पृथ्वी को तृप्त करते हैं । प्रकृति के इन तत्वों के पास कुत्सित स्वार्थ के लिए स्थान नहीं है । ये परोपकार का जीवन व्रत के रूप में अपनाते हैं । किसान की प्रकृति के इन तत्वों की तरह परोपकारी है ।

होरी किसान था । परोपकार करना उसका धर्म था । स्वार्थांधता की गंध उसके पास नहीं आती थी । दूसरों की विपत्ति से फायदा उठाना वह नहीं जानता था । इसलिए भोला की विपत्ति का फायदा उठाकर उधार कर गाय ले लेना वह पसन्द नहीं करता है । विवाह के प्रभात में लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है । और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणों से रंजित कर देती है । फिर मध्यान्ह का प्रखर ताप ऊष्म है, क्षण-क्षण पर बगूले उठते हैं और पृथ्वी कांपने लगती है । लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने आ खड़ी होती है । उसके बाद विश्राममय संध्या आती है, शीतल और शांत जब हम थके हुए पथिकों की भाँति दिन भर की यात्रा का वृतांत कहते और सुनते हैं । तटस्थ भाव से , मानो हम किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे हैं जहाँ नीचे का जनरव हम तक नहीं पहुँचता ।

संदर्भ – दमड़ी वंसौर से पुनिया झगड़ती है तो हीरा उसे पीटता है । होरी हीरा को रोकता है । फिर अपने दरवाजे पर आकर धनिया के साथ अपने वैवाहिक जीवन की मार-पीट और मन-मनुहार का प्रसंग छेड़ता है । यहीं लेखक वैवाहिक जीवन पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त करते हैं ।

व्याख्या – वैवाहिक जीवन का प्रारंभ दिवस का उषाकाल जैसा है । उषा के आगमन से सारा आकाश सूरज की सुनहरी किरणों से रंजित हो जाता है । गुलाबी मादकता लिए उषा आती है और वह मन में नई लालसा भरदेती है । उसी प्रकार विवाह का जीवन -आकाश में उषाकाल की तरह होता है । पति-पत्नी के जीवन -आकाश में आशा की नई किरणें फूटती हैं ; नई-नई अभिलाषाएँ जन्म लेती हैं ! प्रेम की गुलाबी मादकता भर जाती है ; मधुरता भर जाती है ।

६. जिस प्रकार मध्यान्ह में सूर्य के प्रहार ताप से धरती तप्त हो जाती है, बगूले उठते हैं तो धरती कांप जाती है, उसी प्रकार वैवाहिक जीवन के मध्यान्ह में सपनों के स्थान पर वास्तविकता का अनुभव होता है, यथार्थ का सामना करना पड़ता है । उसी प्रकार विवाह के बाद गृहस्थी संभालनी पड़ती है । जीवन संग्राम में संघर्ष करना पड़ता है । दु:ख-दर्द झेलना पड़ता है । सपनों का सुनहरा आवरण हट

जाता है और यथार्थ की तेज रश्मियाँ सहनी पड़ती है ।

उसके बाद शाम आती है । लोग संध्या के समय घर लौटते हैं । दिनभर के श्रम के बाद थकावट मिटाते हैं । शाम शीतल और शांति देती है । दो श्रांत पथिक शाम को थकान मिटाते हुए अपने-अपने अनुभवों के वृत्तांत सुनते - सुनाते हैं । उसी प्रकार वैवाहिक जीवन के सांयकाल में बुढ़ापे में पति-पत्नी जीवन -अनुभव को स्मरण करते हैं, हँसी -गम, सफलता -विफलता के वृत्तांत की चर्चा करते हैं । थकान मिटाते जीवन के उच्च शिखर पर बैठकर तटस्थ भाव से बीते हुए उस अतीत को देखते हैं । कैसे उनका कोई सरोकार नहीं, कोई आकर्षण नहीं है । वे अब दूसरों के जीवन संघर्ष की ओर ध्यान नहीं देते । केवल अपने अंतिम दिन गिनते हुए चुप हो जाते हैं ।

उनकी दृष्टि में अभी उसके यौवन के फूल ही लगे थे । जब तक फल न लग जाएँ उस पर ढेले फेंकना व्यर्थ की बात थी और किसी ओर से प्रोत्साहन न पाकर उसका कौमार्य उसके गले में चिपटा हुआ था । झुनिया का वंचित मन जिसे भाभियों के व्यंग्य और हास-विलास ने लोलुप बना दिया था, उसके कौमार्य पर ही ललचा उठा और इस खुमारी में पता खड़कते ही किसी सोते हुए शिकारी की तरह यौवन जाग उठा ।

संदर्भ – भोला के घर से गाय लेकर गोबर आया, तो उसे छोड़ने झुनिया आधे रास्ते तक आई । रास्ते में झुनिया ने उसके साथ हास-परिहास करके उसके सोते हुए यौवन को जगा दिया । यौवन संबंधी दोनों के अनुभव अलग-अलग थे, उस पर प्रकाश डालते हुए लेखक कहते हैं -

व्याख्या – गोबर किशोर था । अब तक उसके साथ केवल भाभियाँ ठिठोली करती थीं जो केवल सरल विनोद तक ही सीमित रह जाती थी । उनकी दृष्टि में गोबर किशोर था और उसमें केवल यौवन के फूल लगे थे । यौवन परिपक्व होकर फल नहीं बने थे । जिस प्रकार कोई पेड़ से फल पाने के लिए उस पर ढेले फेंकता है, पर फूल लगते समय ढेले नहीं फेंकता, उसी प्रकार परिपक्व यौवन न आने पर गोबर से कोई प्रेम की बात नहीं करती थी । गोबर को किसी नारी से प्रेम के लिए प्रोत्साहन न मिलने से उसका यौवन उद्दीप्त नहीं हो पाता था, न वह हँसी -मजाक का उत्तर दे पाता । मानो कौमार्य उसके गले से चिपटा हुआ रह गया था । न वह जाता था, न यौवन की मादकता उसमें आ पाती थी ।

७. लेकिन झुनिया का विवाह हो चुका था । वह विधवा हो चुकी थी । उसका भूखा मन प्रेम चाहता था । भाभियों के हास-परिहास से उसका मन प्रेम के लिए लोलुप्त हो उठा । अब वह गोबर को पास पाकर प्रेम करने के लिए उससे प्रेम भरी बातें करने लगी । जिस प्रकार शिकार की कोई आहट पाकर सोया हुआ शिकारी जानवर जाग जाता है, उसी प्रकार झुनिया के प्रेम -निवेदन की प्रतिक्रिया में गोबर का सुप्त यौवन जाग उठता है । उसमें भी प्रेम की ललक उत्पन्न हो जाती है । धन को आप किसी उपाय से बराबर फैला सकते हैं । लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को

बराबर फैलाना तो उसकी शक्ति के बाहर है । छोटे-बड़े का भेद केवल धन से ही तो नहीं होता । मैंने बड़े-बड़े धन-कुबेरों को भिक्षुकों के सामने घुटने टेकते देखा है, और आपने भी देखा होगा । रूप के चौखटे पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं । क्या यह सामाजिक विषमता नहीं है ?

संदर्भ – रायसाहब के धनुषयज्ञ के अवसर अपनी मित्र मंडली के सदस्य मेहता, ओंकारनाथ, तंखा, मिर्जा, खुर्शीद आदि सम्मिलित होकर साम्यवादी विचार पर चर्चा कर रहे हैं । डॉ. मेहता अपना विचार इस प्रकार रखते हैं -

व्याख्या – धन पर सभी का समान अधिकार होने के विचार से आप किसी भी उपाय से धन को लोगों में बराबर बांट सकेंगे । लेकिन बुद्धि -चरित्र, रूप, प्रतिभा जैसे जन्मजात गुणों और प्राकृतिक शक्तियों को लोगों में बराबर बांट देना मनुष्य की शक्ति के बाहर है, क्योंकि ये सब ईश्वर प्रदत्त गुण हैं । अर्थात् इनके कारण समाज में अधिक बुद्धिमान, कम बुद्धिमान, चरित्रवान, चरित्रहीन, रूपवती , कुरूप, प्रतिभावान - मंदबुद्धि आदि रहेंगे । इन गुणों के कारण लोग बड़े या छोटे के रूप में गिने जाएँगे । अर्थात् धन के अलावा भी अन्य गुणों के कारण छोटे-बड़े का भेद रहेगा । आप लोग समाज में देखते हैं कि बड़े-बड़े धनवान व्यक्ति भी साधु -संतों , भिक्षुओं के सामने घुटने टेकते हैं, हार जाते हैं, उनकी महानता स्वीकार करते हैं । बड़े-बड़े राजा भी प्रेम पाने के लिए रूपवती नारी के चरणों में गिड़गिड़ाते हैं । यह भी एक प्रकार की सामाजिक विषमता है । ज्ञान का या सौन्दर्य का समाज में समान बंटन संभव नहीं है । केवल धन का सम बंटन होने से छोटे-बड़े का भेद नहीं मिटता । ईश्वर प्रदत्त जन्मजात गुणों की मात्रा से समाज में छोटे-बड़े रहना अनिवार्य है ।

८. विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है, न स्त्री को । समझौता करने के पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं ।

संदर्भ – मेहता, खन्ना, मालती आदि विवाह , तलाक, मुक्त भोग आदि पर चर्चा करते हैं तो मेहता अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं - मेहता कहते हैं कि मुक्त भोग आत्मा के विलास में बंधक नहीं होता । विवाह आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बंद कर देता है । विवाह के संबंध में वे स्पष्ट करते हैं कि -

व्याख्या – विवाह एक सामाजिक समझौता है । पुरुष और नारी जीवन भर साथ रहने का विचार इस प्रकार विवाह बंधन में बंध जाते हैं । इसमें दोनों का एक दूसरे पर विश्वास रहता है । प्रतिज्ञा रहती है । उसके बाद पति-पत्नी में से किसी को वह विवाह बंधन तोड़ने का अधिकार नहीं रहता । इससे समाज की व्यवस्था अस्तव्यस्त हो जाएगी । इसलिए विवाह के लिए समझौता करने को व्यक्ति पहले स्वतंत्र है । वह विवाह करेगा या नहीं, यह उसके निर्णय पर निर्भर है । एक बार विवाह करने का

निर्णय ले लेने के बाद व्यक्ति परतंत्र हो जाता है । वह लाचार है, उसे तोड़ने का यानी तलाक देने का अधिकार उसके हाथ में नहीं रहता ।

९. सामने जो पर्वतमाला दर्शन -तत्व की भाँति अगम्य और अत्यंत फैली हुई मानो ज्ञान का विस्तार कर रही हो, मानो आत्मा उस ज्ञान को उस प्रकाश को उस अगम्यता को, उसके प्रत्येक विराट रूप में देख रही हो । दूर के एक बहुत ऊँचे शिखर पर एक छोटा-सा मंदिर था, जो उस अगम्यता में बुद्धि की भाँति ऊँचा, पर सोया हुआ-सा खड़ा था, मानो वहाँ तक पर मारकर पक्षी विश्राम लेना चाहता है और कहीं स्थान नहीं पाता ।

संदर्भ – डॉ. मेहता मालती को अपने साथ लेकर शिकार खेलने जाते हैं तो जंगल में एक काली औरत बड़ी सहृदयता दिखाकर मेहता को उसकी झोंपड़ी तक ले जाती है । वहाँ बैठकर सामने की पर्वतमाला और प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर डॉ. मेहता दार्शनिक चिंतन में खो जाते हैं ।

व्याख्या – मेहता जंगल के स्वच्छ जीवन से बहुत प्रभावित होते हैं । सामने पर्वतमाला फैली हुई थी । मेहता को लगता है कि दर्शन -तत्व जिस प्रकार अगम्य और बहुत व्यापक है उसी प्रकार यह पर्वतमाला का विस्तार कर रही हो । मेहता को लगता है कि उनकी आत्मा निराकार परमात्मा के विराट रूप को पर्वतमाला के रूप में प्रत्यक्ष देख रही हो । वे अब परमात्मा संबंधी ज्ञान की, उनके प्रकाश की, उनकी अगम्यता को इस स्थान पर बैठकर पर्वतमाला में प्रत्यक्ष देख रहे हो । दूर के एक ऊँचे शिखर पर एक छोटा-सा मंदिर दिखाई पड़ता था । मेहता को लगता है कि पर्वतमाला के रूप में विराजमान परम तत्व की अगम्यता में बुद्धि के रहस्य को जानने के लिए खोया -खोया खड़ा था । मेहता सोचता है कि उनकी बुद्धि रूपी पक्षी परों से उड़ान भरकर मंदिर की चोटी पर विश्राम करने पहुँचता है पर वहाँ उसे विश्राम करने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता । वह निराश हो जाता है । मनुष्य की सीमित बुद्धि असीम का ज्ञान प्राप्त करने असमर्थ रहकर अनमना हो जाती है ।

१०. वह आफत की मारी ,व्यंग्य बाणों से आहत और जीवन के आघातों से व्यथित किसी वृक्ष की छांह खोजती -फिरती थी और उसे एक भवन मिल गया था, जिसके आश्रय में वह अपने को सुरक्षित और सुखी समझ रही थी पर आज वह भवन अपना सारा सुख-विलास लिए अल्लादीन के राज महल की भाँति गायब हो गया था और भविष्य एक विकराल दानव के समान इसे निगल जाने को खड़ा था ।

संदर्भ – पांच माह की गर्भवती झुनिया को अपने घर पर छोड़कर गोबर जब पलायन करता है तो ऐसी स्थिति में झुनिया की मन:स्थिति के संबंध में लेखक बता रहे हैं -

व्याख्या – झुनिया विधवा हो जाने से हतभागिनी हो गई थी । पिता के घर में रहते समय भाभियों के व्यंग्य बाणों से वह आहत हो गई थी । जीवन में अकेली हो जाने के बाद वह मानसिक

आघात सहकर पीड़ित थी । वह किसी पुरुष का साहचर्य चाहती थी जिसके आश्रय में रहकर नारी जीवन को सार्थक कर सकेगी और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेगी । इसी समय उससे प्रेम करने के लिए गोबर मिल गया । उससे प्रेम करके उसको पति रूप में अपनाकर अपने को वह सुरक्षित और सुखी मानने लगी । वह गर्भवती हो गई । परिस्थिति का मुकाबला करने का साहस गोबर जुटा नहीं सका । वह झुनिया को अकेली छोड़कर भाग गया । जिस गोबर को वह एक सुरक्षित भवन मान रही थी, वह अब अलादीन के चिराग से उत्पन्न राज महल की भाँति फिर अदृश्य हो गया था । अब उसका भविष्य अनिश्चित और अंधकारमय हो गया । ऐसा लगा कि भविष्य एक विकराल दानव बनकर उसे निगल जाने को उसका अस्तित्व मिटा देने को उद्यत है ।

११. मर्द अपने को क्यों नहीं मिटाता ? औरत से ही क्यों इसकी आशा करता है ? मर्द में वह सामर्थ्य ही नहीं है । वह अपने को मिटाएगा, तो शून्य हो जाएगा । वह किसी खोह में जा बैठेगा और सर्वात्मा में मिल जाने का स्वप्न देखेगा । वह तेज प्रधान जीव है और अहंकार में वह समझ कर कि वह ज्ञान का पुतला है, सीधा ईश्वर में लीन होने की कल्पना किया करता है ।

संदर्भ – कबड्डी खेल की समाप्ति के बाद मिर्जा मेहता के साथ मालती के विवाह का प्रसंग जब उठाते हैं तब मेहता पुरुष और नारी की विशेताओं की चर्चा करके कहते हैं कि नारी करुणा और त्याग की मूर्त है । वह अपने को मिटा कर पुरुष की आत्मा का एक अंश बन जाती है ।

व्याख्या – मेहता कहते हैं कि अब प्रश्न उठता है कि पुरुष करुणा और त्याग की मूर्त बनकर अपने को क्यों नहीं मिटाता, जबकि नारी से यही करने की आशा रखता है ? इसके उत्तर में मेहता कहते हैं कि पुरुष को करुणा और त्याग की भावना की सामर्थ्य नहीं है । यदि वह अपने को मिटाने का प्रयास करेगा, तो वह शून्य हो जाएगा । उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । वह कर्म से विरत हो जाएगा । इसका कारण बताते हुए लेखक कहते हैं कि पुरुष तेज प्रधान जीव है । वह अपने को ज्ञान का भंडार समझता है । इसलिए उसमें अहंकार है । यदि वह अपने को मिटाने का प्रयास करेगा, तब वह समाज में रहकर किसी के लिए अपने को नहीं मिटाएगा । वह संसार और समाज से विरक्त होकर आत्म-कल्याण के लिए, मुक्ति के लिए किसी गुफा में जाकर ईश्वर का ध्यान करेगा । ईश्वर में लीन होकर, संसार के जन्म -मृत्यु बंधन से मुक्त हो जाने की कल्पना करेगा ।

१२. स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है, शांति संपन्न है, सहिष्णु है । पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं । तो वह महात्मा बन जाता है । नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है । पुरुष आकर्षित होता है स्त्री की ओर, जो सर्वांग में स्त्री हो ।

संदर्भ – मिर्जा जब मेहता से कहते हैं कि उनकी शादी मालती से होगी तो इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए मेहता नारी के आवश्यक गुणों का वर्णन करते हैं -

व्याख्या – नारी पृथ्वी की भाँति धैर्यवान है । कितनी भी विपत्तियाँ, यातनाएँ क्यों न आएँ सभी को धैर्य के साथ सह जाने की सामर्थ्य नारी में है । वह शांति से रहती है । शांति -प्रदान करती है । दु:ख दर्द को अपनी मधुर वाणी से हरण कर लेती है । ये गुण यदि पुरुष में आ जाएँ तो पुरुष महात्मा बन जाएगा । पुरुष में स्वाभाविक रूप से अहंकार है । वह अपने को ज्ञान का भंडार मानता है । उसमें तेज है । ये गुण यदि किसी नारी में आ जाएँगे तब वह उद्वत हो जाएगी । स्वेच्छाचारिणी हो जाएगी और कुल कलंकिनी हो जाएगी । वह जब सर्वांग में धैर्यशील , शांति प्रदायिनी, सहिष्णु , त्यागी, समर्पण भाव सपन्न होगी तो कोई भी पुरुष उसके प्रति आकर्षित होगा ।

ये तर्क प्रस्तुत करने के पीछे मेहता यह कहना चाहते हैं कि मालती में नारी के आवश्यक सद्‌गुणों का अभाव होने के कारण वह उनसे विवाह करने को तैयार नहीं हैं ।

१३. क्या बाज को चिड़िया का शिकार करते हुए देखकर हंस को शोभा देगा कि वह मानसरोवर की आनन्दमयी शांति को छोड़कर चिड़ियों का शिकार करने लगे और अगर वह शिकारी बन जाए, तो आप उसे बधाई देंगी ? हंस के पास उतनी तेज चोंच नहीं है, उतने तेज पंख नहीं हैं और उतनी तेज आँख नहीं है और उतनी तेज रक्त की प्यास नहीं है । उन अस्त्रों का संचय करने में उसे सदियाँ लग जाएँगी, फिर भी वह बाज बन सकेगा या नहीं इसमें संदेह है ; मगर बाज बने या न बने, वह हंस न रहेगा - वह हंस जो मोती चुगता है ।

संदर्भ – वीमन्स लीग में भाषण देने के अवसर पर डॉ. मेहता पुरुष और नारी के समान अदिकार पर चर्चा करते हुए कहते हैं -

व्याख्या – डॉ. मेहता पुरुष को बाज और नारी को हंस के साथ तुलना करके अपने विचार रखते हैं । वे कहते हैं कि बाज हिंसक पक्षी है । वह शिकारी पक्षी है । शिकार करने के लिए उसके पास वह जन्मजात गुण हैं । उसके पास तेज चोंच है, जिससे वह मांस को आसानी से काट सकता है । वह अपने चंगुल से मजबूती से शिकार को पकड़ सकता है । तेज आँख से दूर से शिकार को देख सकता है, तेज पंख से जल्दी से शिकार के पास पहुँच सकता है । उसमें खून की प्यास है । इसलिए वह शिकार करने में कुशल है ।

हंस मानसरोवर में रहता है । वहाँ उसे आनन्दमयी शांति मिलती है । वहाँ वह मोती चुगता है ।

यदि वह बाज को शिकार करते हुए देखकर स्वयं शिकार करने को लालायित होगा और शिकार करने लगेगा तो यह कार्य उसे शोभा नहीं देगा । दूसरे भी इस कार्य की सराहना नहीं करेंगे ।

बाज के पास शिकार करने के लिए जितने गुण हैं उनको प्राप्त करने के लिए हंस को सदियाँ लग

जाएँगी, फिर भी उसे सफलता नहीं मिलेगी । उसका बाज जैसा बनना संदेह जनक है । लेकिन बाज बनने के प्रयास में वह अपना जन्मजात गुण भूल जाएगा । वह फिर मोती चुगने वाला वह मानसरोवर का हंस नहीं रह जाएगा । इधर से और उधर से दोनों तरफ से उसको हानि होगी ।

१४. जिसे संसार दु:ख कहता है वही कवि के लिए सुख है । धन और ऐश्वर्य रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें कवि के लिए यहाँ जर भी आकर्षण नहीं है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और कटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं । जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा । दर्शन जीवन के इस रहस्यों से केवल विनोद करता है, कवि उनमें लय हो जाता है ।

संदर्भ – गोविंदी मेहता से अपनी प्रशंसा सुनकर उनसे कहती है कि आपको दार्शनिक न बनकर कवि होना चाहिए था । मेहता कहते हैं कि कोई दार्शनिक हुए बिना कवि नहीं हो सकता । गोविंदी कहती है कि कवि को संसार में केवल दु:ख ही मिलता है । इसका उत्तर देते हुए मेहता कहते हैं -

व्याख्या – मेहता कहते हैं कि जिसे संसार दु:ख मानता है, कवि उसमें सुख का अनुभव करता है । वेदना उसे प्रिय है, वेदना को प्राप्त करने के बाद वह कविता रचना करता है और कवि बन जाता है । संसार और कवि की दृष्टि अलग-अलग है । संसार धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य , बल, विद्या और बुद्धि को महान विभूतियाँ मान कर उन पर मोहित हो जाता है पर कवि इनके प्रति आकर्षित नहीं होता । इनको प्राप्त करने वह कविता की रचना नहीं कर सकता । उसके लिए ये भौतिक सुख काम में नहीं आएँगे । उसके लिए वेदना और करुणा चाहिए । उसके लिए निराशा, दु:ख में विगत सुखद स्मृतियाँ, टूटे हुए हृदय के आँसू चाहिए । ये कविता के आधार हैं । ये कवि की विभूतियाँ हैं । कवि इनसे प्रेम करता है, कविता लिखता है । इनसे यदि उसका प्रेम नहीं रहेगा, वह कविता लिख नहीं सकेगा, फिर और कवि न रहेगा ।

दार्शनिक जीवन के इन दु:खपूर्ण रहस्यों का उद्‌घाटन करता है । पर वह उनसे निस्पृह रहता है । वरन् उनका उद्‌घाटन करके वह सुखी होता है । कवि उनसे प्रभावित होता है । वह अपने हृदय में उनको अनुभव करता है । वह उनमें तल्लीन हो जाता है । उस अनुभूति को कविता का रूप देता है ।

***

1.9 अभ्यास प्रश्न:

1. गोदान में दो कथाएँ - गाँव की कथा और शहर की कथा - साथ-साथ चलती हैं, फिर दोनों कथाओं में संबद्धता और संतुलन पाया जाता है । - समीक्षा कीजिए ।

2. उन्यास -कला की दृष्टि से 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए ।

3. सिद्ध कीजिए कि गोदान एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि उपन्यास है ।

4. 'गोदान' हमारे ग्रामीण जीवन के अंधकार -पक्ष का उद्घाटन करता है -समीक्षा कीजिए ।

5. 'गोदान' भारतीय कृषक की जीवन गाथा है - विवेचन कीजिए ।

6. 'गोदान' का होरी एक व्यष्टि परक पात्र न होकर एक वर्ग प्रतिनिधि है इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

7. 'गोदान' उपन्यास के आलोक में भारत की तत्कालीन धार्मिक दशाओं का चित्रण कीजिए ।

8. 'गोदान' के उद्देश्य और संदेश को स्पष्ट कीजिए ।

9. एक अजेय किसान के रूप में गोदान के होरी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

10. धनिया का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

11. 'गोदान' में गोबर शोषण और अन्याय के विरुद्ध भरती हुई नई पीढ़ी के विद्रोह और असंतोष का प्रतीक है - इस कथन की पुष्यि कीजिए ।

12. 'मेहता बुद्धिजीवी, आदर्शवादी और कर्मठ व्यक्ति हैं - इस कथन की व्याख्या करते हुए मेहता का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

13. 'मालती' बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है- इस कथन की व्याख्या करते हुए मालती का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

14. राय साहब अमरपाल सिंह रंग हुए सियार हैं - इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए ।

15. 'गोदान' गाय को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है । आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं, चर्चा कीजिए ।

16. सिलिया के चरित्र के माध्यम से लेखक पाठकों पर क्या प्रभाव डाना चाहते हैं ?

17. झुनिया का चरित्र-चित्रर कीजिए ।

18. दातादीन और मातादीन के चरित्रों के माध्यम से लेखक समाज की किस दशा को उजागर करना चाहते हैं ।

19. किसान की आर्थिक दशा को बिगाड़ने में कौन-कौन उत्तरदायी हैं, 'गोदान' के आधार पर समझाइए ।

20. 'गोदान' में यथार्थ और आदर्श का किस प्रकार समन्य दिखाया गया है, विवेचन कीजिए ।

UNIT - II

रागदरबारी : श्रीलाल शुक्ल

इकाई -2 इकाई की रूपरेखा :

2.1 शुक्लजी का जीवन परिचय

2.2 पुरस्कार और रचनाएँ

2.3 रागदरबारी

2.4 स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजनैतिक परिदृश्य

2.5 राग दरबारी के व्यंग्य

2.6 शीर्षक

2.7 शिक्षा व्यवस्था

2.8 गबन और घूसखोरी

2.9 न्याय व्यवस्था

2.10 ग्रामीण विकास की स्थितियाँ

2.11 सामाजिक स्थिति

2.12 गुण्डागर्दी

2.13 विभिन्न कथाओं के माध्यम से चरित्रों का उद्घाटन

2.14 उच्छृंखल और यौन -लालसा

2.15 चरित्र -चित्रण

2.16 व्याख्याएँ

2.17 अभ्यास प्रश्न

UNIT - II

श्रीलाल शुक्ल

श्रीलाल शुक्ल - 31 दिसम्बर 1925-28. अक्टूबर 2011

2.1 शुक्लजी का जीवन परिचय:

जन्म : लखनऊ जिले के अतरौली गाँव में

1947 - बी. ए. इलाहाबाद वि.वि. से

1949 में उत्तर प्रदेश के लोक सेवा आयोग में चयन हुआ । बाद में आई.ए.एस. में प्रोन्नत हुए ।

1983 में सेवा निवृत्त, 2005 में 80 वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक ग्रंथ उन्मोचित - श्रीलाल शुक्ल : जीवन ही जीवन । विख्यात व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्धि मिली ।

'राग दरबारी' व्यंग्यात्मक उपन्यास का श्रेष्ठ उदाहरण है । पच्चीस से अधिक रचनाएँ :

मकान(1976), सूनी घाटी का सूरज, प्रथम उपन्यास(1957), पहला पड़ाव,अज्ञातवास(1962), राग दरबारी(1968), विश्रामपुर का संत(1998), सीमाएँ टूटती हैं(1973), आदमी का जहर(1972), बबर सिंह और उसके साथ(1999) ।

व्यंग्यप्रधान रचनाएँ - व्यंग्य संग्रह : प्रथम व्यंग्य संग्रह - अंगद का पांव(1958), यहाँ से वहाँ तक(1970), कुछ जमीन में कुछ हवा में(1990), आओ बैठ लें कुछ देर(1995) । आदमी का जहर एक जासूसी उपन्यास है । खबरों की जुगाली (2005) ।

एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उन्होंने अपने कड़वे स्वातंत्र्योतर अनुभव भारत में पतनोन्मुखी मानवीय मूल्यों को पाठकों के सामने उजागर किया है । उन्होंने व्यंग्य द्वारा ग्रामीण तथा शहरी जीवन में व्याप्त मानव के गणतांत्रिक देश में राजनेतागण मुखौटे की आड़ में कितनी घिनौनी करतूत में लिप्त हैं । धंधा-जालसाजी, धाँधली नगर से लेकर गाँव तक व्याप्त है । अनेक अवांछनीय तत्व गणतंत्र को खोखला कर रहे हैं। कोई चिंता नहीं, भय नहीं, वरन सम्मान की भावना है ।

2.2 पुरस्कार और रचनाएँ :

पुरस्कार :

1970 केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार 'राग दरबारी के लिए (1969)

1978 मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य परिषद पुरस्कार 'मकान के लिए'

1979-80 निदेशक - भारतेन्दु नाट्य अकादमी, उत्तरप्रदेश

1988 उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सं. साहित्य भूषण पुरस्कार

1991 कुरुक्षेत्र वि.वि. से गोयल साहित्य पुरस्कार

1994 लोहिया सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंसी संस्थान

1997 मैथिली शरण गुप्त सम्मान, मध्यप्रदेश सरकार

1999 व्यास सम्मान, बिड़ला फाउंडेशन

2008 पद्मभूषण

2011 ज्ञानपीठ पुरस्कार 2009 के लिए

रचनाएँ :

कहानी - संकलन : यह घर मेरा नहीं 1971, सुरक्षा एवं अन्य कहानियाँ 1991

इस उम्र में दस प्रतिनिधि कहानियाँ - 2003

संस्मरण - मेरे साक्षात्कार 2002, कुछ साहित्य चर्चा(2008)

आलोचना - भगवती चरण वर्मा(1989), अमृतलाल नागर(1994), अज्ञेय : कुछ रंग कुछ राग (1999)

संपादन - हिन्दी हास्य व्यंग्य संकलन(2000)

उपन्यास :

सूनीघाटी का सूरज - 1957 में प्रकाशित

मेधावी ग्रामीण रामदास का शिक्षाक्षेत्र में संघर्ष जमींदारों, ठेकेदारों का शोषण । पुलिस की ज्यादती, विश्वविद्यालयों में भी गरीब, ग्रामीण, प्रतिभाशाली विद्यार्थी का शोषण, अन्यायपूर्ण व्यवहार, एक की कृति को दूसरे का शठतापूर्वक अपने नाम से छपवाने आदि बौद्धिक स्तर पर होने वाली घटनाओं का चित्रण है । रामदास अंत में विश्वविद्यालय का शिक्षक न बनकर स्कूल -शिक्षक बन जाता है ।

अज्ञातवास - प्रकाशन 1962

रजनीकांत -रानी के जीवन से संबंधित है । मध्यवर्गीय रजनीकांत गाँव का है पर ग्रामीण परिवेश में अपने को समायोजित करनेवाली पत्नी रानी से विमुख । डॉ. सीता दत्त को उपपत्नी बनाता है । सीतादत्त को असलियत पता लगने पर वह रजनीकांत से नाता तोड़ देती है । फिर रजनीकांत रानी से शारीरिक संबंध रखना चाहता है । तो क्रोधित होकर रानी गांव चली जाती है । दो साल बाद देहांत । बाद में माँ-बाप के गिरते संबंध से खिन्न होकर बेटी प्रभा पिताजी की निंदा पर दोषारोपण करती है । इससे रजनीकांत के हृदय में परिवर्तन होता है, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी । इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार में गिरते हुए संबंध और तद्‌जनित समस्याओं की चर्चा है ।

सीमाएँ टूटती हैं - 1973

व्यापारी दुर्गादास के अपने व्यापार में सहयोगी गोविन्द की हत्या के अपराध में कारादंड मिलता है । इसके विरुद्ध अपील की जाती है । दुर्गादास के मित्र विमल से दुर्गादास की पुत्री चाँद का प्रणय संबंध और फिर जुही से प्रेम संबंध आदि घयनाएँ परिवारों की मनोदशा व्यक्त करती है ।

आदमी का जहर - 1972

नायक हरिश्चन्द्र रूबी से प्रेम करता है । पर ब्लाकमेलिंग में माहिर पत्रकार अजीत सिंह पर उसे संदेह है कि रूबी से उसका भी संबंध है । एक होटल में हरिश्चन्द्र अजीत सिंह पर गोली चला देता है । गोली निकाल लेने से वह खतरे से बाहर घोषित किया जाता है । पर अचानक उसकी मृत्यु हो जाती है । पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक उसकी मृत्यु जहर खाने से हुई थी । हरिश्चन्द्र और रूबी हिरासत में ले लिए जाते हैं । बाद में हत्या का सुराग मिल जाता है कि नेता शांतिप्रकाश ने उसे जहर दिया था । यह जासूसी उपन्यास है ।

मकान : 1976

डायरी शैली में रचित नगरनिगम में असिस्टेंट पद पर नियुक्त एक सितारवादक नारायण बैनर्जी की मकान संबंधी समस्या मूल कथावस्तु है । उसे मकान एलाट कर दिया जाता है । लोग शुभेच्छा व्यक्त करते हैं । मकान का अधिकार मिलने से पहले हत्या । उसी दिन उनके लिए शोक जताने रेडियो पर सितारवादन कार्यक्रम, संगीत कला कार्यालय बंद, गुंडा विरोधी अभियान चलाया जाता है । सरकारी

घोषणा - उनकी पत्नी को रियायती दर पर मकान एलॉट और अध्यापिका की नौकरी, पुत्र को हाउसिंग इन्सपेक्टर पद, इसमें मूल है । मकान समस्या । उससे संबंधित है - भाई भतीजावाद, नौकरशाही का भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, रिश्वत खोरी, नेताओं का अनैतिक आचरण, व्यंग्यात्मक शैली में इनका जड़ बताई गई । भ्रष्टाचार एक बरगद है । समाज धीरे-धीरे खोखला हो रहा है ।

पहला पड़ाव :

ईंट के भट्टों पर काम करने वाले मजदूर दूर से रोजगार की तलाश में आकर सपरिवार बंधुआ मजदूर बन जाते हैं । सब्जबाग दिखाकर दलाल उनको लाता है, पूरी मजदूरी नहीं देता । पशुओं की तरह झोंपड़ियों में रखता है । उनकी बेइज्जती होती है । बीमारी होती है । उनकी दुर्दशा में शामिल है - ठेकेदार, इंजीनियर, मालिक, इनके क्रूर कार्यकलापों का यथार्थ चित्रण हुआ है ।

पहले अर्थशास्त्र में एम.ए. करने वाले मुंशी शोषक वर्ग के प्रतिनिधि बन कर आने पर भी बाद में वस्तुस्थिति अनुभव करके शोषित मजदूरों के सहानुभूतिशील बन जाते हैं । उनकी दशा सुधरने कटिबद्ध । स्वार्थ को तिलांजलि दी । उनका साथ देने को कटिबद्ध होना - पहला पड़ाव यानी पहली व्यंग्यात्मक शैली में भ्रष्टाचार और शोषण का पर्दापाश ।

विश्रामपुर का संत - 1998

सर्वोत्कृष्ट उपन्यास 1999 में बिड़ला फाऊंडेशन के व्यास सम्मान से सम्मानित । इसमें आर्थिक और राजनीतिक भ्रष्टाचार के दलदल में फँसे समाज को जानने का अवसर मिलता है ।

राग दरबारी से विश्रामपुर का संत उपन्यास में सामाजिक दृष्टि भिन्न है । राग दरबारी में उपहास - मुद्रा का आधिक्य है । उसे पढ़कर पाठक में विनोद भावना विकृतियों से रस लेते हैं, उभरती है । इनमें कोई प्रगतिशील सामाजिक दृष्टि नहीं है । कोई संदेश नहीं है । पात्रों के प्रति कोई सहानुभूति उत्पन्न नहीं होगी ।

विश्रामपुर का संत में एक सामाजिक दृष्टि है । कथा के केन्द्र में है - भूतपूर्व ताल्लुकदार और संप्रति राज्यपाल कुंवर जयंती प्रसाद सिंह । उनमें महत्त्वाकांक्षा, आत्मछल, कुंठा है । पर उनके माध्यम से भारत की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति और संबंध उजागर हुआ है । सरकार में सामंती मानसिकता है ; नित्य नए-नए रूपों में भ्रष्टाचार सामने आ रहा है । अपने कृतकर्मों से दुःखी होकर जयंती प्रसाद आत्महत्या करते हैं । यह एक ऐसा बिन्दु है जहाँ पुराना खतम होता है नए की शुरूआत होती है ।

इसमें भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक अवस्था का चित्र मिल जाता है । भूदान की हास्यास्पदता भी अभिव्यंजित है ।

2.3 रागदरबारी :

राग दरबारी के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाई । स्वतंत्र भारत में गणतंत्र के उद्देश्यों का हनन किया गया है । स्वतंत्रता, समानता, विकास आदि कल्पना में रह गए । झूठ-फरेब का राज चला । सरल निरपराध, सामान्य जनता अराजक स्थिति में ऊब गई । उत्पीड़न, अन्याय के चक्रव्यूह में फंसकर सिर्फ असंतोष, विद्रोह, क्रांति सत्ताधिकारी की आपाधापी और धोखाबाजी से थका हुआ हारा हुआ भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता चुनावी चाल, लूट, चोरी स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक विडंबनाओं और विसंगतियों को उजागर किया गया है । सरकार सामान्य जनता के लिए बहुमुखी विकास करने की कोशिश करती है । पर जनता की स्थिति दिनोंदिन बद से बदतर हो जाती है । असुरक्षा के बीच जिन्दगी ढोने को विवश ।

राजनीति के दाँव-पेच में माहिर लोग दिनोंदिन फल-फूल रहे हैं । उनके दोहरे व्यक्तित्व को पहचानने में असमर्थ जनता प्रशासनिक न्यायिक विद्रूप का शिकार है । हर ओर उन्नीस सौ चौरासी, धुँधलके में समाज-सेवा जीती-जागती सरकार का एक हसीन सपना, संस्कृत पाठशाला में प्रसाद, बया और बंदर की कहानी ; एक रिसर्च स्कालर की जबानी, दुराचार बनाम भ्रष्टाचार, जनवाणी बनाम महाजनवाणी, राजनीतिज्ञों की पंचायत, तलाश जारी है आदमी की आदि कुछ चर्चित व्यंग्यात्मक रचनाएँ हैं ।

2.4 स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजनैतिक परिदृश्य :

स्वतंत्रता के बाद आशा की जाती थी कि आम आदमी की हालत सुधर जाएगी । पर सत्ता के सामंती प्रभाव ज्यों का त्यों रहने से आर्थिक विकास अवरुद्ध हो गया । पूँजीवादी व्यवस्था की पक्षधर सत्ता केवल सीमित धनवान वर्ग की स्वार्थरक्षा करती हुई एक बड़े समुदाय से कट गई । आम जनता उपेक्षित रह गई । कुछ स्वार्थ पर शक्तियाँ समाज को जोड़ने के बजाय तोड़ने में लग गए । परिणाम - स्वरूप सांप्रदायिकता - जातिवाद, भाई-भतीजावाद, अन्याय, अत्याचार को बढ़ावा मिला । शोषकों की आपाधापी बढ़ती गई । शोषित ग्रामीण जनता न्याय से वंचित रही । इसकी आर्थिक स्थिति दिनोंदिन बिगड़ती गई । अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए उसे अथक संघर्ष करना पड़ा । सरकार ने यद्यपि ग्रामीण जनता के विकास के लिए पंचायतों, सहकारी समितियों, विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना की, लेकिन उसका फायदा केवल मुट्ठीभर धनवान, प्रभावशाली कूटनीति-निपुण और नौकरशाही से संबंधित लोगों को मिला ।

राग दरबारी ऊपन्यास में विभिन्न पात्रों के आचरणों और विभिन्न घटनाओं के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक चित्र स्पष्ट हो जाता है । लेखक ने राजनीतिक दाँव-पेंच के प्रति व्यंग्य करते हुए वैद्यजी के बारे में कहते हैं - ''शिवपालगंज की पंचायत, कॉलेज की प्रबंध समिति और कोपरेटिव सोसायटी के सूत्रधार वैद्यजी साक्षात वह राजनीतिक संस्कृति हैं, जो प्रजातंत्र और लोकहित के नाम पर हमारे चारों ओर फल-फूल रही है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सत्ता हथियाने की होड़ चल पड़ी । नेता स्वार्थांध और अवसरवादी हो गए । आज सभी में पद-लिप्सा है । आज का युग धर्म है -''जो जहाँ है, अपनी जगह गोह की तरह चिपका बैठा है । टस-से-मस नहीं होता । उसे चाहे जितना कोंचो, चाहे जितना हिलाओ, वह अपनी जगह चिपका रहेगा और जितने नाते-रिश्तेदार हैं सब उनकी दुम के सहारे सड़ासड़ चढ़ते हुए ऊपर तक चले जाएँगे ।

देश के नेताओं को भाषण देने का चस्का लग गया है । 'राग दरबारी' में एक नेता का विचार इस प्रकार है -'' उन्हें याद आया कि मैं उन्हीं प्यारे नौजवानों से अड़तालीस घंटे बोला ही नहीं ।'' उन्होंने सोचा, -''मैं इतनी देर बिना लेक्चर दिए ही रह लिया । मेरे मन में इतने -इतने ऊँचे विचार उठे पर मैं स्वार्थी की तरह अपने आप में उन्हें समेटे रहा । हाय मैं कितना कंजूस हूँ । धिक्कार है मुझे, जो इस देश में पैदा होकर भी इतनी देर तक मुँह बंद किए रहा ।''

इस देश में कोई पद पाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे दिखाने पड़ते हैं । वैद्यजी तमंचे के जोर से कॉलेज की प्रबंध समिति के मैनेजर बन गए तो रंगनाथ अपनी नाराजगी व्यक्त करते हैं । इस पर रुप्पन बाबू ने अपनी डंडमार शैली में जवाब दिया था-'' देखो दादा, यह तो पॉलिटिक्स है । इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है । यह तो कुछ भी नहीं हुआ । पिताजी जिस रास्ते में हैं, उसमें इससे भी आगे कुछ करना पड़ता है । दुश्मन को, जैसे भी हो, चित करना चाहिए ।''

नेताओं के अनुयायियों या चमचों को 'राग दरबारी' में 'पालक बालक' की संज्ञा दी गई है । बद्री पहलवान एक गुंडे की जमानत लेना चाहता है, क्योंकि वह पहले उसका 'पालक बालक' था । इस पर रंगनाथ सोचता है -'' प्रत्येक महापुरुष के इर्दगिर्द 'पालक बालक' का मेला लगा हुआ है । पुरुष जब महापुरुष बन जाता है, तो वह अपनी इज्जत अपने 'पालक बालक' को सौंप देता है ।''

नेताओं के राजनीतिक दाँवपेंच में सामान्य जनता के लिए 'वोट' का कोई मूल्य नहीं है ।

सनीचर प्रधान का पर्चा दाखिल करके वोट मांगते हुए जब बताता है कि वह नाम भर का प्रधान होगा और प्रधान वैद्यजी होंगे, तब तक इक्केवाला कहता है-'' हमें कौन वोट का अचार डालना है । ले जाएँ । वैद्यजी ही ले जाएँ ।'' दूसरा कहता है -'' वोट साला कौन छप्पन टके की चीज है ! कोई भी ले जाए ।'' फिर रामधीन का भाई कहता है कि वोट मुझ को देना है । उत्तर में इक्केवाला कहता है -''दे देंगे । कहो तो ले जाओ ।''

वैद्यजी के अन्याय और कुकर्मों, बद्री पहलवान के कार्य से विमुख रुप्पन की मनोदशा इस प्रकार है - ''यानी उस लड़के(रुप्पन) के मन में वह बेचैनी पैदा हो गई थी, जिसकी वजह से आदमी विभीषण, ट्राटस्को या सुभाषचन्द्र बोस बनकर कुछ कर दिखाना चाहता है और अंत में फाँसी के तख्ते पर, जेल में या जयप्रकाश नारायण और अच्युत पट्टवर्धन के संन्यास में जाकर दम लेता है ।

प्रधान सनीचर का गाँव-सभा के रूप में नाम जब उठा तब यह कुछ मजाक जैसा लगा था, पर सचमुच उसकी विजय होने पर रंगनाथ सोच में पड़ गया । सनीचर की विजय के दिन उसने बहुत सोच डाला और उस दौरान उसे प्रदेश की राजधानियों में न जाने कितने वैद्यजी और मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों की कतार में न जाने कितने सनीचर घुसे हुए दीख पड़े ।

गाँव-सभा के चुनाव में तीन तरकीबें हैं - 1. रामनगरकली, 2. नेवादाकली, 3. महीपालपुरवाली

रामनगर वाले चुनाव में :

पहले तो मतदाताओं में कोई दिलचस्पी नहीं है । वोट मांगने वालों से ज्यादातरलोग कहते हैं - '' हमें वोट का कौन अचार डालना है ! जितने कहो, उतने वोट दे दें ।'' लोगों को लगता है कि गलत लोग को वोट देने पर भी कोई नुकसान नहीं है । वोट देना काफी है । गलत -सही लगा रहता है । कुछ लोग समझते हैं कि दोनों उम्मीदवार ठाकुर हैं इसलिए वोट से तटस्थ रहा जा सकता है । जब पता चला कि गाँव-सभा का प्रधान फर्जी जमीन दिला सकता है, तब उनमें एक पक्ष का समर्थन करने का विचार उत्पन्न हुआ । लेखक ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा -फिर उनके(मतदाताओं के) सामने वही मानसिक समस्या पैदा हो गई जो चीनी हमले के मौके पर आचार्य कृपलानी ने पूरे देश के सामने पैदा कर दी थी । वे सोचने लगे कि तटस्थ रहना बिलकुल बेकार है और उसमें कमजोरी भी है और नुकसान भी .... बहुत ज्यादा तटस्थ बनने की कोशिश मत करो, नहीं तो दोनों ओर से मारे जाओगे ।

राजभवनों में गोपनीयता की जो शपथ ली जाती है, वह केवल औपचारिक है, उसमें कतई निष्ठा नहीं होती । इस पर व्यंग्य करते हुए लेखक छोटे पहलवान द्वारा बद्री के सामने ली गई शपथ पर प्रकाश डालते हैं - छोटे ने निष्ठापूर्वक शपथ ली । पर वह शपथ गोपनीयता की उन सभी शपथों जैसी थी जो राजभवनों में ली जाती है ।'' छोटे पहलवान ने बाद में वही बात सभी के सामने खुलासा कर दी थी । बदनामी से बचने के लिए कोई बहाना बनाकर कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर पद से त्यागपत्र देने के लिए वैद्यजी को शहर के नेता समझाने लगे तब वैद्यजी ने शर्त रखी कि प्रदेशीय उम्मीदवार बनाए जाए तो उन्हें इत्मीनान दिलाया गया कि पहले वह त्यागपत्र दे दें ।

उस समय कुछ लोग वकालात छोड़कर फायदेमंद धंधे के रूप में राजनीति को अपना चुके थे,

जो हत्या, बाहुबल और भय-प्रदर्शन को माध्यम बना चुके थे । ऐसे हैं सर्वदमन सिंह, जिनके पास बंदुकें थीं जो किराए पर चलती थीं । पुलिस उन्हें शांतिप्रिय आदमी समझती थी । चुनाव के समय किसी पार्टी के समर्थक अपनी जान की सुरक्षा के लिए हवालात में रहना पसन्द करते हैं । पुलिस पर प्रभाव डालकर विपक्ष के कर्मियों को जमानत न मिलने की व्यवस्था करके चुनाव में जीत हासिल करना स्वातंत्र्योत्तर भारत की एक एक सामान्य घटना है जिससे सर्वदमन चुनाव जीत सके थे ।

चुनाव लड़ने का नेवादावाला तरीका इससे अलग था । पुरुष ब्रह्म के मुँह ब्राह्मण उम्मीदवार ने श्रेष्ठ जाति के आधार पर चमार उम्मीदवार से अधिक वोट बटोरने का प्रयास किया । यह तरीका असफल हो कि सहायकों ने ठाकुर किसनसिंह को चमार को वोट न देने को उकसाया था । चमार को गालियाँ दी । पर उन पर मार पड़ी तो तीसरा तरीका यह हुआ कि एक ढोंगी बाबाजी के माध्यम से जातिवाद का उन्मूलन करके लोगों को गाँजा, भांग, शराब को प्रसाद के रूप में वितरण करके सम्मोहित कर दिया गया । वस्तुस्थिति से ज्ञात होने से पहले ब्राह्मण उम्मीदवार ने भविष्यवाणी कर दी कि भगवान ने ब्राह्मण उम्मीदवार को प्रधान चुन लिया है । लोगों को नशा उतरने से पहले महीपपुरवाला चुनाव तरीका इससे बड़ा विलक्षण था । चुनाव अधिकारी सवा घंटा पहले अर्थात् जब दूसरे भी घड़ी में पौने ग्यारह बजे थे अपनी घड़ी में बारह बजने का समय दिखाकर उस समय तक आने वाले वोटरों से चुनाव पूरा करके नतीजे का ऐलान कर दिया । इस तरीके से दूसरी जगहों पर समय को अपनी पसंद से आगे-पीछे करके चुनाव प्रक्रिया पूरी की गई ।

वैद्यजी सनीचर के लिए महीपुरवाली पद्धति अपनाकर चुनाव जीत गए ।

भारत में चुनाव इन पद्धतियों के सहारे चलता रहता है ।

कुछ अफसर सत्तारुढ़ नेताओं की खुशामद करते हैं और विरोधी नेताओं की बात को न केवल अनसुना कर देते हैं, बल्कि निरादरपूर्वक व्यवहार भी करते हैं । मास्टर खन्ना के विचार ऐसे हैं -‘‘उन्हीं नेताओं से वे सख्ती दिखाते हैं जो विरोधी गुट के हैं । ये बड़े घुटे हुए अफसर हैं, आधे नेता हैं, आधे अफसर । अपने मतलब के दो-चार नेताओं को पटा लिया है । रात को जाकर उनके सामने दुम हिलाते हैं । दिन को उन्हीं के बूते पर दूसरों से सख्ती दिखाते हैं ।

हमारे समाज में कई लोग किसी संस्था के मुखिया तो बनते हैं, पर जिसके बल या इशारे से वे उस पद पर आसीन होते हैं, उसकी इजाजत के बिना एक भी कदम उठा नहीं पाते । सनीचर गाँव का प्रधान है । पर छोटा पहलवान जब उसे डाँट देता है तब सनीचर की दशा इस प्रकार है -‘‘जैसे कोई प्राइमिनिस्टर पार्टी प्रेसिडेंट की डाँट खाकर एकदम से प्रेस कांफ्रेंस में पहुँच रहा हो, कुछ उसी पोज से उसने (सनीचर) ने अपने चेहरे को निर्विकार करने की कोशिश की ।’’

चुनाव के पहले मतदाओं को अपनी ओर खींचने के लिए उम्मीदवार अपने-अपने चुनाव क्षेत्र

का सुधार कराते हैं । रामधीन के भैया ने गाँव के प्रधान के चुनाव से पहले गाँधी चबूतरे का सुधार कराया था । वहाँ एक कुएँ का जिर्णोद्धार करके राजनीतिक कार्रवाई के रूप में सरकारी कागज पर कूप निर्माण का उल्लेख करके सरकारी अनुदान प्राप्त कर लिया था । उस पर शिलालेख भी लगाया गया था ।

इस दशा में भारत की जमीन पर स्वस्थ लोकतंत्र का बीज पनपना नामुमकीन लगता है ।

व्यंग्य :

व्यंग्य का अर्थ है व्यंजित होने वाला । व्यंजना शब्दशक्ति से व्यंग्यार्थ निकलता है । यह एक विलक्षण अर्थ भी है । व्यंग्य शब्द अंग्रेजी शब्द 'सटायर' के लिए भी प्रयुक्त होता है । हास्य-उपहास , परिहास, वक्रोक्ति, वाग्वैदग्ध्य, वाग्दंश, कटूक्ति, पैरोडी, आक्षेप, अतिरंजना, अपकर्ष आदि के माध्यम से व्यंग्य शैली का ढाँचा तैयार होता है ।

व्यंग्य के मूल में स्थिति की जड़ता के प्रति घृणा का भाव रहता है । इसलिए वह आक्रमणमूलक और आक्रोशमूलक हो जाता है । आज की स्थिति में राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों का विघटन हो रहा है । ऐसी स्थिति में व्यंग्य ही उस विघटनोन्मुखी समाज की रक्षा कर सकता है । व्यंग्य यथार्थ के एक सशक्त माध्यम के रूप में समाज की गंदगी को उभारता है ।

जोनाथन स्विफ्ट के अनुसार ''व्यंग्य एक ऐसा शीशा है, जिसमें देखने वाले को अपने सिवा हर किसी का चेहरा नजर आता है । यही कारण है कि संसार में व्यंग्य का स्वागत किया जाता है तथा बहुत कम लोग इससे आहत होते हैं ।''

मैथ्यू हागर्ड लिखते हैं -''व्यंग्य चेतावनी प्रदान करता है कि मनुष्य खतरनाक जानवर है जिसमें मूर्खतापूर्ण कार्यों के करने की अनंत क्षमता होती है और व्यंग्य के माध्यम से इसी सत्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है ।'' हम्बर्ट वाल्फ की मान्यता है - ''व्यंग्यकार लेखक उपदेशक एवं प्रत्युत्पन्न के मध्य की श्रेणी का होता है । उद्देश्य दोनों का समान होता है, किन्तु वह वचन विदग्धता की सहायता से घृणा व प्यार दोनों ही करता है, क्योंकि उसे अशिव के प्रति जुगुप्सा व वितृष्णा व्युत्पन्न करनी है तथा शिव के प्रति अनुराग । इस प्रकार वह एक देवपुरुष के कर्म में सहयोग देता है । व्यंग्यकार केवल सत्य की प्रतिष्ठा पर ही बल नहीं देता बल्कि वचन विदग्धता की सहायता से पापों को उघाड़ देता है व ढोंग का पर्दाफाश करता है ।

हिन्दी समीक्षकों ने भी व्यंग्य को परिभाषित किया है । शेरजंग गर्ग की मान्यता है कि व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है जिसमें व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, दुर्बलताओं, करनी ओर एवं कथनी के अंतरों की समीक्षा अथवा निंदा भाषा को टेढ़ी भंगिमा देकर अथवा कभी-कभी

पूर्णत: सपाट शब्दों में प्रहार करते हुए की जाती है .....व्यंग्य में आक्रमण की स्थिति अनिवार्य है ।' हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य को आक्रामकता नहीं, वरन सहानुभूति का उत्कृष्ट रूप मानते हुए लिखा है- ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है । विसंगति-मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है ।... अच्छा व्यंग्य सहानुभूति का सबसे उत्कृष्ट रूप होता है । आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- ''व्यंग्य वह है जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो, फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है ।''

व्यंग्यकार के जीवन -दर्शन और सामाजिक दृष्टि के आधार पर व्यंग्य के लक्षण और उसकी विशेषताएँ भिन्न हो जाती हैं । इसलिए आक्रामकता -विनोदात्मकता और सुधार व्यंग्य के सर्वसम्मत लक्षण माने जा सकते हैं ।

2.5 राग दरबारी के व्यंग्य :

हिन्दी व्यंग्य उपन्यास के रूप में 'राग दरबारी' का प्रकाशन 1968 में हुआ । डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के शब्दों में -'' हिन्दी के व्यंग्य उपन्यासों की इस सुदीर्घ यात्रा में 'राग दरबारी' को मील का पत्थर बनने का अवसर इस कारण मिला है कि व्यंग्य चेतना से संपुष्ट संप्रेषण भंगिमा का ऐसा स्पष्ट विधान हिन्दी उपन्यासों के इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है ।''

स्वातंत्र्योत्तर भारत के शहरों में पनपे राजनीतिक छलछन्द, मानवीय मूल्यहीनता और तज्जनित जीवन प्रणाली ने शहरों से आकर ग्रामीण परिवेश को भ्रष्ट और विसंगतियों से भर दिया है । लेखक श्रीलाल शुक्ल यह सारा कचरा लाकर शिवपालगंज में उँडेल दिया है । उपन्यास की भूमिका में वे लिखते हैं - 'राग दरबारी' का संबंध एक बड़े नगर के कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिन्दगी से है जो पिछले बीस वर्षों के प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है । यह उसी जिन्दगी का दस्तावेज है ।''

शिवपालगंज में अच्छाइयों को छोड़कर सब कुछ है । इसलिए लेखक लिखते हैं -'' सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला है ।'' लेखक अपने व्यंग्यास्त्रों द्वारा शिवपालगंज में फैली विसंगतियों के पहाड़ को चकनाचूर करने को कटिबद्ध हैं ।

यहाँ खेल-खलिहान, गाय-बैल, किसान-त्यौहार नहीं हैं । जो हैं, वे हैं - सत्तो लोलुप्त, भाषणबाजी, मतदान में धाँधली, हिंसा, दादावाद, कौडिल्ला छाप इन्सान, छल-गलत परिसंख्यान, रिश्वतखोरी, चरमरा गई पुलिस व्यवस्था, यौन विकृति, छुआछूत, कालाबाजारी, भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था, गुटबंदी, भ्रष्टाचार, संबंधों में मूल्यहीनता, राजनीतिक छलछन्द को साकार करने वाले पात्र हैं वैद्यजी ।

वे स्वार्थी, छली और अवसरवादी नेता हैं । आजादी के पहले वे अंग्रेजों के भक्त थे । आजादी के बाद भी अधिकारियों के प्रिय रहे । वे कथनी में गांधी की तरह कोई पद लेना नहीं चाहते, पर करनी में सत्तालोलुप हैं । वे छंगामल इंटर कॉलेज के मैनेजर और काओपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं । अपने अनुयायी सनीचर को ग्रामपंचायत का प्रधान बनवा देते हैं ।

नेता लोग भाषणबाजी के बल पर अपने को सुरक्षित रखते हैं । उनको संतोष मिलता है कि उनके व्याख्यानों के कारण किसान प्रगतिशील हो रहे हैं । लेखक ने व्यंग्य किया कि एक नेता अड़तालीस घंटे बिना भाषण दिये रह जाने की बात याद आई तो उन्होंने सोचा -''हाय ! मैं कितना कंजूस हूँ । धिक्कार है मुझे, जो इस देश में पैदा होकर भी इतनी देर तक मुँह बंद किए रहा ।'' रुप्पन रंगनाथ को भी समझाता है -'' देखो दादा, यह तो पालिटिक्स है । इसमें बड़ा-बड़ा कमीनापन चलता है । .... दुश्मन, जैसे भी हो, चित करना चाहिए ।''

लेखक ने गाँव में वोटदाताओं पर व्यंग्य किया है । एक वोटदाता सनीचर से कहता है -'' वोट साला कौन छप्पन टके की चीज है । कोई भी ले जाए ।'' सनीचर भी वोट मांगते हुए कहता है - देखो भाइयो ! मैं भी किसी से तिगड़मी कम नहीं हूँ और भला आदमी समझ कर मुझे वोट देने से कहीं इनकार न कर बैठना । वोट लेने के तीन तरीके हैं - पालक बालक और गुंडे के तमंचे और डंडों के बल पर, राजनीतिकों को धर्म से जोड़ कर और चुनाव अधिकारी को प्रभावित करके इसकी गलती की आड़ में । सनीचर केवल एक सस्ती घड़ी चुनाव अधिकारी को देकर बाजी मार लेता है ।

गाँव की न्याय पंचायत की दुर्गति पर लेखक ने व्यंग्य किया है । पंचायत मंत्री गबन के मामले में फँसे हुए हैं और अन्य पंच निरक्षर हैं । लोग इनके इन्साफ को कौडिल्ला छाप इंसाफ कहते हैं । जोगनाथ-गयादीन का मुकदमा, छोटे पहलवान की गवाही, वकीलों की बहस, न्यायाधीश का फैसला - ये सब हमारी न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य हैं ।

'भूदान यश' के नाम पर नेताओं की आपाधापी पर लेखक ने व्यंग्य किया कि गाँव की एक ऊसर मैदान को भूदान आंदोलन में दे दिया गया जो दान के रूप में ग्राम सभा को वापस मिला । वह ग्राम प्रधान के हाथ में आया जो भाई-भतीजों में बाँटा गया । क्रय-विक्रय के सिद्धांत से जो हिस्सा गरीबों और भूमिहीनों को मिला, वह दूसरों की जमीन थक्ष, उस पर मुकदमा चला ।

यहाँ झूठा आँकड़ा दिखाकर प्रगति का हिसाब दिखाया जाता है । वन संरक्षण के नाम पर कुछ नहीं होता । केवल खोदी गई नालियाँ शौचालय के काम में आती हैं ।

सत्ताधारी नेताओं की खुशामद करके अधिकारी विरोधी गुट के लोगों पर सख्ती दिखाते हैं । रिश्वत लेना बाबुओं के अधिकार क्षेत्र में आता है । लंगड़ से पांच रुपये रिश्वत न मिलने पर तहसील का नकलनवीस कसम खाता है - ''मैं रिश्वत न लूँगा और कायदे से नकल दूँगा ।'' नकल नहीं मिल

पाती । मेले में सैनिटरी इंस्पेक्टर खोमचेवालों से रिश्वत लेता है ।

लेखक ने अस्तव्यस्त पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य किया है । वैद्यजी का विरोध करने वाले दारोगा का शहर में तबादला हो जाता है । नया दारोगा चोर जोगनाथ को दंडित नहीं कर पाता है, क्योंकि वह वैद्यजी का आदमी है । तमंचा रखने वाला कॉलेज विद्यार्थी वंशी बजाता हुआ आराम से थाने से मुक्त होता है । अपराधी अदालत में चालान होने में अपना कल्याण मानकर दारोगा से यह काम जल्दी करने का अनुरोध करता है । अदालत में भी मुलाजिम हरिराम को कत्ल के जुर्म में बाइज्जत बरी किया जाता है ।

गाँव भर में यौन विकृति की दुर्गंध फैली हुई है, जिस पर लेखक ने व्यंग्य किया है । बेला अविवाहित होकर भी सिनेमा -शैली में प्रेमपत्र लिखती है, यौन क्षुधा मिटाने रात को छतों को पार करती हुई रुप्पन से मिलने आती है । रुप्पन भी प्रेम पत्र लिखता है - चारित्रिक दोष वैद्यजी, कुसदर प्रसाद, सनीचर का भी है ।

लेखक ने गाँव की छुआछूत के प्रति व्यंग्य किया है -'' क्योंकि छुआछूत इस देश का धर्म है । इसलिए शिवपालगंज में भी दूसरे गाँवों की तरह अछूतों के लिए अलग -अलग मुहल्ले थे । लेखक गाँव में होने वाली कालाबाजारी पर व्यंग्य करते हैं । सनीचर अपनी दुकान में खुले आम कुछ चीजें बेचता है, पर छिपकर स्थानीय अस्पताल के स्टोर की दवाइयाँ प्राइमरी स्कूल के दूध के पाउडर के डिब्बे और नशीले पदार्थ - गांजा, भांग, चरस, बेचता है ।

परिवेश की कुरूपता पर व्यंग्य करके लेखक ने खुले मैदान में शौच जाने का वर्णन किया है - ''सड़क की पटरी पर दोनों ओर कुछ गठरियाँ-सी रखी हुई नजर आयीं । ये औरतें थीं जो कतार बाँध कर बैठी थीं । ये इत्मीनान से बातचीत करती हुई वायु-सेवन कर रही थीं और लगे हाथ मल-मूत्र विसर्जन भी ।'' पेट्रोल स्टेशन के पास की दुकानों की मिठाइयों की स्थिति इस प्रकार थी -'' उनमें मिठाइयाँ भी थीं जो दिन रात आँधी-पानी और मक्खी-मच्छरों के हमलों का बहादुरी से मुकाबला करती थीं । लेखक ने लिखा कि शिवपालगंज के बस अड्डे की गंदगी बड़े नियोजित ढंग की थी ।''

छंगामल इंटर कॉलेज के माध्यम से शिक्षा पर करारा व्यंग्य किया गया है । प्रिंसिपल को रोज वैद्यजी के दरवार में हाजिरी देनी पड़ती है । प्रिंसिपल और मैनेजर अपने रिश्तेदारों को कॉलेज में नियुक्ति देते हैं । कॉलेज का पैसा गबन करते हैं । खन्ना मास्टर गुटबंदी में लगा हुआ है । मोतीराम अध्यापक की अपेक्षा आटा-चक्की पर अधिक ध्यान देते हैं । प्रिंसिपल बुद्धिजीवियों की विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार करते हैं - तो हालत यह है कि है तो बुद्धिजीवी पर विलायत का एक चक्कर लगाने के लिए यह साबित करना पड़ जाए कि हम अपने बाप की औलाद नहीं हैं जो साबित कर देंगे । चौराहे पर दस जूते मार लो पर एक बार अमेरिका भेज दो । ये हैं बुद्धिजीवी ? रिसर्च करने को रंगनाथ

घास खोदने का काम कहता है । बद्री रंगनाथ को सूअर का लैंड कहता है । लेखक व्यंग्य करते हुए कहते हैं -" वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है ।"

ग्रांट खोर कालिका प्रसाद सरकारी अनुदान और ऋण लेने में कोई कसर नहीं छोड़ते । लेखक, सरकारी योजनाएँ कैसे असफल हो जाती हैं, उस पर व्यंग्य करके कहते हैं कि वसूली के वक्त ऐसे व्यक्ति अधिकारियों से मिलकर कारवाई रुकवा देते हैं ।

परिवार में सब मर्यादा का उल्लंघन करने लगे हैं । कुसहट और छोटे पहलवान, वैद्यजी और बद्री पहलवान में संबंध पिता-पुत्र का होने पर भी वह मर्यादा की सीमा अतिक्रांत कर जाता है । लेखक ने अपनी सपाट बयानी के द्वारा विभिन्न असंबंधित कथाओं को जोड़कर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को व्यंग्य के माध्यम से उभारने का प्रयास किया है । उन्होंने समाज में मानव मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठा करने के लिए पाठकों को सजग कर दिया है ।

2.6 शीर्षक :

उपन्यास के शीर्षक को महत्वपूर्ण माना जाता है । यह पहले पाठकों में उपन्यास के प्रति कुतूहल उत्पन्न करके उसे पढ़ने को प्रवृत्त करता है । शीर्षक रखने की चार पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं - जैसे 1. मुख्य पात्र - नायक, नायिका के नाम पर । 2. प्रधान घटना के नाम पर । 3. घटना स्थल के नाम पर । 4. प्रतीकात्मक नामकरण ।

'राग दरबारी' का शीर्षक प्रतीकात्मक है । इस नाम के पीछे एक वैचारिक पृष्ठभूमि है । दरबार राजतंत्र में शासन की धुरी होता है । राजा कोई भी निर्णय दरवार में लेते हैं । वहाँ महामंत्री विभिन्न विभागीय मंत्री, सेनापति, राजपुरोहित, राजकवि, विदूषक, चारण आदि उपस्थित रहते हैं । राजा को भारतीय परंपरा में ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है । वह प्रजापालक, प्रजारक्षक के रूप में अपना उवदायित्व निभाता है । प्रजा की यदि कोई दुर्दशा होती है, प्रजा उसे अपना कर्मफल, दुर्भाग्य मानकर संतुष्ट हो जाता है । किसी स्थिति में राजद्रोह को धर्मद्रोह माना जाता है । दरबार भी यह राग अलापता है और उसे बनाए रखने का भरसक प्रयत्न करता है ।

अब आधुनिक युग में भारत में गणतंत्र ने राजतंत्र का स्थान ले लिया है । राज दरबार का परिवर्तन रूप है संसद - जनता का दरबार जो कानून का विधान करता है । प्रशासनिक व्यवस्था जो कानून का कार्यान्वयन करती है और न्यायिक व्यवस्था जो इसे सुरक्षा देती है और अपराधी को दंड - विधान करती है । नूतन व्यवस्था में विभिन्न संस्थाओं के मुख्य, पुलिस व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था, ग्राम पंचायत आदि जन-कल्याण के कार्यों में जुटी रहती हैं । जनता के हाथ में

शासन -तंत्र आ गया है । जनता अपने वोट के बल पर चुनाव द्वारा सत्ता को बदल सकती है । वह देश में किसी भी अव्यवस्था को भाग्य के भरोसे छोड़ने को अब तैयार नहीं है । उसमें अपने अधिकार के प्रति सजगता उत्पन्न हो जाती है । आश्वासन दिया जाता है कि सत्ता में रहने वाले देश के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन करेंगे ।

वास्तव में ऐसा भारत में देखा नहीं जाता । चुनाव -व्यवस्था अब कलुषित हो गई है । जन-प्रतिनिधि धन-बल, बाहु-बल, और छल-बल से सत्ता हथियाना चाहते हैं । एक बार सत्ता में आ जाने पर उस पर टिके रहने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाते हैं । वे अपनी सुरक्षा के लिए एक समर्थक -समूह बनाते हैं । वे भी इसके सदस्यों की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं । वे मिलकर देश को लूटते हैं, जनता का शोषण करते हैं । स्वार्थ सिद्धि में जुटे रहते हैं ऐश की जिन्दगी बिताते हैं, पर चालाकी से जनता के सेवक कहलाते हैं, वे सत्ता को अपनी बपौती मानते हैं, जनता भ्रम में रहती है कि हम सत्ता को पलट सकते हैं । पर वास्तव में वे कठपुतली बनकर रह जाते हैं ... ।

शिवपालगंज भारत का एक छोटा रूप है । वैद्यजी की बैठक उनका दरबार है । बद्री पहलवान, छोटू पहलवान , प्रिंसिपल, सनीचर आदि दरबार के सदस्य हैं । शिवपालगंज के पात्र, घटनाएँ सारे देश में व्याप्त हैं । यहाँ का राग समूचे भारत का राग है । यहाँ के राग हैं - भ्रष्टाचार, गबन, छलपूर्ण चुनाव, परनिन्दा, गुटबंदी, सांप्रदायिकता, जातिवाद, भाई-भतीजावाद. अदालती झगड़े, थानेदार की भ्रष्ट कार्य - प्रणाली, उच्छृंखल, यौनाचार, चोर-डकैती, मूल्यहीन पंचायती न्याय, पारिवारिक मर्यादाहीनता, रिश्वतखोरी, हिंसात्मक कार्य-कलाप, गंजहों की करतूत, तिकड़म , मूर्खता, गुंडागर्दी, चापलूसी, भांग-शराब आदि ।

गाँव में अधिकार क्षेत्र के तीन बिन्दु हैं - छंगामल इंटर कॉलेज, सहकारी कोऑपरेटिव यूनियन, ग्राम पंचायत सारी घयनाएँ इनके केन्द्र बनाकर घटती हैं ।

राग दरबारी भी एक राग है, जो राज दरबार में विशेष अवसरों पर अलापा जाता है । उस समय सारे दरबारी राजा का यशोगान करते हैं । दीर्घायु की कामना करते हैं । राजा के प्रति प्रभुभक्ति का प्रमाण देते हैं ।

शिवपालगंज में वैद्यजी की बैठक में सभी दरबारी वैद्यजी के प्रति अपनी प्रभुभक्ति दिखाते हैं । उनके मार्गदर्शन में सभी योजनाओं को कार्य में रूपांतरित करते हैं । यह उपन्यास ग्रामीण समाज के यथार्थ को उद्घाटित करता है । लेखक कहते हैं - राग दरबारी का संबंध एक बड़े नगर से कुछ दूर बने हुए गाँव की जिन्दगी से है जो पिछले बीस वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों के सामने घिसट रही है । यह उसी जिन्दगी का दस्तावेज है ।

यह राग दरबारी शीर्षक उपन्यास के लिए प्रतीकात्मक है और यथार्थ भी ।

2.7 शिक्षा व्यवस्था :

स्वातंत्र्योत्तर भारत में ग्रामीण शिक्षा संस्थाएँ भ्रष्टाचार के केन्द्र बन गए हैं । शिक्षा संस्थाएँ व्यावसायिक उद्देश्य से सरकारी अनुदान हड़पने और अध्यापकों का आर्थिक रूप से शोषण करने के उद्देश्य से खोले गए । शिक्षा संस्थाओं में ज्ञान प्रदान और बौद्धिक चेतना के विकास की जगह राजनीतिक दावपेंच और घपले ज्यादा होने लगे थे । स्थानीय नेताओं के लिए राजनीति का प्रवेश द्वार मानी गईं । श्रीलाल शुक्ल ने 'राग दरबारी' में इस पर व्यंग्य किया है - ''ये कॉलेज प्राय: किसी स्थानीय जननायक की प्रेरणा से शिक्षा प्रचार के लिए और वास्तव में उसके लिए विधानसभा या लोकसभा के चुनावों की जमीन तैयार करने के उद्देश्य से खोले जाते थे और उनका मुख्य कार्य कुछ मास्टरों और सरकारी अनुदानों का शोषण करना था ।''

राष्ट्रीय विकास की आत्मा एक समृद्ध शिक्षा -व्यवस्था में निवास करती है । शिवपालगंज में छंगामती विद्यालय , इंटर कॉलेज खोला गया था, ताकि देश की भावी पीढ़ी युवावर्ग में बौद्धिक विकास हो, विवेक का जागरण हो, और स्वस्थ नागरिकता का विकास हो । लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हो सका ।

कॉलेज के पास आवश्यक आधारभूत ढाँचा नहीं था । डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से प्राप्त दो बड़े और छोटे कमरों के डाकबंगले को और उसके तीन ओर ऊँची दीवारों पर छप्पर डालकर बनाई गई अस्पताल जैसी समारत को कॉलेज-भवन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था । लेखक ने स्पष्ट किया -''सिर्फ इमारत के आधार पर कह सकते थे कि हम शांति निकेतन से भी आगे हैं, हम असली भारतीय हैं, हम नहीं जानते कि बिजली क्या है, नल का पानी क्या है, पक्का फर्श किसको कहते हैं .... । हमने विलायती तालीम तक देशी परंपरा में पाई है और इसलिए हमें देखो, हम आज भी उतने ही प्राकृत हैं ।''

देश में कुछ लोग नाम कमाने के चक्कर में किसी संस्था नाम के आगे अपना नाम चालाकी में जोड़ लेते हैं । ताकि लोग उन्हें राष्ट्रप्रेमी महानुभाव समझें । जिलाबोर्ड के चैयरमैन छंगामल ने फर्जी कागजात बनाकर डाकबंगले को कॉलेज की प्रबंध समिति को दिलवाकर अपने नाम कॉलेज का नाम जोड़ दिया ।

मास्टर मोतीराम छात्रों को आपेक्षिक घनत्व आटा चक्की के उदाहरण द्वारा समझाते हैं । वे न तो ठीक से पढ़ा पाते हैं, न छात्रों में अध्ययन में रुचि है । जब कक्षा चलते समय उनकी आटा चक्की चलने लगी तो उनको लगा कि मशीन ठीक हो गई । वे छात्रों को किताब में पढ़ने का सुझाव देकर कक्षा छोड़ कर अपनी आटा चक्की की ओर भाग जाते हैं । अपने कर्त्तव्य के प्रति आँख मूँदकर व्यापारी - दृष्टि अपनानेवाले ऐसे अध्यापक भारत की शिक्षा संस्थाओं में भरे पड़े हैं । उनके प्रति व्यंग्य है, ऐसे

अध्यापकों की मनोवृत्ति छात्रों में ज्ञानार्जन की रुचि समाप्त कर देती है । आपेक्षिक घनत्व का अध्याय जरूरी कहकर वे केवल परीक्षा उपयोगी काम चलाते हैं । छात्र भी अधिक जानना नहीं चाहते । ताज्जुब है कि अपनी आटा चक्की का विज्ञापन करने वाले ऐसे अध्यापक प्रिंसिपल और कॉलेज के मैनेजर वैद्यजी के सबसे अधिक प्रिय और विश्वस्त हैं ।

गणित के मास्टर मालवीय छात्रों से शारीरिक संबंध रखते हैं । ऐसे भ्रष्ट अध्यापक शिक्षा की दुर्गति कर रहे हैं । वे लोगों को भड़काते हैं कि प्रिंसिपल हजारों रुपये मनमाना खर्च करता है जो कि गलत है ।

रुप्पन छात्र नेता है, जो मैनेजर वैद्यजी का पुत्र है । वह तीन साल से दसवीं में पढ़ रहा है । पढ़ाई में उसकी रुचि नहीं है । वह थानेदार, कॉलेज के प्रिंसिपल और गाँव के गंजहों का सलाहाकार है । खन्ना मास्टरजी के बारे में क्लर्क वैद्यजी को बताते हैं -''खन्ना मास्टर को मैं जानता हूँ । इतिहास में एम.ए. हैं, पर उन्हें अपने बाप तक का नाम नहीं मालूम ।'' खन्ना मास्टर गुटबंदी में उस्ताद हैं । वे प्रिंसिपल के विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं, वे गाली-गलौज तक भी उतर आते हैं, वे वाइस प्रिंसिपल बनने का रास्ता तैयार करते हैं ।

प्रिंसिपल दूसरे अध्यापकों का शोषण करते हैं । वे मैनेजर की खुशामद करते हैं । वे झूठे मुकदमों में अध्यापकों को फँसाते हैं । अध्यापकों पर दफा 107 लगाकर मुकदमा चलाया जाता है और उन्हें चोर-डाकुओं के रूप में खड़ा कर दिया जाता है । आधे वेतन पर अध्यापकों से दुगुनी रकम पर दस्तखत करा लिया जाता है । बात न मानने वालों को धमकी दी जाती है । ऐसे उत्पीड़क प्रिंसिपल कॉलेज मैनेजर वैद्यजी की कृपा-दृष्टि में जीते हैं ।

उत्तर दायित्व से विमुख अध्यापकों के कारण छात्र समाज में अनुशासनहीनता बढ़ जाती है । छात्र नकल करने को अपना अधिकार मानते हैं । नकल रोकनेवाले अध्यापक को उत्तर मिलता है - मैं तुम्हारी बेइज्जती नहीं करना चाहता हूँ । इसलिए चुपचाप दूसरे कमरे में चले जाओ । ऐसा न करोगे तो मैं तुम्हें खिड़की से बाहर फेंक दूँगा और हाथ-पैर टूट जाएँ तो मेरी जिम्मेदारी नहीं होगी ।''

शिक्षा व्यवस्था के बारे में रुप्पन रंगनाथ को बताता है -'' इस देश की शिक्षा -पद्धति बिलकुल बेकार है । बड़े-बड़े नेता यही कहते हैं । मैं उनसे सहमत हूँ.... ।''

छंगामल इंटर कॉलेज से पास न हो सकने के कारण बताते हुए रुप्पन रंगनाथ से कहता है - ''फिर तुम इस कॉलेज का हाल नहीं जानते । लुच्चों और शोहदों का अड्डा है । मास्टर पढ़ाना - लिखना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स !''

देश भर में भाई-भतीजावाद बड़े जोर से चलता है । कॉलेज मैनेजर वैद्यजी के संबंधी कॉलेज

के क्लर्क और चपरासी हैं ।

कॉलेज के लड़के चाहे प्रेमपत्र भेजे या पास में तमंचा रखे उसमें कोई फर्क नहीं पड़ता । प्रेमपत्र भेजने वाला लड़का पहले कॉलेज से निकाला जाता है, पर उसके पिता के कॉलेज की नई इमारत के लिए पचीस हजार ईंटें देने का आश्वासन देने पर वह फिर से कॉलेज में दाखिल हो जाता है । अपने पास तमंचा रखनेवाला विद्यार्थी द्वारा पकड़ लिया जाता है । फिर थाने पर जाता है और शाम क्लर्क खुशी से थाने से लौटता है और उसके साथ वह लड़का बाँसुरी बजाता हुआ शाम को निकल आता है ।

छंगामल इंटर कॉलेज से पास न हो सकने के कारण बताते हुए रुप्पन रंगनाथ को कहता है - ''फिर तुम इस कॉलेज का हाल नहीं जानते । लुच्चों और शोहदों का अड्डा है । मास्टर पढ़ाना - लिखाना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स भिड़ाते हैं । दिन-रात पिताजी की नाम में दम किए रहते हैं कि यह करो, वह करो, तनख्वाह बढ़ाओ, हमारी गरदन पर मालिश करो । यहाँ भला कोई इम्ताहान में पास हो सकता है ... ?''

कॉलेज का चपरासी भी प्रिंसिपल से ढंग से बात नहीं करता । वह सीना तानकर प्रिंसिपल से कहता है -''मुझे खन्ना-वन्ना न समझ लीजिएगा । ... यह अबे-तबे, तू -तड़ाक मुझे बरदास्त नहीं ।

कॉलेज में मैनेजर के रूप में वैद्यजी की भूमिका कैसी है, इस पर रुप्पन के कथन से प्रकाश पड़ता है । रुप्पन रंगनाथ से कहता है -'' पिताजी कॉलेज के मैनेजर हैं । मास्टरों का आना-जाना इन्हीं के हाथ में है ।'' ऐसा मैनेजर सारे मुल्क में न मिलेगा । सीधे के लिए बिलकुल सीधे हैं और हरामी के लिए खानदानी हरामी ।''

वैद्यजी अपनी धूर्तता को विनम्र वाणी से लिपटाकर ''खन्ना और मालवीय से त्यागपत्र लिखा लेते हैं । वे प्रिंसिपल की सहायता के लिए दो पहलवानों छोटे पहलवान और बद्री पहलवान को भेजते हैं । वे कहते हैं -'' आप मेरी प्रार्थना न ठुकराए । मैंने कभी कुछ नहीं मांगा । आज इस विद्यालय के नाम पर सिर्फ आपका इस्तीफा मांग रहा हूँ । छात्रों में अध्ययनशीलता खतम हो गई है ।

प्रिंसिपल को उसका चचेरा भाई मास्टर टेक्स्ट बुक के संबंध में बताता है - ये साली टेक्स्ट बुकें, समझ लीजिए, सड़े गले फल ही हैं । लौंडों के पेट में इन्हीं को भरते रहते हैं । कोई हजम करता है, कोई कै करता है ।''

कॉलेज क्यों खोले जाने थे, इस पर लेखक कहते हैं कि ये कॉलेज सिर्फ जमाने के फैशन के हिसाब से बिना आगा-पीछा सोचे चलाए जा रहे थे और यह निश्चय था कि वहाँ पढ़ने वाले लड़के अपनी 'रिआया' वाली हैसियत छोड़कर कभी ऊपर जाने की कोशिश न करेंगे और ऊँची नौकरियों और व्यवसाय जिनके हाथ में हैं, उनके एकाधिकार में इन कॉलेजों की ओर से कोई खतरा नहीं पैदा होगी ।''

अब हर जगह गुटबंदी बढ़ गई । छंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज इससे अछूता नहीं रहा । कॉलेज में दो गुट हैं । एक वैद्यजी का, जिस पर प्रिंसिपल आश्रित हैं । दूसरा गुट रामाधीन भीखम खेड़वी का, जिस पर खन्ना मास्टर आश्रित था । एक घटना शहर के एक सीनियर गुटबंद को कॉलेज तक खींच लाई । उसके एक बार कॉलेज में आ चुकने के बाद लोगों को लगा कि यहाँ कॉलेज भले ही खतम हो जाए, गुटबंदी खतम नहीं होगी । रुप्पन भी कहता है -'' पर इस साल कॉलेज के बारे में सुधार की जरूरत है । प्रिंसिपल हरामी है । दिन रात गुटबंदी की खिंच-खिंच लगाए रहता है । .... सिर्फ धीरे से खन्ना मास्टर को उछाल दें । उससे प्रिंसिपल चित हो जाएगा । वह साला बहुत फूल गया है, उसका फूटना जरूरी है ।''

ऐसे कॉलेज कभी वैसे छात्रों को देश को दे नहीं सकेंगे, जो बुद्धिजीवी हों, अच्छे नागरिक हों, विवेकवान हों । लेखक का कहना है -''ये कॉलेज सिर्फ जमाने के फैसन हिसाब से बिना आगा-पीछा सोचे हुए चलाए जा रहे थे और यह निश्चय था कि वहाँ पढ़ने वाले लड़के अपनी 'रिआया' वाली हैसियत छोड़कर कभी ऊपर जाने की कोशिश न करेंगे और ऊँची नौकरियाँ और व्यवसाय जिनके हाथ में है उनके एकाधिकार को इन कॉलेज की ओर ने कोई खतरा पैदा नहीं होगा ।''

यूनिवर्सिटी की विघटनोन्मुखी स्थिति की ओर इशारा करके प्रिंसिपल कहते हैं -''प्रोफेसर बनर्जी ने उनकी डिवीजन बिगाड़ दी, नहीं तो वे वहाँ लेक्चरार होते । फिर वहाँ लेक्चरार न होने का भी उन्हें कोई गम नहीं है । वहाँ तो और भी नरक है । पूरा कुंभीपाक । दिन-रात चापलूसी । बुद्धिजीवियों का व्यंग्य कसते हुए प्रिंसिपल कहते हैं -'' बुद्धिजीवी पर विलायत का एक चक्कर लगाने के लिए यह साबित करना पड़ जाए कि हम अपने बाप की औलाद नहीं हैं तो साबित कर देंगे । चौराहे पर दस जूते मार लो पर एक बार अमेरीका भेज दो । ये हैं बुद्धिजीवी ।''

वाइस चांसलर की स्थिति भी बड़ी दयनीय है । प्रिंसिपल कहते हैं -'' वाइस चांसलर के लिए भी जिन्दगी नरक है । सवेरे से ही अपनी मोटर लेकर हर ऐग्जूक्यूटिव वाले को सलाम लगाता है । कभी चांसलर की हाजिरी, कभी मिनिस्टर की, कभी सेक्रेटरी की ।'' रंगनाथ एम.ए. पास करके रिसर्च करने में लगे हैं । उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के बाद कोई नौकरी नहीं मिली तो समय का उपयोग करने के लिए अर्थात् अपनी कुंठा मिटाने के लिए रिसर्च का काम शुरू कर दिया जाता है । रंगनाथ अपने बारे में कहता है -'' कहा तो घास खोद रहा हूँ । इसीको अंग्रेजी में रिसर्च कहते हैं । परसाल एम.ए. किया था । इस साल से रिसर्च शुरू की ।''

शोधकार्य के लिए कोई विशेष प्रयास करना नहीं पड़ता । पुस्तकालय से पुस्तकें लाकर कुछ पढ़कर, कुछ इधर-उधर से उतार कर घर पर बैठे-बैठे शोधकार्य पूरा किया जाता है । रंगनाथ के शब्दों

में -‘‘ दो दिन पहले शहर जाकर यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय से बहुत-सी किताबें उठा लाया था और इस समय नीम पर फैली धूप की मार्फत उनका अध्ययन कर रहा था ।’’ अध्यापकों की मनोवृत्ति पढ़ाने में नहीं है । कोई दस जूते मार ले, पर पढ़ने को न कहे, जी घिना गया है किताबों से ।

अध्यापकों को भाषा तथा विषय संबंधी ज्ञान पर्याप्त नहीं होता । प्रिंसिपल खन्ना मास्टर के छुट्टी दरखास्त पर स्पेलिंग की गलतियों पर गोल दायरा बनाकर खारिज कर देते हैं ।

खुद प्रिंसिपल परिस्थिति के मुताबिक अपने को ढाल लेते है । अपने को बचाते हुए वे कहते हैं - यह हाल है रंगनाथ बाबू कि तुम कहो तो, छै भैया बहुत ठीक और वैद्यजी कुछ कहें तो हाँ महाराज बहुत ठीक ! और रुप्पन बाबू कुछ कहें तो हाँ महाराज, बहुत ठीक । पहलवान ! जो कहो, सब ठीक ही है ।’’ वैद्यजी को वे बाप मानकर चल रहे हैं, क्योंकि अगर वैद्यजी कान पकड़ कर कॉलेज से निकाल दें तो माँगे भीख तक न मिलेगी ।

कॉलेज के मैनेजर वैद्यजी पूरी साजिश बनाकर खन्ना और मालवीय से जबरदस्त त्याग पत्र लिखा लेते हैं । वे उनसे कहते हैं -‘‘आपको इस्तिफा देना होगा ... । यह मैं आप के हित में कह रहा हूँ ; विद्यालय के हित में कह रहा हूँ ; पूरे समाज के हित में कह रहा हूँ ।’’ यह शिक्षा क्षेत्र में अत्याचार और कलंक है ।

रंगनाथ इस घटना से खिन्न होकर वह स्थान छोड़ देने का विचार रखता है । ‘रहना नहीं देश विराना है ।’ लेखक उनको सलाह देते हैं -‘‘ कीचड़ से बचो, यह जगह छोड़ो । यहाँ से पलायन करो ।’’ प्रिंसिपल रंगनाथ को खन्ना की जगह इतिहास का अध्यापक बनाने का लोभ दिखाते हैं तो रंगनाथ इस प्रस्ताव को खारिज कर देता है । प्रिंसिपल कहते हैं - बाबू रंगनाथ, तुम्हारे विचार बहुत ऊँचे हैं । पर कुल मिलाकर उनसे यही साबित होता है कि तुम गधे हो ।हमारे शिक्षा विभाग में इस प्रिंसिपल की तरह आदमी भरे पड़े हैं तो कल्याण कैसे होगा ?

2.8 गबन और घूसखोरी :

‘राग दरबारी’ उपन्यास में लेखक श्रीलाल शुक्ल समकालीन जीवन का दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं । इस प्रस्तुत करने के लिए कथानक, पात्र, परिवेश, ग्रामीण संस्थाएँ सभी दस्तावेज के साधन के रूप में आए हैं । इनके माध्यम से समाज का कटु अनुभव घूसघोरी उभरकर सामने आई है । इस प्रवृत्ति के कारण समाज में अन्याय फैलता है । सत् मार्ग पर कदम रखनेवाला निरर्थक पिसते जाते हैं । शोषण बढ़ जाता है ।

वैद्यजी केन्द्रीय पात्र हैं जिनके इशारे पर शिवपालगंज में लोग कुछ करते हैं, कुछ संस्थाएँ चलती

हैं और कुछ घटनाएँ घटती हैं ।

गबन करने में सिद्धहस्त वैद्यजी प्रिंसिपल की सहायता से छंगामल इंटर कॉलेज के पैसे हड़पते हैं । कोऑपरेटिव यूनियन के सुपरवाइजर रामस्वरूप वैद्यजी की मिलीभगत में दो ट्रक गेहूँ बेचकर गबन करता है ।

वैद्यजी सनीचर को गाँव -सभा का प्रधान बनाने के लिए महीपालपुर वाली पद्धति यानी चुनाव अधिकारी को रिश्वत देने की पद्धति अपनाकर उसे जिता देते हैं । सनीचर अपनी दुकान में गैरकानूनी चीजें बेचता है । वैद्यजी को इससे भी मुनाफा मिलता है ।

रिश्वत लेकर अपराधी को छोड़ देना और उसके कहने पर निरपराध को पकड़ कर दंडित करना पुलिस के लिए मामूली घटना है । थानेदार बख्तावर सिंह को पीटनेवाले दो बदमाश दूसरे दिन क्षमा याचना करके उन्हें रिश्वत के रूप में इतनी रकम देते हैं कि उनका बख्तावर सिंह का बुढ़ापा आराम से कट जाता है । उनके कहने पर बख्तावर सिंह उनके विरोधियों को पकड़ कर मुकदमा चलाते हैं और उन्हें दंडित करते हैं ।

मेले में सैनिटरी इंस्पेक्टर सिंह साहब को खोंचेवाले दो-दो रुपये के हिसाब से रिश्वत देना चाहते हैं, जब कि सिंह साहब दस-दस रुपए चाहते हैं, वरना चालान कर देने की धमकी देते हैं ।

रुप्पन बाबू ढाई रुपए के हिसाब से मामला पिटा देते हैं । किसी समय खुद वैद्यजी ने भी लोगों की यह गलतफहमी दूर कर दी थी कि सिंह साहब घूस नहीं लेते । सिंह साहब को वकीलों को सुनाकर कहना पड़ा था -''क्या लोग इस धोखे में पड़ गए कि मैं पैसे नहीं छूता ? अगर ऐसा है तो वो आप लोग तहसील के आखिरी चोर तक ऐलान करा दें कि मैं घूस लेता हूँ । कोई धोखे में न रहे ।'' सिंह साहब घूस लेने को सम्मान का काम मानते हैं ।

कालिका प्रसाद का सरकारी ग्रांट और कर्जे खाने का पेशा है । वे विभिन्न सरकारी ग्रांट लेने में माहिर हैं । चमड़े कमाने की ग्रांट हो या मुर्गीपालन की । वे सब कुछ हासिल कर लेते हैं । अपनी सिर्फ पांच बीघे जमीन की जमानत द्वारा पचासों तरह के कर्ज ले लेते हैं । उन्हें हर बार तकाबी मिल जाती है और वसूली रुक जाती है ।

वैद्यजी, रुप्पन और प्रिंसिपल शहर में जाकर जिला विद्यालय निरीक्षक को एक कनस्तर देशी घी रिश्वत देकर आते हैं ।

बद्री पहलवान अपने अखाड़े के एक पालक -बालक गुंडे की जमानत लेने पिताजी से डेढ़ हजार रुपए लेकर शहर जाते हैं । वे रंगनाथ को बताते हैं कि गुंडे इजलास के नीचे नहीं, ऊपर भी होते हैं ... । नकदी में बड़ा आराम है जैसे ही हाकिम कहेगा कि हजार रुपए की जमानत दो, वैसे ही दस हरे

-हरे नोट मेज पर फेंक दूँगा और कहूँगा कि लो भाई ! रख लो जहाँ मन चाहो ।''

कोऑपरेटिव यूनियन के गबन पर वैद्यजी प्रिंसिपल से कहते हैं -''हमारी यूनियन में गबन नहीं हुआ था, अत: लोग हमें संदेह की दृष्टि से देखते थे । अब हम कह सकते हैं कि हम सच्चे हैं । गबन हुआ है और हमने छिपाया नहीं है ।''

वैद्यजी कोऑपरेटिव फार्म के उद्‌घाटन समारोह में प्रस्ताव रखते हैं कि सरकार अपनी कोऑपरेटिव यूनियन के गबन के पैसे अनुदान के रूप में कोअपरेटिव यूनियन को दे दें ।

सरपंच भी कहते हैं -'' यह पंचायत मंत्री पारसाल जब गबन के मसले में फँसा था ।''

सैनिटरी इंस्पेक्टर जेब में लैक्टोमीटर रखकर घूमते हैं और गालों में मोती चुग लेते हैं ।

राग दरबारी का लंगड़ ऐसा आदमी है, जो बहुत हठी है । वह रिश्वत न देने का मन बना लेता है और बिना रिश्वत से काम निकालने को धर्मयुद्ध मानता है । वह अदालत के बाबू से एक दस्तावेज की नकल प्राप्त करना चाहता है । बाबू ने पांच रुपए मांगे और लंगड़ दो रुपए से आगे नहीं बढ़ा । परिणाम यह हुआ कि बार-बार उनके दरखास्त की त्रुटियाँ निकाली गई, वह नकल पाने में असफल रहा । उसने प्रण किया था -''मैं रिश्वत नहीं दूँगा और कायदे से ही नकल लूँगा, उधर नकल बाबू ने कसम खाई है कि मैं रिश्वत न लूँगा और कायदे से ही नकल दूँगा । इसी की लड़ाई चल रही है ।''

2.9 न्याय व्यवस्था :

इस देश में पुलिस -व्यवस्था आम आदमी को न्याय देने के उद्देश्य से प्रतिष्ठित है । पर असल में पुलिस कोई भी कार्य निष्पक्ष रूप से कर नहीं पाती । हर मामले में रिश्वत या राजनीतिक हस्तक्षेप होने से इस पर लोगों का विश्वास हट गया है । शिवपालगंज के जुआरी संघ का मैनेजिंग डाइरेक्टर थानेदार को खुशामद करता है कि उसका जल्दी से जल्दी चालान कर दिया जाए । थानेदार चालान होने का आश्वासन देकर कहता है कि काम इतना अधिक है कि सारा काम ठप पड़ा है । थानेदार रुप्पन को एक किस्सा सुनाते हैं कि गुरुबख्तावर सिंह ने दो बदमासों से बड़ी रकम एंठकर बुढ़ापे में आराम से रहे । उलटे बदमासों के दुश्मनों को मुकदमे में फँसा कर सजा दिला दी ।

दरोगा जोगनाथ को दंडित करने में असमर्थ रहते हैं । वह वैद्यजी का अपना आदमी है । लोग न्यायालय से कोई फैसला तुरंत निकल आने की आशा भी रख नहीं पाते । लेखक ने इस पर व्यंग्य किया है - पुनर्जन्म के सिद्धांत की ईजाद दीवानी की अदालत में हुई है । ताकि वादी और प्रतिवादी इस अफसोस को लेकर न मरें कि उनका मुकदमा अधूरा ही पड़ा रहा । इसके सहारे वे यह सोचते हुए चैन से मर सकते हैं कि मुकदमे का फैसला सुनने के लिए अभी अलग जन्म तो पड़ा ही है ।''

गाँव में अदालत में झूठी गवाही देने की कला में निष्णात आदमी मिल जाते हैं । शिवपालगंज के पंडित राधेलाल, भीखमखेड़े के बैजनाथ जैसे लोग मिल जाते हैं । वकील भी बैजनाथ अदालत से कहता है कि मैं तो सच्चाई की गवाही दे रहा हूँ । छोटे पहलवान भी झूठी गवाही देकर बोला कि बदलन कहता है दरोगा जब गयादीन के प्रति हमदर्दी दिखाते हैं तब थकी हुई ठंडी आवाज में गयादीन कहते हैं -'' यह तो होना ही था दरोगाजी ! जिस दिन आपने जोगनाथ को पकड़ा था मैं समझ गया था कि मेरे घर में अब किसी की भी -इज्जत बच नहीं सकती.... जब कचहरी का मुँह देखा है तो सभी कुछ झेलना पड़ेगा । जिसे यहाँ आना पड़े समझ लो उसका करम ही फूट गया ।''

पंचायत न्याय व्यवस्था के संचालक निरक्षर होते हैं , पंचायत - मंत्री मौके पर बहाना बनाकर अनुपस्थित रहते हैं । पंचायत अदालत में कौड़िल्ला -छाप इंसाफ होता है । गाँव का आदमी हाइकोर्ट - सुप्रीम -कोर्ट में फँस जाएगा तो बैठकर उठ न पाएगा । वह दाने -दाने को मोहताज हो जाएगा ।

मुकदमे बहुत दिनों तक चलने वाली प्रक्रिया है । गाँव -सभा के प्रधान ने धाँधली करके भूदान यज्ञ में मिली जमीन बताकर दूसरे किसान की जमीन भूमिहीन और गरीबों को बेच देता है । मुकदमे चलते हैं । लेखक का कहना है कि ये मुकदमे भी आगे चलते रहेंगे । अदालत भी कभी-कभी और सिफारिसों पर अपना फैसला सत्य के विपरीत सुना देती हैं । इस पर व्यंग्य करके लेखक कहते हैं - ''किसी गाँव में किसी ने किसी का खून कर दिया । किसी दूसरे से दुश्मनी निबाहने के लिए उसका नाम थाने पर बहैसियत कातिल दर्ज करा दिया गया । फिर किसी ने अपनी दुश्मनी निबाहने के लिए उसके खिलाफ गवाही देना स्वीकार कर लिया । फिर किसी ने उसकी ओर से किसी को रिश्वत दी । किसी ने किसी गवाह को धमकाया, किसी को बेवकूफ बनाया और किसी से प्यार जताया । इस तरह मामले के इजलास तक पहुँचते -पहुँचते उसकी शक्ल बदल गई और वह खून का मुकदमा न रहकर 'खून का बदला' नामक ड्रामा बन गया ।'' परिणाम में मान लिया गया कि कत्ल नहीं हुआ है । इसलिए बरी कर दिया गया । हरिराम ने भी अपने समभावापन्न लोगों को दावत दी ।

शिवपालगंज में न्याय भी विचित्र प्रकार का है । कोऑपरेटिव यूनियन का सुपरवाइजर रामस्वरूप गेहूँ लदवाकर भाग जाता है । वैद्यजी खुद घपले में थे । अब सारा दोष सुपरवाइजर पर पड़ता है । वे अपने चेले चपाड़ों के साथ -साथ आ गए । प्रस्ताव पारित हो गया कि -सुपरवाइजर ने जो हमारी आठ हजार रुपए की हानि की है, उसकी पूर्ति के लिए सरकार अनुदान दे ।'' फिर वे कहते हैं - ''यदि सरकार चाहती है कि हमारी यूनियन जीवित रहे और उसके द्वारा जनता का कल्याण होता रहे तो उसे ही यह हरजाना भरना पड़ेगा । अन्यथा यह यूनियन बैठ जाएगा । हमने अपना काम कर दिया, आगे का काम सरकार का है । उसकी अकर्मण्यता भी हम जानते हैं ।''

2.10 ग्रामीण विकास की स्थितियाँ :

इस देश में सारी योजनाएँ भाषणबाजी पर चलती हैं । वास्तव में ग्रामीण विकास नहीं होता पर आँकड़ों में सब कुछ दिखाया जाता है ।

शहर से आए व्यक्ति सड़क के दोनों ओर खेतों को देखकर संतोष व्यक्त करते हैं कि उनके पिछले साल के व्याख्यान के कारण इस साल रबी की फसल अच्छी होने वाली है । उनको लगा कि किसान प्रगतिशील हो रहे हैं, क्योंकि वे समझ गए हैं कि खेत को जोतकर उसमें खाद और बीच डालना है ।

लेखक ने भूदान यज्ञ में मिले एक लंबे चौड़े ऊसर मैदान के बारे में लिखा है -'' मैदान में खेत बन गए थे, जिसका सबूत यह था कि कदम -कदम पर मेड़ें बाँध दी गई थीं और उन पर बबूल की डालें रख दी गई थीं । पानी -खाद - बीज आदि चीजों के बिना ही, सिर्फ इच्छा शक्ति के सहारे इस जमीन पर पिछले साल से जोरदार खेती हो रही थी ।''

इस प्रकार गाँव में वृक्षारोपण महोत्सव मनाया जाता है । शिवपालगंज में उस मैदान के एक कोने में नालियाँ खुदाई गईं । बबूल के बीज बोए गए । पर मिट्टी के खराबी के कारण वे उगे नहीं । लेखक ने लिखा है -'' पूरी योजना से शिवपालगंज को इतना ही फायदा हुआ कि वे नालियाँ लोगों के लिए सार्वजनिक शौचालयों के रूप में इस्तेमाल होने लगी और इस तरह जो स्कीम जंगल के लिए बनी थी, वह अब घर की हो गई ।''

किसी संस्था को जब आर्थिक लाभ होता है, तब उसके प्रधान के पद पर बैठने की लालसा उत्पन्न हो जाती है । शिवपालगंज की गाँव-सभा के प्रधान पद भी वैसा बन जाता है । गाँव में तालाबों की मछली की नीलाम करने , बंजर जमीन के पट्टे देने, शक्कर और मैदा के कोटे का वितरण करने आदि कामों से गाँव-सभा की आमदनी बढ़ गई थी । गाँव -सभा का और उसके प्रधान का अमीर होना एक ही बात मानी जाती है । इस पर 'राग दरबारी' में श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य करते हैं -'' वह पद सम्मानपूर्ण भी था । साल में दो-चार बार थानेदार और तहसीलदार प्रधान को बुलाकर उसे दो-चार गाली भले ही दे बैठें, और अंधेरे उजाले में गाँव के एकाध गुण्डे उस पर दस-पांच ढेले भले ही फेंक दें, उस पद के सम्मान में कमी नहीं होती थी, क्योंकि सारे देश की तरह शिवपालगंज में भी, किसी भी तरकीब से हो, केवल अमीर बन जाने से ही आदमी सम्मानपूर्ण बन जाता है और वहाँ भी, सारे देश की तरह, किसी संस्था का फोकट में पैसा खा लेने भर से आदमी का सम्मान नष्ट नहीं होता था ।''

2.11 सामाजिक स्थिति :

शिवपालगंज के नौजवान जुआ खेलते हैं । भांग पीते हैं । गाँव में मानवीय मूल्यों का हनन हो रहा है । बाप -बेटे में अनबन हो जाती है । मार-पीट हो जाती है । गाँव में गुटबंदी चलने से अविश्वास का वातावरण उत्पन्न हो गया है । एक दूसरे को गालियाँ देना, धमकी देना तो आम बात हो गई है । चारित्रिक पवित्रता के प्रति कोई जागरुक नहीं है । रिश्वत लेने में कोई लज्जा नहीं रखता, वरन् उसे अपना अधिकार -क्षेत्र मान लिया जाता है । अपनी हैसियत से कम रिश्वत लेना अपमानजनक बोध होता है ।

समाज में नैतिकता खतम हो गई है । उसके संबंध में गयादीन कहते हैं -‘‘ नैतिकता समझ लो कि यही चौकी है । एक कोने में पड़ी है । सभा सोसाइटी के वक्त इस पर चादर बिछा दी जाती है, तब बड़ी बढ़िया दिखती है । इस पर चढ़कर लेक्चर फटकार दिया जाता है । यह उसी के लिए है ।’’ देश में छुआछूत खतम कर दी गई है । पर ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी उसकी भयानकता समाप्त नहीं हुई है । शिवपालगंज में ‘चमरही’ एक मुहल्ले का नाम है, जहाँ चमार रहते हैं और उन्हें अछूत माना जाता है । चमार लाठी अच्छी चलते हैं । उनकी सहायता पाने के लिए किसी जमाने में जमींदारों ने वह मुहल्ला बसाया था ।

एक जमाना था कि किसी बाँभन - ठाकुर के निकलने पर लोग हाथ जोड़कर पाँयलागी महाराज कहते थे । महाराज आशीर्वाद लुटाते हुए चले जाते थे । लेखक फिर बदली स्थिति के बारे में बताते हैं -‘‘ पर इतना तो हो गया कि किसी बाँभन के निकलने पर पहले जैसा गॉर्ड आफ ऑनर’ न दिया जाए ।’’ इस दीनता के भाव से बचने के लिए वैद्यजी ने उधर से जाना बंद कर दिया था ।

उसी रास्ते से होकर रुप्पन बाबू निकलते हैं तो कुछ लोग उन्हें ‘पाँय लागी महाराज’ कहकर स्वागत करते हैं । रुप्पन बाबू कहते हैं -‘‘ अब पांव-वांव नहीं लगा जाता । सीधी स्टिक डालने का वक्त आ गया है ।’’ फिर चुरई ने कहा -‘‘ पाँव लागी रुप्पन बाबू ।’’ चुरई अपने बेटे से कहता है - जा, रे, रुप्पन भैया के पाँव छू ले ।’’ फिर वह कहता है - आज इधर कैसे भूल पड़े रुप्पन बाबू ? पंचायत का चुनाव तो हो गया । अब कौन-सा चुनाव होना है भैया ? इसके पीछे व्यंग्य है कि केवल चुनाव के समय अपने पक्ष में लेने के लिए उच्च जाति के लोग अछूत कहे जाने वाले लोगों के मुहल्ले में जाने का कष्ट उठाते हैं ।

स्वतंत्र भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्गों के प्रति कोई सम्मान नहीं रह गया है । शिवपालगंज में उन्मुक्त यौन विकृति पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है । इसलिए अपने पिता के प्रति मर्यादा -भाव खतम हो गया है । बड़ा बेटा बद्री पहलवान पिता वैद्यजी का विरोध करता है । मुँह पर खरीखोटी सुनाता है । छोटा बेटा रुप्पन रंगनाथ से कहता है -पिताजी क्या खाकर नाराज होंगे । उनसे कहो, मुझसे सीधे बात

तो कर लें । वह चाहता है कि उसकी शादी जल्दी हो जाए । कुसहर प्रसाद अपने पिता गंगाप्रसाद की पिटाई करता था । लठैत अब उसका बेटा छोटे पहलवान उसकी पिटाई करता है । लठैत दूरवीन सिंह अपने नशेबाज भतीजे के तमाचे से कुएँ की जगत पर गिर पड़ते हैं । शिवपालगंज गाँव में डाकुओं का अड्डा बन गया है । यह छोटे पहलवान, जोगनाथ, रामाधीन, शत्रुघ्न सिंह, रिपुदमन सिंह, बलराम सिंह आदि डाकुओं की लीलाभूमि बन गई है ।

गाँव में गयादीन के यहाँ चोरी हो जाती है । छोटे पहलवान बद्री पहलवान को यह सूचना देकर रिपोर्ट लिखाने की बात करता है ।

सनीचर निकम्मा है । भांग घोटने के काम में उस्ताद है । वह वैद्यजी का पालतू कुत्ता है । वैद्यजी उसे गाँव-प्रधान बनाकर अपने हाथ की कठपुतली बना देते हैं । सनीचर परचून की दुकान खोलकर उसमें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र दवाइयाँ और प्राइमरी स्कूल के लिए आए दूध पाउडर बेरोकटोक बेचता है ।

थाना लोगों को सुरक्षा नहीं देता । थाने के इशारे पर और जुआ अड्डे चलते हैं । नेताओं के इशारे पर कार्य करना थानेदार के लिए मजबूरी बन गई है ।

शिवपालगंज में चारों ओर गंदगी फैली है । बस अड्डे के पास के पोखर का लोग शौच-क्रिया के लिए उपयोग करते हैं ।

युवावर्ग दिशाहीन है । फिल्मी गाना, फिल्मी नायिकाओं की चर्चा करना, फिल्मी शैली में प्रेम-पत्र लिखना उनका दैनंदिन कार्य है । उनके दिल-दिमाग में नायिकाओं का सौंदर्य नाचता रहता है । वे उनका स्मरण करके मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । ऐसे नौजवान गुंडेपन में सफल होने को अपनी सिद्धि मान लेते हैं । उनका भविष्य अंधकारमय है । यह दशा केवल शिवपालगंज की नहीं, भारत के प्रत्येक गाँव की है ।

शिवपालगंज भारतीय राजनीतिक -सामाजिक -शैक्षिक विसंगतियों और विडंबनाओं का वर्णन करता है । रंगनाथ कहता है - धरती पर एक शिवपालगंज ही नहीं है । हमारे -तुम्हारे लिए सारा मुल्क पड़ा हुआ है । रुप्पन रंगनाथ से कहता है - ''मुझे तो लगता है दादा, सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला हुआ है ।''

2.12 गुण्डागर्दी :

गुण्डागर्दी के लिए शिवपालगंज के लोग गंजहा नाम से परिचित हैं । गुण्डागर्दी की सनीचर की बात से पहले मिल जाती है । जब वह कहता है -''पर कोई किसी गंजहा से दो रुपए तो क्या, दो कौड़ी

भी ऐंठ ले तो जाने ।'' रामधीन भीखम खेड़वी , बद्री पहलवान का रिक्शा रास्ते पर रोक देता है और उसे रुप्पन की हरकत के बारे में बताता है । बद्री उसे समझा देने की बात करता है तो आवाज ऊँची करके रामधीन कहता है -''यह समझाने की नहीं, जुतिआने की बात है ।''

भीखमखेड़ा न्याय पंचायत के सरपंच भी कुसहर प्रसाद और उसके पुत्र छोटे पहलवान के मुकदमे की सुनवाई करते समय छोटे को धमकाते हैं -'' जाना कोई हँसी ठट्ठा है ! हथकड़ी लगवाकर बुलाऊँगा । नहीं तो सीधे से बैठ जाओ और मुकदमा होने दो ।''

सनीचर की एक कहानी के मुताबिक दूरबीन सिंह डाकू था । एक बार सनीचर को डाकू घेर गए और उसे लूट लिया । जाते समय जान गए कि सनीचर न सिर्फ दूरबीन सिंह के गिरोह का है, बल्कि उसका रिश्तेदार भी है । वे डाकू गिड़गिड़ाए, सब कुछ लौटा दिया, गाँव तक छोड़ने आए । दूबीन सिंह यह बात न बताने की विनती की । वह दूरबीन अपने भांजा के एक तमाचे से कुएँ में गिर पड़ा, रीढ़ की हड्डी टूट गई और कुछ दिन बाद मर गया ।

कुसहर प्रसाद की पिटाई बेटे छोटे पहलवान ने कर दी । बैठक में सरपंच ने जब कुसहर की चरित्र -हनन वाली बात कही तो छोटे सरपंच को डाँटता है । सभी से ललकार कर कहता है -'' मैं अभी मर नहीं गया हूँ । अब कोई असल बाप का हो तो हमारे बाप को गाली दे ।''

छंगामल इंटर कॉलेज की सालाना बैठक में मैनेजर के चुनाव के समय प्रिंसिपल की ओर से पचास लड़के हाथ में हॉकी स्टिकें लेकर रामाधीन -गुट के सदस्यों के विरोध करने तैनात होते हैं ।

ठाकुर बलराम सिंह को देखकर तैनात लड़का कहता है -'' अब कोई वैद्यजी का बाल भी नहीं उखाड़ सकता ! बलराम सिंह प्रिंसिपल को अपनी जेब में पिस्तौल के बारे में बताते हैं - ''असली विलायती चीज है । छह गोलीवाली, ...ठाँय- ठाँय शुरू कर देगा तो रामाधीन गुट के छह मेंबर गोरैया की तरह लेट जाएँगे ।'' मीटिंग में आने वाले पंडित को बलराम सिंह 'पाँय लागी पंडित' कहकर स्वागत तो करते हैं, पर उनसे सटकर उन्हें लौट जाने की सलाह देते हैं और जेब में पिस्तौल होने का अहसास करा देते हैं । एक स्काउट बलराम सिंह को समझा देता है कि पांच आदमी और आए थे ; किसी ने नासमझी नहीं की ; चुपचाप लौट गए । खन्ना मास्टर प्रिंसिपल के गुट के एक लड़के को नकल परीक्षा -भवन में पकड़ते हैं तो प्रिंसिपल खन्ना से धमकाते है, परीक्षा -भवन की ओर जाने से जूतों से उनकी खबर ली जाएगी । मास्टर खन्ना के गुट का एक लड़का उनसे कहता है -'' आप हुक्म दें तो किसी दिन यहीं अंधेरे-उजाले में प्रिंसिपल साहब का भरत मिलाप करा दिया जये ।''

मास्टर खन्ना और मास्टर मालवीय से त्यागपत्र लिखा लेने के लिए प्रिंसिपल पहले से त्यागपत्र टाइप करके रख लेते हैं । वैद्यजी इस काम में प्रिंसिपल की सहायता करने के लिए छोटे पहलवान और बद्री पहलवान को भेजते हैं । उनसे त्यागपत्र धमकी देकर ले लिया जाता है । बद्री पहलवान पिता की

चिंता दूर करने के लिए कहता है - कोऑपरेटिव इंस्पेक्टर के दस जूते मार दिए जायेंगे, वह ठीक हो जाएगा । डिप्टी डाइरेक्टर जब जाँच करने आए तो उनको भरत -मिलाप करा देंगे ।

स्वतंत्र भारत में ग्रामीण क्षेत्र में गुण्डागर्दी बढ़ जाने का प्रमाण गाँव के मेले में देखने को मिलता है । देवी के रूप में प्रसिद्ध मूर्ति को रंगनाथ ने जब बताया कि वह एक पुरुष सिपाही की मूर्ति है, तब पुजारी से उसकी नोंकझोंक हो गई । इस झगड़े को खतम करने के लिए रुप्पन पुजारी से कहता है -'' बस, बस, बहुत ज्यादा पैंतरा न दिखाओ । हम लोग शिवपालगंज के रहने वाले हैं । जबान को अपनी बाँबी में बंद रखो ।''

वहाँ एक सिपाही पर भी अपना रोब जमाने के लिए रुप्पन बाबू कहते हैं -'' जरा भी देढ़े-मेढ़े चलो तो कॉलेज का सात सौ इस्टूडेंट कल ही मैदान में उतर आएगा ।''

मेले में सनीचर दुकान से बर्फी आदि खाकर कीमत न चुकाकर धड़ल्ले से कह देता है कि हमने पैसे दे दिए हैं । वह दुकानदार को गालियाँ देता है । छोटे पहलवान भी बिना कुछ दिए एक रुपया देने की बात करता है । इस पर लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में लेखक वर्णन करते हैं -'' ऐसा झगड़ा इस मेले में हर साल होता है, झगड़ा करने वाले बस वही गंजहे हैं, बड़े लुच्चे हैं । पर इनके मुँह कौन लगे / और सच पूछों तो हर एक गाँव का यही हाल है । जितने नए लौंडे हैं सब .... ।'' दुकानदार पैसे न लेकर उससे कहता है -'' तुम बाहरी आदमी हो बाबूजी, हमको तो यहीं रहना है ।''

कोऑपरेटिव यूनियन से वैद्यजी इस्तीफा देते हैं तो शहर से आए हाकिम चुनाव का प्रस्ताव रखते हैं । छोटे पहलवान फटाफट खड़े होकर चुनाव के प्रस्ताव को निरस्त करके बद्री पहलवान से कहता है -'' उठो ब्रदी उस्ताद , न हो तो तुम्हीं बैठ जाओ, उठो उस्ताद ! लो लपक के ।''

2.13 विभिन्न कथाओं के माध्यम से चरित्रों का उद्घाटन :

'राग दरबारी' एक यथार्थपरक व्यंग्य उपन्यास है । इनमें पात्रों की भीड़ है । लेखक का उद्देश्य पात्रों का चरित्र -चित्रण करना नहीं है । वे पात्रों के माध्यम से सामाजिक विकृतियों को व्यंग्यात्मक शैली से उजागर करके पाठकों के मन में इन नकारात्मक कार्य-कलापों के प्रति घृणा उत्पन्न करके मानवीय गुणों का विकास करना चाहते हैं । यहाँ यही लेखकीय दृष्टिकोण है, जो पाठकों को स्थानंतरित हो जाता है । चरित्र व्यक्तिगत रूप से नहीं वर्गगत पात्रों के रूप में आते हैं । वे यथार्थ परिस्थितियों में प्रतिनिधि पात्र बनकर आते हैं । स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास के स्थान पर विनाश ही दिखाई पड़ता है । मानवीय मूल्यों का विनाश हो गया है । इसलिए समाज में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, बाहुबल, अर्थबल का राज चलता है । विवेक और न्याय हाशिए पर चले गए हैं । इसलिए लेखक पात्रों के माध्यम से भारत

की यथार्थ परिस्थिति को खुलासा करके पाठकों को उचित अनुचित, न्याय-अन्याय पर विचार करने को मजबूर कर देते हैं । उनके अन्तर्मन को झकझोर देते हैं ।

यहाँ उपन्यास का कथ्य वर्णन क्रम से न चलकर जीवन -क्रम से चलता है । अर्थात् पात्र जिस प्रकार का जीवन जीते हैं उसीका चित्रण किया गया है । सभी का चारित्रिक और नैतिक पतन हो गया है । इसमें कुछ कथाएँ हैं, कुछ अपकथाएँ हैं, कुछ लेखकीय टिप्पणियाँ हैं । सभी को लेकर कथा का विकास हुआ है ।

राग दरबारी की कथावस्तु परंपरागत उपन्यासों की कथावस्तु से सर्वथा भिन्न है । यथार्थ की अनुभूति में थोड़ी-सी कल्पना मिलाकर कथावस्तु की सर्जना की गई है । 'राग दरबारी' उपन्यास का उद्देश्य न रहस्य और प्रेम के माध्यम से मनोरंजन करना है, न सामाजिक समस्याओं को उभारकर पाठक को सजग करना है, न मनोवैज्ञानिक ढंग से अन्तर्मन की व्याख्या प्रस्तुत करना है । श्रीलाल शुक्ल अपने इस उपन्यास में वातावरण को विषयवस्तु के रूप में उपस्थापित करके व्यंग्य द्वारा सामाजिक बुराइयों का उन्मोचन करके पाठकों को नैतिक और चारित्रिक पतन गर्त में गिरने से बचाने के लिए कर्त्तव्य और विवेक को जगाना चाहते हैं ।

शहर से थोड़ी दूर पर शिवपालगंज ग्रामपंचायत है । शहर से यहीं से होकर उबड़खाबड़ सड़क गई है । यहाँ कॉलेज, तहसील, थाना, सहकारी समिति, दुकानें हैं । गाँव में फिल्मी गीतों का बड़ा प्रभाव है । दूषित और घृणित राजनीति की संड़ांध गाँव में व्याप्त है । मानवीय मूल्य धूल-धूसरित है । गाँव में चोरी -डकैती, ठगी, गबन, रिश्वत, सत्तालोलुपता, गुण्डागर्दी, अदालती झगड़े, झूठी गवाही, काम लालसा, चुनावी घपले, मारपीट, जालसाजी, दहेज सब कुछ है ।

शिवपालगंज की विशेषता है कि यहाँ अच्छाइयों को छोड़कर सब कुछ है और यह स्थिति सारे भारत में पाई जाती है । इसलिए कहा गया है - सारे मुल्क में शिवपालगंज फैला है ।

'राग दरबारी' की कथा में कोई उतार चढ़ाव नहीं है, न किन्हीं मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास है । केवल सपाट बयानी का चमत्कार है ।

उपन्यास का आरंभ विश्वविद्यालय के शोध छात्र रंगनाथ के शिवपालगंज में पहुँचने पर होता है और अंत छह महीने बाद एक पलायनवादी नवयुवक के रूप में उसका गाँव से चले जाने पर होता है । उपन्यास विभिन्न घटनाओं का समन्वय है । इन घटनाओं में छंगामल इंटर कॉलेज की घटना को आधिकारिक घटना माना जा सकता है और अनेक प्रासंगिक कथाएँ परस्पर असंबंधित लगने पर भी भीतर से जुड़ी हुई है । कॉलेज की गंदी राजनीति में शिक्षा-व्यवस्था की गिरी हुई दशा प्रतिबिम्बित होती है । गौण कथाओं में प्रेम-कथा, कोऑपरेटिव यूनियन में गबन की कथा, रामाधीन भीखमखेड़वी और उसके भाई की कथा, सनीचर - गाँव सभा चुनाव की कथा, गयादीन और उसकी बेटी की कथा,

कार्तिक मेले में सैनिटरी इंस्पेक्टर की कथा, शांति बनाए रखने में रहे दरोगा की कथा, कुसहार प्रसाद और छोटे पहलवान की कथा, लंगड़ की कथा, कचहरी की कथा, गुण्डागर्दी की कथा, आदि कथाएँ जुड़कर कथावस्तु को आगे बढ़ाती हैं ।

इसमें राजनीतिक फायदा उठानेवाले कूटनीति विशारद वैद्यजी हैं । स्थानीय गुंडों के सरदार बद्री पहलवान वैद्यजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं । वैद्यजी के कनिष्ठ पुत्र रुप्पन बाबू दादागिरी मनोवृत्ति के दिग्भ्रांत कॉलेज छात्र नेता हैं । उच्च शिक्षित रंगनाथ का शिवपालगंज के परिवेश में दम घुट जाता है । शोषक और धूर्त प्रिंसिपल वैद्यजी के इशारे पर चलने को बुद्धिमानी और कल्याणप्रद मानते हैं । सनीचर जैसे कठपुतली, रिश्वत न देने पर अड़ जाने वाला लंगड़, ग्रांट कठोर कालिका प्रसाद, झूठी गवाही में उस्ताद पं. राधेलाल, सूदखोर गयादीन , छोटे पहलवान, रामाधीन भीखम खेवड़ी, जोगनाथ, शोषित - पीड़ित खन्ना मास्टर अनैतिक कर्म करने वाले, मालवीय अध्यापन को गौण मानने वाले मोतीलाल, सहकारी भंडार का सुपरवाइजर रामस्वरूप, घूसखोर सैनिटरी इंस्पेक्टर, थानेदार आदि अपने कार्यकलापों के माध्यम से अपने-अपने चरित्रों के उपाख्यान को आगे बढ़ाते हैं । इस 'राग दरबारी' को एक वृहत्त, चरित्रोपाख्यान के रूप में प्रस्तुत किया गया है । ये चरित्र मानवीय मूल्यों से कोसों दूर हैं । ये अमानवीय, अनैतिक, स्वच्छंद यौनाचार, हिंस्र, अत्याचारी, उच्छृंखल, विकृत, घृणित और उत्पीड़क आदि कार्यों में लिप्त रहते हैं ।

2.14 उच्छृंखल और यौन -लालसा :

छात्र कॉलेज की कक्षा में पढ़ाई में रुचि नहीं लेते हैं । वे सिनेमा की पत्रिकाएँ पढ़ते हैं । तस्वीरवाली किताब देखते हैं । कॉलेज में प्रेम-पत्र लिखने वाला एक लड़का पकड़ा गया और कॉलेज से निकाला गया तो उसका बाप कॉलेज के लिए पचीस हजार ईंट देता है और बेटे की पुन: कॉलेज में दाखिला कर लिया जाता है ।

पं. राधेलाल पूर्वी जिले की एक शक्कर मील में चौकीदारी में नौकरी करते समय दूसरे चौकीदार की बीबी को भगाकर शिवपालगंज ले आता है । गाँव के नौजवान उससे मजाक करते हैं । वह औरत सभी के लिए कुतिया बन जाती है और किसी को निराश नहीं करती है । अब झूठी गवाही में दक्ष वे राधेलाल को इस पूरबवाली प्रेयसी के प्रेम ने कुछ घरघुस्सल बना देता है ।

चैमरही के भीतर जाते समय एक आदमी को मुर्गा खरीदते हुए देखकर रुप्पन बाबू व्यंग्य कसते हैं कि क्या कोई हाकिम आने वाला है ? वह यह भी पूछता है कि चमरहा की लड़की का ससुराल चली जाने के बाद फिर उसका बन्दोबस्त कैसे होगा ? यानी हाकिमों के लिए यहीं से लड़कियों की व्यवस्था की जाती थी । अविवाहित बेला सिनेमा -शैली में प्रेम-पत्र लिखती है । वह नैतिकता की सारी सीमाएँ

तोड़कर रुप्पन के पास छतों को पार करती हुई रात के अंधेरे में आ पहुँचती है । रंगनाथ को बद्री पहलवान समझकर उससे लिपट जाती है । रंगनाथ की नींद खुल जाती है और वह जब 'कौन है' कहकर चिल्लाता है, तब बेला 'हाय मेरी मैया' कहकर भाग जाती है । तब रंगनाथ का मन कहता है - ''श्रीमान, आप चुगद नहीं हैं, गधे हैं । चूके हुए अवसरों की लिस्ट में एक और लाइन जोड़ ली न !''

बद्री पहलवान का एक पालक बालक के दूसरी औरत के साथ प्रेमालाप करते समय जब उसका पति यह सब देखकर भी आँख बचाकर जाने को होता है तब वह नौजवान कहता है-'' मर्द बच्चा होकर तुम्हें शर्म नहीं लगती ? एक बार तो ललकारा होता, चुपचाप भागा जा रहा है ।'' फिर वह औरत जब रिपोर्ट लिखा देती है कि यह मेरी इज्जत ले रहा था, तब वह नौजवान पकड़ा जाता है और उस पर मुकदमा चलता है । न्याय पंचायत में सरपंच कुसहर प्रसाद से पूछते हैं -'' इस उमर में तुम्हें इशकबाजी सूझती है ?''

बद्री जब छोटे पहलवान से कहता है कि बाप के खिलाफ कुछ न कहकर चुप रहो तब वह पिता की कामलिप्सा का निर्बाध वर्णन करता है -'' तुम भी मुझी को दबाते हो गुरु ! तुम जानते नहीं यह बुढ़ा बड़ा कुलच्छनी है । इसके मारे कहारिन ने घर में पानी भरना बंद कर दिया है और भी बताऊँ ? कहते जीभ गंधाती है ।''

सनीचर को बेहुदा बर्ताव और फूहड़ बातें करने में शर्म नहीं आती । वह मेले में भीड़ का फायदा उठाकर कई औरतों के कंधों पर प्रेम से हाथ रखता है । वह ऐसे घिनौने काम ऐसी निस्संगता से करता है कि भीड़ से निकलने के लिए ऐसा करना धर्म में लिखा है । रंगनाथ जब सनीचर को ऐसे कार्यों से निवृत्त करना चाहता है, तब सनीचर कहता है -'' गुरु, देहाती मेले का मामला, यहाँ तो बस यही हेराफेरी का चमत्कार है !''

मेले में वेश्याएँ नाचने के बहाने ग्राहकों को लुभाती हैं । उनके साथ दलाल भी रहते हैं । जब एक दलाल रंगनाथ को उसकी नाचनेवाली की बैठक में आने का न्योता देता है, तब रुप्पन बाबू कड़ककर बोलते हैं -'' अपने बाप को तो पहचानकर चलो' तब वह आदमी हाथ जोड़कर जवाब देता है -'' अपना बाप तो रुपया है मालिक ।'' उस औरत के बारे में रुप्पन बाबू रंगनाथ को बताते हैं - ''इलाके की सबसे सड़ियल पतुरिया है । कोई उसे कौड़ी को भी नहीं पूछता ।'' रंगनाथ रुप्पन को बेला को लिखे गए प्रेम-पत्र के कारण वैद्यजी की नाराजगी के बारे में बताते हैं तो चिढ़कर रुप्पन पिता की करतूत का बेहिचक वर्णन करता है -'' अपनी शादी चौदह साल की उमर में हुई थी । पहली अम्मा मर गई तो सत्रह साल की उमर में दूसरी शादी की । साल भर भी अकेले नहीं रहते बना । यह तो किया

कायदे से, बेकायदे से कितना किया, सुनोगे वह भी ...''

अदालत में छोटे पहलवान ने बेला का चरित्र -शहरवाली झूठ बात बताता है । उसने बेला को जोगनाथ के साथ बदचलनी करते हुए देखा है । दारोगा इससे दु:खी हुए तो गयादीन दु:खी होकर कहते हैं -'' यह तो अपने देश का चलन है ।''

रंगनाथ को ढेले में बंधा हुआ एक प्रेमपत्र मिलता है जिसे वह इसे बेला का रुप्पन के लिए लिखा हुआ मानता है । बद्री मानता है कि फिल्मी शैली में जो चिट्ठी लिखी गई उसे ग्रामसेविका ने बेला के लिए लिखी होगी । कुछ इस प्रकार लिखा है-'' यही है तमन्ना, तेरे दर के सामने मेरी जान जाये, हाय ! हम आस लगाए बैठे हैं । देखो जी, मेरा दिल न तोड़ना ।''

2.15 चरित्र -चित्रण :

* रुप्पन बाबू :

रुप्पन अठारह वर्षीय युवक है । वे वैद्यजी के छोटे बेटा हैं । वे दसवीं कक्षा में तीन साल से पढ़ाइ कर रहे हैं । वे आवारे अनुशासनहीन विद्यार्थी वर्ग के प्रतिनिधि नेता हैं । वे पढ़ाई को छोड़कर नेतागिरी और गुंडागर्दी में अधिक रुचि रखते हैं ।

नेता बनने के लिए उनके लिए सबसे बड़ा आधार है - सबको एक निगाह से देखना । वे इसलिए दारोगा और हवालात में बैठे चोर को, नकल करने वाले विद्यार्थी और कॉलेज के प्रिंसिपल को एक निगाह से देखते हैं । वे काम करते हैं और सबसे काम लेते हैं । वे अपने को पैदाइशी नेता समझते हैं, क्योंकि उनके पिता वैद्यजी भी नेता हैं । इसलिए दुकानदार उन्हें सामान अर्पित करते हैं । मुफ्त सेवा प्रदान करते हैं । वे अपने को नेता साबित करने के लिए सफेद धोती और रंगीन बुशशर्ट पहनते थे और गले में रेशम का रुमाल लपेटते थे । धोती का कोंछ उनके कंधे पर पड़ा रहता था । वे दुबले-पतले थे, लेकिन सभी पर बोलबाला था । वे जासूसी किताब पढ़ने के शौकीन हैं । जेब में दो कलमें भी होती हैं, बिना स्याही की । कलाई में घड़ी पहनते हैं ।

वे प्रिंसिपल को अपना अधीनस्थ कर्मचारी समझते थे । वे कॉलेज के अध्यापकों के आचरण से असंतुष्ट थे । कॉलेज के मास्टर उनसे डरते थे और देखते ही नमस्ते कहते थे । वे कॉलेज प्रिंसिपल को धमका सकते हैं, आदेश भी दे सकते हैं ।

कॉलेज के विद्यार्थी उनके इशारे पर चलते हैं । कॉलेज की सालाना बैठक में चुनाव के समय पिता के विपक्ष को भगाने के लिए रुप्पन बाबू के चेले हॉकी स्टिक लेकर तैनात होते हैं । मेले में दारोगाजी जब रुप्पन से चोरी पकड़ने के लिए सहयोग मांगते हैं, तब रुप्पन बाबू कहते हैं -'' हमारा पूरा सहयोग है । यकीन न हो तो कॉलेज के किसी भी स्टुडेंट को गिरफ्तार करके देख लें ।''

रुप्पन बाबू की मान्यता है कि देश की शिक्षा -पद्धति बेकार हो गई है । कॉलेज के मास्टरों के बारे में वह रंगनाथ से कहता है -''मास्टर पढ़ाना-लिखाना छोड़कर सिर्फ पालिटिक्स भिड़ाते हैं ।''

वे नेता बनने के लिए गाँव-सेवा करना चाहते हैं, सबसे संबंध बनाए रखना चाहते हैं -''हर समस्या के समाधान के लिए गुटबंदी में विश्वास रखते हैं । एक कूटनीतिज्ञ की भाँति वे किसी भी हालत में प्रतिपक्ष को चित करने में विश्वास रखते हैं । इसलिए समय के अनुसार चलना पसन्द करते हैं । महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा का मार्ग अपनाना अब खतरे से खाली नहीं है । उचित -अनुचित का हिसाब लगाते रहने से प्रतिपक्ष जीत जाएगा । इसलिए अपने को बचाने के लिए किसी भी तरीके से शत्रु का विनाश करना चाहिए ।

अनुभव अनेक विचारों को बदल देता है । पहले वे प्रिंसिपल को खुशामदी टट्टू और पिता का गुलाम समझते थे । बाद में उनको लगता है कि पिताजी की भीड़ में अपना उल्लू सीधा करने में वे लगे हुए हैं । अपने स्वार्थ के लिए वे दूसरों को बलि भी चढ़ा सकते हैं । मास्टर खन्ना आदि उनको अनुशासन हीन और हर बात में अडंगा डालने वाले समझते थे । अब उनको लगा कि खन्ना की मांग उचित है । वे हर अन्याय का विरोध करते हैं । इसलिए प्रिंसिपल के जानी दुश्मन बन गए हैं । वे वाइस प्रिंसिपल की नियुक्ति पर प्रिंसिपल से दृढ़तापूर्वक कहते हैं -'' प्रिंसिपल साहब, मैं समझता हूँ कि हमारे यहाँ एक वाइस प्रिंसिपल होना चाहिए । खन्ना सबसे ज्यादा सीनियर हैं । उन्हीं को बन जाने दीजिए । सिर्फ नाम की बात है, तनख्वाह तो बढ़नी नहीं है ।''

इसलिए खन्ना से जब त्यागपत्र पहलवानों के दबाव पर लिखा लिया जाता है, वे विरोध करके कहते हैं -''ऐसा नहीं हो सकता । आप जबरदस्ती इनसे इस्तिफा नहीं लिखा सकते । ये इस्तिफा नहीं देंगे ।''

किशोर रुप्पन बाबू अपना छैलापन नहीं छिपाते । वे बेला से प्रेम करते हैं । उसे प्रेम-पत्र लिखते हैं । कभी-कभी अश्लील सिनेमा, संगीत बोलते हैं । वे प्रेयसी बेला को एकाधिक प्रेमपत्र लिखने के बाद भी बेला से कोई उत्तर नहीं मिलता ।

उन्हें भंग पीने का शौक है । पिताजी की गालियाँ खाकर वह तिलमिला उठता है और शराब भी पीता है । रंगनाथ के पूछने पर वह बताता है -'' कभी न कभी तो शुरू करना ही पड़ता । शिवपालगंज में रहना है तो इसी तरह रह जाएगा । .. यहाँ महात्मागांधी बनने से काम नहीं चलेगा ।''

✻ रंगनाथ :

रंगनाथ इतिहास में एम.ए. पास नवयुवक है । जो शोधकार्य में लगा हुआ है । वह वैद्यजी का भांजा है । स्वास्थ्य सुधारने और शोधकार्य के लिए सोचने के लिए गाँव के प्राकृतिक वातावरण में रहना

ठीक रहेगा, यही समझकर वे मामा के घर शिवपालगंज आ जाता है ।

शिवपालगंज आते समय रंगनाथ को ड्राइवर कहने पर चपरासी के हाथ में रिश्वत के रूप में दो रुपए रखने पड़े । इस घटना की चर्चा होती है तो रंगनाथ को मालूम हो जाता है कि शिवपालगंज के गंजहों से सब डरते हैं । यहाँ गुंदागर्दी को सम्मान के साथ स्वीकार किया जाता है । धीरे-धीरे रंगनाथ व्यक्तियों, उनके कार्यकलापों से परिचित हो जाता है । उसे ग्रामीण परिवेश में फैली विसंगतियों और विकृतियों का पता चल जाता है । वह अपने को इस नीतिहीन परिवेश से समायोजना करना चाहता है । यहाँ की घटनाओं और उनके प्रति लोगों की मानसिकता से उसका मनोरंजन हो जाता है । पर जब जब गाँव की अनीति, धांधली, धूर्तता, गुंडागर्दी आदि स्पष्ट देखता है, तो उसे हार्दिक पीड़ा होती है । क्रोध भी होता है । पर वह कुछ कर नहीं पाता । इस विकृत परिस्थिति को सुधारने के लिए उसमें आत्म विश्वास की कमी है । इस स्थिति से निपटने के लिए जिस साहस, और कर्म-प्रेरणा के लिए आवश्यकता होती है, रंगनाथ में वह नहीं है, वह अन्याय का तो विरोध नहीं कर सकता, बल्कि उसका क्रांति का शंखनाद कर नहीं पाता उसका हिस्सेदार भी हो जाता है । अंत में विवश होकर वह वहाँ से पलायन करने की तैयारी कर लेता है । वह शिक्षित है किन्तु अकर्मण्य और दिशाहीन युवावर्ग का प्रतिनिधि है ।

पहले वह अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए मामाजी के द्वारा निर्धारत कार्यक्रमों का अनुपालन करता है । वह कार्यक्रम में एक संशोधन करता है, जिसमें मामाजी को कोई एतराज नहीं होता । वह पढ़ाई में रुचि न लेकर बैठक में गँजहों की संगति में बैठता है । मामाजी को लगता है कि स्वास्थ्यरक्षा के लिए वीर्यरक्षा में इसमें कोई खतरा नहीं है । संतोष हुआ कि एक पढ़ालिखा व्यक्ति उनके पास हर समय बैठा रहता है और हर बाहरी आदमी के साथ परिचित कराने के लिए वह हर समय तैयार मिलता है । शिवपालगंज में रहते हुए रंगनाथ को अहसास हो जाता है कि महाभारत की तरह जो कहीं नहीं है, वह यहाँ है । जो यहाँ नहीं है, वह कहीं नहीं है । लेखक ने इस पर व्यंग्य किया है कि रंगनाथ दांवपेंच और पैंतरेबाजी की अखिलभारतीय प्रतिभा यहाँ कच्चे माल के रूप में फैली पड़ी हुई देखकर सोचता है कि भारत में सांस्कृतिक एकता हर जगह पाई जाती है ।

रंगनाथ ऐसे विकृत समाज को न अपना सकता है न उसे बदलने की क्षमता और आत्मविश्वास रखता है । वह मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने में असमर्थ है । वह क्रांति का शंखनाद नहीं कर पाता । इस पर रुप्पन उससे कहते हैं -‘‘ इसमें तुम्हारा दोष नहीं है । दोष तुम्हारी पढ़ाई का है ।’’

रंगनाथ के चारों ओर गलत लोग गलत काम कर रहे हैं । वह किसी भी चुनौती का सामना नहीं करता । उसमें जीने को मजबूर हो जाता है । गुंडे छात्रों के नेता रुप्पन, घूसखोर फूड इंस्पेक्टर, गबन करने वाले कोऑपरेटिव सुपरवाइजर, कानून को किनारे पर रखकर काम करने वाले दारोगा, मेले की भीड़ में स्त्रियों से खिलवाड़ करने वाले सनीचर साजिश करने वाले शोषक प्रिंसिपल, छात्रों के साथ

कुकर्म करने वाले मास्टर मालवीय, शोषित मास्टर खन्ना, अध्यापन को गौण मानने वाले अयोग्य मास्टर मोतीराम, एक छात्र सत्ताधिकारी धूर्त नेता वैद्यजी, बाप को पीटने वाले छोटे पहलवान - सभी को देखकर भी उनके सात जीना, फिर हारकर भाग जाना - रंगनाथ की दुर्बलताओं की ओर संकेत कर रहे हैं । उससे आशा की जाती है कि वह इस परिस्थितियों में तिलमिला उठे, सामना करने को कटिबद्ध हो जाए समाज को बदल डाले और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करें, पर वह कोई कारगर कदम नहीं उठाता, दिव्यद्रष्टा बनकर रह जाता है । उसे पहले शिवपालगंज आते समय झंझटों से निजात पाने के लिए स्टेशन वैगन के चपरासी को दो रुपए रिश्वत देने पड़ते हैं ।

चूंकि रंगनाथ भारतीय पुरातत्व पर शोध कर रहा था, इसलिए वह मंदिर की पुरानी मूर्ति देखने गया । उसने देखा कि मूर्ति किसी देवी की न होकर एक सिपाही की मूर्ति थी । वह पुजारी को यह रहस्य बताता है, तो पुजारी विफर पड़ता है, धक्का देकर रंगनाथ को दूर फेंक देता है । रुप्पन स्थिति की बनती जा रही गंभीरता को भांपकर रंगनाथ को अलग ले लेता है । बात यहीं खतम होती है । रंगनाथ भी आगे इस पर नहीं सोचता ।

क्राइसिस ऑफ कांशस :

रंगनाथ बुद्धिजीवी होने के नाते 'क्राइसिस ऑफ कांशस' का शिकार बन गया है । ऐसे लोग मानसिक तनावग्रस्त रहते हैं और निराशावादी होते हैं, लेकिन लम्बे लम्बे भाषण देते हैं, जोर जोर से तर्क करते हैं । शिवपालगंज में कॉलेज के मैनेजर के चुनाव में वैद्यजी की धूर्ततापूर्ण विजय को देखकर उसे लगता है कि वह भी डकैतों के किसी गिरोह का सदस्य हो गया है । उसे लगता है कि यह यदि शहर होता तो काफी हाऊस में जाकर इस घटना पर वह लंबा चौड़ा भाषण देता, दिल का गुब्बार निकलता । वह सोचता है कि अपने दिल का दर्द अगर रुप्पन से कहे तो उसे 'क्राइसिस ऑफ कांशस' से छुटकारा मिल सकता है ।

रंगनाथ आत्मसंकट रुप्पन के सामने रखता है । तो यह सब पालटिक्स में चलता है कहने के बावजूद वह खन्ना की सहायता करने और प्रिंसिपल को फोड़ने को राजी हो जाता है । रंगनाथ को अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए रुप्पन की सहायता मिलने की उम्मीद हो जाती है ।

मानसिक व्यभिचार :

रंगनाथ में प्रत्यक्ष रूप से कोई चारित्रिक खेल दिखाई नहीं देता । पर रात को अकेले सोते समय वह रुप्पन और बेला को लिखे गए प्रेम-पत्र की याद करता है । फिर पत्र से हटकर बेला के रूप-रंग यौवन - उभार आदि पर सोचता है । अगली रात को बेला छतों को पार करती हुई रुप्पन से शारीरिक

मिलन के लिए पहुँचती है । रुप्पन समझकर रंगनाथ से लिपट जाती है । रंगनाथ की नींद खुल जाती है और 'वह कौन है' चिल्लाता है । बेला अपनी गलती समझकर भाग जाती है । तब अपनी मूर्खता पर रंगनाथ पछताकर सोचता है -''श्रीमान, आप चुगद हैं, आपको बोलने की क्या जरूरत थी ? आप घबरा क्यों गए ? आपने उसे कुछ और करने का मौका क्यों नहीं दिया ?''

आत्मसंतोष :

मेले में देवी की मूर्ति को सैनिक की मूर्ति पहचानकर रंगनाथ को पुरातत्ववेत्ता होने का संतोष मिलता है । तीन गंजहों के मेले में दुकानदार से मिल मिठाई-चाट खाकर उल्टे पैसे देने की बात करने, और सिपाही का छोटे का पक्ष लेकर झगड़ा मिटाने और इससे दोनों पक्षों के असंतोष को देखकर रंगनाथ पांच रुपए का नोट निकालकर दुकानदार को देता है और कीमत काटकर बाकी पैसे वापस करने को कहता है । यद्यपि दुकानदार डर से पैसे नहीं लेता, पर ऐसा करके रंगनाथ को संतोष मिलता है ।

रास्ते में काँस को फैलने से रोकने के लिए रंगनाथ उनको इकट्ठा करके गांठ लगाता है । पर दूसरे व्यक्ति से कहता है कि ऐसा करने से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं । दूसरा आदमी और एक औरत उनकी देखादेखी गांठ लगाते जाते हैं । यह देखकर रंगनाथ को लगता है कि वह एक नए संप्रदाय का प्रवर्तक है । इससे उसे आत्म संतोष मिलता है ।

रंगनाथ के बारे में बद्री का विचार इस प्रकार है -'' रंगनाथ चाहे जितनी गिचिर-पिचर करे उसको फिक्र क्या ? शहर का आदमी है । सूअर का लैंड - न लीपने के काम आए, न जलाने के । घबराकर वापस भाग जाएगा ।'' रुप्पन के विचार से - रंगनाथ ज्यादा पढ़ा-लिखा आदमी होने से कभी-कभी उल्टी-सीधी बातें करने लगता है ।

अंत में रंगनाथ के बहाने बुद्धिजीवियों की निष्क्रियता की ओर संकेत करके लेखक पलायन संगीत सुना देते हैं । वे कहते हैं कि शिवपालगंज कीचड़ है । यहाँ कोई आदमी कीचड़ में फंस तो जाएगा, लेकिन कीचड़ से कमल खिला नहीं सकेगा ।

लेखक ऐसे बुद्धिजीवियों को व्यंग्यात्मक सलाह देते हैं कि वे विदेशी मदद से बने हुए नए-नए शोध संस्थानों में चले जाएँ, जहाँ भारतीय प्रतिभा का निर्माण हो रहा है या भारत के अतीत में छिप जाएँ ।

अंत में प्रिंसिपल आकर रंगनाथ को खन्ना की जगह पर नौकरी करने की सलाह देते हैं तो रंगनाथ तिलमिला उठते हैं । उन्हें प्रिंसिपल की अवसरवादी स्वार्थी स्वभाव से घृणा हो जाती है । इसी समय एक मदारी अपने बंदरों को नचाकर तमाशा दिखा रहा है । यह प्रतीकात्मक रूप से लेखक

प्रतिष्ठित करना चाहते हैं कि यहाँ वैद्यजी जैसे मदारी हैं तो बाकी सभी को बंदर की तरह उनके इशारे पर कूदना-नाचना पड़ेगा । बंदर रूपी मध्यवर्ग का आदमी किसी आदर्श की प्रतिष्ठा कर नहीं सकेगा । यहाँ परिवर्तन का सपना धूमिल हो जाएगा ।

रंगनाथ यहाँ पलायनवादी बुद्धिजीवी के रूप में एक वर्ग का प्रतिनिधित्व अच्छी तरह कर सका है ।

❃ वैद्यजी :

'राग दरबारी' उपन्यास के प्रमुख पात्र वैद्यजी हैं, वे धुरी हैं । उनकी इच्छा से अन्य पात्रों के क्रिया-कलाप नियंत्रित होते हैं और सारी घटनाएँ घटती हैं । जो उनके दायरे से बाहर झांकते हैं, उन पर वैद्यजी की रोष -दृष्टि पड़ती है और वे तबाह हो जाते हैं ।

लेखक श्रीलाल शुक्ल इस पात्र के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार, राजनीतिक दांव-पेंच, अमानवीय आचरण, मूल्यहीनता, गुंडागर्दी, छीना- झपटी, उच्छृंखल कामुकता, कानून -व्यवस्था, स्वार्थी प्रवृत्ति, सत्ता लोलुपता, ठगी, खुशामदी, घूसघोरी, अनैतिकता, अवसरवादिता, चौपट हो रही पुलिस -व्यवस्था, अपराध -प्रवणता, आदि कई मुद्दों पर प्रकाश डाला है ।

समाज में जितनी विसंगतियाँ, विकृतियाँ फैलती हैं, राजनीतिक लोग उतना उसका फायदा उठाते हैं । प्राय: ऐसे लोग दोहरी चाल चलते हैं । वे आंतरिक रूप से स्वार्थी होते हैं । अप्रतिद्वन्द्वी बनाए रखना चाहते हैं । लेकिन बाह्य रूप से जो मुखौटा पहनकर भोली-भाली जनता के सामने आते हैं, लगता है कि वे राष्ट्र उन्नायक जनता-जनार्दन के सेवक हैं । लोक-कल्याण उनके जीवन का मूल मंत्र है । वे प्रेम, अहिंसा, धर्म, मानवता के उपासक के रूप में अपने को प्रस्तुत करते हैं । गीता के श्लोक उनके मुँह पर नाचते हैं ।

शिवपालगंज में वैद्यजी ऐसे सर्वशक्तिमान बहुमुखी व्यक्ति हैं । रुप्पन बाबू रंगनाथ को पिता वैद्यजी के बारे में बताते हैं - कोऑपरेटिव यूनियन में मैनिजिंग डाइरेक्टर वैद्यजी थे, हैं और रहेंगे । यह वाक्य शत-प्रतिशत सही साबित होता है ।

वैद्यजी बासठ साल की उम्र में भी शिवपालगंज के प्रमुख सत्ताधिकारी व्यक्ति हैं । वे ब्राह्मण हैं, शाकाहारी हैं । खद्दर धोती, कुर्त्ते चादर और टोपी में उनकी भव्य मूर्ति देखते ही बनती है । छद्म आदर्श उनका पुराना पेशा वैद्यकी है । ब्रह्मचर्य को जीवन का मूलमंत्र कहकर अपने दवाखाने के लिए गुप्त रोगों का अचूक दवा का विज्ञापन देते हैं - ''जीवन से निराश नवयुवकों के लिए आशा का संदेशा' । इस वृत्ति

से उनको आर्थिक लाभ मिलता तो था लेकिन सेवा-भाव का विज्ञापन उसमें अधिक था, उनका प्रचारधर्मी सिद्धांत -गरीबों की नि:शूल्क चिकित्सा और लाभ होने पर दाम लौटाना, जो वास्तव में घटित नहीं हुआ ।

वैद्यजी देश के पुराने सेवक हैं , अंग्रेज हुकूमत में जनता की सेवा, जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गाँव के जमींदारों में लंबरदार के रूप में सेवा करते थे । इसके अलावा अंग्रेजों की तरफ से लड़ने के लिए बहुत से सिपाही फौज में भर्ती कराते थे । स्वतंत्र भारत में शिक्षा -प्रसार के लिए कॉलेज का संचालन करते हैं, पर उसी के पैसे से बद्री आटा चक्की की मशीन लगाता है ।

एकछत्र अधिपति : भारत स्वतंत्र होने के बाद वैद्यजी शिवपालगंज के तीन शक्ति केन्द्रों पर कब्जा कर लेते हैं । छंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज के मैनेजर -कोओपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं और गाँव के प्रधान के पद पर भी नजर रखे हुए हैं जिसे सनीचर जैसे पुच्छ विषाणहीन पशु जैसे आदमी को बाद में गाँव का प्रधान बनाकर परोक्ष रूप से उसकी सर्वेसेवा कर कारनामें चलाते रहते हैं । वे रातोंरात अपने राजनीतिक गुट में सैकड़ों सदस्य बनाने में समर्थ हुए । इस प्रकार वे शिवपालगंज के शासक बन जाते हैं ।

कूटनीति विशारद : कुटिलता की प्रतिमूर्ति वैद्यजी शिवपालगंज के शासन केन्द्र में निरंकुश क्षमता का उपभोग कर रहे हैं । जब उनको लगता है कि जनता को असंतोष को प्रशमित करने के लिए कॉलेज में सालाना बैठक बुलाई जाए और मैनेजर के पद पर पुन: उनकी नियुक्ति की जाए , तब वे इसकी व्यवस्था करते हैं । उद्दंड छात्रशक्ति और तमंचे के बल पर विरोधी गुट के सभी सदस्यों को डरा धमका कर भगा देते हैं । वे अपने समर्थकों की सहायता से जीत जाते हैं । प्रिंसिपल उनका जयजयकार करते हैं ।

कॉलेज के मास्टर खन्ना और मालवीय जब विरोध की आवाज उठाते हैं और कॉलेज की हर अनियमितता को सार्वजनिक पर्दाफाश करते हैं तो वैद्यजी बद्री, छोटे पहलवान और प्रिंसिपल की सहायता से उनसे त्यागपत्र लिखा लेते हैं ।

गबन के आरोप में जब शहर के नेता उनसे कहते हैं कि कोई भी कारण बताकर वे कोऑपरेटिव यूनियन से त्यागपत्र दे दें । वैद्यजी प्रदेशीय फेडरेशन के लिए उम्मीदवार चाहते हैं, हाकिम इदीरस साहब शहर से आए चुनाव की प्रक्रिया में चकमा देकर जबरदस्त अपने बेटे बद्री पहलवान को मौखिक मत से मैनेजिंग डाइरेक्टर के पद पर आसीन करा देते हैं । वैद्यजी गाँव सभा के प्रधान के पद पर सनीचर जैसे

गंजहे को प्रत्यक्ष रूप से जिताकर परोक्ष रूप से सारे अनैतिक फायदा लूटने में समर्थ होते हैं । इसके लिए वे महीपालपुर वाला सिद्धांत यानी चुनाव अधिकारी को रिश्वत देकर उनके माध्यम से नियत समय की समाप्ति की घाषणा करके विरोधी पक्ष के मतदाताओं को मतदान से विरत रखते हैं ।

उनकी सफल रणनीति के परिणाम -स्वरूप डिप्टी डाइरेक्टर ऑफ एजुकेशन दौरे पर नहीं आते । अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए वैद्यजी तीन प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं । वे रिश्वत देते हैं, खुशामद करते हैं या धमकी देते हैं । थाने का दारोगा रुप्पन से कहता है कि मैं आजादी मिलने के पहले बख्तावर सिंह का चेला था । अब इस जमाने में आपके पिताजी का चेला हूँ । जब तक उसका ऐसे आत्म -समर्पण का भाव रहा, वह शिवपालगंज में सुरक्षित रहा, जब वैद्यजी की इच्छा के विरुद्ध योगनाथ का चालान कर देता है तब उसका तबादला शहर में हो जाता है । जोगनाथ मानहानि के लिए उस पर आठ हजार रुपए का हर्जाना का दावा करके मुकदमा चला देता है । दारोगा को अपमानित होकर सुलह करनी पड़ती है । ये सब वैद्यजी की माया और चमत्कार है ।

दूसरी और खुशामदी टट्टू, अपना उल्लू सीधा करने वाले, अयोग्य प्रिंसिपल केवल वैद्यजी के संकेत पर चलते रहने के कारण बच जाते हैं । कोऑपरेटिव इंस्पेक्टर जब गबन के मामले में वैद्यजी का हाथ भी होने की रिपोर्ट दी, तब उसके तबादले के लिए वैद्यजी चाल चलाते हैं । जब ऊपर की राजनीति गड़बड़ा जाने से तबादला नहीं हो पाता तो बद्री कहते हैं - इंस्पेक्टर को दस जूते लग जाएँगे । न एक कम .... वह छुट्टी लेकर बाहर निकल जाए तो जूता लगाने की कोई कसम भी नहीं ।'' वैद्यजी परोक्ष गुंडागर्दी के सहारे सभी विरोधी शक्तियों को तहस-नहस करने में तुले हुए हैं ।

दोहरी चाल : वैद्यजी बद्री बेला का विवाह होना नहीं चाहते हैं । पर जब उन्हें बद्री की जिद मालूम हुई, तब वे इस विवाह को मजबूरी में नहीं, आदर्श के रूप में स्वीकार करने की बात कहते हैं -'' मैं पुरातनवादी नहीं हूँ । गांधीजी अंतर्जातीय विवाहों के पक्ष में थे । मैं भी हूँ । बद्री और बेला का विवाह सब प्रकार से आदर्श माना जाएगा । पर पता नहीं कि गयादीन की क्या प्रतिक्रिया है, देखेंगे ।''

फिर वैद्यजी गयादीन के घर पर विवाह प्रस्ताव लेकर जाते हैं तो गयादीन इसे ठुकरा देते हैं । वैद्यजी बाहरी तौर पर दु:खी होते हैं, पर हृदय से उनको अपार हर्ष का अनुभव होता है ।

प्रिंसिपल जब कहते हैं कि उन्होंने खन्ना की कक्षा में बेइज्जती की तब बगुलाभगत वाली मुद्रा में वैद्यजी उपदेश देते हैं -'' विरोधी से भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए ।'' पर अंत में अपना निर्णय देते हैं कि खन्ना को जूतों से ठीक करना पड़ेगा ।

वे अपने कॉलेज की जागीर रुप्पन को देना चाहते थे । पर वह खन्ना का पक्षधर बन गया तो

क्रोधित होकर कहते हैं -''तू नेता बनता है ? मेरा विरोध करके तू नेता बनना चाहता है ? तू विश्वासघातक निकला । जा, अब तुझे कुछ नहीं मिलेगा ... । मैं तुझे अपने उत्तराधिकार से वंचित करता हूँ ।''

कामुक व्यक्तित्व : वैद्यजी का आंतरिक चरित्र दोषयुक्त है । वे विलासी और कामुक हैं । उपन्यासकार ने वर्णन किया है कि जाड़े की रात में लिहाफ को अच्छी तरह लपेटने के बाद भी जब जाड़ा उनकी हड्डियों को बींधने लगा तो उन्होंने याद किया कि अकेले लेटने के विस्तर ज्यादा ठंडा रहता है । इस याद के बाद यादों का एक तांता-सा लग गया ।''

रुप्पन से रंगनाथ बताता है कि उसके प्रेम-पत्र को लेकर वैद्यजी बहुत नारज हैं तो रुप्पन भी उनके प्रति अवज्ञासूचक और अपमानजनक बात करता है । वह कहता है -'' वे क्या नाराज होंगे ? जरा मुझसे बात करके देखें ।'' वह बताता है कि पिता की पहली शादी चौदह साल की उम्र में और माँ के देहांत के बाद दूसरी शादी सत्रह साल की उम्र में की । साल भर भी अकेले नहीं रहते बना । वह कहता है कि यह सब तो किया कायदे से, और बेकायदे क्या किया वह भी सुनोगे ?

वैद्यजी जब क्रोधित होकर रुप्पन से कहते हैं कि मुझे तुम्हारे आचरण की खबर है, तब रुप्पन भी एक कदम बढ़कर उनसे कहता है -'' मुझे भी आपके आचरण की खबर है ।''

बद्री जब बेला से शादी करने पर अड़ा हुआ दिखाई पड़ता है, तब वैद्यजी कहते हैं कि उसकी इस आचरण से उनकी नाक कट गई है । बद्री तुरंत पुरानी बात उगल देता है -'' नाक वाली बात न करो । नाक है कहाँ ? वह तो पंडित अजुध्या प्रसाद के दिनों में ही कट गई थी .... तुम कहते हो कि मैं बेला में फंस गया हूँ । तुम हमारे बाप हो । तुम को कैसे समझाया जाए । फंसना -फसाना चिड़िमार का काम है तुम्हारे खानदान में तुम्हारे बाबा अजुध्या प्रसाद जैसे रघुवंश की महँतारी से फंसे थे । इसे कहते हैं फंसना ।''

तर्कनिपुण : वैद्यजी बात-बात पर संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, गीता , पुराण, इतिहास, प्रेम, धर्मयुद्ध, जन-सेवा, प्रजातंत्र, ब्रह्मचर्य आदि का प्रयोग करके अपनी बहुज्ञता का परिचय देते हैं । हर बात में अपना अकाट्य तर्क रखते हैं । वे दूरदर्शी हैं । हवा का रुख पहचानते हैं । अपने कुतर्क को तर्क का रूप दे सकते हैं । वे कहते हैं -'' हमने गबन छिपाया नहीं, इससे बढ़कर ईमानदारी और क्या हो सकती है ।'' वे सुझाव देते हैं कि सरकार यदि गबन करनेवाले को पकड़ नहीं सकती तो यूनियन को हर्जाना दे ।

वैद्यजी आजकल के राजनीति करने वाले व्यक्तियों के प्रतीक हैं । जनता की आँखों में धूल

झोंककर, विरोधियों का अस्तित्व मिटा कर अपना मनमाना राज चलाने में धुरंधर नेता देश को पतन के कगार पर खड़ा कर चुके हैं । इस नग्न सत्य को पाठकों के सामने व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करके लेखक एक नागरिक सजगता, कर्मण्यता, चुनौतियों का सामना करने का सत्साहस उत्पन्न करना चाहते हैं ।

✻ बद्री पहलवान :

'राग दरबारी' उपन्यास में आए पात्र बद्री पहलवान आजकल के नेतालोगों के सहायक हैं । ऐसे लोग अपने बाहुबल (कल्ले के जोर) पर ज्यादा निर्भर रहते हैं । जो समस्या नेताओं द्वारा नहीं सुलझ पाती, ऐसे बाहुबली चुटकी भर में खेत जीत जाते हैं और अपने विपक्ष को धूल चटा देते हैं । प्रत्येक नेता के पास ऐसा करिश्मा दिखानेवाली एक मंडली होती है, जिनके भरोसे राजनीति का दांव-पेंच आराम से चलता रहता है । ब्रदी पहलवान वैद्यजी के जेठ पुत्र हैं । वे पिताजी के सलाहकार और आदेशों के पालनकर्ता हैं । बद्री पहलवान का अखाड़ा है, जहाँ वे गुंडों, बदमाशों का गिरोह तैयार करते हैं । वे इन शिष्यों के गुरु कहलाते हैं । छोटे पहलवान इनके अखाड़े से प्रशिक्षित गंजहां है । उनके शिष्य समाज में आतंक फैलाए निरंकुश घूमते हैं । वे चोरी, मारपीट, डकैती, व्यभिचार आदि गैरकानूनी हथियार रखने आदि में लिप्त रहते हैं । गुरु बद्री पहलवान को इन शिष्यों को सुरक्षा तथा सरंक्षण देने और जमानत में लाने के लिए काफी प्रयत्न करना पड़ता है । इसलिए उन्हें गाँव के बाहर किसी गाँव में या अदालत के सिलसिले में शहर जाना पड़ता है । ऐसे शिष्यों को बद्री पहलवान 'पालक बालक' मानते हैं । 'पालक बालक' उनकी शक्ति है । पिताजी के इशारे से ये प्रतिपक्ष को डंडे के बल से चित कर देते हैं । सारी समस्याएँ इस तरह से सुलझ जाती हैं ।

बद्री पहलवान सभी 'पालक बालक' से प्रेम रखता है । जमानत, सिफारिश, आर्थिक सहायता आदि जैसी आवश्यकता हो, पहुँचकर इनको कृतकृत्य कर देते हैं । वे भी अपनी जान की बाजी लगाकर गुरु के कहने पर कूद पड़ने को तैयार रहते हैं ।

बद्री पहलवान और अफसरों की कार्यप्रणाली से अच्छी तरह परिचित है । वे जानते हैं कि बाहुबल से गाँव में और अर्थबल से शहर में काम करना आसान है । अपने सहयोगियों की सहायता करने के लिए वे हमेशा नोटों की गड्डी अपने पास रखते हैं । आवश्यकता पड़ने पर पिताजी से भी पैसे लेकर किसी की जमानत करने अदालत में जाते हैं । एक बार बद्री पिताजी से डेढ़ हजार रुपए लेकर एक 'पालक बालक' की जमानत लेने शहर जाते हैं । वे पैसे लेने का कारण रंगनाथ को बताते हुए कहते हैं 'गुंडे इजसाल के नीचे नहीं, ऊपर भी होते हैं.... नकदी में बड़ा आराम है । जैसे ही हाकिम कहेगा कि हजार रुपए जमानत दो, वैसे ही दस हरे-हरे नोट मेज पर फेंक दूँगा और कहूँगा कि लो भाई रख लो जहाँ

मन चाहे ।''

एक बार बद्रीनाथ आसपास के जिलों का चक्कर लगाने के लिए चले जाते हैं, क्योंकि उनके दो-तीन चेले अपने भोलेपन के कारण राहजनी और डकैती के मामलों में गिरफ्तार हो गए थे । बद्री पर जैसे पिताजी के रक्षा विभाग की जिम्मेदारी है । एक समय बहुत-सी अड़चनें आ पहुँची । खन्ना वैद्यजी के वश में नहीं आ रहे थे । रुप्पन उनके साथ था । डिप्टी डाइरेक्टर कॉलेज की जांच करने आने वाले थे । कोओपरेटिव इंस्पेक्टर का तबादला नहीं हो पा रहा था । ऐसी हालत में सभी समस्याओं का समाधान -सूत्र प्रस्तुत करके बद्री पहलवान पिता से कहते हैं -'' ये झगड़े तो दस मिनट में खत्म हो जाएँगे । कोऑपेरेटिव इन्सपेक्टर को दस जूते मार दिए जाए, ठीक हो जाएगा । डिप्टी डाइरेक्टर न मानें और जाँच करने आएँ तो उनका भी किसी से भरत-मिलाप करा देंगे । खन्ना मास्टर के लिए हुकुम कर देंगे कि वे और उनकी पार्टी के लोग कल से कॉलेज के अंदर न जाएँ, सबको बराबर गैरहाजिर बनाकर पंद्रह दिन बाद निकाल बाहर कर देंगे ।'' तुम यह सब ऐसे ही छोड़ दो, प्रिंसिपल ठीक कर लेगा । छोटे ने इधर दो-तीन पट्ठे तैयार किए हैं । कॉलेज के बाहर उन्हीं की ड्यूटी लगा देंगे । खन्ना को कॉलेज के भीतर जाते हुए जूते मारेंगे ।

रंगनाथ चाहे जितना गिचिर-पिचर करे, उसकी फिक्र क्या ? शहर का आदमी है । सुअर का -सा लेंड न लीपने के काम आए न जलाने के । तुम उधर देखो ही नहीं । घबराकर वापस भाग जाएगा ।

रहे रुप्पन, उन्हीं को दो-चार थप्पड़ मारने होंगे । सो जब कहोगे, मार दूँगा ।

''वह फिर वैद्यजी को आश्वासन देते हैं कि (इंस्पक्टर) छुट्टी लेकर बाहर निकल जाए तो जूता लगाने की कोई कसम भी नहीं , छोड़ देगें ।''

वैद्यजी और बद्री पहलवान का काम है झगड़ा पैदा करना, समाधान के लिए रिश्वत लेना, सुविधा मिली तो गबन करना, फिर उसकी भरपाई करना, रिश्वत के पैसों से अपना हिस्सा लेना आदि । जोगनाथ ने दारोगा पर जा हर्जाने का मुकदमा चलाया था, उसे वापस लेने के लिए दारोगा भी पैसे देते हैं । उससे जोगनाथ कुछ लेता है । बद्री कहीं से तेरह सौ रुपए लाते हैं । फिर कोऑपरेटिव यूनियन में दो हजार जमा करने की तैयारी करता है । बाप-बेटे में ऐसा हिसाब चलता रहता है । बद्री ने भी कॉलेज के पैसे से आटा चक्की अपने गाँव से दस मील दूर दूसरे गाँव में लगाई थी ।

रामाधीन रुप्पन के खिलाफ बद्री पहलवान से शिकायत करता है । वह कहता है -'' वैद्यजी के घर में तुम्हीं एक आदमी हो, बाकी तो सब पन्साखा हैं । इसलिए तुम से कह रहा हूँ ।'' बद्री पहलवान रामाधीन को अभयदान देते हैं । तो फिर तुम्हारे यहाँ डाका-वाका न पड़ेगा । जाओ, चैन से सोओ । रुप्पन डाका नहीं डालते । लौंडे हैं, मसखरी की होगी ।''

बद्री पहलवान अपने पेशे के अनुरूप पोषाक पहनते हैं । मलमल का कुरता, बिना बनियान के, कमर में लंगोट, कभी-कभी लंगोट पर लुंगी । साफ-सुथरे घुटे हुए सिर पर कड़वे तेल की चमक वे भांग पीने के शौकीन हैं ।

बद्री जब जम्हाई लेते हैं तो शेर की तरह मुँह खोल देते हैं उन्हें ब्राह्मण होने का गर्व है । जब रिक्शावाला बार-बार उन्हें ठाकुर साहब कहकर संबोधन करता है तो बद्री पहलवान को अपनमान की अनुभूति होती है । वे उसकी बनियान पकड़कर कहते हैं -'' अब्बे, घंटे भर से यह ठाकुर साहब, ठाकुर साहब' क्या लगा रखा है । जानता नहीं, मैं बांमन हूँ ।''

छोटे पहलवान ने अदालत में जोगनाथ -बेला प्रेम -प्रकरण की बात कहकर बेला का चरित्र हनन का काम किया था तो बद्री बिगड़ते हैं क्योंकि उसने एक भले घर की लड़की की इज्जत फींचकर सारी दुनिया के आगे रख दी थी । छोटे यकीन दिलाता है कि 'अदालत में कही गई बात का कोई एतबार नहीं । इससे किसी का कुछ नहीं बिगड़ता ।'' बद्री उसे सावधान कर देते हैं कि तुम्हें पालक बालक समझकर माफ कर दिया ।'' बता देते हैं कि बेला से मैं शादी कर रहा हूँ । उससे वादा कर चुका हूँ ।''

वे पिताजी से न शिष्ट बर्ताव करते हैं, न शिष्ट भाषा का प्रयोग । बचपन में उन्हें बापू कहकर स्नेह और सम्मान प्रकट करते थे । पर पहलवान बन जाने पर कोई संबोधन करना उनको अरुचिकर लगा क्योंकि यह बचकानी बात है । वैद्यजी जब बेला से विवाह प्रसंग में बद्री को मूर्ख कहते हैं तो बद्री लापरवाही से जम्हाई-सी लेते हुए कहते हैं घर में गाली-गलौज करने से क्या फायदा ? यह अच्छी बात नहीं है ।'' जब वैद्यजी डाँटते हैं कि समझदार होकर भी तुम गयादीन की कन्या से कैसे फंस गए ? इसके उत्तर में बद्री कहते हैं, आपसे बात करना बेकार है । वैद्यजी इसे नाक काटने वाली बात कहते हैं तो मर्यादा की सारी सीमाएँ तोड़ कर बद्री कहते हैं -'' नाक -वाक वाली बात न करो, नाक कहाँ है ? वो तो पंडित अजुध्या प्रसाद के दिनों में ही कट गई थी ।'' वे फिर बरस पड़े । तुम कहते हो कि मैं बेला से फंस गया हूँ । तुम हमारे बाप हो, तुमको कैसे समझाया जाए । फंसना-फसाना चिड़िमार का काम है । तुम्हारे खानदान में तुम्हारे बाबू अजुद्या प्रसाद जैसे रघुवंश की महतारी से फंसे थे । इसे कहते हैं फंसना ।'' वे पिताजी को साफ-साफ सुना देते हैं -''जो कुछ करुँगा, कायदे से करुँगा । इधर-उधर की किचिर-पिचिर मुझे पसंद नहीं है ।'' रुप्पन जब पिताजी के सामने यही फंसने वाली बात करते हैं तो बद्री पहलवान रुप्पन की गर्दन पकड़कर धकेल देते हैं । जिससे रुप्पन गिरते-गिरते बच गया है । बद्री कहते हैं -'' तुम घर ही में नेतागिरी करोगे ? मेरे लिए कहते हो कि मैं उससे फंस गया हूँ ? और वह भी मेरे मुँह पर कहते हो ! चिमिरखी कहीं के ।''

इस मर्यादित प्रेम-प्रसंग के अलावा बद्री पहलवान के जीवन में पहलवान का आचरण ही रहा । बाहुबल को सर्वोपरि मानने के सिद्धांत पर अडिग रहे । वे अपने पालक बालकों की मदद से सारे संकट

दूर करने में समर्थ रहे और पिता वैद्यजी को राजनीतिक मैदान में निरंकुश घूमने का माहौल बनाए रखने में समर्थ हुए ।

❋ प्रिंसिपल :

वैद्यजी के दरवार में दरबारी प्रिंसिपल का राग एक चापलूसी नौकर का जैसा है । वे वैद्यजी के दरवार में रोज हाजिरी देते हैं । वे दिन प्रतिदिन की घटनाओं का विवरण प्रदान करते हैं, सुझाव देते हैं और जैसा आदेश मिलता है, वैसा अक्षरश: पालन करते हैं । वे किसी भी स्थिति में अपने विवेक से काम नहीं लेते । वैद्यजी की जी हुजूरी करके वे ऊँचे दर्जे के चिड़िमार निकलते हैं । वैद्यजी का वरद हस्त उन पर रहने से वे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों, अध्यापकों का शोषण करते हैं । उनके प्रति दुर्व्यवहार करते हैं । उन्हें चैन से साँस लेने नहीं देते । प्रिंसिपल दुबले-पतले आदमी हैं, खाकी हाफ पैंट और कमीज पहनते हैं । हाथ में बेंत, पैरों में सैंडल वे जितना चुस्त और चालाक थे अपने को उससे अधिक चुस्त और चालाक समझते थे । शिवपालगंज के पास के रहने वाले थे ।

दोहरी नीति : वे अध्यापकों के प्रति दोहरी नीति अपनाते हैं । जो उनकी बात मान लेता था, उसके प्रति वे क्षमासागर थे । जो उनकी गलत बात नहीं मानता था उसके प्रति कटुशब्द प्रयोग करते थे । कॉलेज के क्लर्क के साथ मिलकर कॉलेज के पैसों का गबन करते हैं, इसलिए उससे गहरी दोस्ती है । मास्टर मोतीराम उनके हुक्म का गुलाम हैं, इसलिए कक्षा छोड़कर चले जाने पर भी यह उनका दोष नहीं है । मालवीय जब मना करते हैं कि सातवीं कक्षा में नवीं कक्षा के लड़कों को लेकर पढ़ाने की असुविधा की ओर संकेत करते हैं तो प्रिंसिपल क्रोध प्रकट करते हुए कहते हैं -“ ज्यादा कानून न छाँटो । जब से तुम खन्ना के साथ उठने-बैठने लगे हो, तुम्हें हर काम में दिक्कत मालूम होती है ।” फिर अधिक क्रोधित होने पर अवधी में बोल पड़ते हैं -“ तौनु चुप्पै कैरिआउट करौ । समझ्यो कि नाहीं ?” खन्ना के दर्जे में छात्र सिनेमा पत्रिका पढ़ते हुए पाए जाते हैं तो वे उन्हें डिसिप्लिन बनाए रखने का आदेश देकर -व्यंग्य करते हैं- इसी तमीज से वाइस प्रिंसिपल रहें कीजिएगा ।”

दो गुणों के अधिकारी : प्रिंसिपल साहब दो गुणों के लिए विख्यात थे । लेखक इस संबंध में उल्लेख करते हैं -“एक तो खर्च का फर्जी नक्शा बनाकर कॉलेज के लिए ज्यादा से ज्यादा सरकारी पैसा खींचने के लिए । दूसरे गुस्से की चरम दशा में स्थानीय अवधी बोली का इस्तेमाल करने के लिए । जब वे फर्जी नक्शा बनाते थे तो बड़े से बड़ा ऑडीटर भी उसमें कलम न लगा सकता था ; जब वे अवधी बोलने लगते थे तो बड़ा से बड़ा तर्कशास्त्री भी उनकी बात का जवाब न दे सकता था ।”

प्रिंसिपल शिवपालगंज के हर काम में दखल देते हैं । हर कर्मचारी से संबंध रखते हैं ।

प्रिंसिपल साहब मलेरिया इंस्पेक्टर को साइकल पर आते हुए देखकर सिर्फ सलाम करके जाने देते हैं । क्योंकि वह बी.डी.ओ. का भांजा लगता था और कभी काम में आनेवाला था । जब वे पब्लिक हेल्थ के ए.डी.ओ. को साइकल पर आते हुए देखते हैं, उसे डाँटते हैं - नंदापुर में चेचक फैल रही है । जाकर टीके लगाओ । नहीं तो शिकायत हो जाएगी । कान पकड़कर निकाल दिए जाओगे । क्लर्क से कहते हैं -‘‘ बेटा को (ए.डी.ओ.) की झाड़ दिया जाये ।’’

खुशामदी टट्टू : प्रिंसिपल में अध्यापन और प्रशासनिक दक्षता का अभाव है । इसलिए वे कॉलेज के मैनेजर वैद्यजी के दरबार में रोज हाजिरी देते हैं और उनकी खुशामद करके अपने पद को सुरक्षित रखते हैं । यह उनकी मजबूरी थी । उनको अपनी चारों बहनों का विवाह करना था । वे जैसे - तैसे अपनी कुर्सी पर टिके रहने को अपना कुशल-मंगल समझते हैं । इसलिए छात्र रुप्पन बाबू जब उन पर व्यंग्य बाण छोड़ता है -‘‘कॉलेज को तो आप हमेशा ही छोड़े रहते हैं । वह तो कॉलेज ही जो आपको नहीं छोड़ता ।’’ यह सुनकर प्रिंसिपल निर्लज्जता पूर्वक हँसकर उत्तर देते हैं -‘‘रुप्पन बाबू बात पक्की कहते हैं ।’’ जब क्लर्क वैद्यजी को ‘चाचा’ संबोधन करता है तब प्रिंसिपल को अफसोस होता है कि वे उन्हें अपना बाप कह पाते । इसलिए उनका चेहरा उदास हो जाता है । प्रिंसिपल वैद्यजी का अनुगामी होने पर भी पक्के चिड़िमार हैं । वे अपने अधीनस्थ विरोधी अध्यापकों का शोषण करते हैं । खन्ना की जगह पर रंगनाथ को इतिहास का मास्टर बनाने की सलाह देते हैं, ताकि वे वैद्यजी के और अधिक करीब आ सकें ।

अपने उत्तरदायित्व के प्रति लापरवाह : प्रिंसिपल अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह न करके कॉलेज को पैसे ऐंठने का साधन मान लेते हैं । शैक्षिक वातावरण नष्ट करके वहाँ गुटबंदी, गुंडागर्दी, गाली-गलौज बरखास्तगी, भयप्रदर्शन आदि की व्यवस्था करते हैं । शिक्षा विभाग के डिप्टी डाइरेक्टर की जाँच का बहाना बनाकर बैठक में षडयंत्र करके खन्ना और मालवीय से पहले तैयार त्यागपत्र में हस्ताक्षर करा लेते हैं । इस काम के लिए बद्री और छोटे पहलवान के कत्ले के जोर की सहायता भी लेते हैं । अध्यापकों पर 107 का मुकदमा चलाकर उनकी बेइज्जती करते हैं । वे अपने तथा वैद्यजी के रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने का कपटपूर्ण कार्य करते हैं । दूने वेतन पर अध्यापकों के हस्ताक्षर करा लेते हैं । विरोधी अध्यापकों को संस्था से निकाल देते हैं । अध्यापकों को अनावश्यक डाँटकर उनकी कार्यकुशलता में बाधा डालते हैं । कॉलेज में मजदूरों के काम में दिलचस्पी लेने से वे प्रिंसिपल कम और ठेकेदार अधिक लगते हैं । सनीचर वैद्यजी के साथ भांग पीकर अपने पद की गरिमा को नष्ट करते हैं । वे जिला विद्यालय निरीक्षक के घर पर जाकर घी की रिश्वत देते हैं । वे इतने तिकड़मी हैं कि त्यागपत्र लेने के बाद खन्ना से कहते हैं -‘‘ आओ मास्टर साहब, हम लोग उधर चलें । हमारा झगड़ा खतम

हुआ । आज से हम लोग फिर दोस्त हो गए ।''

वास्तव में ऐसे व्यक्ति शिक्षा संस्थानों में प्रमुख बनकर शिक्षा-व्यवस्था को तहस-नहस कर देते हैं । राष्ट्र में अराजकता फैलाने का पूरा -पूरा बंदोबस्त कर देते हैं । ये कलंक है ।

✻ गयादीन :

गयादीन शिवपालगंज के एक प्रतिष्ठित नागरिक हैं । पैसे और इज्जत के कारण थानेदार, स्थानीय एम.एल.ए. और जिलाबोर्ड के टैक्स कलेक्टर की कृपा इन पर रहती थी । वे जाति के बनिया थे । वे कपड़े की दुकान चलाते थे, लेकिन वहीं लेन-देन का महाजनी व्यापार आराम से चलाते थे ।

वे दुहरी जीवन-शैली अपनाते हैं । एक तरफ क्रोध आ जाने के डर से वे ऊड़द की दाल नहीं खाते । उनका मानना है कि क्रोध करने से स्वास्थ्य की हानि होती है और दुकानदारी नहीं चल पाती । वे कमजोर के गुस्से को बांझ मानते हैं । इससे वे अपनी विशुद्ध सात्विक प्रवृत्ति का प्रचार करते हैं । दूसरी तरफ सूदखोर के रूप में महाजनी व्यापार धड़ल्ले से चलाते हैं ।

गयादीन समझौतावादी व्यक्ति हैं । शोषक वैद्यजी का विरोध करने से पद से हाथ धोना पड़ेगा और परेशानी बढ़ जाएगी, यही सोचकर उनके अन्याय को जानते हुए भी उनका विरोध नहीं करते । वे छंगामल इंटर कॉलेज की प्रबंध समिति के अध्यक्ष रहते हुए भी अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग नहीं रहते । लेकिन समझौतावादी प्रवृत्ति के कारण अपना पद सुरक्षित रख पाते हैं ।

खन्ना और उनके गुट के अध्यापक जब उनसे कॉलेज में होनेवाले अन्याय का विरोध करने को उकसाते हैं तो गयादीन उनसे समझाते हैं-'' प्राइवेट स्कूल की मास्टरी - वह तो पिसाई का काम है । भागोगे कहाँ तक ?'' कॉलेज की प्रबंध समिति की बैठक बुलाने को टालते हुए कहते हैं - सैकड़ों संस्थाएँ हैं, जिनकी सालाना बैठक नहीं होती । अपने यहाँ का जिलाबोर्ड .... देश भर में यही हाल है । किस-किस को ठीक करोगे ? इस झंझट से बचो, अपनी राह चलो ।''

गयादीन का सिद्धांत है कि अपने को सही सलामत रखने के लिए पानी की धार के साथ चलना चाहिए, धार के विपरीत तैरना खतरनाक है । वे कॉलेज की प्रबंध समिति की बैठक बुलाने के लिए रामाधीन को लगा दो ... वे ऐसे कामों के लिए अच्छे रहेंगे ... बस लगाए रहो, खिसकने न दो ।'' जब वैद्यजी की ओर से रंगनाथ और रुप्पन गयादीन के पास पहुँचे तो गयादीन उन्हें आश्वस्त कर देते हैं कि मैनेजर तो वैद्य महाराज को रहना है । अपने उत्तरदायित्व से पल्ला झाड़ने के लिए वे रंगनाथ को उकसाते हैं -'' खन्ना मास्टर की गद्दी मैं नहीं पाऊँगा, पर तुम कर सकते हो । तुम बाहर के रहनेवाले हो । यहाँ वाले तुम्हारी असलियत जानते नहीं हैं, अब तुम्हीं लीडरी करके दिखाओ ।''

वे जानते हैं कि प्रिंसिपल वैद्यजी के समर्थक हैं और दोनों मिलकर कॉलेज का पैसा गबन करते हैं । उनका विरोध करना खतरे से खाली नहीं है । इसलिए जब मालवीय कहते हैं कि प्रिंसिपल कॉलेज का पैसा रुपया बरबाद कर रहा है, तब गयादीन अपना विचित्र तर्क रखते हैं - आप किस तरह चाहते हैं कि जनता का रुपया बरबाद किया जाए ? बड़ी इमारतें बनाकर ? सभाएँ बुलाकर? दावतें लुटाकर ? उनका विचार है कि जनता के रुपए बरबाद ही होंगे । वे कहते हैं -'' जनता के रूपए पर इतना दर्द दिखाना ठीक नहीं, वह तो बरबाद होगा ही । .... जनता के रुपए के पीछे इतना सोच-विचार न करो । नहीं तो बड़ी तकलीफ उठानी पड़ेगी ।''

इस प्रकार खन्ना मास्टर कुनबापरस्ती की शिकायत करने पर गयादीन समझता है -'' बुरा क्यों लगेगा भाई ? तुम्हीं तो कहते हो कि कुनबा परस्ती का बोलबाला है । वैद्यजी के रिश्तेदारन मिले होंगे, बेचारे ने अपने ही रिश्तेदार लगा दिए । कहाँ ले जाए बेचारा अपने रिश्तेदारों को ?''

रंगनाथ जब अध्यापकों का पक्ष लेकर प्रिंसिपल के अनाचार -अत्याचार का विरोध करने के लिए गयादीन से अनुरोध करते हैं और अपने पद के अधिकार का उपयोग करने को कहते हैं, तब गयादीन कहते हैं -''लौंडे की दोस्ती जी का जंजाल .... मैं लीडरी नहीं करुंगा । अधिक आग्रह करने पर वे रंगनाथ से कहते हैं - अब तुम लीडरी करके दिखाओ ।

नैतिकता के प्रसंग पर वे खन्ना मास्टर से कहते हैं -'' नैतिकता का नाम न लो मास्टर साहब , किसी ने सुन लिया तो चालान कर देगा ।'' नैतिकता और कुर्सी की तुलना करते हुए वे कहते हैं - ''नैतिकता समझ लो कि यही चौकी है, एक कोने में पड़ी है । सभा-सोसाइटी के वक्त इस पर चादर बिछा दी जाती है, तब बड़ी बढ़िया दिखती है । इस पर चढ़कर लेक्चर फटकार दिया जाता है । यह उसी के लिए है ।

गयादीन भाग्यवादी हैं । अपनी भैंस के गाभिन न होने पर वे भाग्य को दोष देते हैं -'' नहीं, कसूर इस माल का नहीं, मेरी किस्मत का है । तीन भैंसों को पिचकारी दी जाती है तो किसी न किस एक भैंस पर वह बेकार हो जाती है, कुछ ऐसा है कि हर बार वह एक भैंस पर मेरी ही होती है ।''

गयादीन निराशावादी हैं । उनके घर से चाँदी हो जाती है । गवाही देते सभय छोटे पहलवान ने उनकी बेटी पर अदालत में बदचलन लड़की का आरोप लगाता है । दारोगाजी जब गयादीन के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं गयादीन दु:खी मन से कहते हैं -'' यह तो होना ही था दारोगाजी । मैं पहले ही समझ गया था कि मेरे घर के अब किसी की भी इज्जत बच नहीं सकती ।'' यह तो अपने देश का चलन है । जब कचहरी का मुँह देखा है तो सभी कुछ झेलना पड़ेगा । जिसे यहाँ आना पड़े, समझ लो उसका करम ही फूट गया ।''

अपनी बेटी बेला को लेकर उनकी एक बड़ी समस्या है । बेला स्वस्थ, सुन्दर और गृहकार्य में निपुण होते हुए भी दहेज के कारण उसका विवाह नहीं हो सका है । उस पर रुप्पन और बद्री दोनों भाइयों की नजर है ।

बद्री के लिए विवाह प्रस्ताव लेकर वैद्यजी गयादीन के घर आते हैं तो गयादीन इस बारे में अनजान का व्यवहार दिखाते हैं । फिर वैद्यजी जब बात स्पष्ट कर देते हैं गयादीन इसे ठुकराकर कहते हैं कि उन्होंने अपनी लड़की का विवाह नौकरी लगे शहर के एक लड़के से तय कर दिया है और विवाह पंद्रह दिन में होने वाला है । बेटी की बदनामी होने से रुष्ट होकर वे वैद्यजी से कहते हैं -'' मेरी बिटिया पर कलंक लगाओगे तो तुम चाहे जितने बड़े नेता हो, नरक में कीड़े-मकोड़े की तरह जाकर घिसटोगे ।'' वे छोटे, रुप्पन और सनीचर को चुप कराने के लिए वैद्यजी से कहते हैं -'' अब महाराज , यही बिनती है कि तुम खुद अपना मुँह बंद कर लो और अपने इन साँडों को हटक दो ।'' गयादीन ने अपनी व्यवहार कुशलता दिखाकर बद्री का विवाह टाल दिया ।

वे सौदेबाजी में भी निपुण हैं । परिवार नियोजन विभाग में नौकरी करने वाले नवयुवक को अपनी बेटी के लिए उपयुक्त वर समझकर उसके साथ वे आत्मीयता से बातचीत करते हैं । उसके पिता को दहेज में पंद्रह हजार की जगह सात-आठ हजार पर राजी करने का प्रयत्न करते हैं । यद्यपि उस मामले में पूरी सफलता नहीं मिल पाती ।

गयादीन एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपने को सुरक्षित रखने के लिए समाज के अत्याचारी गुट से दूर रहते हैं, उनके अन्याय -अनाचार का विरोध करने से डरते हैं, लेकिन वे अपने को सुरक्षित रख नहीं पाते । उनके घर से वे ही लोग चांदी करते हैं, उनकी लड़की की बदनामी करते हैं, उनका मौन-समर्थन करने का कोई फायदा नहीं होता ।

लेखक गयादीन के माध्यम से स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि अवसरवादी बनकर अन्याय का विरोध नहीं करोगे तो वे ही अत्याचारी लोग अधिक से अधिक अन्याय करेंगे और अंत में अपने समर्थकों को भी तबाह कर देंगे । अत: पलायनवादी न बन कर छाती तानकर मुसीबतों से, अन्याय से संघर्ष करो ।

❋ लंगड़ :

लंगड़ प्रसाद को लोग लंगड़ कहते थे । घुटने के नीचे से उसकी टाँग कट गई थी । जिसकी कमी वह एक लाठी से पूरी करता था । उसके माथे पर कबीर पंथी तिलक गले में तुलसी की कंठी, आंधी-पानी झेला हुआ दढ़ियल चेहरा, दुबली-पतली देह, मिर्जई पहने-स्वपीड़क ईसाई संतों का भाव

लिए वह सबसे अलग लगता था ।

लगभग सात साल पहले उसने दीवानी का एक मुकदमा दायर किया था । उसे अब उस पुराने मुकदमे के लिए एक दस्तावेज की एक नकल लेनी थी । उसके लिए उसने तहसील में दरख्वास्त की थी । नकलनबीस ने इसके लिए पांच रुपये रिश्वत मांगी । लंगड़ ने कहा कि इसके लिए दो रुपए ही चलते हैं । नकलनवीस अड़ गया । उसने कहा वह रुपए नहीं लेगा । नकल कायदे से देगा । उसने भी कसम खाई कि वह बिना रिश्वत दिए कायदे से नकल लेगा । दोनों में धर्मयुद्ध ठन गया । लंगड़ धरम और सत् की लड़ाई लड़ता रहा ।

लंगड़ धर्म की लड़ाई से नकल के लिए जीवन भर लड़ता रहा । लेकिन अंत तक उसे नकल नहीं मिल सकी । वह अपनी मूर्खता, सीधेपन और जिद्दी स्वभाव के कारण अपने सिद्धांत को लेकर भी सफल नहीं हुआ ।

लंगड़ देश की न्याय, व्यवस्था को धर्म और सत्य का संस्थापक मानता रहा । बाबुओं की भलमनसाहत पर भरोसा करता रहा । बाबू लोग अपने स्वार्थ के लिए और उनकी निरीहता के लिए उसे सताते हैं, ऐसा उसने अनुभव किया । वह मानता रहा कि समस्या कचहरी की कार्य-प्रणाली , या नकलनवीस की गलती, या लालफीताशाही, या दरख्वास्त ठीक से न भरने या उसके समय पर तहसील में न पहुँच सकने के कारण हुई होगी । वह इसके लिए अपने भाग्य को कोसता है पर दूसरे पर दोष नहीं मढ़ता । लोगों के समझाने पर भी वह अपनी जिद पर अटल रहता है । जब एक मास्टर ने नकल न देने वाले बाबू को चोट्टा कहा - तब लंगड़ कहता है-‘‘ गाली न दो बाबू, यह धरम की लड़ाई है । गाली-गलौज का कोई काम नहीं । नकल नवीस बेचारा क्या करे ।’’ उसे अपनी धर्म-लड़ाई पर अटूट विश्वास है । वह मानता है कि नकल पाए बिना वह मर नहीं सकता । उसे पूर्ण विश्वास है कि भगवान के दरबार में ऐसा अंधेर नहीं हो सकता ।

वह नकल के पीछे मानो पागल हो गया हो । वह नकल के चक्कर में गाँव छोड़कर रिश्तेदार के घर आकर तहसील दौड़ता रहा । उधर खेत, फसल , बैल सब भगवान के भरोसे उसने छोड़ दिया । एक दिन बस अड्डे पर रंगनाथ ने लंगड़ से नकल के बारे में पूछा तो उसने कहा कि उसे बुखार हो गया था । उसी समल नकल तैयार हो गई थी । नोटिस बोर्ड पर इसकी सूचना लग गई थी । पंद्रह दिन तक उसे कोई लेने नहीं आया । तब उन्होंने उसे फाड़ कर फेंक दिया । रंगनाथ ने उसे गाँव जाकर खेती करने की सलाह दी । तब वह निराश होकर कहता है -‘‘ खेती कैसे करूँगा बापू, खेतों का ही तो मुकदमा चल रहा है ।’’ वह विनयी है । जब वैद्यजी की चौखट पर आता है, तब मुर्गी बनकर उन्हें प्रणाम करता है और जाते समय जमीन तक झुककर साष्टांग दण्डवत करता है ।

लेखक लंगड़ चरित्र के माध्यम से हमारी प्रचलित न्याय व्यवस्था के प्रति व्यंग्य करके कहते हैं कि यह न्याय -व्यवस्था हाथी की चाल चलती है और उसकी चाल बड़ी उलझनपूर्ण है । हमारे देश का आदमी यदि एक मुकदमें में फँस जाता है, तो जीवन भर अदालत की लूट-खसोट से त्राहि-त्राहि करता रहता है । समाज में भ्रष्टाचार इतनी मजबूती से जम गया है कि उसका उन्मूलन करने को चाहने वाला अपना अस्तित्व भी खो बैठता है । असफलता के दु:ख में वे भाग्य, भगवान, कर्मफल और धर्म का नाम लेते हैं और विलीन हो जाते हैं ।

2.16 व्याख्याएँ :

1. दारोगाजी और उनके सिपाहियों को वहाँ पर मनुष्य नहीं बल्कि अलादीन के चिराग से निकलने वाला दैत्य समझकर रखा गया था । उन्हें इस तरह रखकर 1942 में अंग्रेज अपने देश चले गए थे और उसके बाद ही धीरे-धीरे लोगों पर यह राज खुलने लगा था कि ये लोग दैत्य नहीं है, बल्कि मनुष्य हैं और ऐसे मनुष्य हैं । जो खुद दैत्य निकालने की उम्मीद में दिन रात अपना-अपना चिराग घिसते रहते हैं । (अनुच्छेद -

प्रसंग :

लेखक श्रीलाल शुक्ल अपनी व्यंग्य शैली में शिवपालगंज थाने के पुराने मकान असबाब अस्त्र-शस्त्रों तथा सीमित पुलिस कर्मियों द्वारा इलाके में कानून और सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखने की असमर्थता का वर्णन किया है । यहाँ पुलिस की कार्य दक्षता पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया है ।

व्याख्या -1947 से पहले जब देश पराधीन था, उस समय शिवपालगंज थाने की अवस्था जैसी थी, आज वैसी भी है । परतंत्र भारत में लोग थाने से डरते थे । वहाँ उस समय एक दारोगा और थोड़े सिपाही पूरी इलाके की सुरक्षा व्यवस्था में रहे थे ।

एक लोककथा प्रचलित है कि अलादीन के पास एक चिराग था, जिसे वह घिसने से उसमें से एक दैत्य निकल आता था और मालिक के निर्देशानुसार काम कर देता था । अंग्रेज हुकूमत के समय उन्हें सर्व शक्ति संपन्न मानकर रखा गया था । देश स्वतंत्र होने के बाद लोगों का थाने से भय हटने लगा । चोरी-डकैती बढ़ने लगी । अपराधियों को पकड़कर समुचित दण्ड दिया नहीं जा सका । लोग उन्हें सर्वशक्तिमान दैत्य न समझकर मामूली मनुष्य समझने लगे । उनमें कोई भय नहीं रहा । पुलिस भी धीरे-धीरे अकर्मण्य होती गई । अपराधों की रोकथाम नहीं हो सकी । लेकिन पुलिस अब समझने लगी कि वह अलादीन चिराग से उत्पन्न दैत्य नहीं है, स्वयं अलादीन है । इस आशा में दिन रात खोए हुए हैं कि

वे अपना-अपना चिराग घिस कर दैत्य की सृष्टि करेंगे जो उनकी बात मानकर सुरक्षा व्यवस्था को चुस्त कर देगा । अर्थात् वास्तव में पुलिस अब अयोग्य है । अपने कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार नहीं है और इलाके में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में असफल हैं ।

2. कुछ दिन पहले इस देश में यह शोर मचा था कि अनपढ़ आदमी बिना सींग -पूँछ का जानवर होता है । उसे हल्ले में अपढ़ आदमियों के बहुत से लड़कों ने देहात में हल और कुदालें छोड़ दी और स्कूल पर हमला बोल दिया । (अनुच्छे -3)

प्रसंग :

भारत में शिक्षा का प्रसार करने के उद्देश्य से छंगामल इंटर कॉलेज खुला गया था । कॉलेज के मैनेजर और प्रिंसिपल फर्जी कागजात तैयार कर के सरकारी पैसे हड़पने में लग गये थे । अपने रिश्तेदारों को अध्यापक बना दिया था । शिक्षा का माहौल नहीं था ।

व्याख्या –देश स्वतंत्र होने के बाद शिक्षा के विकास को महत्व दिया गया । प्रचार किया गया कि जनता शिक्षित होने से देश का विकास होगा । अशिक्षा का दोष इस प्रकार बताया गया कि अनपढ़ आदमी बिना सींग-पूँछ का जानवर जैसा है । बिना सींग और पूँछ के जानवर भद्दा लगता है, शक्तिहीन लगता है । उसी प्रकार अनपढ़ आदमी को समाज में आदर नहीं मिलता और वह अपने अधिकार को बलपूर्वक ले नहीं सकता । इस प्रचार का असर देहात के लोगों पर पड़ा । वे अपने बच्चों को शिक्षित करने की इच्छा से स्कूलों में दाखिला देने लगे । बच्चों ने हलकुदाल छोड़ दी । खेती-बाड़ी छोड़कर स्कूल में आ गए । स्कूल में भीड़ होने लगी ।

वास्तव में स्कूल वाले इसे अच्छा व्यापार समझकर सरकारी रुपए हड़पने लगे । उचित शिक्षा न मिलने से छात्र अनुशासनहीन हो गए । अच्छे इन्सानों के स्थान पर गुंडों, बदमाशों का निर्माण हुआ ।

3. विरोधी से भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए । देखो न, प्रत्येक बड़े नेता का एक-एक विरोधी है । सभी ने स्वेच्छा से अपना -अपना विरोधी पकड़ रखा है । यह जनतंत्र का सिद्धांत है । हमारे नेतागण कितनी शालीनता से विरोधियों को झेल रहे हैं । विरोधी गण अपनी बात बकते रहते हैं और नेतागण चुपचाप अपनी चाल चलते रहते हैं । कोई किसी से प्रभावित नहीं होता । यह आदर्श विरोध है (अनुच्छेद -5)

प्रसंग :

प्रिंसिपल वैद्यजी की चापलूसी करने उनकी बैठक में पहुँच जाते हैं । आज वे खन्ना मास्टर के खिलाफ वैद्यजी को उलटा-सीधा समझाकर बहकाना चाहते हैं । वे यह दिखाना चाहते हैं कि स्थिति को धैर्य के साथ उन्होंने निपटाया इसके उत्तर में विरोधियों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए उस पर वैद्यजी अपना व्याख्यान रखते हैं ।

व्याख्या : वैद्यजी समझते हैं कि इस गणतंत्र राष्ट्र में शासक नेता होंगे । उनका विरोध करने के लिए विरोधी भी रहेंगे । वे विरोध करेंगे, किन्तु नेता को उनके साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए । उनका सम्मान करके उनको खुश रखना चाहिए । अनादर करके उनके दिलों को दु:ख पहुँचाना नेता का धर्म नहीं है । कोई नेता एक पद पर हैं तो दूसरा उस पद को छीन लेने के लिए स्पर्द्धा करेगा । राजनीति में यह सामान्य घटना है । हर जगह ऐसी स्पर्द्धा चल रही है । नेतागण अपनी इच्छा से विरोधियों को पनपने देते हैं । उनके साथ शालीनता से बर्ताव करते हैं । विरोधी लोग बड़े-बड़े भाषण देकर अपना विरोध प्रदर्शन करते हैं । नेतागण आराम से अपनी चाल चलते हैं । उन पर कोई असर नहीं पड़ता । वे अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते । यहाँ न नेता विरोधियों से प्रभावित होते हैं, न विरोधी नेता से प्रभावित होते हैं । नेता प्रभावित होंगे तो वे अच्छा इन्सान बन जाएँगे और नेतागिरी कर नहीं पाएँगे । विरोधी प्रभावित होंगे तो लोगों को बहकाकर भविष्य में नेता बनने के सपने से हाथ धो बैठेंगे । इसलिए सब अपने -अपने मार्ग पर चलते हैं । यह आदर्श विरोध है कि भीतर जो कुछ हो, ऊपर को शांत, सौम्य, उदार और मित्रवत् बर्त्ताव करना चाहिए ।

4. दु:ख मनुष्य को माँजता है । बात कुल इतनी नहीं है, सच तो यह है कि दु:ख मनुष्य को पहले फींचता है, फिर फींचकर निचोड़ता है, फिर निचोड़कर उसके चेहरे को घुग्धू जैसा बनाकर उस पर दो-चार काली-सफेद लकीरें खींच देता है । फिर उसे सड़क पर लंबे -लंबे डगों से दौड़ने के लिए छोड़ देता है । दु:ख इन्सान के साथ यही करता है । (अनुच्छन्द -6)

प्रसंग

एक शहरी रिक्शेवाला अपने को देहाती रिक्शेवाले से चलाक सिद्ध करते हुए बद्री पहलवान को रिक्घशे पर बिठाकर ले रहा था । वह सिगरेट पीने रुक गया । एक गोंडा रिक्शेवाला पीछे से आकर शहरी रिक्शेवाले से पूछा -‘‘ भैया, तुम गोंडा के हो क्या ?’’ शहरी रिक्शेवाले ने उससे तिरस्कार पूर्वक बातें कहीं । तब लेखक गोंडा के रिक्शेवाले के चेहरे को देखकर सुख-दु:ख के सिद्धांतों पर विचार करते हैं ।

व्याख्या : दु:ख मनुष्य को मांजता है अर्थात् दु:ख में मनुष्य के सारे दोष पूरे हो जाते हैं, दु:ख की आग उसे तपाकर शुद्ध सुवर्ण बना देती है । इसलिए कवि दु:ख का स्वागत करते हैं । दु:ख में मनुष्य का सारा अहंकार गल जाता है । उसे अपनी शक्ति सीमित लगती है । वह ईश्वर विश्वासी हो जाता है और सात्विक भाव संपन्न हो जाता है ।

लेखक के विचार से यह कवि कल्पना है दु:ख के प्रति यह एक आदर्शवादी दृष्टिकोण है । लेकिन दु:ख का और एक पक्ष है जो यथार्थ है और कटु है ।

दु:ख मनुष्य को पहले कपड़े जैसे फींचता है । पत्थर पर पीटता है । मनुष्य के अंग-अंग ढीले कर देता है । फिर उसे नीबू जैसा निचोड़कर रसहीन कर देता है । मनुष्य शक्तिहीन हो जाता है । दु:ख दूसरों को निर्बोध और अशुभ लगता है । फिर दु:ख उस पर दो-चार काली-सफेद लकीरें खींचकर इसे सर्कस का जोकर बना देता है । वह समाज में बेढंगा लगता है उसका व्यवहार दूसरों को अस्वाभाविक लगता है । लोग उसकी खिल्ली उड़ाते हैं । जिस प्रकार जोकर अपनी विचित्र चाल से दर्शकों को आमोदित करता है , उसी प्रकार दु:ख से निष्पेषित इन्सान अपने चिंतन कार्य और वचन से विचित्र लगता है । उसको जीवन भार स्वरूप लगता है । वह अपना नीरस जीवन जैसे -तैसे पूरा करने को विवश हो जाता है । दु:ख का यही रूप लेखक गोंडा के रिक्शेवाले में देखते हैं ।

5. एक साहित्य है जो गुप्त कहलाता है, जो 'भारत में अंग्रेज राज' जैसी पुस्तकों से भी ज्यादा खतरनाक है, क्योंकि उसका छापना 1947 के पहले तो जुर्म था ही, आज भी जुर्म है । जो बहुत -सी दफ्तरी बातों की तरह गुप्त होकर भी गुप्त नहीं रहता, जो आहार -निद्रा, भय-मैथुन आदि में फँसे हुए आदमियों की जिन्दगी में एक बड़े सुखद -लिटरेरी -सप्लिमेंट का काम करता है और जो विशिष्ट साहित्य और जन साहित्य की बनावटी श्रेणियों को लांघकर व्यापक रूप से सबके हृदयों में प्रतिष्ठित है । (अनुच्छेद -7)

प्रसंग :

वैद्यजी के घर की छत पर बने कमरे में उसका बेटा रुप्पन कामशास्त्र की किताब पढ़ता है । उस पुस्तक के संदर्भ में लेखक अपने विचार व्यक्त करते हैं ।

व्याख्या : लेखक साहित्य को तीन वर्गों में रखकर उनको पाठकों के संबंध में चर्चा करते हैं । विशिष्ट साहित्य का दर्शन, विज्ञान, उच्चत्तर साहित्य -सिद्धांत आदि से संबंधित होता है जिसे समाज के उच्चशिक्षित वर्ग पढ़ते हैं । जनसाहित्य सामान्य जनता के रुचिगत विषयों से संबंधित है ।

अखबारों में एक अलग से अंक लिटरेरी सप्लिमेंट के रूप में निकलता है जो साहित्य से संबंधित रहता है उसे ज्ञानी, गुणी जन पढ़ते हैं । इनके अलावा और एक साहित्य है जो अश्लील साहित्य है, कामशास्त्र संबंधित है । लेखक ने इसे गुप्त साहित्य कहा, क्योंकि लुकछिपकर लोग इसे पढ़ते हैं । समाज में खुले रूप में इसकी क्रय-विक्रय ,संरक्षण और पठन वर्जित है । क्योंकि समाज के किशोरवर्ग इससे गुमराह होने की आशंका बनी रहती है । अत: यह समाज के लिए खतरनाक है ।

भारत में अंग्रेज राज एक पुस्तक है, जिसमें अंग्रेज शासकों के अन्याय-अत्याचार को प्रमाणित तथ्य दिए गए थे । जो भारत में 1947 के पहले और बाद में भी प्रतिबंधित हुआ था । अंग्रेज सरकार इसे खतरनाक समझती थी । इसे बेचना, खरीदना, पढ़ना जुर्म था । उसी प्रकार अश्लील साहित्य भी खतरनाक है । समाज को पथभ्रष्ट करने की आशंका से यह भी प्रतिबंधित है ।

फिर भी नैतिकता को छोड़कर पशुवत् और -निद्रा भय मैथुन में जीनेवाले लोगों के पास अश्लील साहित्य उस प्रकार पहुँच जाता है जिस प्रकार गलत लोगों के पास सरकारी फाइलों में से गुप्त रहने योग्य तत्थ पहुँच जाते हैं । अश्लील साहित्य सुख देनेवाले लिटररी सप्लिमेंट बन जाते हैं । फिर इसे पढ़ने के लिए प्रबुद्ध वर्ग, सामान्य जन वर्ग और निम्न वर्ग का भेद मिट जाता है । व्यापक रूप से सभी लोग अश्लील साहित्य का रस लेने लगते हैं ।

6. गुटबंदी परमात्मानुभूति की चरम दशा का एक नाम है । उसमें प्रत्येक 'तू' 'मैं' को और प्रत्येक 'मैं'तू' को अपने से ज्यादा अच्छी स्थिति में देखता है । वह उस स्थिति को पकड़ना चाहता है । 'मैं' 'तू' को मिटाकर 'मैं' की जगह 'तू' और 'तू' जगह 'मैं' बन जाना चाहता है ।

(अनुच्छेद -10)

संदर्भ :

छंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज में गुटबंदी चल रही है । वैद्यजी और रामाधीन भीखम खेवड़ी प्रिंसिपल और मास्टर खन्ना अलग-अलग गुटों में हैं । वे एक दूसरे को समाप्त करना चाहते हैं । छात्रों की गुटबंदी केवल आपसी झगड़े में सीमित है । लेखक गुटबंदी का परमात्मानुभूति की चरमदशा के साथ तुलना करके इस पर व्यंग्य किया है ।

व्याख्या : लेखक वेदांत के अद्वैत दर्शन का उदाहरण देकर कहते हैं कि ब्रह्म यानी परमात्मा और जीव में कोई अंतर नहीं है । पर माया के कारण जीव अपने को ब्रह्म से अलग मानता है । जीव अपने को 'मैं' और ब्रह्म को 'तू' मानता है । पर जब वह साधना करता है, माया बीच से तिरोहित हो

जाती है, जीव ब्रह्म की अनुभूति देता है । ब्रह्ममय हो जाता है । अपने को मिटा देता है ।

गुटबंदी दर्शन में 'मैं' अपने को प्रतिष्ठित करना चाहता है । 'तू' को मिटा देना चाहता है । गुटबंदी में प्रत्येक गुट दूसरे को अच्छी स्थिति में कैसे पहुँचेगा, उसके लिए प्रयत्न करता है । वह दूसरे को मिटाना चाहता है । ब्रह्म उपलब्धि और गुटबंदी में लेखक इस प्रकार साम्य देखता है । पहले में व्यक्ति अपने को मिटाना चाहता है । दूसरे में व्यक्ति दूसरे को मिटाना चाहता है । पहले में आत्मिक शांति मिलती है । दूसरे में भौतिक सुख मिलता है । पहले के लिए मौन साधना सहायक है । दूसरे के लिए बाहुबल , हिंसा, छल, धूर्तता आदि सहायक हैं । पहले में श्रद्धा -भक्ति, आत्मनिवेदन का भाव रहता है । दूसरे में स्पार्द्धा, हिंसा, अहंकार, स्वार्थ और सत्ता लोलुपता आदि तत्व रहते हैं ।

लेखक व्यंग्य द्वारा यहाँ वास्तव में गुटबंदी की भयानकता को प्रतिष्ठित करना चाहता है, जिसके द्वारा समाज में सारी मानवीय मूल्यहीनता पनपती है ।

7. गयादीन गाँव के महाजन जरूर थे । पर महाजन न थे । जिनके किसी ओर निकलने पर पंथ बन जाता है । वह उस जत्थे के महाजन थे जो अनजानी राह पर पहले किराए के जन भेजते हैं और देख लेते हैं कि उस पर पगडंडी बन गई है और उसके धँसने का खतरा नहीं है, तब वे महाजन की तरह छड़ी टेक-टेककर धीरे-धीरे निकल जाते हैं ।

प्रसंग :

गयादीन व्यवहारकुशल और अवसरवादी व्यक्ति हैं । उनके पास मास्टर खन्ना के नेतृत्व में कुछ अध्यापक आकर उन्हें कॉलेज के उपाध्यक्ष होने के नाते प्रबंध समिति की एक बैठक बुलाकर मैनेजर और प्रिंसिपल के अनाचार का पर्दाफाश करने का अनुरोध करते हैं । यह सुनकर गयादीन आनाकानी करने लगे । इस पर लेखक गयादीन के चरित्र पर व्यंग्य कर कहते हैं -

व्याख्या : महाजन शब्द के दो अर्थ हैं -पहला अर्थ है ऋण का लेन-देन करने वाला सूदखोर महाजन, दूसरा अर्थ है महान व्यक्ति यानी महापुरुष, जिनका पदांक समाज अनुसरण करता है ।

गयादीन उन महान व्यक्तियों में नहीं थे जिनके मार्गदर्शन से समाज को फायदा मिलता है और जो सत्य का पक्ष लेते हैं, किसीसे नहीं डरते ।

गयादीन दूसरे प्रकार के सूदखोर महाजन थे, जो अनजानी राह पर कदम नहीं रखते थे । वे अपने को पहले सुरक्षित रखते थे । यदि कुछ करने को चाहते हैं, तो पहले दूसरों को प्रेरित करते हैं ।

जब देखते हैं कि उसमें कोई खतरा नहीं है, तब वे जाने को तैयार होते हैं । वे पहले कोई खतरे का काम नहीं करते । जब उनको विश्वास हो जाता है कि इस काम में कोई खतरा नहीं है, तब वे बड़ी सावधानी से उसमें हाथ देते हैं । लेखक व्यंग्य करते हैं कि अच्छी तरह बन गए आपदारिहत मार्ग पर भी गयादीन महाजन की तरह छड़ी टेक-टेककर धीरे-धीरे चलते हैं । ताकि उनके पैर फिसल न जाए । अर्थात् उनको उसी काम में कोई खतरा मोल लेना न पड़े, यह विश्वास हो जाने के बाद खुद नेता होना का दिखावा करके कोई काम बड़ी मुश्किल से हाथ में लेते हैं । यहाँ वैद्यजी के डर से वे अध्यापकों की सहायता करने का वचन नहीं देते।

8. नैतिकता, समझ लो कि यही चौकी है । एक कोने में पड़ी है । सभा सोसाइटी के वक्त इस पर चादर बिछा दी जाती है । तब बड़ी बढ़िया दिखती है । इस पर चढ़कर लेक्चर फटकार दिया जाता है । यही उनके लिए है । (अनुच्छेद -12)

संदर्भ :

छगांमल कॉलेज के कुछ अध्यापक कॉलेज के अध्यापकण गयादीन को समझाते हैं कि जनता का रुपया वैद्यजी और प्रिंसिपल द्वारा बरबाद न होना चाहिए । मालवीय उनमें नैतिकता न होने का आरोप लगाते हैं ।

व्याख्या : नैतिकता का नाम सुनते ही गयादीन डर जाते हैं और मालवीय मास्टर साहब से इसका नाम न लेने का सुझाव देते हैं क्योंकि यह सुनने से चालान हो जाने का डर है ।

कमरे के एक कोने में पड़ी टूटी-फूटी एक चौकी की ओर इशारा करके गयादीन समझाते हैं -

कमरे में पड़ी टूटी कुर्सी की तरह नैतिकता है । जब कभी सभा-सोसाइटी में नेता को भाषण देने की आवश्यकता पड़ती है, तब वे इस कुर्सी को ले जाते हैं । इस पर सुन्दर चादर बिछा देते हैं । तब कुर्सी बढ़िया दिखती है । नेता उस पर बैठकर नैतिकता, मूल्यबोध आदि पर सारगर्भक भाषण देते हैं । भाषण खतम होने के बाद कुर्सी को पूर्ववत् एक कोने में रख दिया जाता है । उसका फिर व्यवहार सामान्य रूप से नहीं किया जाता । उसी प्रकार नैतिकता भी आज अव्यावहारिक हो गई हैं । केवल भाषण देते समय उसका उपयोग किया जाता है । नीति, नैतिकता और आदर्श केवल भाषण में हैं दैनंदिन जीवन में इनका उपयोग कोई नहीं करता । समाज में अन्याय, अत्याचार और गुंडागर्दी चलती है । यही यथार्थ है । अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए लोग ये सब करते हैं । लोगों की कथा और करनी में अंतर आ गया है । जो सत्य और नैतिकता का दामन नहीं छोड़ना चाहेगा, यह सामज उसका अस्तित्व मिटा देगा । इसलिए अपने को पहले सुरक्षित रखना परम आवश्यकता है । इस कथन से यह ध्वनित होता है कि डरपोक, स्वार्थी, अवसरवादी गयादीन अन्याय का प्रतिरोध करने में असमर्थ हैं ।

9. हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे लोग कभी -कभी एक बीमारी का शिकार हो जाते हैं । उसका नाम क्राइसिस ऑफ कांशस है । कुछ डाक्टर उसी में क्राइसिस ऑफ फेथ नाम की एक दूसरी बीमारी भी बारीकी से ढूंढ निकालते हैं । यह बीमारी पढ़े-लिखे लोगों में आमतौर से उन्हीं को सताती है जो अपने को बुद्धिजीवी कहते हैं और जो वास्तव में बुद्धि के सहारे नहीं, बल्कि आहार-निद्रा, भय-मैथुन के सहारे जीवित रहते हैं । (अनुच्छेद -18)

संदर्भ –रंगनाथ एम.ए. पास करके शिवपालगंज आ गया । वह रिसर्च करता है । गाँव के अन्य लोगों की तुलना में वह विद्वान, बुद्धिजीवी है । गाँव में जो अन्याय हो रहा है उसका विरोध करने को चाहने पर भी वैद्यजी के खिलाफ खड़े होने की ताकत उसमें नहीं है । ऐसे पढ़े-लिखे लोगों की मानसिकता पर लेखक व्यंग्य करते हैं -

व्याख्या : लेखक उच्च शिक्षित वर्ग पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि भारत के ऐसे शिक्षित वर्ग कभी -कभी एक बीमारी के शिकार बन जाते हैं । उस बीमारी का नाम है क्राइसिस ऑफ कांशस यानी अन्त:करण का संकट । कुछ डाक्टर उसे क्राइसिस ऑफ फेथ यानी विश्वास का संकट कहते हैं । उससे पुराने विश्वासों पर उनकी आस्था हिल जाती है । समाज की विसंगतियाँ और विडम्बनाएँ देखकर उनका अन्त:करण क्षुब्ध हो उठता है । ये रोगी बुद्धिजीवी कहलाते हैं । बुद्धि के सहारे अपनी आजीविका चलाते हैं । ये व्याख्यान देते हैं, बहस करते हैं । बुद्धि के बल पर कुछ कमा लेते हैं । वास्तव में कोई केवल बुद्धि के सहारे जी नहीं सकता । जीने के लिए आहार-निद्रा, भय-मैथुन की आवश्यकता भी पड़ती है । लेखक बुद्धिजीवियों पर व्यंग्य करके कहते हैं कि यद्यपि वे दावा करते हैं कि वे शारीरिक श्रम न करके केवल बुद्धि का इस्तेमाल करके जीते हैं पर वास्तव में जीने के लिए सामान्य प्राणी के लिए जो-जो चीजें आवश्यक हैं बुद्धिजीवी के लिए वे भी आवश्यक हैं । वे सामान्य प्राणी की तरह खाते हैं, सोते हैं, भय भी करते हैं, प्रेम करते हैं । संतानोत्पति भी करते हैं ।

10. प्रत्येक महापुरुष के इर्द-गिर्द 'पालक बालकों' का मेला लगा हुआ है । पुरुष जब महापुरुष बन जाता है तो वह अपनी इज्जत अपने 'पालक बालकों' को सौंप देता है । 'पालक बालक' उस इज्जत को फींचना शुरू कर देते हैं । कुछ दिन बाद वह हजार धाराओं में फूटकर बहने लगती है । वह लोकसभा और विधान सभा की बहसों को सराबोर करती है, अखबार और रेडियो उसके छीटों से गंधाने लगते हैं, पूरा लोकतंत्र उसमें डूबने-उतरने लगता है, अंत में वह बेहयाई के महासागर में समा जाता है ।

संदर्भ :

बद्री पहलवान अपने अखाड़े को चला रहे एक गुंडे की जमानत लेने जानेवाले हैं । वे इन्हें पालक बालक मानते हैं और इनकी सरंक्षण देना राजनीति की दृष्टि से जरूरी समझते हैं । यह सुनकर रंगनाथ पालक बालकों की योग्यताओं और आवश्यकताओं पर विचार करते हैं ।

व्याख्या : राजनीति करने वाले और चुनाव में लड़कर जीतने वाले नेता अपने को महापुरुष मानते हैं । वे चुनाव में जीतने के लिए गुंडों की सहायता लेते हैं । ये गुंडे धन द्वारा खरीदे जाते हैं और जरूरत पड़ने पर अपने सरंक्षक के लिए मर मिटने को तैयार रहते हैं । नेता प्रभावी होने के साथ इन अनुयायी गुंडों की संख्या बढ़ती है । इनको बद्री पहलवान पालक बालक कहते हैं । पालक बालक जब निश्चित हो जाते हैं कि उनके नेता का वरद हस्त उन पर है तब वे बाहुबल पर अन्याय करते जाते हैं । कुछ कुकर्म वे नेता के इशारे पर कुछ अपनी धाक जमाने के लिए करते हैं । नेता की प्रतिष्ठा मान-सम्मान इन गुंडों के हाथों धूल में मिल जाती है । नेता की इज्जत तार-तार हो जाती है । नेता की बदनामी चारों ओर फैल जाती है । इस गुंडागर्दी और अन्याय-अत्याचार पर लोक-सभा और विधान सभा में गरमा-गरमी चर्चा होती है । विरोधी गुट अखबार में इसको बढ़ा-चढ़ा कर छापते हैं । रेडियो पर भी नेता की निंदा की जाती है । लगता है कि नेता लोगों की नजर में गिर गए और आगामी चुनाव में लोग उन्हें खारिज कर देंगे । लगता है इन लोभी नेताओं के कारण गणतंत्र खतरे में पड़ जाएगा । वास्तव में ऐसा कुछ नहीं होता । नेता बेहया होते हैं । उनपर बेइज्जती या बदनामी का कोई असर नहीं होता । उनको शर्म नहीं आती । वे बदनामी की परवाह नहीं करते, उनकी बेहयाई मानो महासागर जैसे व्यापक है । सारी बदनामी उसमें समा जाती है । नेता सीना तानकर वही काम करते हैं । फिर पालक बालक उन्हें चुनाव में बहुमत से जीत लेते हैं ।

11. प्रिंसिपल ने निष्कर्ष निकाला कि आदर्श का महत्व प्रतीक के रूप में है, तथ्य के रूप में नहीं और उसी के उलटकर उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाल लिया कि अपने पंचशील पर टिके रहकर उनके पिता प्रतीक रूप से भले ही आदर्श व्यक्ति हों, पर तथ्य की दृष्टि से वे निहायत चोंचलेबाज इन्सान हैं .... ।

संदर्भ :

प्रिंसिपल के पिता पुराने ख्याल के आदमी थे । वे पुरानी परंपरा को माननेवालों में थे । खुले मैदान में शौच करने जाना उनका अभ्यास था । यह कार्य कानून के खिलाफ होने पर भी वे कानून की

परवाह किए बिना अपने आदर्श पर डटे रहना चाहते हैं । इस पर विचार करके प्रिंसिपल आदर्श की व्याख्या करते हैं ।

व्याख्या : प्रिंसिपल ने पिता की हठधर्मिता देखी थी कि कानून की दृष्टि से अपराध होने पर भी वे खुले में शौच जाने को आदर्श मानते हैं । इस आदर्श का अनुगमन करके कष्ट सहने, जेल जाने को वे तैयार हैं । उनके पिता को लगता है इस आदर्श पर अडिग रहने से समाज में उनका आदर बढ़ेगा और लोग उनका अनुसरण करेंगे । प्रिंसिपल कहते हैं कि प्रतीक रूप में यह आदर्शवाद हो सकता है लेकिन तथ्य के रूप में यह चोंचलापन है । प्रतीक के रूप में पं. जवाहरलाल नेहरू का पंचशील नीति आदर्श थी, पर तथ्य की दृष्टि से इसी के कारण भारत को चीन से हारना पड़ा । प्रतीक के रूप में दाण्डी यात्रा आदर्श थी, क्योंकि इससे देश प्रेम की प्रेरणा मिली, अन्याय से लड़ने का साहस बढ़ा, पर तथ्य की दृष्टि यह महत्त्वपूर्ण नहीं थी, क्योंकि भारत की गरीबी केवल नमक बनाने से दूर नहीं हो सकती थी । खुले मैदान में शौच जाने से फायदा नहीं होता । यह कोई विशेष महत्त्व की बात नहीं है । यह प्रतीक के रूप में आदर्शवाद इसलिए है कि लोग समझेंगे कि प्रिंसिपल के पिता पुराना आदर्श छोड़ने को तैयार नहीं हैं, चाहे उसके लिए उन्हें कितनी असुविधा क्यों न हो ?

12. पिछले महीने वह जिस जिन्दगी के आसपास मंडराता रहा था, जिसके भीतर घुसकर भी वह बाहरी का बाहरी ही रहा था, वह एक लानत की तरह उसके सामने आकर खड़ी हो गई । उसकी आत्मा के तारों पर बशर्ते की आत्मा की शक्ल सारंगी जैसी होती हो - पलायन संगीत गूंजने लगा ।

(परिच्छेद -35)

संदर्भ :

रंगनाथ पिछले छह महीनों से शिवपालगंज में आकर उसके स्वरूप को बहुत नजदीक से देख रहा है । वह अपना स्वास्थ्य सुधारने और शोध-कार्य पूरा करने के लिए मामा वैद्यजी के घर आया था । यहाँ वैद्यजी के कारनामों और सत्ता लोलुपता, उनके दरबारियों, उनके इशारे पर चलने वाले समर्थकों के दूसरे लोगों, उनकी मानसिकता घटनावाली घटनाओं की विसंगतियों को देखकर क्षुब्ध हो उठता है । लेखक उसकी मन:स्थिति पर व्यंग्य करते हैं -

व्याख्या : रंगनाथ ने शिवपालगंज के जीवन और घटनाओं को देखा । उसने उसमें जितनी विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ थीं सभी को निकट से देखा तो गाँव को स्वस्थ स्वरूप देने का विचार करने लगा । वह समस्याओं की गहराई में जाता है, पर समस्याओं की जड़ मामाजी के विरुद्ध बुलंद करने की

ताकत उसमें नहीं है जिनके बल पर वह भ्रष्ट समाज की कायाकल्प कर सके । वह असहाय हो जाता है । बाहर का आदमी बनकर रह जाता है । वह केवल आत्म ग्लानि से छटपटाता है । उसकी आत्मा उसे धिक्कार करती रही । उसकी आत्मा के तार झंकृत होकर उनमें से विद्रोह का स्वर नहीं निकलता, अपितु उनमें से पलायन संगीत गूंजित होता है । वह गाँव की परिस्थितियों से घबराकर शहर भाग जाने की तैयारी करता है ।

13. तुम मंझले हैसियत के मनुष्य हो और मनुष्यता के कीचड़ में फँस गए हो । तुम्हारे चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ है ।

कीचड़ की चापलूसी मत करो । इस मुगालत में न रहो कि कीचड़ से कमल पैदा होता है । कीचड़ में कीचड़ ही पनपता है । वही फैलता है, वहीं उछलता है । (पलायन संगीत)

संदर्भ :

वैद्यजी ने तमंचे और अपनी कूटबुद्धि के बल पर मास्टर खन्ना को कॉलेज से निकाल दिया था । इस अन्याय के खिलाफ रंगनाथ का मन विद्रोह कर उठता है, पर उसे बाहर प्रकट करने का साहस उसमें नहीं है । वह रातभर सोचता रहा कि क्या करे । प्रात:काल होते ही उसने देखा कि स्वाभाविक रूप से लोग अपने -अपने काम , अपनी -अपनी धांधली में लग गए हैं । उसने गाँव छोड़ देने का निर्णय ले लिया । लेखक व्यंग्य द्वारा रंगनाथ की अन्तर्द्वन्द्व का वर्णन करते हैं ।

व्याख्या : रंगनाथ अपने आप को मध्यमवर्ग का आदमी समझता है । समाज सुधार करने के लिए उसमें महापुरुष जैसे व्यक्तित्व, दृढ़ता, साहस, दूरदर्शिता, निर्भीकता नहीं है । शिवपालगंज में मनुष्यता का नामोनिशान भी नहीं है । वह यहाँ की पशुता, भ्रष्टाचार और मूल्यहीनता के कीचड़ में फंस गया है । जहाँ तक नजर जाती है, यहाँ केवल कीचड़ ही कीचड़ नजर आता है । कीचड़ से उबरने का जितना प्रयास किया जाएगा, उतना कीचड़ में फंस जाना होगा, कीचड़ से समझौता करके यहाँ रहना भी नामुमकीन है । यहाँ कीचड़ से कमल पैदा होने की उम्मीद रखना भ्रम होगा । यहाँ कीचड़ से बदबू आती है । कीचड़ यहाँ अधिक फैलेगा, अधिक उछलेगा । यहाँ संस्कार नहीं किया जा सकता । यहाँ लोग नरक की जिन्दगी जीते हैं । उसीमें खुश रहते हैं । चेतना किसी में नहीं आई । यहाँ कोई भी सत् को स्वीकार नहीं करेगा । यहाँ से निराश होकर भागना पड़ेगा, इसके अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है ।

***

2.17 अभ्यास प्रश्न :

1. उपन्यास कला की दृष्टि से 'रागदरवारी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए ।
2. 'रागदरवारी' में पात्रों की योजना कि उद्देश्य से की गई है ? क्या इस दृष्टि से यह उपन्यास सफल है ?
3. 'वैद्यजी आजकल के कपटी एवं धूर्त समाजसेवियों के प्रतिनिधि हैं ।' इस कतन के आलोक में वहद्यजी का चरित्र पर प्रकाश डालिए ।
4. जी-हजूरी करने वाले प्रिंसिपल का चरित्र-चत्रिर कीजिए ।
5. बद्री पहलवान की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
6. 'रुप्पन बाबू आजकल के छात्र-नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं ।इस कथन के आलोक में रुप्प बाबू के चरित्र की समीक्षा कीजिए ।
7. सनीचर का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
8. 'रंगनाथ एक पलायनवादी बुद्धिजीवी है - समीक्षा कीजिए ।
9. आज के संदर्भ में लंगड़ एक पराजित सैनिक है - इस कतन की समीक्षा कीजिए ।
10. आज के संदर्भ में क्या गयादीन एक यथार्थवादी पार्ा हैं ? - अपने मत की पुष्टि कीजिए ।
11. 'रागदरवारी' में लेखक ने समाज में बढ़ती हुई मूल्यहीनता पर चिंता प्रकट की है - विवेचन कीजिए ।
12. 'रागदरवारी' समाकालीन जिन्दगी का दस्तावेज है ।इस कथन पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।
13. 'रागदरवारी' स्वातंछत्र्योत्तर भारत के गाँवों की सच्ची तस्वीर पेश करता है - इस कथन पर प्रकाश डालिए ।
14. स्वातंत्र्योत्तर भारत में कार्यपालिक में भ्रष्टाचार भरा है । - 'रागदरवारी' के आधार पर इस पर प्रकाा डालिए ।
15. 'रागदरवारी' के आलोक में प्रमाणित कीजिए कि देश में सारे भ्रष्टाचार की जड़ में अफसरों का आचरण ही है ।

UNIT-III

हिंदी कहानी संग्रह - सं. भीष्म साहनी

इकाई -3 हिंदी कहानी संग्रह

3.1 कोसी का घटवार

3.1.1 लेखक परिचय

3.1.2 कथासार

3.1.3 चरित्र-चित्रण

3.1.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.2 बादलों के घेरे

3.2.1 लेखक परिचय

3.2.2 कथासार

3.2.3 चरित्र-चित्रण

3.2.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.3 वापसी

3.3.1 लेखक परिचय

3.3.2 कथासार

3.3.3 चरित्र-चित्रण

3.3.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.4 मलवे का मालीक

3.4.1 लेखक परिचय

3.4.2 कथासार

3.4.3 चरित्र-चित्रण

3.4.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.5 परिंदे

3.5.1 लेखक परिचय

3.5.2 कथासार

3.5.3 चरित्र-चित्रण

3.5.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.6 जहाँ लक्ष्मी कैद है

3.6.1 लेखक परिचय

3.6.2 कथासार

3.6.3 चरित्र-चित्रण

3.6.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

3.7 खोयी हुई दिशाएँ

3.7.1 लेखक परिचय

3.7.2 कथासार

3.7.3 चरित्र-चित्रण

3.7.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा

UNIT - III

कोसी का घटवार

3.1.1 लेखक परिचय

हिमांशु जोशी का जन्म 4 मई 1935 को उत्तराखंड में हुआ था । वे हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक तथा विद्वान हैं । उनके तत्वावधान में लगभग 35 विद्यार्थी शोध करके डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं । कई विश्वविद्यालयों में उनकी रचनाओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है । वे लगभग 29 वर्ष तक 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' पत्रिका के वरिष्ठ पत्रकार रहे तथा कोलकाता से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वागर्थ' के संपादक रहे । उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता ,बाल साहित्य, रेखाचित्र आदि सभी विधाओं पर लेखनी चलाई । उनके लगभग 18 कहानी संग्रह निकल चुके हैं ।

कृतियाँ -

उपन्यास - अरण्य, महानगर, छाया मत छूना, सु-राज, कगार की आग, समय साक्षी है, तुम्हारे लिए ।

कहानी संग्रह - अन्तात: तथा अन्य कहानियाँ, मनुष्य चिह्न तथा अन्य कहानियाँ, जलते हुए डैना तथा अन्य कहानियाँ, तपस्या तथा अन्य कहानियाँ, इस बार फिर बर्फ गिरी तो आदि ।

सम्मान :

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, हिन्दी अकादेमी, दिल्ली ; राजभाषा विभाग बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत ; हिन्दी सहित्य सम्मेलन, प्रयाग का सम्मान ; साहित्य के लिए वाचस्पति' उपाधि प्राप्त ; साहित्य के लिए नार्वे का अन्तर्राष्ट्रीय हेनरिक सम्मान ।

वे संप्रति नार्वे से प्रकाशित पत्रिका 'शांतिदूत' के विशेष सलाहकार हैं तथा स्वतंत्र लेखन में लगे हैं ।

3.1.2 कथासार :

'कोसी का घटवार' कहानी के गुसाईं ने जब हवलदार धरमसिंह को अपनी वर्दी में देखा था तब उसके मन में फौज में जाने की इच्छा उत्पन्न हो गई थी । बाद में वह फौज में भर्ती भी हो गया । जब वह एनुअल-लीव पर गाँव में आया, तब गाँव में उसका बड़ा सम्मान हुआ । बच्चे बूढ़े सभी बड़े प्रेम से उससे मिले । वह भी चना-गुड़, बीड़ी और तम्बाखू से सभी का दिल से स्वागत करने लगा था ।

उस समय गुसाईं पास के गाँव की लछमा से मिलना चाहता था । पहले दिन वह नहीं आ सकी थी । दूसरे दिन नाले पर से अपने गाँव से भैंस खोजने के बहाने गुसाईं से मिलने आई पर उस दिन गुसाईं उसे नहीं मिला । एक दिन लछमा को पात-पतेल के लिए जंगल जाते देख कर गुसाईं गाँव के छोकरों से मुक्त होने के लिए काँकड़े का शिकार करने का बहाना बनाकर जंगल में चला गया । वहीं दोनों की मुलाकात हुई । काफल के पेड़ के नीचे दोनों ने बहुत देर तक बातें कीं । गुसाईं के घुटने पर सिर रखकर लछमा लेट गई थी तो गुसाईं ने उसके लिए मखमल की कुर्ती ला देने का वचन दे दिया था ।

गुसाईं को पता था कि लछमा का बाप लछमा की शादी गुसाईं से नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसके आगे-पीछे भाई-बहन नहीं थे, माँ-बाप मर गये थे और वह परदेश में बन्दूक की नोंक पर जान रखने की नौकरी करता था । गुसाईं शादी के बारे में लछमा के मन की बात जानना चाहता था । छुट्टियों की समाप्ति पर घर से विदा होने के एक दिन पहले मकान से निकालकर वह फिर लछमा से मिला तो लछमा ने गंगनाथ की कसम खाकर और आँखों में आँसू भरकर कहा -''जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगी ।''

गुसाईं नौकरी पर चला गया और उसी साल अगहन को अपनी यूनिट के सिपाही किसन सिंह से उसने सुना कि उसके गाँव के रामसिंह ने जिद की, इसलिए उसे छुट्टियाँ बढ़ानी पड़ीं । रामसिंह की शादी गुसाईं के गाँव के पासवाले गाँव की लछमा से हो गई । किसन सिंह ने भी लछमा की बड़ी तारीफ की ।

यह सुन गुसाईं विचलित हो गया । उस दिन रम-डे होने के कारण गुसाईं ने आधा पैग लेने के बजाय दो पैग ले लिए । दूसरे दिन हवलदार मेजर उसे बुखार चढ़ा हुआ मान कर और मलेरिया प्रिकॉशन न लेने के आरोप में पेशी करवाई थी ।

अब गुसाईं का मन गाँव में जाने से उचट गया । लगातार पंद्रह साल वह सेवा-निवृत्त होने के बाद गाँव में आया है । गृहस्थी में प्रवेश करने का विचार उसने छोड़ दिया था । अब गाँव में आया तो बिलकुल अकेला ही था । सूनापन और अकेलापन अब उसके जीवन के साथी थे । वह कोसी के किनारे नितांत एकांत में एक घट (पनपक्की) चलाता है और लोगों का गेहूँ पिसाने का काम करके जीवन के शेष दिन काटता है । वर्षों से उसके मन में यही चिंता रही कि जब उसकी भेंट लछमा से हो

जाएगी तब वह अवश्य उससे गंगनाथ का जागर लगाकर प्रायश्चित्त करने की बात कहेगा, क्योंकि देवी-देवताओं की झूठी कसमें खाकर उन्हें नाराज करके कोई फल-फूल नहीं सकता । इसलिए प्रायश्चित्त कर देने से गंगनाथ का कोप और नहीं रहेगा ।

गुसाईं घट में से निकलकर देखता है कि एक आदमी सिर पर पिसान रखे उसके घट की ओर आ रहा है । घट के भीतर पिसाने के लिए आए थैले अधिक होने के कारण उस आदमी का नम्बर जल्दी आने की कोई संभावना न होने से गुसाईं आवाज देकर उस आदमी को उमेदसिंह के घट में जाने की सलाह देता है । वह आदमी उसका नम्बर पहले डाल देने का अनुरोध करने पर भी जब निराश होता है, तब वह मुड़कर चला जाता है ।

उस आदमी को लौटाने के बाद गुसाईं सूखी नदी के किनारे मिहल की छांव में आकर बैठ जाता है और चिलम सुलगाता है । उसे अपना अकेलापन कचोटता है । वह सोचता है उस आदमी को आने से मना कर देना उचित नहीं था । वह आकर पिसाने के थैले को देखकर निराश होकर अपने आप लौट जाता । पर थोड़ी देर उससे बातचीत करने का तो मौका मिल जाता । उसे लगता है कि अकेलापन जिन्दगी भर साथ देने के लिए उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है । इस एकांत में उसके साथ कोई होता तो वह उसे अपनी राम-कहानी, अपनी भोगी हुई जिन्दगी की बात सुनाता । अचानक उसका ध्यान सामने की पहाड़ी की ओर गया, जहाँ पगडंडी में अपने सिर पर बोझ लादकर एक औरत घट की ओर आ रही है । बारबार लोगों को आने से मना करते-करते गुसाईं तंग आ चुका था । फिर किसी को मना करने को उसका मन नहीं हुआ । औरत भी पगडंडी छोड़कर नदी के रास्ते पर आ गई ।

इतने में चक्की की बदलती आवाज सुनकर उसे लगा कि खप्पर का अनाज खतम हो गया है । इसलिए वह घट के अंदर चला जाता है । खप्पर में कम गेहूँ वाले थैले को उलट देता है । पिसे हुए आटे को थैले में भरने लगता है । तभी वह स्त्री अपने घर पर रात की रोटी के लिए आटा न होने की बात बताकर पूछती है कि उसकी बारी कब आएगी ? यह आवाज गुसाईं को परिचित लगी । उसकी आशंका हुई कि यह आवाज लछमा की होगी । पर शंका को दूर करने को वह बाहर आने का साहस बटोर नहीं पाता, केवल पिसाने के थैलों को इधर-उधर करने लगता है । उसके दिल की धड़कन बढ़ जाती है । इधर लछमा आटे से पुते हुए गुसाईं को पहचान नहीं पाती है । वह लछमा सिर पर बोझ रखे हुए अपना प्रश्न फिर दुबारा दुहराती है क्योंकि वह चाहती है कि जवाब में अगर वह नहीं सुनेगी तो उलटे पांव किसी दूसरी चक्की में चली जाएगी । गुसाईं जब दबे-दबे स्वर में होने की संभावना के बारे बताता है तो लछमा कोई अनुनय-विनय किए बिना दूसरी चक्की पर जाने के इरादे से लौट पड़ती है । मुड़ते समय उसे स्त्री की एक झलक देखकर उसकी शंका विश्वास में बदल जाती है कि यह लछमा ही है ।

गुसाईं की मानसिक स्थिति कुछ अजीब-सी हो जाती है । वह उसे वापस बुलाना चाहता है, पर

बुलाने के लिए मुँह से आवाज नहीं निकलती । लछमा दूर चली जा रही थी । अंत में साहस बटोरकर लड़खड़ाती आवाज से वह पुकारता है - लछमा ! गुसाईं की घबराहट की यह आवाज लछमा के कानों तक नहीं पहुँच पाती । वह पूर्ववत् कदम बढ़ाती जाती थी फिर पूरी शक्ति लगाकर गुसाईं पुकारता है - 'लछमा' ! लछमा पीछे मुड़कर देखती है । वह सोचती है कि पिसाने को मना करने वाला आदमी फिर से क्यों बुलाएगा ? फिर लोग इसी नाम से तो उसके मायके में बुलाते हैं । इसलिए यह पुकार उसे अपना भ्रम लगती है । वह पूछती है कि वह आदमी क्या उसे बुला रहा है ?

गुसाईं गेहूँ पिसाने का आश्वासन देकर उसे वापस बुला लेता है । पर वह नहीं चाहता कि दोनों का अचानक साक्षात्कार हो जाए । इसलिए वह व्यस्तता का बहाना करके मिहल की छांव में चला जाता है ।

लछमा पिसाने का थैला घट के भीतर रखकर बाहर आकर सुस्ताने के लिए और कोई दूसरी जगह न देखकर उसी मिहल की छांव में आती है और अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कहती है - "तुम्हारे बाल-बच्चे जीते रहें घटवार जी ।" एक अविवाहित आदमी के लिए ऐसा आशीर्वाद कितना अप्रासंगिक है, यह सोचकर गुसाईं को यह विनोद प्रतीत हुआ । लछमा उसकी ओर देखने से पहले गुसाईं लछमा के बाल-बच्चों को आशीर्वाद देकर पूछ लेता है कि वह मायके कब आई ।

इतने में लछमा की दृष्टि गुसाईं पर पड़ती है तो वह उसे पहचान कर आश्चर्य चकित रह जाती है । उसके मुँह से निकल पड़ता है -"तुम ?" लछमा के कंठ से आगे के लिए शब्द फूट नहीं सके । गुसाईं परिस्थिति को सहज -स्वाभाविक बनाने के लिए होंठों पर मुसकान लाने का असफल प्रयत्न करते हुए बता देता है कि मैंने पिछले साल पलटन से लौटकर समय काटने के लिए यह घट लगवाया है । फिर जब गुसाईं लछमा के बाल-बच्चों का कुशल-मंगल पूछता है तब लछमा उत्तर शब्दों में नहीं दे सकती । वह सिर हिलाकर अपनी सम्मति अभिव्यक्त कर देती है । फिर जब गुसाईं पूछता है कि वह अब कितने दिन तक मायके में रहेगी ? तब लछमा के धैर्य का बांध टूट जाता है । उसकी आँखों से आँसू टपक पड़ते हैं । वह सिसकियाँ लेने लगती है । गुसाईं के पास सहानुभूति प्रकट करने के लिए शब्द नहीं थे । गुसाईं लछमा के गले में सुहाग का चिह्न काला चरेऊ न देखकर हतप्रभ रह गया । उसे अपनी व्यावहारिक कुशलता की अज्ञानता के लिए बड़ा खेद हुआ ।

लछमा अपने आँसू पोछकर अपना दुखड़ा रोने लगी । उसने कहा कि जिसका भगवान नहीं होता उसका कोई नहीं होता । पति के देहांत के बाद जेठ-जेठानी के साथ नहीं पटती थी । किसी तरह उनसे पिंड छुड़ाकर बीमार माँ को देखने आई, पर वह भी चल बसी । एक अभागा बेटा है, इसकी परवरिश करने उसे जीना पड़ रहा है, नहीं तो वह आत्महत्या कर लेती । यहाँ काका-काकी को वह फूटी आँखों भी नहीं सुहाती । मौसरी जायदाद पर उनकी आँख है । इसलिए उन्होंने साफ-साफ कह

दिया कि उसे जायदाद से कुछ लेना-देना नहीं है । जंगल की लकड़ी बेचकर और मजदूरी करके वह अपनी गुजर-बसर कर लेगी । लेकिन किसी की आँख का कांटा बनकर नहीं रहेगी ।

गुसाईं के पास केवल सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि के अलावा कहने को कुछ नहीं था । प्रसंग बदलने के लिए लछमा कहती है कि इस साल धूप तेज होती है । गुसाईं लछमा को पेड़ की छांव में आकर बैठने का अनुरोध करके घट के अन्दर जाता है । पहले का पिसना हो गया था । वह लछमा का अनाज खप्पर में डाल देता है । चाय का वक्त होने की सूचना देकर गुसाईं उठ जाता है । वह घट से एक कालिख पुती बटलोई में पानी लाकर चूल्हे पर रखकर लछमा से कहता है कि पानी उबल जाए तो चाय की पत्ती डाल देना । वह पास की दुकान से दूध लाने चला जाता है । वह दूध लेकर आता है तो लछमा के पास एक छह-सात साल के लड़के को देखकर उसे ही उसका बेटा जान जाता है । बेटा माँ से किसी चीज के लिए जिद कर रहा था और माँ उसे झिड़ककर चुप रहने को कह रही थी ।

गुसाईं समझ गया कि बच्चे को भूख लग रही होगी । वह घट में जाकर एक थाली में आटा लाता है । गुल के किनारे बैठकर उसे गूंथने लगता है । वह वहाँ से आते समय और एक दो बर्तन ले आता है । इतने में लछमा चाय बना चुकती है । गुसाईं चाय को तीन वर्तनों में बांटकर स्वयं रोटी सेकने का उपक्रम करता है । तो लछमा खुद रोटी बनाने को आगे बढ़ती है । आटे की लोई लाते समय जब लछमा की कलाई के कड़े आपस में टकरा जाते हैं तो छन्-छन् की जो मधुर ध्वनि निकलती है, उसके सामने गुसाईं को लगता है कि चक्की के पाट पर टकराने वाली काठ की चिड़ियों का स्वर कितना नीरस है ।

गुसाईं आग्रह करके बच्चे को दो रोटियाँ और गुड़ की एक डली दे देता है । बच्चा खाने के लिए माँ की अनुमति के लिए ताकता है तो झुंझलाकर माँ उसे खाने को कहती है । बातचीत के दौरान स्पष्ट हो जाता है कि लछमा के घर में दो दिन से तेल-नमक नहीं है । आज उसे कुछ पैसे मिले हैं और वह आज ही कुछ जरूरी सामान खरीद लेगी । गुसाईं लछमा की सहायता करने के लिए उसे एक नोट देना चाहता है पर लछमा यह दान स्वीकार नहीं करती । लछमा कहती है कि 'गंगनाथ दाहिने रहें तो भले-बुरे दिन निभ जाते हैं । पेट क्या है, घट के खप्पर की तरह जितना डालो, कम हो जाए । अपने -पराए प्रेम से हँस- बोल दें, तो वही बहुत है दिन काटने के लिए ।

गुसाईं तो लछमा की कुछ सहायता कर देना चाहता था । पर वह उससे दूसरी बार रुपये के लिए चिरौरी न करके घट के अंदर जाकर लज्दी-जल्दी लछमा के आटे में अधिक दो-ढाई सेर आटा मिला देता है और बाहर आकर लछमा को गेहूँ पिस जाने की सूचना दे देता है । गुसाईं किसी काम के बहाने लछमा के सामने से हट जाना चाहता है । पर मन में बहुत दिन से रखी हुई बात बोल देना चाहता था । अंत में वह सिसकते हुए इतना ही कहता है-'' कभी चार पैसे जुड़ जाए तो गंगनाथ का जागर लगाकर भूल-चूक की माफी मांग लेना । पूत -परिवार वालों को देवी-देवता के कोप से बचे रहना चाहिए ।''

इतना कहकर गुसाईं तुरंत वह जगह छोड़ कर ऊपर के बांध पर किसी पानी तोड़ने वाले को देखकर उसे मना करने के बहाने चला जाता है । क्योंकि ठंडे दिल से लछमा को विदा करने का साहस जुटा नहीं पा रहा है । लछमा ज्यादा आटा न लेने की हट भी करने की आशंका थी । गुसाईं झगड़ा निपटाकर लौटते समय लछमा को अपने बच्चे के साथ पगडंडी पर चली जाती हुई देखता है । वह पहाड़ी मोड़ तक उसे देखता रहता है । फिर उसके मन में उदासी और जीवन में निस्तब्धता छा जाती है । उनका यह कथन उनके जीवन का निराशा-भाव व्यक्त करता है -''क्या ठिकाना ऐसा मालिक का जिसका घर-द्वार नहीं, बीबी-बच्चे नहीं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं ।''

3.1.3 चरित्र-चित्रण :

गुसाईं – 'कोसी का घटवार' कहानी का एक मात्र सक्रिय पात्र गुसाईं है । उसके माता-पिता का देहांत हो गया है । वह संसार में बिलकुल अकेला पड़ गया था । सौभाग्य से उसे अपनी इच्छानुसार सेना में नौकरी मिल जाती है । वह अपनी शादी करके अपनी जिन्दगी को फिर से संवारना चाहता है । प्रेयसी भी गंगनाथ की कसम खाकर उससे शादी करने का वचन दे देती है, पर बाद में उसकी शादी दूसरी जगह हो जाने से गुसाईं को बड़ा सदमा पहुँचता है । वह इतना टूट जाता है कि जीवन में शादी न करने का निर्णय ले लेता है । अकेलेपन को साथी बनाकर वह शेष जीवन ढोता रहता है ।

उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं ।

फौजी वर्दी पर मोह :

गुसाईं को बचपन से फौज की वर्दी पर मोह हो गया था । हवलदार धरमसिंह को फौजी वर्दी में देखकर उस में फौज में भर्ती होने की ललक उत्पन्न हो गई थी । संयोग से उसे फौज में भी नौकरी मिल जाती है ।

मिलनसार :

गुसाईं बहुत मिलनसार है । वह एनुअललीव पर गाँव में आता है तब वह खुले दिल से बच्चे-बूढ़े सभी से मिलता है । पूरे गाँव में उसे सम्मान मिलता है । वह बच्चों को चना-गुड़ देकर और बूढ़ों को तम्बाकू,बीड़ी देकर अपना बना लेता है । संगी-साथी भी उसका साथ नहीं छोड़ते । उसकी प्रेयसी लछमा भी उससे मिलने उसके गाँव में आ जाती है । जब वह गुसाईं से मिल नहीं सकती, तब गुसाईं जंगल में जाकर उससे मिलता है ।

सच्चा प्रेमिक :

लछमा गुसाईं की प्रेयसी है । प्रेमी से मिलने भैंस खोजने के बहाने लछमा गुसाईं के गाँव में आ जाती है, पर उससे मुलाकात नहीं हो पाती । यह जानकर गुसाईं जंगल में कांकड़ का शिकार करने का बहाना बनाकर संगी-साथियों के चंगुल से छुटकारा पाकर जंगल में चला जाता है । वहीं प्रेयसी लछमा से उसकी भेंट होती है । वह लछमा को मलमल की कुर्ती ला देने का वचन देता है । वह जानता है कि लछमा का बाप फौज में काम करने वाले एक अनाथ के साथ अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता है । इसलिए लछमा गंगनाथ की सौगंध खाकर शादी करने का वचन दे देती है । वह भी लछमा से शादी करने का विश्वास लेकर नौकरी पर चला जाता है । पर लछमा की शादी दूसरी जगह हो जाती है तब वह प्रेयसी के व्यक्तिगत दांपत्य-जीवन में दखल नहीं देता । उससे नाता जोड़ने का प्रयास नहीं करता । वरन अपने प्रेम को अमर बानाने के लिए खुद अविवाहित रह जाता है ।

धर्म विश्वासी :

गुसाईं को धर्म पर आस्था है । इसलिए प्रेयसी लछमा जब गंगनाथ की शपथ लेकर उससे शादी करने का वचन दे देती है, तो गुसाईं को उस पर पूरा भरोसा हो जाता है । लेकिन बाद में शपथ तोड़कर लछमा दूसरी जगह शादी कर लेती है तो इस घटना से गुसाईं के दिल को चोट लगती है और वह खुद कभी भी शादी न करने का निर्णय ले लेता है । वह सोचता है जब कभी लछमा से मुलाकात होगी तो उससे बता देगा कि गंगनाथ के कोप से बचने के लिए वह उनका जागर लगाकर माफी मांग ले ताकि परिवार पर अनिष्ट का साया हट जाए । अंत में पंद्रह वर्ष बाद जब विधवा लछमा से उसकी मुलाकात होती है, तो साहस बटोर कर वह वही बात कह देता है -''कभी चार पैसे जुड़ जाए, तो गंगनाथ का जागर लगाकर भूल-चूक की माफी मांग लेना । पूत-परिवार को देवी-देवता के कोप से बचे रहना चाहिए ।

अकेलेपन को झेलनेवाला :

प्रेयसी लछमा की दूसरी जगह शादी हो जाने से गुसाईं को इतना आघात पहुँचता है कि वह जीवन में अविवाहित रह जाने का निर्णय लेता है । वह अकेलेपन को झेलने को तैयार हो जाता है और पंद्रह साल तक फौज में नौकरी करता रहा, ट्रांसफर कराता रहा । एक बार भी गाँव नहीं आया । जब सेवा-निवृत्त हो गया तब गाँव में आकर कोसी के तट पर एकांत स्थान पर घट लगाकर शेष जीवन बिताने लगता है । दु:ख भूलने का प्रयास करते रहने पर भी अकेलापन उसका साथ नहीं छोड़ता । उसके घट में

पिसाने का थैला लेकर आने वाले एक आदमी को देर होने की सूचना देकर उमेदसिंह के घट पर जाने की सलाह देता है । तब वह आदमी लौट जाता है । गुसाईं सूखी नदी के किनारे मिहल की छांह में बैठकर चिलम सुलगाता है, उसे अकेलापन इतना त्रस्त करके रखता है कि वह सोचता है -मुझे उस आदमी को मना नहीं करना चाहिए था । कम से कम उसके साथ थोड़ी देर बातचीत करके, अपना हाल सुनाकर जी हलका तो किया जा सकता था ।

उसकी यह सोच उसके अकेलेपन की पीड़ा को अभिव्यक्त कर देती है । जिसे अपना कह सके, ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं, पालतू कुत्ते -बिल्ली का स्वर भी नहीं । क्या ठिकाना ऐसे मालिक का, जिसका घर-द्वार नहीं ... बीबी-बच्चे नहीं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं ।

निर्णय में अडिग रहनेवाला :

लछमा ने गंगनाथ की कसम खाकर गुसाईं के सामने वादा किया था कि जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगी । पर वह दूसरी जगह शादी कर लेती है । गुसाईं को जब यह मालूम हो जाता है तब उसके सारे अरमान ठंडे पड़ जाते हैं । जिन्दगी रेगिस्तान बन जाती है । गुसाईं निर्णय ले लेता है कि वह कभी शादी नहीं करेगा । वह पंद्रह वर्ष तक अपने गाँव नहीं जाता । सेवा-निवृत्त होने के बाद गाँव लौटता है तो वक्त काटने के लिए एकांत में एक घट लगवा लेता है ।

प्रेयसी के प्रति शालीन व्यवहार करने वाला :

गुसाईं की प्रेयसी जब दूसरे की पत्नी बन जाती है, तब गुसाईं उसके प्रति रहे मोह को मन से निकाल देता है । उसके हरे-भरे घर में वह दखल नहीं देता । वह घट में जब एकांत में लछमा को देखता है, तब वह उससे मिलने से बचने की कोशिश करता है । जीते रहें तेरे बाल-बच्चे कह कर लछमा की संतानों को आशीर्वाद देता है । उसे बिदा करते समय अतीत की स्मृति कहीं उज्जीवित हो न जाएं, इसलिए काम का बहाना करके उससे दूर चला जाता है ।

सहानुभूतिशील :

गुसाईं लछमा के प्रति सहानुभूतिशील है । लछमा शादी कर लेती है, फिर भी उसके प्रति गुसाईं के मनमें कोई दुर्भावना नहीं है । वरन् वह वर्षों तक सोचता रहता है कि जब कभी लछमा से उसकी भेंट होगी, तो वह अवश्य कहेगा कि वह गंगनाथ का जागर लगाकर प्रायश्चित्त जरूर कर ले । देवी-देवताओं की झूठी कसमें खाकर उन्हें नाराज करने से क्या लाभ ? जिस पर भी गंगनाथ का कोप हुआ,

वह कभी फल-फूल नहीं पाया । बाद में भेंट होते ही गुसाईं यह लछमा को बता देता है ।

गुसाईं लछमा के गले में सुहाग-चिह्न स्वरूप काला चरेऊ न देखकर हतप्रभ-सा हो जाता है । वह लछमा की दु:ख-दर्द भरी कहानी सुनकर दु:खी होता है ।

लछमा खाली न चली जाए, इसलिए चाय का टायम भी हो रहा है कहकर वह चाय की व्यवस्था करके दूध लाने चला जाता है ।

लौटने के बाद लछमा के पास छह-सात साल के एक लड़के को देखकर उसे लछमा का बेटा समझ जाता है और उसके लिए रोटी बनाने की व्यवस्था भी कर देता है । वह बच्चे को रोटी और गुड़ खाने तथा चाय पीने देता है । लछमा को भी चाय देता है ।

लछमा की आर्थिक तंगी के बारे में जानकर गुसाईं उसे एक नोट देना चाहता है, पर लछमा इसे स्वीकार नहीं करती । तब चुपके से घट के भीतर जाकर गुसाईं लछमा के आटे में चुपके से अपने आटे से दो-ढाई सेर आटा डाल देता है ।

व्यवसायिक बुद्धि में निपुण :

गुसाईं व्यवसायिक बुद्धि में निपुण है । पनचक्की चलाने के लिए वह कोसी नदी के पानी का बहाव घट की गूल की ओर कर देता है । बाँध में मिट्टी-घास डालकर निकास बंद करता है । वह बाँध पर किसी खेतिहर को देखकर समझ लेता है कि वह खेत की सिंचाई के लिए पानी चुराना चाहता है । इसलिए गुसाईं उसे डाँट देता है । वह उसके पास जाकर झगड़ा निपटाता है । वह पिसान के लिए आने वाले थैलों को क्रम से नम्बर देता है और नम्बर के अनुसार गेहूँ पीसता है । उसके निष्पक्ष व्यवहार के लिए कोई उससे अधिक अनुरोध नहीं करता । कभी-कभी ज्यादा अनुरोध करने वाले आदमी को वह रुखाई से जवाब दे देता है - यहाँ जरूरी का भी बाप रखा है, जी । तुम ऊपर चले जाओ ।

सच्चा इन्सान :

गुसाईं चाहता है कि इस अकेलेपन में अगर वह लौटा गया आदमी मिल जाता तो दो-चार क्षण की बातचीत का आसरा मिल ही होता । पर जब लछमा आ जाती है वह अपने दिल का दु:ख उसे बता नहीं पाता । यद्यपि वह मानता है कि लछमा का हठ उसे अकेला बना गया है । फिर भी वह लछमा के सामने अपना आक्रोश व्यक्त नहीं करता, अपने अतीत के पन्ने नहीं खोलता, क्योंकि खुद लछमा दैव की मारी हुई है । वह बदनसीबी और गरीबी को झेलती हुई लछमा के स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँचाता । हर संभव उसकी सहायता करता है । पास बैठकर उससे अधिक बातचीत करना नहीं चाहता । वह एक

पराए और अपरिचित आदमी की तरह झूठ-मूठ काम का बहाना बनाकर व्यस्त रहता है । यहाँ तक कि लछमा को बिदा करने को उपस्थित न रहकर झगड़ा निपटाने के बहाने दूर चला जाता है । वह पानी तोड़ने वाले खेतिहर से झगड़ा निपटाकर लौटने के बाद देखता है कि लछमा पहाड़ की पगडंडी पर सिर पर आटा लिये अपने बेटे के साथ धीरे-धीरे चली जा रही है । वह उन्हें पहाड़ी के मोड़ तक पहुँचने तक टकटकी बांधे देखता रहता है । उस समय केवल चक्की की आवाज के अलावा और कई कोई स्वर सुनाई नहीं पड़ता । सब सुनसान .... निस्तब्ध । परिवेश का सूनापन मानो गुसाईं की जिन्दगी के सूनेपन को अभिव्यक्त कर रहा है ।

3.1.4 कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा :

'कोसी का घटवार' एक मनोवैज्ञानिक चित्रण करने वाली कहानी है । कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा करने के लिए निम्नलिखित तत्वों के आधार पर परखने की आवश्यकता है, ये तत्व हैं -

1) कथावस्तु ; 2) चरित्र-चित्रण ; 3) संवाद ; 4) देश-काल तथा वातावरण ;

5) भाषा शैली ; 6) उद्देश्य और 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

गुसाईं ही कोसी का घटवार है । वह फौज से लौटने के बाद वक्त काटने के लिए कोसी नदी के किनारे एकांत में एक घट लगवा लेता है । वह बिलकुल अकेला आदमी है । बचपन से माँ-बाप की मौत हो चुकी थी । जवानी में प्रेयसी लछमा दूसरी जगह शादी कर लेती है तो गुसाईं अपनी जिन्दगी से रूठ जाता है और आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय ले लेता है । लछमा ने गंगनाथ की शपथ लेकर उसके साथ शादी करने का वादा किया था, जब गुसाईं छुट्टी लेकर गाँव में आया था । गुसाईं सोचता है कि जब कभी लछमा से उसकी भेंट होगी, तब वह बता देगा कि वह गंगनाथ का जागर लगाकर अपनी झूठी कसम के लिए क्षमा मांग ले । उसका विश्वास है कि जिस पर गंगनाथ का कोप होता है, वह फल-फूल नहीं पाता है ।

इस बीच लछमा विधवा हो जाती है । वह ससुराल में रह नहीं पाती । बीमार माँ को देखने आती है तो कुछ दिन बाद माँ भी मर जाती है । बाप भी मर चुका था । वह अपने छह-सात वर्ष के बेटे को साथ लेकर मैके में रहती है । एक दिन वह गेहूँ पिसाने जिस आटा चक्की पर आती है, वह गुसाईं की आटा चक्की है । गुसाईं देखता है कि इस पंद्रह साल के भीतर लछमा में बहुत परिवर्तन हो गया है । वह विधवा हो गई है । कलकल बहने वाला झरना आज गंभीर सागर बन गया है । वह लछमा की जिन्दगी

की दर्दनाक कहानी सुनकर दु:खी होता है । सहानुभूति प्रकट करता है । उसकी सहायता करना चाहता है । जाते समय वह लछमा को गंगनाथ का जागर लगाने की सलाह देता है । एक अजनबी का बहाना करके लछमा से बचना चाहता है । लछमा को बिदा देने को उपस्थित न रहकर काम के बहाने दूर चला जाता है । जब वह लौटता है तो देखता है कि लछमा आटा सिर पर रखकर और बच्चे को साथ लेकर पगडंडी पर चली जा रही है । वह मोड़ आने तक टकटकी बांधे लछमा को निहारता रहता है । फिर लछमा उसकी दृष्टि से ओझल हो जाती है । वहाँ घट की आवाज के अलावा पूरे परिवेश में निस्तब्धता राज करती है । गुसाईं अकेलेपन और असहायता की पीड़ा से छटपटाकर रह जाता है ।

चरित्र-चित्रण -

इस कहानी में मुख्य पात्र दो हैं । एक है गुसाईं और दूसरी लछमा ।

गुसाईं के माँ-बाप मर चुके थे । फौजी पेंट पहनकर हवलदार धरमसिंह जब गाँव में आया तब उसे देखकर अकेले युवक गुसाईं के मन में फौज में जाने की लालसा उत्पन्न हो जाती है । आखिर वह फौज में भर्ती हो जाता है और एनुअल लीव लेकर गाँव में आते समय उसका बड़ा सम्मान होता है । वह जंगल में जाकर अपनी प्रेयसी लछमा से मिलता है । वहाँ लछमा गंगनाथ की शपथ लेकर कहती है कि वह उससे शादी करेगी । लेकिन वह दूसरी जगह शादी कर लेती है । यह सुनकर गुसाईं टूट जाता है । वह खुद शादी नहीं करता । वह गाँव में भी नहीं आता । पंद्रह साल बाद गाँव आकर कोसी नदी के किनारे एक पनचक्की लगवा कर खाली वक्त बिताता है ।

इसी बीच लछमा विधवा होकर उसके घट में गेहूँ पिसाने आती है । गुसाईं लछमा के मुँह से उसकी दर्द भरी कहानी सुनकर सहानुभूति जताता है । उसकी सहायता कर देना चाहता है । अंत में गंगनाथ का जागर लगाकर प्रायश्चित्त करने की सलाह देता है क्योंकि गंगनाथ के कोप से कोई फल-फूल नहीं सकता । वह विदा के समय आते ही काम का बहाना करके दूर चला जाता है । वह जब लौटता है तब लछमा को अपने बच्चे को साथ लेकर चली जाती हुई देखता है । उसके जीवन में अकेलापन और निराश भर जाती है ।

लछमा गुसाईं से प्यार करती है । जब एनुअल लीव लेकर फौज से गुसाईं गाँव में आता है तब लछमा नाला पार करके अपने गाँव से भैंस का कट्या खोजने के बहाने दूसरे दिन लछमा आकर गुसाईं से मिलना चाहती है । पर उस दिन गुसाईं मिल नहीं पाता । गुसाईं भी कांकड़ के शिकार के बहाने लछमा से जंगल में मिलता है । लछमा ने वहाँ गंगनाथ की कसम खाकर कहा था, जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगी । लछमा का बाप गुसाईं के साथ अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता था । लछमा की शादी रामसिंह से हो जाती है ।

इसी बीच पंद्रह साल बीत जाते हैं । लछमा विधवा हो जाती है । उसके एक बेटा है । जेठ-जेठानी के पास रहना मुश्किल हो गया । बीमार माँ के पास वह आ जाती है । वह भी चल बसी । चाचा-चाची को आँखें उसके बाबा की जायदाद पर लगी हुई हैं । लछमा का उस ओर ध्यान नहीं है । जायदाद के लिए कोई लोभ नहीं है । वह जंगल का लीसा ढो-ढोकर अपनी गुजर कर लेने की हिम्मत रखती है । बेटे के लिए ही उसे जीना पड़ रहा है । नहीं तो वैसे जीवन के प्रति उसका कोई मोह नहीं रह गया है ।

संयोग से वह पिसान सिर पर रखे गुसाईं के घट पर आती है । उसके व्यवहार में शालीनता पाई जाती है । वह घटवार से धीरे से पूछती है -''कब बारी आएगी ? रात की रोटी के लिए भी घर में आटा नहीं है ।'' घटवार गुसाईं जब देर होने की बात कहता है तब दुबारा अनुनय न करके लछमा लौट पड़ती है । गुसाईं अब लछमा को पहचानकर उसका नाम लेकर उसे पुकारता है तो लछमा को संदेह होता है कि इस नाम से तो केवल मायके में लोग पुकारते हैं । अपना भ्रम दूर करने के लिए वह विनम्रता पूर्वक पूछती है -'' मुझे पुकार रहे हैं जी ?'' गुसाईं जब पीसने का आश्वासन देता है तब वह लौट आती है और घट के अन्दर पिसान रखकर बाहर आती है । वह एहसान जताने के लिए कहती है -''तुम्हारे बाल-बच्चे जीते रहें, घटवारजी ! बड़ा उपकार का काम कर दिया तुमने । ऊपर के घट में भी न जाने कितनी देर में नम्बर मिलता ?''

गुसाईं जब लछमा के बाल-बच्चों को जीते रहने का आशीर्वाद देकर पूछता है -'' मायके कब आई ?'' तब लछमा गुसाईं को पहचान लेती है और आश्चर्य से उसके मुँह से निकल पड़ता है - ''तुम ?'' गुसाईं जब बच्चों का कुशल -क्षेम पूछकर यह पूछ देता है -''तू अभी और कितने दिन मायके रहनेवाली है ?'' तब लछमा फूट-फूटकर रो पड़ती है ।

लछमा गुसाईं को अपना मानकर आप बीती सारी दुखद कहानी सुना देती है । वह कहती है कि जिसका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता । अपने बेटे की बदनसीबी और अपनी विवशता बताते हुए वह कहती है -'' एक अभागा मुझे रोने को रह गया है, उसी के लिए जीना पड़ रहा है । नहीं तो पेट पर पत्थर बांध कर कहीं डूब मरती, जंजाल कटता ।''

लछमा व्यवहार कुशल है । गुसाईं जब चाय बनाने या रोटी सेंकने का उपक्रम करता है तब लछमा पूरा काम अपने हाथ ले लेती है । लछमा स्वाभिमानी है । वह नहीं चाहती कि गुसाईं जान जाए कि बच्चे को भूख लग रही है । गुसाईं जब आग्रह करता है कि बच्चा ही रोटी खाए तो बात टालने के लिए लछमा झूठ कह देती है, यह तो अभी घर से खाकर ही आ रहा है । मैं रोटियाँ बनाकर रख आई थी ।'' लेकिन जब सच्चाई पकड़ी जाती है तो वह झिड़ककर बच्चे से कह देती है -''मर ! अब ले क्यों नहीं लेता ? जहाँ जाएगा, वहीं अपने लच्छन दिखाएगा ।'' प्रसंगवश लछमा पैसों के बारे में बता देती

है तो गुसाईं संकोच पूर्वक उसे एक नोट देना चाहता है । पर लछमा इनकार करते हुए कहती है-'' नहीं-नहीं जी ! काम तो चल ही रहा है । मैं इस मतलब से थोड़े ही कह रही थी । यह तो बात में बात चली थी, तो मैंने कहा ।''

लछमा धर्म-विश्वासी है । वह गुसाईं से कहती है -'' गंगनाथ दाहिने रहें, तो भले-बुरे दिन निभ जाते हैं जी । पेट क्या है, घट के खप्पर की तरह जितना डालो, कम हो जाए । अपने-पराए प्रेम से हँस-बोल दें, तो वही बहुत है दिन काटने के लिए ।''

लछमा मर्यादा ी सीमा में रहने वाली औरत थी, विधवा थी । एक बच्चे की माँ थी । उसमें वर्षों पहले का प्यार का ज्वार न था । वह ज्वार सागर जैसे सीमाओं में बंधकर शांत हो चुका था । मर्यादा के बंधन में वह खुद बंध चुकी थी । गुसाईं उसके लिए दूसरों की तरह एक साधारण इंसान था । इसलिए गुसाईं के लौटने तक प्रतीक्षा करना उसने उचित नहीं माना । वह अपने पिसान का थैला लेकर और अपने बच्चे को साथ लेकर घट से चली जाती है । वह दया की भीख लिए बिना पूरे आत्म विश्वास के साथ अकेली जिन्दगी की राह पर चलने को तैयार है ।

संवाद :

इस कहानी में संवाद पात्रानुकूल, परिस्थिति और परिवेश के अनुकूल हैं । भावुकता के समय संवाद दार्शनिकता से भरे हुए हैं ।

गुसाईं निष्पक्ष होकर जिसकी बारी आती है उसका गेहूँ पीसता है । एक आदमी को अपने घट की ओर आते हुए देखकर वह पहले उसे बता देता है कि यहाँ देर होगी । वह फिर जब अनुरोध करता है, अब गुसाईं जिस ढंग से जवाब देता है, वह पात्रानुकूल है -वह कहता है - ''यहाँ जरूरी का भी बाप रखा है, जी ! तुम ऊपर चले जाओ ।''

गुसाईं जब कहता है -'' लोग ठीक कहते हैं, औरत के हाथ की बनी रोटियों में स्वाद ही दूसरा होता है ।'' तब इसमें तनाव कम करने का आग्रह है । गुसाईं बच्चे के लिए जब कहता है - कुछ साग-सब्जी होती तो बेचारा एक आध रोटी और खा लेता, तब इसमें वात्सल्य भाव जान पड़ता है ।

यहाँ संवाद में दार्शनिकता का गुण भी है । गुसाईं कहता है -''दुःख तकलीफ के वक्त ही आदमी आदमी के काम नहीं आया, तो बेकार है । पैसा मिट्टी है साला । किसी के काम नहीं आया तो मिट्टी।''

लछमा भी दार्शनिक जैसे गंभीरता से कहती है -'' गंगनाथ दाहिने रहें, तो भले-बुरे दिन निभ जाते हैं, जी ! पेट क्या है, घट के खप्पर की तरह जितना डालों कम हो जाए । अपने -पराए प्रेम से हँस-बोल दें तो वही बहुत है दिन काटने के लिए ।''

देश-काल तथा वातावरण :

इस कहानी में परिवेश बहुत महत्वपूर्ण है । गुसाईं अकेलापन झेल रहा है । जिन्दगी भर साथ देने के लिए तो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है । विधवा लछमा ससुराल और मायके से बहिष्कृत होकर भी अकेलेपन झेल रही है । परिवेश का अकेलापन व्यक्ति के अकेलेपन को और अधिक पीड़ादायक बना देता है । सूखी नदी के किनारे लगाई गई आटा चक्की बिलकुल अकेली है ।

परिवेश के अकेलापन का चित्रण इस प्रकार है - घट के अंदर काठ की चिड़ियाँ अब भी किट-किट आवाज कर रही थीं । चक्की का पाट खिस्सर -खिस्सर चल रहा था और मथानी की पानी काटने की आवाज आ रही थी और कहीं कोई स्वर नहीं । सब सुनसान .... निस्तब्ध ... । जीवन की नीरवता को परिवेश की नीरवता और अधिक जीवित कर देती है । जेठ बीत रहा है । आकाश में कहीं बादलों का नाम-निशान भी नहीं । इस साल नदी -नाले सब सूखे पड़े हैं ।

इस कहानी में परिवेश का बिम्ब -विधान भी हुआ है । वीरान में गुसाईं की चक्की से स्थिति, चक्की के पाट का खिस्सर -खिस्सर चलने की आवाज, कोसी की सूखी धारा, पिसान के लिए खप्पर में गेहूँ डालकर झुककर बाहर निकलना, सिर के बालों और बाहों पर आटे की एक हल्की सफेद पर्त बैठ जाना आदि गुसाईं के मन में बसी उदासी, अकेलेपन, खीझ, पीड़ा को व्यक्त कर देते हैं ।

भाषा -शैली :

भाषा कहानी को आकर्षक बनाती है । इसलिए पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग होना चाहिए । इससे कहानी में प्रवाह और स्वाभाविकता आती है । गुसाईं अकेलेपन की पीड़ा झेलता है तो उसकी भाषा में रुखाई और चिड़चिड़ापन आना स्वाभाविक है । ऊँचे स्वर में किसी के पुकारने से मन ही मन कहता है -'' स्साला कैसे चीखता है, जैसे घट की आवाज इतनी हो कि मैं सुन न सकूं ।'' फिर वह कम ऊँची आवाज में उत्तर देता है - ''यहाँ जरूरी का भी बाप रखा है, जी ! तुम ऊपर चले जाओ ।''

पहले वह प्रेयसी लछमा से मिलता है, तो प्यार भरी बात कहता है -'' तेरे लिए मखमल की कुर्ती ला दूंगा, मेरे सुवा !''

अपने मन का गम प्रकट करते समय लछमा दार्शनिक जैसी बात कहती है -'' जिसका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता ।''

''गंगनाथ दाहिने रहें, तो भले-बुरे दिन निभ जाते हैं । पेट क्या है, घट का खप्पर की तरह जितना डालो, कम हो जाए । अपने -पराए प्रेम से हँस-बोल दें, तो वही बहुत है दिन काटने के लिए ।''

गुसाईं की दार्शनिक भरी उक्ति है -'' तकलीफ के वक्त ही आदमी आदमी के काम नहीं आया,

तो बेकार है । स्साला । पैसा मिट्टी है साला ! किसी के काम नहीं आया तो मिट्टी ।'' आधुनिकता का परिवेश होने के कारण कहानी में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग मिलता है ।

उद्देश्य :

'नई कहानी' में दो धाराएँ पाई जाती हैं ।

1) व्यक्तिनिष्ठ धारा और, 2) सामाजिकनिष्ठ धारा ।

व्यक्तिगत भावधारा के लेखक रूढ़ि और परंपरा के विरोध के नाम पर सभी प्रकार के सामाजिक मूल्यों का विरोध करते हैं । वे मूल्यहीनता, हताशा और तनाव की स्थिति की प्रतिष्ठित करते हैं ।

सामाजिकनिष्ठ भावधारा के कहानीकार परंपरागत होने पर भी मूल्यों की प्रतिष्ठा करते हैं । शेखर जोशी इसी धारा के लेखक हैं ।

कहानी में एकांत में प्रेमी-प्रेयसी की भेंट से प्यार की शुरूआत होती है । लेकिन वहाँ कोई उच्छृंखलता नहीं आ पाई है । प्रेयसी का अन्यत्र विवाह करना उसकी विवशता थी । प्रेयसी का कसम तोड़ने का आघात प्रेमी को आजीवन अविवाहित रहने के निर्णय लेने का कारण था । दोनों पंद्रह साल बाद जब मिलते हैं, उस समय तक दोनों एक दूसरे के लिए बिलकुल अजनबी हो गये हैं । प्रेमी का सहायता का हाथ बढ़ाना उचित लगता है, पर प्रेयसी का अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए उसे अस्वीकार कर देना भी ठीक है । इससे वह उसके चरित्र की महनीयता प्रतिपादित होती है ।

इस कहानी में प्रेम की पवित्रता की रक्षा करने, धार्मिक आस्था के सहारे जीवन में आनेवाली कठिनाइयों का सामना करने का संदेश दिया गया है ।

शीर्षक :

कहानी का शीर्षक 'कोसी का घटवार' नायक की वृत्ति की ओर संकेत कर रहा है । सूखी कोसी नदी जीवन की शुष्कता और नीरसता व्यक्त करती है । फौजी नायक गुसाईं के लिए 'घटवार' एक नया पद है । वक्त काटने के लिए गुसाईं ने घट लगवा लिया है । यही घट गुसाईं और लछमा को पुन: भेंट हो जाने का परिवेश बनाता है । कोसी का एकांत स्थान जीवन की नीरसता और निस्तब्धता को ध्वनित करता है । छोटे नाले -गुलों के किनारे के घट महीनों से बंद पड़ने और गुसाईं का घट धीमी गति से चलने से व्यंजित होता है कि पात्रों के जीवन की गति प्राय: अवरुद्ध है । अत: शीर्षक प्रतीकात्मक है ।

यह कहानी कहानी -कला की दृष्टि पर खरी उतरती है ।

बादलों के घेरे

3.2.1 लेखिका -परिचय :

कृष्णा सोबती का जन्म 1925 में विभाजन पूर्व पंजाब में हुआ था । उनकी शिक्षा -दीक्षा लाहौर शिमला और दिल्ली में हुई थी ।

'बादलों के घेरे' उनकी कहानी संग्रह है, जिसमें 24 कहानियाँ संकलित हैं । इसका प्रकाशन 1980 में हुआ था । कहानियाँ विभिन्न समय में लिखी गई थीं । उनमें 1948 में लिखी गई कहानी 'सिक्का बदल गया' एक प्रौढ़ रचना है ।

उनके प्रकाशित उपन्यास हैं - मित्रोमरजनी, डार से बिछुड़ी, यारों के यार, तीन पहाड़, सूरजमुखी अंधेरे में, जिन्दगीनामा, दिलोदानिश । 'ऐ लड़की' एक लम्बी कहानी है जिसे उपन्यासिका कहा गया । 'जिन्दगीनामा' उपन्यास पर उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था । उन्हें पंजाब सरकार ने भी साहित्य शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित किया था ।

3.2.2 कथा सार :

कृष्णा सोबती की कहानी 'बादलों के घेरे' में नायक रवि टी.बी. से आक्रांत होकर भुवाली की कॉटेज में पड़े-पड़े अकेलेपन और अजनबीपन को झेलते हुए मर्मान्तक पीड़ा का अनुभव करता है । वह अपने अतीत का रोमंथन करते समय उसकी स्मृति में दो छबियाँ साकार हो जाती हैं । एक है प्रेयसी मन्नो का चेहरा और दूसरी है पत्नी मीरा का आचरण । इस समय उसके मानवीय भावतंतु उन्मोचित हो जाते हैं, आंतरिक संसार की पीड़ा, अकेलापन, छटपटाहट , तनाव स्पष्ट हो जाता है ।

यह स्वाभाविक है कि मन के पास की चीज की अपेक्षा दूर की चीज के प्रति, जो नहीं है, पीछे छूट गई है, उसके प्रति अधिक मोह रहता है । रवि के मन में पत्नी मीरा की अपेक्षा पत्नी मन्नो के प्रति मोह और प्यार की उछलन अधिक है ।

रवि को याद आता है वह दिन जब वह बुआ से मिलने नैनी के पहाड़ पर गया था । बुआ पिताजी की सबसे छोटी मौसेरी बहन थी । सुबह के नाश्ते की मेज से उठते -उठते बुआ ने मन्नो से उसका परिचय कराते हुए दो दिन के लिए आई उस मेहमान से मिलाने को कहा था - मन्नो बुआ के जेठ की बेटी थी । पर दूसरे ही क्षण बच्चों को खुशी से मन्नो जीजी से लिपटते हुए देखकर उन्हें मन्नो से अलग हटा लेती है ।

वह टेढ़ी निगाह से मन्नो की ओर देखकर उससे कहीं बाहर घूम आने को कहती है । बिना किसी प्रतिक्रिया से मन्नो फाटक से बाहर चली जाती है ।

मन्नो के चली जाने के बाद बुआ स्पष्ट कर देती है कि उसे टी.बी. है । दो साल तक भिवानी के सैनिटोरियम में रहने के बाद वहीं कॉटेज में रह रही है । साथ में घर का पुराना नौकर है । जब कभी अकेले जी ऊब जाता है तो प्राय: चार-छह महीने बाद शहर चली आती है । उसे बहुत दिन के बाद दुबली -पतली होती हुई देखकर मन भारी हो जाता है ।

बच्चे खेल में लग जाते हैं और बुआ घर के अंदर चली जाती है । तब रवि बुआ की ऐसी निष्ठुरता से अपनी जिज्ञासा को नहीं दबाकर उतराई से उतर कर झील के किनारे -किनारे चल पड़ता है ।

लौटने पर रवि को नौकर से पता चलता है कि बुआ बच्चों को लेकर बाहर चली गई है और वह खाना खाने को मना करके गई है । नौकर उनसे खाना खाने का अनुरोध करता है और यह भी बताता है कि मन्नो उनके साथ न खाकर अलग से ऊपर खाएँगी । यह सुनकर रवि का मन उदास हो जाता है ।

कुछ देर बाद घोड़े पर सवार होकर मन्नो पहुँची और साईस को दो घंटे में पहुँचने को कहकर ऊपर की मंजिल के अपने कमरे में चली जाती है । घंटे भर बाद रवि ऊपर के कमरे के पास पहुँचता है तो मन्नो उसे अन्दर आने का अनुरोध करती है । वह सूचना दे देती है कि शाम से पहले वह नीचे उतर जाएगी । वह सिर्फ एक दिन के लिए आई थी । वह सफाई दे देती है कि भुवाली जैसे बड़े गाँव में रहने के बाद यह छोटा-सा शहर मन को अच्छा नहीं लगता ।

रवि और मन्नो साथ-साथ घर से बाहर आते हैं । नौकर और माली झुककर सलाम करते हैं । मन्नो उनको इनाम देती है । साईस घोड़े को तैयार कर लेता है । लेकिन मन्नो साईस से कहती है कि अब वह घोड़े पर न बैठकर थोड़ी दूर पैदल जाएंगी । मन्नो फाटक से बाहर निकलकर पीछे को मुड़ती है और जैसे छोड़ने से पहले अंतिम बार घर को देखती हो । फिर मन्नो और रवि पैदल जाकर कार के पास पहुँचते हैं । रवि के हाथ से मन्नो अपना कोट ले लेती है और कार में बैठ जाती है । कार चली जाती है । जाते समय रवि न कुछ कह पाता है न मन्नो । मोड़ तक पहुँचने तक रवि कार के शीशे से मन्नो के बाल में बंधे रिबन को देखता रहता है ।

रवि जब लौट कर आता है, तब बुआ को दरवाजे पर खड़ी हुई देखता है । वह कुलियों को मन्नो से फर्निचर निकालते हुए देखकर भांप लेता है कि मन्नो के लिए वे सामान किराये पर जुटाये गए थे । बुआ रवि को कपड़े बदल कर चाय पर आने को बुलाती है । चाय पीते समय रवि बुआ से मन्नो के बारे में कुछ पूछना चाहता है । पर बुआ उस पर कोई चर्चा करना नहीं चाहती ।

रवि को पहली मुलाकात से ही मन्नो से प्यार हो जाता है । प्यार में पागल रवि रात को अनमना

होकर मन्नो के खाली कमरे तक आ जाता है । वह बिजली जलाकर खाली कमरे में केवल अंगीठी में लगी लकड़ी को देखकर कल्पना कर लेता है कि अगर मन्नो आज यहाँ होती तो देर रात तक अंगीठी के पास बैठती और मैं शायद उसके पास आ जाता । पर दूसरे ही यह क्षण वह ऐसा सोचने पर अपने को नियंत्रित कर लेता है ।

वह वहाँ से लौट आता है और अपने कमरे में बिजली बुझाकर सो जाता है । तब बुआ वहाँ आ जाती है । वह रुंधे स्वर से रवि से कहती है -''रवि, तुम्हें नहीं, उस लड़की को दुलारती हूँ । अब यह हाथ उस तक नहीं पहुँचता .... '' रवि को लगता है कि उसने बुआ का नहीं, मानो मन्नो का हाथ पकड़ लिया हो । बुआ अपना दिल कुछ कड़ा करके रवि को समझाने लगती हैचूंकि मन्नो को अब रहना नहीं है, इसलिए उसके लिए कुछ नहीं सोचना चाहिए । रवि के मुँह से अनायास निकल पड़ता है -''बुआ, मुझे ही कौन रहना है ?'' यह सुनकर बुआ हाथ खींचकर उठ बैठती है । वह रवि को पागल न होने की चेतावनी देती है । जिस मन्नो के लिए कोई राह नहीं रह गई है । उसके साथ अपनी बात न जोड़ने की सलाह देती है । जिसके लिए सब राह बंद हैं, उसके लिए न भटकने को कहती है ।

बुआ अपने अनुभव का वर्णन करते हुए कहती है-'' मैं वर्षों से मन्नो को इस दशा में देख-देखकर पत्थर जैसी बन गई हूँ । अपनी बच्ची की तरह जितना प्यार दिया, परवरिश की, आज सब व्यर्थ हो गये हैं । किसी समय मैं छुट्टी के दिन बोर्डिंग से उसके आने की राह तकती थी तो अब उसके जाने का क्षण गिनती हूँ । मैं बचपन में मन्नो को मोहवश कभी डराना नहीं चाहती थी, लेकिन आज उससे डरने लगती हूँ ।''

सुबह होने के बाद रवि घूम-घूमकर पूरा दिन बिता देना चाहता है । घोड़े पर सवार होकर लड़ियाकोटा तक जाकर लौट आता है । पर उसका मन नहीं मानता । वह दोपहर ढलने के बाद बस से जाकर भुवाली में उतरता है । वह कॉटेज का पता पूछकर 'पाइन्स' की ओर बढ़ जाता है । वहाँ पहुँचते ही नौकर से पता चलता है कि मन्नो ताल की ओर गई है । कुछ देर बाद मन्नो घोड़े पर सवार होकर लौट आती है । नौकर का सहारा लेकर घोड़े से उतरती है । वह नौकर से कहती है कि वह अम्मा से कहकर बिछौना लगवा दे, क्योंकि उसका जी अच्छा नहीं लगता । अम्मा मन्नो को कमरे में लाकर लिटा देती है और रवि के लिए कुर्सी पास खींचकर बाहर चली जाती है । रवि उसकी बांहों को न छूता है न हाथ को सहला सकता है । शायद उसका मन उस रोगी मन्नो को छूने से झिझकता था । वह जब उसी रात डाकबंगले में जाने लगता है तब उसमें एक विचित्र स्थिति थी कि उसकी प्यार भरी आँखें उसे और कुछ पल साथ बिताने को बांध लेती थीं तो मन का भय उसे वहाँ से खींचकर ले जाने को चाहता था । वह डाकबंगले में पहुँच कर मानो क्षण-क्षण जकड़ते बंधन से छुटकारा पा लेने का अनुनय करता है ।

रवि डाकबंगले में रात भर ठीक से सो नहीं पाता है । तरह-तरह के दु:स्वप्न देखता है । उसे लगता है कि वह मन्नो के पलंग पर सोया है । मन्नो कुर्सी पर बैठी है मन्नो की ओर वह हाथ बढ़ाता है तो मन्नो हँसकर जैसे इशारे से कहती है कि हाथ कंबल के नीचे कर लो । अब इसे कौन छुएगा ?

सुबह होते ही रवि लौट आता है तो बुआ की कड़ी चेतावनी चेहरा देखकर कुछ सहम जाता है । अब तक फूफा लौट आए थे । दोपहर का खाना खाते समय वे रवि से कहते हैं कि वह बुआ और बच्चों को लखनऊ तक पहुँचा दे ।

रवि उन्हें लखनऊ में पहुँचा कर दूसरे दिन विदा लेना चाहता है । वह फूफा की इच्छा के अनुसार फिर नैनी लौटना नहीं चाहता है । वह बुआ को बताता है कि इस बार वह पिताजी के पास दक्खिन में जाना चाहता है । जाते समय रवि बुआ के पांव छूता है तो बुआ उससे कहती है -'' रवि तुमने पांव छुए हैं, तो आशीर्वाद जरूर दूंगी .... बहुत सुन्दर बहू पाओ ।

रवि स्टेशन पर पहुँचता है, वह भुवाली के लिए टिकट खरीदकर प्लेटफार्म पर आ जाता है । वह बुआ के आशीर्वाद के बारे में सोचता है । उसे धीरे-धीरे विवाह, पत्नी, परिवार आदि की कल्पना विभोर कर देती है । क्षण भर के लिए भुवाली, पाइन्स मन्नो से हट जाता है । गाड़ी आ पहुँचती है, पर वह अब उसमें जाने का विचार एकाएक बदल देता है और कुली से कहकर उस गाड़ी से अपना सामान उतरवा कर नया टिकट खरीदकर बरेली के लिए जानेवाली गाड़ी से माँ के पास अपने घर जाकर पहुँच जाता है । माँ वहाँ उसे छुट्टियों में रहने और शादी के लिए लड़की देखने का सुझाव देती है ।

रवि बाद में तब नैनी जाता है तो वह भुवाली जाकर मन्नो से मिलता रहता है । रवि को वह दुपहर याद आती है जब वह मन्नो के साथ झील के किनारे से लगी पगडंडी पर जा रहा था । उस दिन रवि मन्नो की सुन्दरता पर मुग्ध था । सामने देवी के दो छोटे-छोटे मंदिर थे । मंदिर के कपाट बंद थे । मन्नो ने वहीं अपने जूते उतारकर नंगे पांव पानी के पास जाकर एक बड़े-से पत्थर पर पांव जमाया और झुककर डंठल से एक कमल तोड़ लाई । शाल सिर पर ले आई और बंद कपाटों के आगेवाली दहलीज पर फूल रखकर उसने सिर नवा दिया । उस समय रवि को लगता है कि मन्नो नहीं, मानो कोई व्यर्थ हो गई विवशता ने अपने भाग्य के बंद कपाटों के आगे माथा टेक दिया हो । रवि जब पुजारी को बुलाने की बात करता है तब मन्नो अपने मन की गहराई में छिपी वेदना को मानो यह कहकर अभिव्यक्त कर देती है - ''नहीं रवि, ऐसा कुछ नहीं । मुझे कौन वरदान मांगने हैं ? अपने लिए तो कपाट बंद हो गए हैं । बस इतना ही चाहती हूँ, यह कपाट उनके लिए खुले रहें, जिनसे बिछुड़कर मैं आ पड़ी हूँ ।'' यह सुनकर रवि से रहा नहीं जाता । वह मन्नो के कंधे पर हाथ डालकर कहता है -''मन्नो !'' मन्नो इससे नहीं चौंकती है, वरन् अपने कंधे पर पड़े रवि के हाथ को अलग करके कहती है-'' रवि, जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसके लिए हाथ न बढ़ाओ ।'' इस आवाज में न उलाहना था, न व्यंग्य था, न कटुता थी,

अपितु एक सच्चाई छिपी हुई थी । उसका उत्तर रवि के पास नहीं था ।

अंतिम बार की भेंट उसे याद आती है जब जाने के लिए वह तीन बार नीचे उतरकर फिर तीन बार ऊपर गया था । वह मन्नो से विदा लेकर नीचे उतरता है पर कह नहीं पाता । उसके आने पर मन्नो को न आश्चर्य होता है, न बिछुड़ने की उदासी । रवि 'मन्नो' कहकर मानो छूना चाहता है । पर मन्नो 'नहीं' कहकर उसे आँखों के इशारे से विदा देती है । रवि फाटक के पास पहुँचकर मन्नो की सिसकियाँ सुन पाता है । वह थोड़ी देर तक रुक जाता है पर दिल कड़ा करके चला जाता है । फिर रवि की शादी हो जाती है । घर में सुन्दर बहू आती है । उसका तन-मन पत्नी मीरा से संस्पर्श में खिल उठता है । बरसों बीत जाते हैं । एक बार दौरे पर लखनऊ आते समय बुआ से जब मुलाकात होती है तब बुआ सूचना देती है कि मन्नो अब नहीं रही । बुआ मन्नो के अंतिम दिन के हाल बताती है-" रात को सोई तो जगी नहीं । अम्मा छुट्टी पर थी । सुबह-सुबह माली अन्दर आया, तो साँस चुक गई थी ।" बुआ आँखों से आँसू पोंछकर रवि से कहती है कि तुम एक बार उसे पत्र लिखते तो अच्छा होता । बुआ उसके नाम पर आलमारी में छोड़े गए पार्शल के बारे में बताती है जो एक जर्सी थी । दूसरे दिन रवि जाने के पहले बुआ के पांव छुता है तो बुआ उसे 'रवि' संबोधन करके कुछ सुनने की प्रतीक्षा किए बिना रवि 'नहीं' कह देती है, मानो वह जर्सी ले नहीं सकता । बुआ टूट जाती है वह कहना चाहती है-" यही बार-बार सोचती हूँ कि जिसके प्यार को भी कोई न छू सके, ऐसा दुर्भाग्य उसे क्यों मिला, क्या मिला ?" लखनऊ से लौटकर रवि कई दिनों तक मन्नो को याद करता रहता है । वह कल्पना से देखता है कि 'पाइन्स' में कुर्सी पर बैठकर मन्नो मेरे लिए जर्सी तैयार कर रही है ।

वर्षों बीत जाते हैं । साल भर बीमार रहने के बाद रवि भुवाली की उसी कॉटेज में आ जाता है । अब वह बिस्तर पर लेटा रहता है । यहाँ उसके लिए अकेलापन साथी है । दरवाजे के परदे को हटाकर कोई उनसे मिलने यहाँ नहीं पहुँचता है । अब पत्नी के सुगंधित केश उसके वक्ष पर नहीं बिछ जाते । पत्नी के रस भरे अधरों का स्पर्श अब नहीं मिलता । पत्नी मीरा अब हौले से नहीं जगा देती है । वे दिन अब नहीं रहे । बच्चों को बीमारी से दूर रखने के लिए मीरा ने पति के प्रति मोह को छोटा कर लिया ।

अंतिम बार रानीखेत जाते समय मीरा बच्चों को साथ लेकर घंटे भर के लिए भुवाली की कॉटेज में आती है । फाटक पर पहुँकर वह पल भर ठिठक जाती है और दोनों हाथों से बच्चों को घेरे के अंदर लेकर आती है ताकि बच्चे अपने पिता को न छुए । मीरा के कहने पर बेटा और बेटी झिझककर हाथ उठाकर प्रणाम करते हैं । बीमारी के डर से रवि अपने बच्चों को पूरी तरह निरख नहीं पाता । वह केवल मीरा को देखता रहता है, जो किसी समय उसकी पत्नी थी, अपनी थी ।

मीरा रवि के पास आकर झुकती है, अधरों से उसका मस्तक छूकर पीछे हट जाती है । वह घड़ी देखती है और अपने बच्चों के लिए वापस चली जाती है । रवि तकिए के सहारे सिर ऊँचा करके

देखता है कि तीनों में से कोई मुड़कर उसकी ओर नहीं देखता । केवल छोटी बेटी रानी के बालों में गूंथा गुलाबी रिबन हिल हिलकर मानो कहता है कि हम चले गए ।

रवि को लगता है कि उनको जाना था, इसलिए वे चले गए, ऐसी बात नहीं है, वरन् मौत की गोद में चला जा रहा हूँ, इसलिए वे चले गए । वह याद करता है कि ऐसे ही एक दिन मन्नो के चले जाने को भांपकर मैं भी चला गया था । आज जिस प्रकार अकेले में मैं रोता हूँ, उसी प्रकार उस दिन मन्नो रोई थी । अब उसे पता चलता है कि हाथों में मुँह छिपाकर रोने में अकेलेपन की पीड़ा कितनी होती है ।

घर पर पत्नी मीरा आ जाने के बाद रवि ने वर्षों तक मन्नो की सुधि नहीं ली थी । वह जब कभी सपने में मन्नो की दुबली देह, बड़ी-बड़ी आँखें और कंबल पर फैली पतली-पतली बांहें देखता था, तो जागकर उद्विग्नता से मीरा की ओर बढ़ जाता था । मन्नो मन से निकल जाती थी ।

अब वह मरीज बनकर कॉटेज में मन ही मन मन्नो को पुकारता है । उसे लगता है अगर आज मन्नो होती तो शायद वह अकेला न होता । अब मीरा उसे अकेला छोड़कर चली गई है । उसे मीरा में नहीं मन्नो में अपनेपन का बोध होता है । वह सोचता है-“ जिस मीरा को मैंने वर्षों जाना है, वह अब पास-सी नहीं लगती, अपनी-सी नहीं लगती । उसे मैं छू-छूकर छूआ था, चूम-चूमकर चूमा था, पर मन पर जब मोह और प्यार की उलझन आती है, तो मीरा नहीं मन्नो की आँखें ही सगी दीखती है ।”

रवि को धुंध भरे बादलों के घेरों में घुंघराले बालवाला वही चेहरा दिखता है । उसे दवा के नए बदलते रंग को देखकर लगता है कि इस छूटते-छूटते तन में मन को बहुत दूर तक भटकना नहीं है । एक दिन खिड़की से बाहर देखते -ही-देखते इन्हीं बादलों में समा जाऊँगा ।

3.2.3 चरित्र - चित्रण :

रवि - रवि ‘बादलों के घेरे’ कहानी का मुख्य पात्र है । उसके जीवन में दो नायिकाएँ आती हैं । पहली है प्रेयसी ‘मन्नो’ और दूसरी है पत्नी मीरा । प्रेयसी मन्नो से उसे प्यार हो जाता है, पर वह क्षयरोग की मरीज होने से और इस संसार में थोड़े दिन की मेहमान होने से प्यार साकार नहीं हो पाता । यहाँ तक कि उसे छूने में डर लगता है । पत्नी मीरा आई तो परिवार में रौनक आ गई । भरा-पूरा संसार उपभोग करने को मिला । बच्चे हुए । जीवन का स्वाद मिला । बेहद खुशी मिली । समय बदल गया । रवि खुद क्षयरोग का मरीज बन गया । कहानीकार कृष्णा सोबती उसके चरित्र का मनोवैज्ञानिक चित्रण बड़ी आत्मीयता से करके पाठक के दिल और दिमाग को झकझोर देती है । उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं :

सच्चा प्रेमी :

रवि नैनी आते समय बुआ के घर पर मन्नो से उसकी मुलाकात होती है । उसकी सादगी और सरलता से उसका मन मन्नो की ओर आकर्षित हो जाता है । बुआ के उसे वस्तुस्थिति से सजग कर देने पर भी वह मन्नो से न नफरत करता है, न दूर रहता है । वह उससे बार-बार भुवाली जाकर मिलता रहता है । इसी आत्मीयता के कारण मन्नो उसके लिए एक जर्सी बनाती है ।

रात में मन्नो के कमरे में अकेली अंगीठी देखकर वह कल्पना कर लेता है कि अगर मन्नो यहाँ होती तो वह अंगीठी के पास बैठती और मैं भी उसके पास आ जाता । मन्नो को मंदिर की दहलीज पर फूल चढ़ाते हुए देखकर वह पुजारी को बुलाने को तत्पर हो उठता है, ताकि मन्नो देवी के दर्शन कर सके । मन्नो के मना करने पर वह उसे बुलाने से निवृत्त रहता है । अंतिम बार की यात्रा के दौरान वह मन्नो से विदा लेकर तीन बार लौटता है और तीन बार आधे रास्ते से लौटकर उससे मिलता है । जाने को उसका मन नहीं मानता । पर मन्नो के आँखों के इशारे से बिदा देने से वह लौट जाता है ।

रवि को जब मन्नो निराशा भरे स्वर से कहती है कि मुझे देवी से कोई वरदान नहीं मांगना है, क्योंकि मेरे लिए सारे कपाट बंद हो चुके हैं, तब रवि मन्नो के कंधे पर हाथ रख देता है पर मन्नो उसका हाथ धीरे से कंधे से हटा देती है । तो रवि का दिल दर्द से भर जाता है ।

रवि की जब शादी हो जाती है और उसके जीवन में पत्नी मीरा आ जाती है, तब रवि मीरा को पूरा प्यार देता है उसके प्रेम में विभोर हो उठता है ।

मीरा अपने बच्चों को रोगी पति के संस्पर्श में आने नहीं देना चाहती, बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए वह पति से मिलकर चली जाती है तब रवि को मन्नो के प्रेम में ज्यादा अपनेपन का बोध होता है । उसे लगता है कि यदि आज मन्नो होती तो वह उसे छोड़कर इस प्रकार कभी नहीं गई होती । इसलिए वह सोचता है मन पर मोह और प्यार की उछलन आती है तो मीरा नहीं, मन्नो की आँखें ही सगी दिखती हैं ।

विरोधाभास के चरित्र वाला :

रवि बुआ की भतीजी का प्रेमी है । बुआ के न चाहने पर भी वह भुवाली जाकर मन्नो से मिलकर आता है । फिर बुआ से बिदा लेकर भुवाली के लिए गाड़ी में चढ़ते- चढ़ते मन बदल कर प्लेटफार्क से लौट कर दूसरी जगह के लिए टिकट लेता है । वह बाद में नैनी जब भी जाता है, भुवाली जाकर मन्नो से मिलता है । इस प्रेम में दो आत्माओं का तो मिलन होता है, पर दो शरीर का मिलन नहीं हो पाता । वह साहस करके मन्नो को छू नहीं पाता । वह भावावेश में एक बार मन्नो के कंधे पर हाथ रखता है तो

मन्नो उसका हाथ धीरे से हटा लेती है । मन्नो की वर्जना उसे रोके रहती है ।

रवि मन्नो का प्रेमी होने के बावजूद वह उसके द्वारा बनाई गई जर्सी बुआ से नहीं लेता है । प्रेम की तन्मयता के बाद ऐसी उदासीनता आश्चर्यजनक है । वह विवाह के बाद अपनी प्रेयसी की कोई खोज - खबर नहीं लेता और बुआ जब मन्नो को उसके एक पत्र न लिखने के लिए असंतोष व्यक्त करती है, तब रवि भावावेग में आ जाता है ।

रवि पत्नी मीरा का प्रेम पाकर अपने संसार को भरा पूरा मानता है । जब उसे प्रेयसी मन्नो की याद आती है तब मीरा की बात सोचकर उस दु:ख को भूलना चाहता है । पर बदलती परिस्थिति में मीरा उससे दूर हो जाने से उसे मन्नो के प्यार में ज्यादा अपनापन बोध होता है । जिस मीरा के साथ अपनेपन का बोध होता था, उसका मन फिर जाने से उसी मीरा में परायेपन का बोध करता है ।

सहानुभूतिशील :

रवि पहली मुलाकात में मन्नो को जब देखता है, तब उसकी सादगी और सहनशीलता देखकर प्रभावित होता है । वह मन्नो के प्रति बुआ का कठोर आचरण देखकर क्षुब्ध हो उठता है । बुआ जब मन्नो से बच्चों को छुड़ा लेती है, तब रवि को यह व्यवहार अच्छा नहीं लगता । बुआ और बच्चे मन्नो से बचने के लिए बाहर खाने की योजना बनाते हैं और रवि को भी मन्नो के साथ बैठकर खाने पर नियंत्रण लगा देती है तब रवि का दिल मन्नो की मन:स्थिति को भांप कर बेचैन आंदोलित हो जाती है । मन्नो के लिए गये किराए के असबाब को देखकर उसकी आत्मा खिन्न हो उठती है । वह खुद मन्नो से आत्मीयतापूर्ण बातचीत करता है, हमदर्दी दिखाता है । वह मन्नो से मिलने के लिए बुआ की अनुमति की प्रतीक्षा किए बिना भुवाली चला जाता है । रवि मरते - मरते अनुभव करता है कि जब उसमें प्यार की उछलन आती है, तब मीरा (पत्नी) नहीं, मन्नो (प्रेयसी) की आँखें सगी लगती है ।

बुआ जब रवि से कहती है कि मन्नो को अब रहना नहीं है, इसलिए जो हाथ नहीं आ सकता, उसके लिए सोचना ठीक नहीं है, तब रवि के मुँह से निकल पड़ता है - मुझे कौन रहना है ? अपने को रोगी और रोग से दूर रखने का विचार उसके मन में आ नहीं सकता । वह कभी भी इंसानियत से हाथ धो नहीं बैठता ।

बेगानेपन का अनुभावक :

रवि जब खुद क्षयरोग का मरीज बन जाता है और अकेला भुवाली के कॉटेज में पड़े-पड़े अपनी अंतिम घड़ी गिन रहा है, तब वह बेगानापन अनुभव करता है । उसे लगता है कि अकेले में मुँह छिपाकर

रोना कितना पीड़ादायक होता है । उसे याद आता है कि अंतिम बार जब वह मन्नो से बिदा लेकर लौटा था, तब पीछे से मन्नो की सिसकियाँ वह सुन पाया था । अब वह महसूस करता है कि अकेलेपन में रोने में कितनी असहायता होती है, अकेलेपन की कितनी छटपटाहट होती है ।

लोहे के पलंग पर पड़े-पड़े वह जब खिड़की से बाहर धुंध भरे बादलों के घेरे देखता है तब उसे पहले उसमें मन्नो का चेहरा दिखाई पड़ता है और बहुत जल्दी ही उसे उन्हीं बादलों में समा जाने की निश्चित परिणति दिखाई पड़ती है ।

प्रेम और वात्सल्य स्नेह से वंचित बदनसीब इंसान :

रवि इतना बदनसीब है कि वह संपन्न परिवार का होते हुए भी नौकरी पर तैनात होते हुए भी न उसे प्रेयसी का प्रेम मिलता है । खुद रोगी बन जाने के बाद न पत्नी का प्रेम मिलता है । रोगी बनने के कारण वह अपने बच्चों से मिल नहीं पाता । वात्सल्य सुख से वह वंचित रह जाता है । रोग के कारण उसका जीवन दीप अकाल में पीड़ा, घुटन, तनाव और निराशा में निर्वापित हो जाता है । यही उसके जीवन की त्रासदी है ।

3.2.4 कहानी कला के आधार पर समीक्षा :

कृष्णा सोबती की कहानी 'बादलों के घेरे' की कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा करने के लिए इसके सात -तत्वों पर चर्चा की जाती है । ये तत्व हैं -

1) कथावस्तु ; 2) चरित्र -चित्रण ; 3) संवाद ; 4) देश-काल तथा वातावरण ;

5) भाषा -शैली ; 6) उद्देश्य और 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

रवि जब नैनी आता है तब अपनी बुआ के घर मन्नो से उसकी मुलाकात होती है । मन्नो बुआ के जेठ की लड़की है, जो क्षयरोग ग्रस्त होने के बाद भुवाली की कॉटेज में रह रही है और थोड़ी देर के लिए मन बहलाने के लिए नैनी आई है । मन्नो की दुबली -पतली देह की सुन्दरता, शालीन व्यवहार की मिठास और सादगी देखकर रवि के मन में उसके प्रति प्यार हो जाता है । पर बुआ मन्नो की स्थिति की वास्तविकता का खुलासा करके रवि को चेतावनी दे देती है कि तुम्हारे हाथ कुछ नहीं लगेगा । जिसके

लिए सब राह रुकी हों, उसके लिए भटको नहीं ।

रवि को मन्नो के प्रति बुआ का व्यवहार अखरता है । वह बच्चों को मन्नो जीजी से लिपटने नहीं देती । यहाँ तक कि उसके व्यवहार के लिए घर का सामान न देकर सारे असबाब किराए पर लाती है और मन्नो बुआ के व्यवहार से मन ही मन निराश होकर एक ही दिन में भुवाली की कॉटेज में चली जाती है ।

रवि मन्नो से मिलने बुआ को बिना बताए भुवाली चला जाता है । उससे मिलकर रात में डाकबंगले में रुककर फिर सुबह नैनी लौट आता है । दोपहर को फूफा मिलते हैं और उनके अनुरोध पर वह बुआ को बच्चों सहित लखनऊ में पहुँचा कर दूसरे दिन पिताजी के पास जाने की बात बताकर बिदा लेने बुआ के पांव छूता है । बुआ बहुत सुन्दर बहू पाने का आशीर्वाद देती है ।

रवि भुवाली जाने के लिए टिकट खरीदकर प्लेटफार्म पर आ जाता है । पर उसके मन में अचानक इरादा बदल देने का विचार आता है और वह नया टिकट बनवाकर माँ के पास आ पहुँचता है । माँ उसकी शादी की बात चलाती है । रवि नैनी में रहते समय बार-बार भुवाली जाकर मन्नो से मिलता रहता है ।

एक बार रवि मन्नो के साथ झील के किनारे टहलते समय देवी के दो मंदिर देखकर मन्नो पानी के पास उतर जाती है और एक कमल तोड़ लाती है । कमल को बंद दरवाजे की दहलीज पर रखकर माथा टेक देती है । मंदिर खुलवाने को मना करती हुई वह कहती है कि मुझे कौन वरदान मांगने हैं ? अपने लिए तो कपाट बंद हो गए हैं । वह उदारता के साथ कहती है कि जिनसे वह बिछुड़ गई है, उनके लिए कपाट खुले रहें ।

रवि अंतिम बार जब मन्नो से मिलकर आया था, उस दिन वह तीन बार नीचे उतरकर फिर तीन बार ऊपर चढ़कर मन्नो के पास पहुँचा था । लेकिन दोनों में कोई बातचीत नहीं हो पाई थी । रवि जैसे कहना चाहता था कि मैं फिर आऊँगा और मन्नो की निगाह जैसे कह रही थी तुम नहीं आओगे ।

रवि की शादी हो जाती है । मीरा पत्नी बनकर आती है । दांपत्य जीवन में सुख-शांति आती है । उसके एक बेटा और एक बेटी होती है । अचानक विपदाओं के बादलों के घेरे उसके भाग्य के आकाश में उमड़ आते हैं । वह स्वयं क्षयरोगी बनकर परिवार से बिछुड़कर भुवाली की कॉटेज में पड़ा रहता है । एक दिन अपनी दो संतानों को साथ लेकर पत्नी मीरा रानीखेत जाते समय घंटे भर के लिए रवि से मिलने आती है । बेटा -बेटी उससे न लिपटकर दूर से प्रणाम करते हैं । मीरा उसके माथे को चूमकर पीछे हट जाती है और बच्चों को लेकर चली जाती है । रवि को बहुत निराशा होती है । उसे लगता है कि एक दिन खिड़की के बाहर देखते ही देखते वह इन्हीं बादलों में समा जाएगा ।

चरित्र-चित्रण :

'बादलों के घेरे' कहानी में मुख्य पात्र चार हैं । वे हैं - रवि, मीरा, बुआ और मन्नो ।

रवि एक नौकरीपेशा नौजवान है जो बुआ के घर पर आते समय थोड़ी देर के लिए मन्नो को देखकर उसके प्रति आकर्षित हो जाता है । यद्यपि वह बुआ से जान लेता है कि मन्नो क्षयरोगी है, उसकी सेहत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है, वह थोड़े दिन के लिए दुनिया में मेहमान है, फिर भी रवि उससे बार-बार मिलता है, उसके चरित्र में यह विरोधाभास दिखाई पड़ता है कि वह मन्नो को छू नहीं सकता । इसनी रागात्मकता के बाद भी मन्नो के हाथ की बनाई जर्सी को स्वीकार नहीं करता । शादी के बाद मन्नो की कोई खबर नहीं लेता, यहाँ तक कि एक चिट्ठी भी नहीं लिखता । फिर जीवन की अंतिम घड़ी में उसे मन्नो पत्नी मीरा से अधिक अपनी लगती है । उसे प्रेयसी मन्नो की आँखें ही सगी दिखती हैं ।

रवि पत्नी मीरा के साथ खुशी से दिन बिताता है, पर खुद क्षयरोग से आक्रांत होकर भुवाली की कॉटेज में अकेला रहते समय जब पत्नी मीरा बच्चों को साथ लेकर उसे एक बार देखने आती है, तब रवि अकेलेपन की पीड़ा से छटपटाकर एक दिन बादलों के घेरों में समा जाने की कल्पना कर लेता है ।

मीरा रवि की पत्नी है । उन्होंने पति के साथ सुख के दिन बिताए । एक बेटा हुआ, एक बेटी भी हुई । पर पति के टी.बी. मरीज बन जाने के कारण बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए वह पति से दूर रहती है । जब पति से मिलने आती है, तब बड़ी सतर्कता से बच्चों को बाप को छूने नहीं देती । पति से अंतिम बार बिदा लेकर जब चली जाती है, तब पीछे की ओर मुड़कर एक बार भी नहीं देखती ।

बुआ का चरित्र भी विरोधाभास से भरा है । वह खुद बताती है कि किसी समय वह मन्नो के लौटने की राह ताकती थी तो अब मरीज मन्नो के चली जाने की कामना करती है । उसकी निर्ममता इस हद तक पहुँच जाती है कि वह अपने बच्चों को मन्नो से मिलने नहीं देती और उन्हें दूर रखती है । मन्नो को घर का सामान इस्तेमाल करने की सुविधा न देकर उसके लिए किराए का सामान लाती है ।

बुआ ऐसी निर्ममता के बावजूद रात को रवि का हाथ पकड़कर कहती है रवि मैं तुझे नहीं, उस लड़की को दुलारती हूँ ।

बुआ मन्नो के आगमन से अपनी नाराजगी अपने व्यवहार के द्वारा व्यक्त कर देती है । ऐसा वर्ताव रवि को अच्छा नहीं लगने पर भी बुआ पर इसका कोई असर नहीं पड़ता । वह केवल अपने बच्चों की सुविधा के लिए इतना निर्दय बन जाती है । वह नहीं चाहती कि रवि मन्नो से रागात्मक संबंध जोड़े । मन्नो के देहांत के बाद वह मन्नो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए रवि से कहती है कि तुम उसे एक चिट्ठी तो लिख सकते थे ।

मन्नो एक अविवाहित युवती है जो टी.बी. से बीमार होकर अपने घर से दूर एकांत में भुवाली की एक कॉटेज में रह रही है । उसके माँ-बाप का देहांत हो जाने और वह बीमार होने के कारण यद्यपि घर पर चाचा-चाची, भतीजी है , पास रहने से उनको बीमारी हो जाने के डर से वह अकेली रहकर अपने अंतिम दिनों को गिन रही है ।

फिर भी मन्नो के मन में किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है । देवी-दर्शन के प्रसंग में वह रवि को बताती है कि मेरे लिए तो सारे कपाट बंद हैं, पर मैं चाहती हूँ कि यह कपाट उनके लिए खुले रहें, जिनसे बिछुड़कर मैं यहाँ पड़ी हूँ । मन्नो यद्यपि अनुभव करती है कि रवि उसकी ओर आकर्षित है । फिर भी वह रवि को उसे छूने नहीं देती । वह कहती है , रवि जिसे तुम झेल नहीं सकते, उसके लिए हाथ न बढ़ाओ । वह जानती है कि वह संसार में थोड़े दिन की मेहमान है और उसके कारण किसी को कोई तकलीफ न हो । वह बीमारी में भी रवि के लिए जरसी बनाती है और उसके लिए रखती है ।

मन्नो नैनी आकर अनुभव करती है कि चाची उसके आने से खुश नहीं है, वरन् अपने बच्चों को उससे दूर रखने के लिए उन्हें लेकर बाहर चली जाती है, मन्नो इस निष्ठुरता के लिए कोई आक्रोश व्यक्त नहीं करती । वह ज्यादा दिन ठहरने का इरादा न रखकर उसी दिन चाची की अनुपस्थिति में ही घर छोड़कर चली जाती है ।

मन्नो का व्यवहार इतना शालीन है कि सब उसपर खुश हैं । बच्चे मन्नो जीजी ! मन्नो जीजी कहकर उसकी बाँहों से लिपट जाते हैं । साईस उसके साथ विनम्र व्यवहार करता है । मन्नो नौकर-चाकरों को बिदा देते समय इनाम देती है । भुवाली में बूढ़ा नौकर भी उसके प्रति बेटी जैसा व्यवहार करता है ।

उसका अंत भी बहुत करुण होता है । बुआ इसका वर्णन रवि के सामने करते हुए कहती है -'' रात को सोई तो जगी नहीं । अम्मा छुट्टी पर थी, सुबह-सुबह ख्याली अंदर आया, तो साँस चुक गई थी ।''

अकेलेपन तनाव, छटपटाहट, असहायता से जूझते हुए सामाजिक जीवन से निर्वासित एक युवती संसार के सुख-शांति से वंचित होकर अकाल बुझ जाती है ।

संवाद :

संवाद के माध्यम से पात्र अपनी मन:स्थिति तथा चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करते हैं । वे संवाद द्वारा दूसरे पात्रों की विशेषताएँ अभिव्यक्त करने के साथ-साथ संवाद पात्रानुकूल, सरल, प्रभावोत्पादक और स्वाभाविक होने चाहिए ।

बुआ साँस लेकर रवि से कहती है-'' मन्नो से मिलो रवि, दो ही दिन वहाँ रुकेगी ।'' बुआ मन्नो

से बच्चों को अलग करके उससे कहती है -'' जाओ, मन्नो, कहीं घूम आओ । तुम्हें उलझा-उलझाकर तो ये बच्चे तंग कर डालेंगे ।'' इनसे बुआ की रुक्षता का परिचय मिलता है । पर दूसरे क्षण में वह मन्नो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए रवि से कहती है - मैं वर्षों से उसे देखती आई हूँ और आज पत्थर-सी निष्ठुर हो गई हूँ । ..... कभी छुट्टी के दिन उसकी बोर्डिंग से आने की राह तकती थी । अब उसके आने से पहले उसके जाने के क्षण के बारे में सोचती हूँ और डरकर बच्चों को लिए घर से बाहर निकल जाती हूँ ।'' इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि यद्यपि बुआ सहानुभूतिशील है, पर परिस्थितिवश अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए कड़ाई से बर्ताव करती है ।

रवि के मन में मन्नो के प्रति बढ़ते हुए प्यार को देखकर बुआ उसे एक अभिभावक के नाते चेतावनी देती है -'' रवि, कुछ हाथ नहीं लगेगा । जिसके लिए सब राह रुकी है, उसके लिए भटको नहीं ।'' फिर मन्नो की मौत के उपरांत रवि से लखनऊ में मिलते समय बुआ दर्द से बोलती है-'' रवि, एक बार उसे पत्र तो लिखते ।''

रवि जब अपनी पत्नी मीरा के साथ रहता था, तब मीरा उसे जगाने के लिए कहती थी -उठोगे नहीं ... भोर हो गई । जब वह भुवाली की कॉटेज में रवि से अंतिम बार मिलने आती है, तब सुरक्षा के लिए बच्चों को दोनों हाथों से घेरे के अंदर लेकर सिर्फ इतना कहती है -''मुन्ना-रानी प्रणाम करो बेटा ।'' इससे वह अपने पति से कितना दूर हो गई है, उसका पता चलता है ।

मन्नो के इस कथन से उसकी निराशा, असहायता के साथ दूसरों के प्रति सद्भावना व्यक्त होती है -'' नहीं रवि, ऐसा कुछ नहीं मुझे कौन वरदान मांगने है । अपने लिए तो कपाट बंद हो गए हैं । बस, इतना ही चाहती हूँ, यह कपाट उनके लिए खुले रहें, जिनसे बिछुड़कर मैं आ पड़ी हूँ ।''

देशकाल तथा वातावरण :

वातावरण को कहानी का प्राण तत्व कहा जा सकता है । क्योंकि वातावरण के आधार पर ही कथानक का भवन खड़ा रहता है । स्वाभाविक वातावरण कहानी को जीवंत बना देता है और पाठक के हृदय को आकर्षित कर लेता है । इससे कहानी की काल्पनिकता भी यथार्थ प्रतीत होती है ।

इस कहानी में अकेलेपन , असहायता, जीवन की व्यर्थता, तनाव और छटपटाहट को व्यक्त करने के लिए परिवेश को भी समाज निरपेक्ष बना दिया गया है । परिवेश का अकेलापन जीवन के अकेलेपन को अभिव्यक्त करता है । क्षयरोगग्रस्त रवि समाज और परिवार से दूर कॉटेज में पड़ा रहता है और अपनी अंतिम घड़ी गिनता है । वह खुद परिवेश के बारे में इस प्रकार सोचता है -मैं लेटे-लेटे अपने तन का पतझार देखता हूँ ... पहाड़ी हवाएँ मेरी उखड़ी -उखड़ी साँस की तरह कभी तेज, कभी हौले, इस खिड़की से टकराती है । मेरे प्राणों की धड़कने हर क्षण बंद हो जाने के डर में चूक जाती हैं ।

रवि जब अपनी मृत्यु की निश्चितता से अवगत हो जाता है तब उसके मन की भावना इस प्रकार फूट पड़ती है - आए दिन दवा के नए बदलते हुए रंग देखकर अब इतना तो जान गया हूँ कि इस छूटते -छूटते तन में मन को बहुत देर भटकन नहीं है । एक दिन खिड़की से बाहर देखते -ही -देखते इन्हीं बादलों में समा जाऊँगा ... इन्हीं घेरों में ... ।

अनाथ युवती मन्नो अपनी चाची से जो स्नेह पा नहीं सकती, वह नौकरों से मिल जाता है । नौकर और माली झुककर उसे सलाम करते हैं । भुवाली में बूढ़े नौकर को वह बाबा कहकर संबोधित करती है और बाबा उसे बिटिया कहकर स्नेह प्रकट करता है ।

भुवाली में पत्नी मीरा रवि से मिलने आती है, पर कुछ नहीं बोलती । रोग के भय से अपने बच्चों को उनके पिता से मिलने नहीं देती । वह बच्चों को आदेश देती है - मुन्ना-रानी प्रणाम करो बेटा ! बच्चे जब दूर से झिझक से बंधे हाथ उठाकर प्रणाम करते हैं, तब परिवेश अत्यंत दुखद हो जाता है । अकेलेपन की पीड़ा तब बढ़ जाती है जब रवि को छोड़कर पत्नी बच्चों को लेकर चली जाती है । कोई पीछे नहीं देखता है । बेटी का हिलता गुलाबी रिबन जैसे उसकी आँखों से कहता है -पापा हम चले गए ।

भाषा -शैली :

यह कहानी आधुनिक परिवेश में पले शिक्षित पात्रों से संबंधित है । इसलिए भाषा में आलंकारिकता है, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी बहुत हुआ है । रवि की भाषा में कल्पनाशीलता है - सामने पहाड़ के रूखे हरियाले में रामगढ़ जाती हुई पगडंडी मेरी बाँह पर उभरी लंबी नस की तरह चमकती है । बुआ की भाषा में कभी रुक्षता है तो कभी सहानुभूति टपक पड़ती है । मन्नो की जिन्दगी की सारी रौनक खतम हो गई है, इसलिए उसकी भाषा में निरीहता है । कभी-कभी नीरवता ही उसकी भावना को व्यक्त करती है ।

उद्देश्य :

इस कहानी में लेखिका कृष्णा सोबती का कहने का उद्देश्य यही है कि जब कोई किसी रोग के कारण समाज और परिवार से बहिष्कृत हो जाता है, तब उसे निराशा - असहायता और अकेलेपन में जीवन के आखिरी क्षण को गिनना पड़ता है । ऐसी स्थिति में उनके प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए । उनकी सहायता कर देनी चाहिए लेखिका का रवि के माध्यम समाज को सही संदेश देना चाहती है ।

शीर्षक :

'बादलों के घेरे' शीर्षक प्रतीकात्मक है । टी.बी. का मरीज रवि बाहर पानी भरे, सूखे-सूखे बादलों के घेरे देखता है । मानो ये बादल भी उसके भाग्याकाश में घिरे हुए दुर्दिन के बादल हैं । दुःख, पीड़ा, निराशा, असहायता, बेगानेपन के बादल हैं । जिनमें उसे एक दिन समा जाना है । ये ही बादल उसके अकेलेपन के साथी हैं । इनकी गोद में ही शरण लेनी है । निश्चिह्न हो जाना है ।

यह कहानी कहानी-कला की दृष्टि से एक सफल कहानी सिद्ध होती है ।

***

वापसी

3.3.1 लेखिका - परिचय :

उषा प्रियंवदा का जन्म उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ था । उनकी शिक्षा-दीक्षा कानपुर और इलाहाबाद में हुई । वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की अध्यापिका रहीं । बाद में विदेश में अध्यापना कार्य कर रहीं है ।

वे अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में लिखती हैं । उन्होंने उपन्यास और कहानियाँ साथ-साथ लिखी हैं । 'पचपन खंभे लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका' उनके बहुचर्चित उपन्यास हैं । उनकी कहानियाँ अनुभूतिजन्य हैं । अपने लेखन के संबंध में उनके विचार इस प्रकार हैं - ''मेरी कहानियों के पीछे एक बीज जरूर होता है - एक विचार, एक इमेज, एक अनुभव या एक अनुभूति का ।.... मेरी प्रिय कहानियाँ वे हैं, जो एक फ्लैश में जन्मी और मैंने लिख डाला .... सृजन -क्रिया मेरे अंतर्मन में बराबर चलती रहती है ..... हर दिन इस इंतजार में गुजरता है कि न जाने कब, क्या मन को यों छू ले कि एक नई कहानी की शुरूआत हो जाए ।''

3.3.2 कथासार :

'वापसी' कहानी पारिवारिक समस्याओं पर आधारित कहानी है । इसमें लेखिका उषा प्रियंवदा ने आधुनिक युगीन परिवर्तित परिस्थिति की युवा पीढ़ी की मानसिकता और पुरानी पीढ़ी की मान्यताओं के बीच पड़ी दरार को बड़ी सूक्ष्मता से दिखाया है । भावनात्मक आदान -प्रदान की समाप्ति से परिणाम स्वरूप उसके मन में अवसाद और घुटन भर जाती है । और जीवन में अकेलापन, छटपटाहट महसूस करती है । पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में गजाधर बाबू मानो ये सारे दु:ख झेलने को अभिशप्त हैं । जीवन -संघर्ष में चैन की साँस लेने को फुर्सत न पाने वाले गजाधर बाबू केवल स्नेह की आकांक्षा रखते थे । सेवामुक्त जीवन में वह भी जब उनको नसीब नहीं होता, तो एक थके-हारे इनसान की तरह वे अपने परिवार से दूर रहने को बेहतर समझते हैं । यही उनकी नियति है ।

इस कहानी में आधुनिक जीवन -परिवेश की कृत्रिमता बिखरते -बिगड़ते संबंध मध्यवित्तीय परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ विघटनशील संयुक्त परिवार, अलगावपन, वैचारिक भिन्नता पुरानी पीढ़ी के प्रति अशालीन व्यवहार, मिथ्या आत्म सम्मान बोध नई पीढ़ी में उत्तरदायित्व का अभाव बुजुर्गों के

प्रति उपेक्षा और बुजुर्गों का मानसिक तनाव आदि चित्रित हुए हैं ।

कहानी में गजाधर बाबू मुख्य चरित्र हैं । वे पैंतीस साल तक रेलवे में नौकरी कर चुकने के बाद अवकाश ले चुके हैं । उन्होंने शहर में एक छोटा-सा मकान बना लिया है । बच्चों की पढ़ाई और भविष्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने परिवार को शहर में रहने दिया और अधिकतर समय परिवार से दूर अकेले रेलवे क्वार्टर में रहने को विवश हुए । अवकाश प्राप्त होने के बाद पुन: अपने परिवार के साथ सुख-शांति से रहने की मधुर कल्पना से अभिभूत होकर उन्हीं दिनों की प्रतीक्षा करने लगे थे ।

उनको कभी-कभी अपने वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक दिनों की याद आ जाती है । स्टेशन से वापस आने तक उनकी पत्नी उनकी प्रतीक्षा करती रहती थी । पत्नी उनको गरम-गरम रोटियाँ बड़े प्यार से खिलाती थी । पत्नी की सलज्ज आँखों की मुस्कराहट उनकी थकावट दूरकर देती थी । वे भी बच्चों से खेलते -बोलते और पत्नी से हँसी-मजाक करते थे ।

वे फिर अकेले जीवन के सूनेपन को भरने पुन: परिवार से रहने की कल्पना में क्वार्टर छोड़ने के दु:ख को भूलने का प्रयास करते हैं । रानीपुर में पैसेंजर भले ही लेट पहुँचे पर गनेशी उन्हें समय पर गरम पूरियाँ और जलेबियाँ परोस देता था । पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई डालकर कांच के गिलास में ऊपर तक भरी बढ़िया चाय दे देता था ।

जब वे क्वार्टर छोड़कर घर जाने की उतावली में है तब गनेशी उनका बिस्तर बांध देता है । उनकी पसंद का ख्याल रखकर गनेशी की पत्नी बेसन के कुछ लड्डू भेज देती है । इतने आदर और परिचित संसार छोड़ने को गजाधर बाबू विवश हैं, इसलिए विषादित हो जाते हैं । गनेशी को बेटी की शादी कर देने और जरूरत पड़ने पर सहायता करने का आश्वासन देते हैं । पत्नी और बाल-बच्चों के साथ रहने और वर्षों बाद भरे-पूरे परिवार का आनन्द की कल्पना से नौकरी के जीवन से बिछुड़ने का दु:ख उन्हें नहीं सता पाता । उनकी आशा है कि उनकी उपस्थिति में परिवार में खुशहाली छा जाएगी । परिवार में उनका भव्य स्वागत होगा । खुशी से सभी का मन -मयूर नाच उठेगा । उन्होंने भी परिवार के मुखिया के रूप में अपना उत्तरदायित्व निष्ठापूर्वक निभाया है । वे बड़े लड़के अमर और बड़ी लड़की कांति की शादियाँ कर चुके थे । नरेन्द्र और बसंती कॉलेज में पढ़ रहे थे । शहर में भी एक मकान बनवा लिया था ।

गजाधर बाबू घर पहुँच जाते हैं तो अपनी आशा के अनुरूप उनका स्वागत नहीं होता । सब उनकी उपस्थिति से असहज भाव का अनुभव करते हैं । किसी को बेरोकटोक आजादी नहीं मिल पाती । सब गजाधर बाबू से कटे हुए रहते हैं । गजाधर बाबू अपने घर पर एक अनचाहे मेहमान बन जाते हैं । जीवन साथी पत्नी भी उनकी भावनाओं का आदर नहीं करती न उनके प्रति कोई हमदर्दी रखती है । पत्नी ठंडे दिल से कोई सलाह मशविरा नहीं करती, बल्कि अपनी खीझ और शिकायत से गजाधर बाबू

के दिल को ठेस पहुँचाती है । गजाधर बाबू को पत्नी की बेदर्दी और दिल दुखाने वाली बात बहुत अखरती है ।

गजाधर बाबू परिवार के मुखिया होने के नाते परिवार की मान-मर्यादा को बरकरार रखने, सेवा-निवृत्त होने के बाद कम हो गई सीमित आय से परिवार के पोषण में किफायती लाने बच्चों को अपने उत्तरदायित्व के प्रति जागरुक करने के लिए पहला कदम उठाते हैं । पर हर प्रयास में वे असफल रहते हैं ।

गजाधर बाबू से कोई दिल खोकर बात नहीं करते उनको समय पर चाय मिलने की बात तो दूर मांगने पर ही चाय मिलती है वह भी फीकी । उनको नाश्ते के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है । उनकी पत्नी पूजा-पाठ समाप्त करके चौके में आती है वह ही अकेली रसोई का सारा काम संभालती है । बहू -बेटी उसकी बातों पर ध्यान नहीं देतीं । उसकी सहायता भी नहीं करती । वह सिर्फ शिकायत करती है । वह यह कहकर अपनी नाराजगी जाहिर करती है कि गृहस्थी चलाते हुए वह बूढ़ी हो गई पर न मन का पहना न ओढ़ा । वह बेटी बसंती के आचरण से खिन्न है । शीला के घर में बड़े-बड़े लड़के हैं और उसके घर पर बे हर वक्त घुसा रहना उसे नहीं सुहाता । पर बेटी बात नहीं सुनती है । अमर के मित्रों का अपना और बैठक में बैठकर बहू का उनसे मिलना उसे अच्छा नहीं लगता, पर उसकी कोई परवाह नहीं करता । गजाधर बाबू बच्चों की झूठी शान-शौकत, बेदर्दी, उद्दण्डता, उत्तरदायित्व हीनता से तंग आ जाते हैं । उनके सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं और मधुर कल्पना मुरझा जाती है । वे परिवार में अनुशासन लाने के लिए पहले बसंती को पढ़ने का काम सुबह करके शाम को खाना बनाने का भार सौंपते हैं । वे बहू पर दिन का खाना बनाने का भार सौंपते हैं । खर्च में कटौती करने के लिए वे नौकर को छुड़ा देते हैं । शीला के घर जाते -समय वे बसंती को रोक देते हैं । पर परिणाम उल्टा होता है ।

बसंती जानबूझकर खाना खराब बनाती है । उसके स्वच्छन्द घूमने -फिरने पर पाबंदी लग जाने से वह रुठकर पिताजी से रूठकर बोलना बंद कर देती है । उनसे छिपकर घर के पिछवाड़े से आती -जाती है और उनसे बचकर रहने लगती है । बेटी का ऐसा व्यवहार गजाधर बाबू को मर्माहत पीड़ा देता है । बेटी की शादी के लिए उनका उत्साह दब जाता है ।

गजाधर बाबू का आदेश मान कर बहू सुबह का खाना बनाती है, पर काम में उसका कोई लगाव नहीं है । वह चौका खुला रखकर कहीं चली जाती है तो बिल्ली घुसकर दाल की पतीली गिरा देती है । वह बेदर्दी से पन्द्रह दिन का राशन पांच दिन में समाप्त कर देती है । अमर को वे मौके-बेमौके टोक देते हैं तो वह अलग रहने की अपनी इच्छा माँ के माध्यम से गजाधर बाबू तक पहुँचा देता है । वे नौकर को छुड़ा देने से बेटा-बहू बेटी सब अपनी-अपनी नाराजगी बता देते हैं । नरेन्द्र साइकिल पर गेहूँ लेकर आटा पिसाने को मना करता है तो बसंती कालेज से आकर झाड़ू लगाने से इनकार करती है । बहू व्यंग्य

से अमर को बताती है कि बाबूजी ने खर्च काटने के लिए नौकर को निकाल दिया है । अमर चाहता है कि वे चुपचाप पड़े रहें, किसी काम में दखल न दें ।

गजाधर बाबू अपने घर में एक अनचाहे मेहमान की तरह बन गए हैं । घर में पर्याप्त कमरों का अभाव होने से गजाधर बाबू के लिए बैठक के एक कोने में एक छोटी-सी चारपाई डाल दी जाती है । इससे अमर के दोस्तों के आने - जाने में एक प्रकार से अघोषित प्रतिबंध लग जाता है । गजाधर बाबू को उस दिन बड़ा सदमा पहुँचता है जिस दिन उनकी चारपाई बैठक से हटाकर पत्नी की कोठरी में गठरियों और कनस्तरों के बीच डाल दी गई थी । गजाधर बाबू सोचते हैं कि घर में चारपाई की तरह उनकी उपस्थिति अस्थायी और अनावश्यक समझी जाने लगी है । वे परिवार के लिए अनचाहे, अनजाने मेहमान की तरह हैं । उनकी आत्मीयता भरी जिन्दगी की चाह मुरझा जाती है । वे परिवार में रहकर भी अकेलेपन का अनुभव करते हैं । वे अब अनमने रहने लगे । वे परिवार के किसी काम में दखल न देने का निर्णय ले लेते हैं । वे नरेंद्र से कारण बिना पूछे उसके मांगने के मुताबिक उसे पैसे दे देते हैं । देर रात का बसंती को लौटने पर भी उसे नहीं डाँटते । अपनी आँखों के सामने घर में फैल रही अस्त व्यवस्था को देखते हुए भी उसमें वे हस्तक्षेप नहीं करते । इस पर भी वे घर का अंग बन नहीं पाते ।

गजाधर बाबू की पत्नी भी पति के दिल के आघात को समझ नहीं पाती । वह पति के सुख-दु:ख में हिस्सा नहीं लेती । उनके मन की गहराई में उठने वाले तूफान को देख नहीं पाती । वह पति के सामने दो वक्त भोजन की थाली रख देने के बाद अपने कर्त्तव्य से छुट्टी पा जाती है । अब पत्नी के जीवन के केन्द्र में पति नहीं चौका ही रह गया था । सजी हुई बैठक में चारपाई की उपस्थिति जिस प्रकार असंगत लगती थी, उसी प्रकार परिवार में गजाधर बाबू की उपस्थिति भी असंगत प्रतीत हुई । उनको लगा कि सभी उन्हें पैसे कमाने वाला एक यंत्र समझते रहे । पैसे कमाने के लिए उन्हें कितना कष्ट झेलना पड़ा , कितने साल तक नि:संग जीवन बिताना पड़ा, उसके प्रति किसी का ध्यान नहीं जाता । किसी को उनके प्रति सहानुभूति नहीं होती । घर का मालिक होकर भी घर में उपेक्षित जीवन व्यतीत करना उन्हें असहनीय लगा । उनको लगा कि वे जिन्दगी हार गए हैं । उनको लगा कि नौकरी के दौरान उनका बीता हुआ जीवन आत्मीयता भरा, सुखद और खोई हुई निधि-सा प्रतीत हुआ । घर छोड़कर कहीं वे वापस चले जाने का निश्चय कर लेते हैं ।

संयोग से उन्हें रामजीमल चीनी मिल में नौकरी मिल जाती है । वे परिवार के सामने व्यक्त करते हैं कि घर में खाली बैठे रहने की अपेक्षा फिर से नौकरी करके कुछ कमा लें । घर में चार पैसे आएँ तो अच्छा है । वे यह भी बता देते हैं कि अवकाश पाकर लौटने के बाद परिवार के साथ रहने की चाह तो मन में थी, पर मुझे नौकरी करने जाना होगा ।

वे अपनी पत्नी से साथ चलने का प्रस्ताव रखते हैं तो पत्नी गृहस्थी और अविवाहित लड़की को

छोड़कर जाने को तैयार नहीं होती । गजाधर बाबू हतशा भरे स्वर में कहते हैं कि मैंने वैसे ही कह दिया था, पर तुम यहीं रहो । फिर वे अकेले जाने को तैयार हो जाते हैं । इससे सब खुश नजर आते हैं । नरेन्द्र उनका बिस्तर बांध देता है और रिक्शा बुला लाता है । उनके चले जाने के बाद परिवार में फिर से स्वाभाविकता लौट आती है । सभी को मनमाफिक आजादी मिल जाती है । सभी के रास्ते से अड़चन डालने वाला एक काँटा निकल जाता है । सभी चैन की सांस लेते हैं । इस खुशी से बहू और बेटी अमर से सिनेमा देखने जाने का अनुरोध करती हैं । पत्नी अपने कमरे से चारपाई हटा देने को कहती है । गजाधर बाबू की वापसी नौकरी की जगह से घर में नहीं, बल्कि घर से नौकरी की जगह पर हो जाती है ।

3.3.3 चरित्र-चित्रण :

गजाधर बाबू - मध्यवर्गीय परिवार के एक व्यक्ति हैं । उनकी चार संतानों में से अमर और कांति की शादी हो गई है तथा नरेन्द्र और बसंती कालेज में पढ़ रहे हैं । उन्होंने पैंतीस साल तक रेलवे में नौकरी की और जहाँ रहे वहाँ लोगों से बड़ी आत्मीयता रही । उन्होंने शहर में एक मकान बना लिया है । उसी शहर में अमर भी नौकरी करता है । बच्चों की पढ़ाई का ख्याल रखकर वे परिवार से दूर नौकरी करते रहे और पत्नी बच्चों सहित शहर में रही । इस आशा से लम्बे -अरसे तक वे नि:संग जीवन बिता देते हैं कि सेवा-निवृत्त होकर वे चैन से परिवार के साथ रह सकेंगे । यही सुखद कल्पना लेकर वे गनेशी से भावभीनी विदाई लेकर घर पहुँचते हैं । पर घर में पहुँकर उनके सारे सपने चकनाचूर हो जाते हैं । उनका हार्दिक स्वागत नहीं होता । कुछ दिनों में वे घर पर एक अनचाहे मेहमान बन जाते हैं । वे अपने घर में अकेले और अजनबी बन जाते हैं और अपनी अस्मिता की खोज में टूट जाते हैं । उनकी कल्पना थी कि परिवार में जब उनकी वापसी होगी, तब उनकी जिन्दगी में रौनक आ जाएगी, पर वास्तविकता यह हुई कि परिवार में रहकर उनका दम घुट जाता है । फिर घर से निकलकर कहीं चले जाने में वे अपनी कुशल और रौनक भरी जिन्दगी में वापसी समझने लगते हैं ।

कर्त्तव्य परायण : - गजाधर बाबू कर्त्तव्य परायण व्यक्ति हैं । वे रेलवे में नौकरी करते समय बड़ी कुशलता से अपना कर्त्तव्य और दायित्व का निर्वाह करते हैं । पैसेंजर ट्रेन स्टेशन में आने से पहले वे तैयार होकर काम पर पहुँच जाते हैं और दोपहर को काम खतम करके लौटते हैं । वे अपने बच्चों के भविष्य के प्रति जागरूक हैं और इसलिए अपनी सीमित आय से संचय करके शहर में एक मकान बनाया । वहीं उन्होंने पत्नी और बच्चों को रहने दिया । बच्चों की शिक्षा दीक्षा का उचित प्रबंध किया । वे खुद वर्षों तक परिवार से दूर रहे पर कर्त्तव्य में ढील नहीं दी । इस कर्त्तव्य परायणता के परिणाम स्वरुप उन्हें अवकाश प्राप्ति के बाद भी रामजीमल मिल में नौकरी मिल जाती है ।

स्नेही व्यक्ति - गजाधर बाबू अत्यंत स्नेही व्यक्ति हैं । वे स्नेह की आकांक्षा भी रखते हैं । वे ड्यूटी से लौटकर पत्नी और बच्चों से मनोविनोद करते हैं । स्नेह के कारण चीनी मिल के लोग उनसे मिलने आते हैं । गनेशी उनका स्नेह पाकर कृतकृत्य हो जाता है । स्नेह के कारण गनेशी की पत्नी उनके लिए बेसन के लड्डू बनाकर भेज देती है । वे गनेशी को अगहन तक बेटी की शादी कर देने की सलाह देते हैं और जरूरत पड़ने पर आर्थिक सहायता करने का आश्वासन देते हैं ।

कल्पनाशील - गजाधर बाबू कल्पनाशील व्यक्ति है । क्वार्टर में अकेले रहते समय वे पत्नी और बच्चों के साथ रहने की सुखद स्मृति को याद करके विभोर होते हैं । उनकी पत्नी की स्नेहपूर्ण बातें, लजीली आँखों की मुस्कान, प्रतीक्षा याद आती है । अवकाश प्राप्त करके फिर परिवार में स्नेह-श्रद्धा से रहने की कल्पना उनकी सेवा निवृत्ति के विछोह को कम कर देती है । पर घर पर पहुँचकर जीवन -जगत की वास्तविकता को पहचानकर उनका हृदय विक्षुब्ध हो उठता है ।

आदर्शवादी – गजाधर बाबू पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति होने के नाते पारिवारिक मर्यादा, नैतिक मूल्यबोध, संवेदनशील पारिवारिक जीवन के प्रति उनकी अपार श्रद्धा है । वे झूठी शान-शौकत की जगह अपनी हैसियत का ख्याल रखने के पक्षधर हैं । उनमें कर्त्तव्य भावना, त्याग, अनुराग, नि:स्वार्थपरता, कर्मकुशलता, श्रम के प्रति श्रद्धा सहृदयता, मानवीयता आदि गुण भरे हैं । पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में भाई वैचारिक -भिन्नता, प्रदर्शनप्रियता, विद्रोह भावना से वे व्यथित हो जाते हैं ।

लम्बे अरसे तक बच्चों से अलग रहने के कारण बच्चों पर उनके आदर्श का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है । वे उद्दण्ड, स्वेच्छाचारी, अहंकारी, कर्म-भीरु, कर्त्तव्य के प्रति उदासीन बन गए हैं । वे घर के मुख्य होने के कारण गलत तौर-तरीकों पर अंकुश लगाना चाहते हैं । वे बेटी का दूसरों के घर में जाना, माँ की सहायता न करना, पढ़ाई में लापरवाही होना आदि देखकर व्यथित हो जाते हैं । बहू का बेटे के मित्रों से मिलना, सास की सहायता न करना, काम से छुटकारा पाने के लिए जानबूझकर जल्दी अधिक - से - अधिक राशन खतम कर देना अच्छा नहीं लगता । विवाहित और नौकरी करनेवाले बेटे को भी झिड़कियाँ सुना देते हैं । आधुनिक की कृतिमता, झूठे दिखावे के प्रति उनके मन में सख्त नफरत है । तंगी की हालत सुधारने के लिए वे नौकर को काम से छुड़ा देते हैं । स्वयं बुढ़ापे में भी काम करने को तैयार हैं ।

मानसिक वेदना से आहत : - लम्बे अरसे तक परिवार से अलग रहकर सेवा-निवृत्त होकर गजाधर बाबू घर पर पहुँचते हैं तो उनका आशानुरूप भव्य स्वागत नहीं होता । उनके आगमन से सभी की स्वच्छन्दता व्याहत होती है । सब उनकी उपस्थिति में नाखुश होते हैं तो उनकी आत्मा गहरी वेदना से छटपटाती है । सब उनकी अवहेलना और अनादर करते हैं । उनको यथोचित सम्मान नहीं मिलता, वरन दूसरों के व्यंग्य बाण से वे तिलमिला उठते हैं । कोई उनको अपने सुख-दु:ख में शामिल

नहीं करते । पत्नी के व्यवहार में भी अपनापन महसूस नहीं कर पाते । बेटी बसंती उनसे रूठकर बोलना बंद कर देती है । अमर उन्हें किसी कार्य में दखल न देने की चेतावनी दे देता है । वे अनुभव करते हैं कि यौवन के प्रथम चरण में आत्मीयता दिखाने वाली पत्नी समय के प्रवाह में बुढ़ापे में पराया जैसा व्यवहार करती है । वह बच्चों को छोड़कर उनके साथ जाने को राजी नहीं होती तो गजाधर बाबू सब की उपस्थिति में भी अकेले पड़ जाते हैं । उनको लगता है कि मैं जीवन से हार गया हूँ । वे हर तरफ से टूट जाते हैं । अस्मिता की खोज, अकेलेपन की यातना और पराजय की घुटन उनके जीवन को अभिभूत कर देती है । सुहानी कल्पना लेकर घर वापस आनेवाले गजाधर बाबू को जब घर छोड़कर चीनी मिल में नौकरी करने के लिए सच्चे मायने में वापसी हो जाती है, तब यह उनके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाती है ।

उदासीन - गजाधर बाबू घर वापस आ जाते हैं तो घर में एक अस्वाभाविक माहौल हो जाता है । उनके लिए बैठक में एक छोटी-सी चारपाई डाल दी जाती है जैसे कि किसी बाहर के आदमी के लिए अस्थायी व्यवस्था कर दी जाती है । फिर जब बैठक में अमर के दोस्तों के आने-जाने में असुविधा होती है तो चारपाई पत्नी के छोटे-से कमरे में लगा दी जाती है । गजाधर बाबू की राय लेने की जरूरत कोई महसूस नहीं करता । यह घटना उनके दिल को मर्मांतक पीड़ा पहुँचाती है । परिणाम स्वरूप उनके परिवार के लोगों के साथ भावनात्मक आदान-प्रदान की संभावना समाप्त हो जाती है । दूसरों की उपेक्षा उनको उदासीन बना देती है । वे सोचते हैं कि घर के मालिक के लिए घर में चारपाई डालने की जगह नहीं है, तब उसे जहाँ भी डाल दिया जाएगा, वे वहीं पड़े रहेंगे । पत्नी उनके दिल की बात जब समझ नहीं पाती तो वे पत्नी से भी उदासीन हो जाते हैं । बेटी बसंती उनसे जब नहीं बोलती है तब उनको असहनीय वेदना होती है । वे अब उसकी शादी के लिए उत्साह नहीं दिखाते । बेटा और बहू के व्यंग्य-बाण से वे छटपटाते हैं । अमर का घर से अलग हो जाने का विचार सुनकर वे स्तंभीभूत हो जाते हैं । वे उदासीन हैं तो बेटा-बेटी इसका नाजायज फायदा उठाते हैं । नरेंद्र उनसे रुपये मांग लेता है तो बसंती अंधेरा छा जाने के बाद पड़ोस से लौटती है । उनके मन में पिताजी के प्रति श्रद्धा नहीं है, परवाह भी नहीं है । वे अब समझ जाते हैं कि उनकी कमाई पर सब ऐश की जिन्दगी बिताना चाहते हैं, तब वे परिवार से उदासीन होकर उनसे कहीं दूर चले जाने का निर्णय लेते हैं । जब वे सभी के सामने चीनी मिल में नौकरी करने जाने का प्रस्ताव रखते हैं, तब सब इसका स्वागत करते हैं क्योंकि उन्हें अब उन्मुक्त स्वच्छन्दता और एकाधिपत्य का अवसर मिल जाएगा । गजाधर बाबू भी परिवार के दम घुटाऊ वातावरण में तिल-तिल जलने की अपेक्षा बाहर के लोगों के आत्मीयतापूर्ण वातावरण में चैन की सांस लेने को बेहतर समझ कर रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी करने चले जाते हैं । ईमानदारी से जिन्दगी में फर्ज निभाने वाले गजाधर बाबू एक थके हुए, हारे हुए सैनिक की भाँति कहानी से विदा ले लेते हैं । उनकी वापसी घर के भीतर नहीं, घर से बाहर हो जाती है । उनके जीवन की यही बड़ी त्रासदी बड़ी वेदनादायक है ।

3.3.4 कहानी -कला की दृष्टि से समीक्षा :

उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' एक चरित्र प्रधान कहानी है । इसमें मुख्य पात्र गजाधर बाबू के जीवन में घटनेवाली घटनाओं के माध्यम से पुरानी पीढ़ी और नवीन पीढ़ी की मानसिकता में आए अंतर के कारण समाज में फैली विसंगतियों और विडम्बनाओं की भयानकता को उजागर किया गया है । गजाधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतीक के रूप में ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, आदर्शवादी, कर्म के प्रति श्रद्धालु, कुलीन, मर्यादा के प्रति सजग, अपनी हैसियत के अनुसार जीने वाले, विनोदी , संयुक्त परिवार की स्थिति को बरकरार रखने वाले मानवीय गुणों के प्रशंसक, सहानुभूतिशील व्यक्ति के रूप आते हैं । उनके बेटे-बेटी-बहू नवीन पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं । वे आदर्शहीन, हृदयहीन, आडम्बरप्रिय, झूठे प्रदर्शन प्रिय स्वार्थी, कुलीन मर्यादा को ताक पर रखने वाले, कर्म विमुख, संयुक्त परिवार को तोड़ने वाले, कटुभाषी और बुजुर्गों के प्रति अशिष्ट हैं । लेखिका ने यहाँ गजाधर बाबू की आंतरिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करके समाज में वृद्धों की समस्याओं तथा भोगे हुए जीवन का यथार्थ प्रस्तुत किया है ।

कहानी -कला की दृष्टि से इस कहानी की समीक्षा करने से यह एक सफल कहानी सिद्ध होती है । कहानी के निम्न लिखित तत्वों के आधार पर इसकी समीक्षा की जा सकती है ।

ये तत्व हैं -1) कथावस्तु, 2) चरित्र-चित्रण, 3) संवाद, 4) देश-काल तथा वातावरण, 5) भाषा-शैली, 6) उद्देश्य तथा 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

'वापसी' कहानी के मुख्य पात्र गजाधर बाबू रेलवे में पैंतीस साल तक नौकरी करने के उपरान्त सेवा-निवृत्त होते हैं । अपने बच्चों की उचित शिक्षा-दीक्षा को ध्यान में रखकर उन्होंने शहर में एक मकान बनवाया और वहीं अपनी पत्नी और बच्चों को रहने दिया । वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक दिनों में वे पत्नी और बच्चों के साथ रेलवे क्वार्टर में रहते थे, पर बाद में लम्बे अरसे तक क्वार्टर में अकेले रहकर नौकरी करते रहे । इस समय वे परिवार से दूर नि:संग जीने का कष्ट इस आशा से सह गए कि सेवा-निवृत्त हो जाने के बाद वे पुन: परिवार के साथ रहकर सुख-शांति से शेष - जीवन बिता देंगे ।

वे घर पर पहुँचते हैं तो अनुभव करते हैं कि उनके आगमन से कोई सुखी नहीं हैं । सबके स्वच्छन्द आचरण पर जैसे अघोषित नियंत्रण लागू हो जाता है । वे परिवार के सर्वमय कर्त्ता होने पर भी उनके लिए बैठक में एक चारपाई डाल दी जाती है । इससे भी बहू-बेटे को असुविधा होती है, क्योंकि अमर के दोस्तों का बेरोकटोक आना-जाना, बैठक में बातें करना संभव नहीं हुआ । अत: उनकी

चारपाई बैठक से हटा दी जाती है और पत्नी के छोटे-से कमरे में कनस्तरों के बीच लगा दी जाती है । इसके लिए उनसे कोई भी कुछ नहीं पूछता । वे अपने घर में अनचाहे मेहमान बन जाते हैं । घर पर वे देखते हैं कि सब अनुशासन हीन हैं । पत्नी से पूछ कर वे पता कर लेते हैं कि अमर और उसकी पत्नी दोस्तों से मिलना पसंद करते हैं । बेटी बसंती पढ़ाई का बहाना करके पड़ोस में घूमती -फिरती है । नौकर ईमानदारी से काम नहीं करता । वे घर की आर्थिक स्थिति को बिगड़ने न देने के लिए नौकर को छुड़ा देते हैं । बहू को सुबह का खाना और बेटी को शाम का खाना बनाने का आदेश देते हैं । परिणाम उलटा होता है । सभी जानबूझकर काम बिगाड़ते हैं । पीठ पीछे उनकी कटु आलोचना करके दिल को दु:ख पहुँचाते हैं । बेटी बसंती पिताजी से बातचीत करना बंद कर देती है । गृहस्थी में उलझी पत्नी उनकी मानसिकता का ख्याल नहीं रखती । वे खिन्न होकर चुप रहते हैं तो स्थिति और अधिक बिगड़ने लगती है । इन बातों से तंग आकर वे रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी करने जाने की बात सभी को सुनाते हैं । इससे सब खुश होते हैं । पत्नी भी बच्चों को अव्यवस्था में छोड़कर उनके साथ जाने को राजी नहीं होती । बहुत दु:खी होकर गजाधर बाबू परिवार छोड़कर फिर नौकरी की जगह पर वापस चले जाते हैं । इसके बाद परिवार में सब राहत की सांस लेते हैं । उनकी चारपाई भी पत्नी की इच्छा से हटा दी जाती है । गजाधर बाबू का घर छोड़ना कहानी की चरम सीमा की स्थिति है ।

चरित्र-चित्रण :

'वापसी' कहानी में मुख्य चरित्र गजाधर बाबू हैं । गजाधर बाबू की पत्नी दोनों बेटे अमर और नरेंद्र बेटी बसंती और बहू गौण पात्र हैं । गनेशी और नौकर भी गोण पात्र हैं । जो गजाधर बाबू की सहानुभूतिशीलता और मितव्ययिता गुणों को उजागर करते हैं । चरित्र-चित्रण की दोनों विधियों - प्रत्यक्ष विधि और परोक्ष विधि का इस कहानी में प्रयोग हुआ है । प्रत्यक्ष विधि से लेखिका स्वयं वर्णन करती हैं और परोक्ष विधि कथोपकथन, हावभाव, विभिन्न संदर्भों से प्रतिक्रिया और क्रिया-कलाप से हो जाता है ।

कहानी के मुख्य पात्र गजाधर बाबू एक मध्यवर्गीय परिवार के मुखिया हैं । वे रेलवे में पैंतीस साल तक नौकरी करते हैं । पहले क्वार्टर से पत्नी और बच्चों के साथ रहते थे । वे सभी के साथ मनोविनोद करते व पत्नी उनका पूरा ख्याल रखती थी । बाद में उन्होंने शहर में एक मकान बनवाया उन्होंने पत्नी और बच्चों को वहीं रहने दिया और खुद सेवा-निवृत्त होने तक एकाकी जीवन बिताया । सेवा-निवृत्त होने के बाद गनेशी उनको भावभीनी विदाई देता है । वे उसको बेटी की शादी जल्दी करने और जरूरत पड़ने पर याद करने को कहकर घर पर पहुँचते हैं । घर पर उनका स्वागत सब ठंडे दिल से करते हैं । उनकी उपस्थिति से सभी की स्वच्छन्दता चली जाती है । सभी उनके कार्यकलाप की

आलोचना करते हैं । व्यंग्य-बाण से उनको आहत कर देते हैं । परिवार के साथ हँसी-खुशी से समय बिताने की कल्पना धूल-धूसरित हो जाती है तो उन्हें बड़ी निराशा होती है । वे जिसको जो दायित्व देते हैं, वह जानबूझकर उसे खराब करता है । उन्हें परिवार में सम्मान नहीं मिलता । उनकी चारपाई बैठक से पत्नी के छोटे कमरे में लगा दी जाती है । पत्नी उनकी भावना को समझ नहीं पाती । वे घर की किसी घटना में हस्तक्षेप न करने का निर्णय लेते हैं तो स्थिति और अधिक जटिल होती है । अंत में वे घर छोड़ने का निर्णय लेते हैं और घर छोड़ देते हैं ।

गजाधर बाबू की पत्नी वैवाहिक जीवन के प्रथम चरण में पति का पूरा ख्याल रखती थी वह दोपहर तक आग जलाए पति की प्रतीक्षा करती थी । पति के दफ्तर से लौटने पर गरम-गरम रोटियाँ खिलाती थी, मना करने पर भी ज्यादा खिला देती थी । उसकी आँखों की मुसकान गजाधर बाबू की थकावट मिटा देती थी । लेकिन बुढ़ापे में उसमें बहुत परिवर्तन आ जाता है जो गजाधर बाबू को खलता है । वह गृहस्थी के संचालन में इतना व्यस्त रहती है कि सेवा -निवृत्त पति का ख्याल रख नहीं पाती । वह धार्मिक महिला है, इसलिए पूजा-पाठ के बाद चौके में घुसती है । वह सारा काम करती है । बहू-बेटी उसकी सहायता नहीं करतीं । बेटे के दोस्तों के साथ बहू का मिलना-जुलना, पड़ोस के घर में बेटी का आना-जाना उसे पसंद नहीं है । वह केवल शिकायत करती है, पर डाँट नहीं सकती । बेटा जब परिवार से अलग हो जाने की धमकी देता है वह पति से किसी भी काम में दखल न देने की सलाह देती है । अंत में पति के साथ भी जाने से मना करती है, क्योंकि बहू खर्चीली है और बेटी अविवाहित और सयानी है । गजाधर बाबू के चले जाने पर वह अपने कमरे से चारपाई हटा देने को कहती है । यही चारपाई पति का घर में रहा अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।

अमर, अमर की पत्नी, नरेंद्र और बसंती - ये सब नई पीढ़ी के प्रतीक हैं जो पारंपरिक मूल्यबोध, नैतिकता, वंश मर्यादा, जीवन-मूल्यों, संयुक्त परिवार के प्रति श्रद्धा, शिष्टाचार को महत्व नहीं देते । वे दिशाभ्रष्ट, स्वार्थांध, कर्म विमुख प्रदर्शनप्रिय, मिथ्याभिमानी और उच्छृंखल हैं ।

अमर पिताजी की अनुपस्थिति में परिवार में सर्वमय कर्ता था । पिताजी के आगमन से उसका अधिकार दायरा संकुचित होने से वह पिताजी पर क्षुब्ध हो जाता है । पिताजी से किसी काम में दखल न देने को कहता है । परिवार से अलग रहने की धमकी भी देता है । उसे पिताजी का टोकना बुरा लगता है ।

अमर की पत्नी परिवार का कोई दायित्व नहीं संभालती । सारा काम सास करती है । ससुर खाना पकाने का दायित्व देते हैं तो वह जानबूझकर काम बिगाड़ती है । गजाधर बाबू जब नौकर को निकाल देते हैं तो वह व्यंग्य पूर्वक इसकी सूचना अमर को देती है जिसे सुनकर गजाधर बाबू दु:खी हो जाते हैं । वह सास की डाँट की परवाह नहीं करती । ससुर दु:खी होकर घर छोड़ देते हैं तो वह खुश

होकर सिनेमा देखने जाना चाहती है । बेटी बसंती उद्दण्ड, उच्छृंखल, अशिष्ट और लापरवाह है । वह पड़ोस में बड़े-बड़े लड़के होने पर भी वहाँ आती-जाती रहती है । पढ़ाई का बहाना बनाकर घर के काम-काज में हाथ नहीं बंटाती । पिताजी उसे खाना बनाने कहते हैं तो वह जानबूझकर खाना बिगाड़ देती है । पिताजी उसके निर्बाध आने-जाने पर रोक लगा देते हैं तो वह धृष्टतापूर्वक उनसे बोलना बंद कर देती है । पिताजी नौकर को खर्च की बचत के लिए हटा देते हैं तो वह घर में झाड़ू लगाने से इनकार कर देती है । पिताजी घर छोड़कर दु:खी मन से चले जाते हैं तो वह खुशी के मारे सिनेमा जाना चाहती है ।

नरेंद्र पिताजी के प्रति उचित सम्मान प्रदर्शन नहीं करता, बहन खाना खराब कर देती है तो पिताजी पर इसकी जिम्मेदारी ठहराता है । पिताजी बच्चों के व्यवहार से तंग आकर उदासीन हो जाते हैं तो नरेंद्र मौके का फायदा उठाकर उनसे मन माफिक रुपए मांग लेता है । मेहनत करने को वह अपनी बेइज्जती समझता है । नौकर के न रहने की स्थिति में वह आटा पिसाना भी नहीं चाहता । पिता बच्चों के आचरण से खिन्न होकर घर छोड़ने का निर्णय लेते हैं तो नरेंद्र बड़ी खुशी से उनका बिस्तर बांध देता है । उसमें रंचमात्र भी सहृदयता या मानविकता नहीं है ।

संवाद :

कहानी में संवाद का स्थान महत्वपूर्ण है । इससे मूल कथा को गति मिलती है । पात्रों के संवादों से चरित्रों के मनोभाव और चारित्रिक विश्लेषण हो जाता है ।

इस कहानी में संवाद पात्रानुकूल हुए हैं । गजाधर बाबू की पत्नी जब कहती है --''सारे घर में जूठे बर्तन पड़े हैं । इस घर में धमर-करम कुछ नहीं । पूजा करके सीधे चौके में घुसो ।'' इससे उसकी धर्मपरायणता, गृहस्थी की जिम्मेदारी, कर्मकुशलता आदि गुणों का परिचय मिलता है । तो दूसरे सदस्यों की लापरवाही, पूजा के प्रति अनास्था, अनुशासनहीनता आदि अवगुण ध्वनित होते हैं ।

गजाधर बाबू की पत्नी कहती है -''यही जोड़-गांठ करते-करते बूढ़ी हो गई , न मन का पहना, न ओढ़ा ।'' इससे ध्वनित होता है कि उसे हमेशा अपनी सीमित आय से किसी भी तरह गृहस्थी चलानी पड़ी । कभी भी संपन्नता की स्थिति नहीं आई और इस वजह से उससे न मनपसंद पहनावे मिले, न गहने ।

गजाधर बाबू गनेशी से कहते हैं - ''कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी । इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो ।'' गनेशी अंगोछे के छोर से आँखें पोछता हुआ कहता है -'' अब आप लोग सहारा न देंगे तो कौन देगा ? आप यहाँ रहते तो शादी में कुछ हौसला रहता ।'' इस संवाद से गजाधर बाबू की अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति स्नेह, सहृदयता और सहानुभूतिशीलता का भाव व्यंजित होता है ।

गजाधर बाबू की पत्नी पति से कहती है -'' हाँ बड़ा सुख है न बहू से । आज रसोई करने गई है, देखो , क्या होता है ?'' इससे स्पष्ट होता है कि बहू कभी भी रसोई नहीं बनाती । सास ने बहू से कभी भी रसोई बनाने नहीं कहा क्योंकि उसे आशंका रही कि बहू जानबूझकर अधिक सामान खर्च कर देगी तो आखिर उसीको ही कष्ट होगा । बेटी बसंती के बारे में पत्नी गजाधर बाबू से कहती है -''क्या कह दिया बसंती से, शाम से मुँह लपेटे पड़ी है । खाना भी नहीं खाया ।'' इससे स्पष्ट हो जाता है कि बेटी का दोष होते हुए भी वह बेटी की तरफदारी करती है इसलिए बेटी उद्दण्ड हो गई है और किसी की मनाही नहीं मानती ।

बहू काकू से अमर को नौकर छुड़ाने की सूचना देते हुए ससुर के संबंध में कहती है -''कहते हैं खर्च बहुत है ।'' इससे बहू की धृष्टता, अशालीन व्यवहार, झूठी शान-शौकत, परिवार की हैसियत की ओर लापरवाही, हृदयहीनता आदि अवगुण व्यंजित होते हैं ।

गजाधर बाबू चीनी मिल में नौकरी करने जाते समय पत्नी से पूछते हैं -''तुम भी चलोगी ?'' ठीक है तुम यहीं रहो, मैंने तो ऐसे ही कहा था ।'' इससे उनकी अकेलेपन की छटपटाहट-निराशा, पलायनवादिता और अस्तित्वहीनता का भाव झलकता है । गजाधर बाबू की पत्नी जब कहती है - ''अरे नरेंद्र ! बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे । उसमें चलने तक की जगह नहीं है ।'' यहाँ चारपाई अपरिचय, अस्तित्वहीनता और अनात्मीयता की प्रतीक है । यहाँ ध्वनित है कि गजाधर बाबू जिन्दगी से ठगे हुए हैं । वे एक पराजित पलायनवादी इन्सान बन गए हैं ।

देश-काल तथा वातावरण :

वातावरण कहानी के प्राण हैं । इसका सुचारु निर्वाह होने से कहानी जीवंत और यथार्थ लगती है । वातावरण की पृष्ठभूमि पर कहानी का विकास होता है । पात्रों से संबंधित स्थानों, समय, प्रकृति और परिवेश के समयानुकूल चित्रण से वातावरण मनोनुकूल लगता है ।

गजाधर बाबू सेवा-निवृत्त होकर जब रेलवे क्वार्टर छोड़ते हैं तो उनके मन में विछोह का दु:ख है । यह दु:ख भी क्वार्टर के वातावरण में झलकता है - रेलवे क्वार्टर का यह कमरा, जिसमें उन्होंने कितने वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न लग रहा था । आंगन में रोपे पौधे भी जान-पहचान के लोग ले गए थे, और जगह-जगह मिट्टी बिखरी हुई थी ।

गजाधर बाबू के अनिश्चित भविष्य और अनिच्छित उपस्थिति को संकेत करने वाला वाक्य यह है -'' जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटा कर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली-सी चारपाई डाल दी गई थी ।''

गजाधर बाबू की मानसिक खलबली को अभिव्यक्त करने वाला मानसिक परिवेश का वर्णन

इस प्रकार हुआ -''यह थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था । उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचित है ।''

आधुनिक युग की नई पीढ़ी की मानसिकता इसमें दिखाई पड़ती है -''पहले अमर घर का मालिक बनकर रहता था । बहू को कोई रोक-टोक न थी । अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं अड्डा जमा रहता था ।''

पुरानी पीढ़ी की धार्मिकता की झलक इस वाक्य में मिल जाती है - थोड़ी देर में उनकी पत्नी हाथ में अर्घ्य का लोटा लिए निकली और अशुद्ध स्तुति कहते हुए तुलसी में डाल दिया ।

काल -विशेष में आत्मीयता का परिवेश इस प्रकार है - दो पहर में, गर्मी होने पर भी, दो बजे तक आग जलाए रहती और उनके स्टेशन से वापस आने पर गरम-गरम रोटियाँ सेंकती - उनके खा चुकने और मना करने पर भी थोड़ा-सा कुछ और थाली में परोस देती, और बड़े प्यार से आग्रह करती ।''

भाषा-शैली :

'वापसी' कहानी में प्राय: अन्य पुरुष में अधिक वर्णन किया गया है । संवाद शैली का भी प्रयोग किया गया है । भाषा पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुकूल है । गजाधर बाबू जब कहते हैं -''बिट्टी, चाय तो फीकी है । तब इसमें वात्सल्य प्रेम झलकता है । पर जब बसंती से कहते हैं -'बसंती ! आज से शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी तुम पर है ।' तब इसमें आदेश और पिता का अधिकार स्पष्ट हो जाता है । गजाधर बाबू पत्नी से कहते हैं - ठीक है ! तुम यहीं रहो । मैंने तो ऐसे ही कहा था । इसमें निराशा परिलक्षित होती है ।

गजाधर बाबू की पत्नी की भाषा- ''यही जोड़-गांठ करते - करते बूढ़ी हो गई । न मन का पहना, न ओढ़ा । '' में उसके असंतोष और परिवार प्रबंधन कुशलता का परिचय मिलता है । इस वाक्य में माँ का वात्सल्य प्रतीत होता है - क्या कह दिया बसंती से । शाम से मुँह लपेटे पड़ी है । खाना भी नहीं खाया ।'' अमर ने कहा -''बूढ़े आदमी हैं । चुपचाप पड़े रहें । हर चीज में दखल क्यों देते हैं - में उसकी धृष्टता प्रमाणित होती है ।

मुहावरों से भाषा में प्रवाह आता है । भाषा में शक्ति आ जाती है । इस कहानी में प्रयुक्त मुहावरे हैं - फांस -सी करके उठना, पेट काटना, हाड़ तोड़ना, ताना देना आदि । आलंकारिक प्रयोग भी भाषा में माधुर्य उत्पन्न करता है । ऐसा प्रयोग है - पर पत्नी और बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में वह

विछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठकर विलीन हो गया । चारपाई के बिम्ब के द्वारा गजाधर बाबू की यातना, एकाकीपन, निराशा, असहायता, अस्तित्वहीनता को अभिव्यक्ति मिल जाती है । वह है - ''यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है, तो यहीं पड़े रहेंगे, अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएंगे ।''

उद्देश्य :

इस कहानी में भोगे हुए जीवन का यथार्थ चित्रित हुआ है । बुजुर्गों की समस्याओं, उनकी विषादित मन:स्थिति, आकांक्षाओं को पाठक के सामने प्रस्तुत करके लेखिका सामाजिक सजगता उत्पन्न करना चाहती हैं । परिवार का मुखिया कड़ी मेहनत करके जीवन भर धन उपार्जन में लगा इस आशा से लगा रहाता है कि बुढ़ापे में उसे परिवार संरक्षण, सहायता, सहानुभूति, आत्मीयता और सुख-शांति मिलेगी । पर आधुनिक पीढ़ी की संतानें उनकी कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने को अपना अधिकार समझती हैं । पिताजी को धन-अर्जन का यंत्र समझती हैं । परिवार का कोई भी उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लेना नहीं चाहती । झूठी ठाट-बाट से ऐश की जिन्दगी बिताना चाहती है । इस पर लेखिका ने करारा व्यंग्य किया है । लेखिका ने आधुनिक पीढ़ी की श्रम-कातरता, प्रदर्शप्रियता, स्वार्थपरता, दिशाहीनता, लक्ष्यहीनता और पुरानी पीढ़ी की मूल्य -व्यवस्था में अनास्था को उजागर करके दोनों पीढ़ियों की वैचारिक भिन्नता को सारी समस्याओं की जड़ मानी है । नई पीढ़ी की महत्वाकांक्षा समाज से ममता, करुणा और सहानुभूति जैसे जीवन के मूलभूत तत्वों को समाप्त कर रही है । विडंबना यह कि बूढ़े लोग अपने बच्चों के परिवर्तित दृष्टिकोण का न तो सराहना करते हैं न बरदास्त । इसलिए वे अलग-थलग पड़ जाते हैं । अकेलापन महसूस करते हैं । हर कदम पर अपने को अपमानित महसूस करते हैं । उनके प्रति कोई कृतज्ञ नहीं रहता । उनके अधिकार का अपहरण कर लिया जाता है । वे परिवार में अनचाहे, अनचीन्हे बन जाते हैं । गजाधर बाबू के जीवन की यही त्रासदी है । जिस परिवार के मोह से उन्होंने नौकरी के समय नि:संग जीवन बिताया, अब उसी परिवार को छोड़ देने में अपना कुशल समझते हैं । वे समझौता नहीं कर पाते । केवल मानसिक वेदना भोगते हैं । लेखिका ने परिवार में वृद्धों के प्रति की जा रही उपेक्षा भाव का वर्णन करके नई पीढ़ी के मन में उनके प्रति श्रद्धा भावना भरने का प्रयास किया है । उन्हें कृतघ्न न बनने का संदेश दिया है ।

लेखिका कहानी के माध्यम से यह दिखाना चाहती है कि प्रदर्शनप्रियता के मोह में मध्ववर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है । आर्थिक विपन्नता से सारी समस्याएँ उभरती हैं । आजकल स्वार्थाधंता के कारण संयुक्त परिवार का बंधन ढीला पड़ जाता है । सब अलग होकर रहना पसंद करते हैं । पिता-पुत्र संबंध शिथिल हो जाता है । लेखिका ने समाज में घटनेवाले और एक कटु-सत्य को

उजागर कर दिया है कि परिवार से दूर रहकर उपार्जन करने वाले व्यक्ति के आदर्श की कोई छाप बच्चों पर नहीं पड़ती । पास न रहने से ममता का बंधन ढीला पड़ जाता है । वही आदमी जब घर पहुँचता है, तब उसका सहृदय स्वागत नहीं हो पाता । वह परिवार में अपना अस्तित्व और परिचय जमा नहीं पाता । अपमानित और उपेक्षित होकर वह परिस्थिति से समझौता कर नहीं पाता । अंत में हताशा की मर्मांतक पीड़ा से छटपटा वह पलायनवादी बन जाता है । लेखिका ने गजाधर बाबू की इस दयनीयता परिणाम के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें सोचने को मजबूर कर दिया है । इस कहानी में 'चारपाई गजाधर बाबू का प्रतिनिधित्व करती है । जो अपरिचय और अस्तित्वहीनता की प्रतीक है । लेखिका ने कहानी के माध्यम से युवा पीढ़ी में बुजुर्गों के प्रति संवेदना जागृत करने का भरसक प्रयास किया है । यदि ऐसा नहीं हुआ तो बूढ़ों का अधिकार संकटग्रस्त हो जाएगा और उन्हें घुटन, पीड़ा, व्यर्थताबोध और अकेलेपन से जीवन के आखिरी दिन बिताने पड़ेंगे ।

शीर्षक :

शीर्षक कहानी में एक प्रतीक का काम करता है । वह कहानी की आत्मा को प्रकट करता है । इस कहानी का शीर्षक 'वापसी' एक कार्य-व्यापार की सूचना देता है । यह शीर्षक संक्षिप्त , सार्थक, सांकेतिक और संवेना उद्दीपक है । गजाधर बाबू अपने परिवार में वापसी चाहते थे । पर परिस्थितिवश उनकी वापसी अपनों को छोड़कर बाहर की ओर हो जाती है । वे अपने लोगों में अस्तित्व पाने में निराश होकर पराए लोगों में उसे तलाशने पलायन करते हैं । यह 'वापसी' उनकी त्रासदी है । अत: कहानी का शीर्षक यथार्थ लगता है ।

लेखिका - परिचय

जन्म- उत्तर प्रदेश के कानपुर में

शिक्षा - कानपुर व इलाहाबाद

अध्यापन - इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की अध्यापिका ।

मलबे का मालिक

3.4.1 लेखक परिचय :

मोहन राकेश का जन्म अमृतसर में 1925 ई. में हुआ था । उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में प्राप्त की । उन्होंने लाहौर से पहले संस्कृत में एम.ए. और बाद में हिंदी में एम.ए. परीक्षा पास की । पहले उन्होंने बंबई, जालंधर और दिल्ली में विभिन्न कालेजों में हिंदी प्रवक्ता के रूप में फिर बंबई में 'सारिका' के प्रधान संपादक के रूप में कार्य किया । फिर उन्होंने नौकरी से अपना मन हटा लिया । उन्होंने साहित्य की सारी विधाओं -कहानी, उपन्यास, निबंध, एकांकी, रिपोर्ताज, इंटरव्यू , यात्रा आदि पर अपनी लेखनी चलाई और उनमें सफलता प्राप्त की ।

'नई कहानी' के प्रवर्तकों में उनका नाम आता है । उनकी कहानियों में पात्रों की मन:स्थितियों का मार्मिक चित्रण पाया जाता है । आपकी कहानियों में सामाजिक चेतना, मानवता के प्रति आस्था, जीवन मूल्यों के प्रति आग्रह आदि दिखाई पड़ते हैं ।

कहानी संग्रह - इंसान के खंडहर, नए बादल, जानवर और जानवर, एक और जिन्दगी, फौलाद का आकाश, एक दुनिया और मिलेजुले चेहरे ।

3.4.2 कथासार :

'मलबे का मालिक' कहानी भारत के विभाजन के बाद हिन्दू -मुसलमान संघर्ष से उत्पन्न परिस्थितियों के आधार पर रचित है । घटना -प्रवाह ऐसी गति से आगे बढ़ता है कि पाठक को प्रसंग यथार्थ और सत्य प्रतीत होता है । देश-विभाजन से धर्म के नाम पर संघर्ष हो जाता है और व्यक्ति इसमें इतना क्षतिग्रस्त होता है कि इतनी मानसिक वेदना झेलता है कि उसकी भरपाई जीवन -काल में नहीं हो पाती । इस कहानी में एक मकान- मालिक परवर्ती समय में उसके मलबे का केवल दर्शक बन जाता है और उसका भरा-पूरा संसार उजड़ जाता है । भले ही राजनीतिक खिलाड़ी इसे देश की आजादी कहें, पर सांप्रदायिकता के आघात से सदियों से अर्जित मानवीय मूल्यबोध का ढाँचा चरमरा गया और आदमी की आदमी के प्रति क्रूरता चरमसीमा पर पहुँच गई । पर लेखक निराश नहीं हुए, उन्होंने इस कहानी के प्रभाव से क्रूरता की चरम स्थिति दिखाने के बाद भी सज्जनता के प्रभाव से क्रूरता में हृदय -परिवर्तन की संभावना दिखाकर मानवीयता का प्रकाश दिखाया है ।

देश विभाजन के साढ़े सात-साल बाद लाहौर से मुसलमान की एक टोली हॉकी मैच देखने अमृतसर आती है । हॉकी देखना उनका बहाना था, असल में वे उन घरों को देखना चाहते थे, जो उनके लिए साढ़े सात साल पहले पराए हो गए थे । बड़ी आत्मीयता पूर्वक वे लोगों से मिलते रहे और लोग उनसे लाहौर का हाल पूछते रहे । इसी बीच अमृतर में काफी परिवर्तन हो चुका था । कहीं-कहीं नई इमारतें खड़ी थी तो बीच-बीच में मलवे के ढेर थे ।

उस मुसलमान की टोली में अब्दुल गनी भी था जो पहले से अमृतसर छोड़कर चला गया था । उसने मकान बना लिया था । उसके परिवार के चार सदस्य उसका बेटा चिराग, उसकी बहू जुबैदा और चिराग की दो बेटियाँ किश्वर और सुलताना अमृतसर में रह गए थे । गनी मियाँ ने बेटे से अमृतसर छोड़कर चले जाने को कहा था, पर बेटे चिराग का मुहल्ले के हिन्दुओं पर भरोसा था और वह अपना नया मकान छोड़कर जाने को राजी नहीं हुआ था ।

लेकिन देश विभाजन के समय जब हिंदू मुस्लिम संघर्ष हो गया । उसी समय रक्खे पहलवान ने उस मकान पर कब्जा करने के इरादे से चिराग और उसके परिवार के सभी सदस्यों को मौत के घाट उतार दिया । पर बाद में और किसी ने उस मकान में आग लगा दी तो मकान मलबा बन गया ।

गनी अमृतसर आया तो उसके मन में स्वाभाविक रूप से अपने मकान को देखने की इच्छा जाग्रत हुई । वह विभिन्न गलियों को पार करता हुआ अपनी गली में आ पहुँचा । वीरान बाजार बाँसा को और वहाँ की नई तथा जली हुई इमारतों को देखकर उसे विश्वास नहीं हुआ कि जिस गली में वह जा रहा है, सचमुच वह उसकी गली कभी थी । इसी समय एक नवयुवक मनोरी से उसकी मुलाकात हो जाती है जिसे वह पहचान लेता है । मनोरी भी गनी मियाँ को पहचानकर उसे उसका घर दिखाने गली में ले जाकर दूर से एक मलबे को दिखाकर बताता है कि यही तुम्हारा घर था । गनी मियाँ ने बहुत पहले से मान लिया था कि उसके बेटे और उसका परिवार बीबी-बच्चों की मौत हो चुकी है, पर उसने यह कल्पना नहीं की थी कि उसका नया मकान मलबा बन चुका होगा । यह करुण दृश्य देखकर गनी मियाँ को झुनझुनी हुई, घुटने कांपने लगे, जबान खुश्क हो गई । वह पास पहुँचकर मलबे के जले हुए चौखट को पकड़ कर बैठ गया और हाय, ओए चिरागदीन कह कर बिलखने लगा । वह मलबे की मिट्टी अपने नाखूनों से खोद-खोद कर अपने ऊपर डालता रहा और अपने बेटे -पोतियों का नाम लेकर रोता रहा ।

इस समय खिड़की से झांकने वालों को आशंका हुई कि आज साढ़े सात साल पहले की सारी घटना पूरी खुल जाएगी । अब्दुल गनी को पता चल जाएगा कि चिरागदीन, जुबैदा, किश्वर और सुलताना का हत्यारा रक्खे पहलवान ही है । रक्खे पहलवान उस समय कुएँ के पास पीपल के नीचे सोया हुआ था । उसके चेले लच्छे पहलवान ने उसे सूचना दे दी कि गनी मियाँ अपने मलबे के पास आया है । मलबे से लौटते समय गनी मियाँ कुएँ के पास रक्खे पहलवान को देख लेता है । उसे पता नहीं है कि

रक्खे ही उसके परिवार का हत्यारा है । वह दु:खी होकर बड़ी आत्मीयता से रक्खे से कहता है कि मैं भरा-पूरा घर छोड़ कर चला गया था और आज यह मलबा देखने आया हूँ । वह कहता जाता है-''तू बता रक्खे, यह सब हुआ किस तरह ? तुम लोग उसके पास थे, सबमें भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी, अगर वह चाहता तो वह तुममें से किसी के भी घर में नहीं छिप सकता था ? उसे इतनी भी समझ नहीं आई ?'' यह सब सुनकर रक्खे में घबराहट आ जाती है । उसका स्वर अस्वाभाविक हो जाता है । ओंठ लार से चिपक जाते हैं । मूँछों के नीचे से पसीना ओठों पर आ जाता है । माथे पर दबाव पड़ जाता है । वह गनी से पाकिस्तान का हाल पूछता है । पर गनी अपना हाल सुनाता है । वह कहता है कि मेरा हाल खुदा ही जानता है । मैंने चिराग को मेरे साथ चलने को कहा था । मगर वह अपना नया मकान छोड़कर जाने को राजी नहीं हुआ । चिराग को लगता था कि अपनी गली में कोई खतरा नहीं है । गनी कहता है -''भोले कबूतर ने यह नहीं सोचा कि गली में खतरा न सही, बाहर से तो खतरा आ सकता है । मकान की रखवाली के लिए चारों जनों ने जान दे दी ।'' गनी रक्खे को संबोधित करते हुए कहता है -'' रक्खे उसे तेरा बहुत भरोसा था । कहता था कि रक्खे के रहते कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता । मगर जब आँधी आई तो रक्खे के रोके भी न रुक सकी ।''

गनी से ये बातें सुनकर रक्खे को अपने विश्वासघात पर पश्चाताप होता है । उसका शरीर पसीने से भीग जाता है । तलुवों में चुनचुनाहट महसूस होती है । उसकी सांस अड़ रही है । उसके मुँह से निकल पड़ता है -''हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तू ही है, तू ही है ।''

गनी मियाँ ने लक्षित किया कि पहलवान के ओंठ सूख रहे हैं । इसलिए रक्खे को तसल्ली देते हुए वह कहता है -'' जो होनी थी सो हो गई । उसे कोई लौटा थोड़े ही सकता है । खुदा नेक की नेकी और बद की बदी माफ करें । ... तुमको देख लिया तो चिराग को देख लिया । अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे । जीते रहो और खुशियाँ देखो ।''

गनीमियाँ के चले जाने पर गली में फिर स्वाभाविकता लौट आती है । पर रक्खे की में पश्चात्ताप की भावना तीव्र हो जाती है । उसने दूसरे दिनों की तरह लोगों को बुलाकर उन्हें सट्टे के गुर और सेहत के नुस्खे नहीं बताए, पर लच्छे को वह अपनी वैष्णो देवी की उस यात्रा का विवरण सुनाता रहा, जो उसने पंद्रह साल पहले की थी ।

रात होने पर वह मलबे के पास आकर एक भैंस को वहाँ से हटा देता है । फिर एक कौआ कहीं से उड़कर आता है और जली हुई चौखट पर बैठ जाता है । फिर मलबे के एक कोने में लेटा हुआ कुत्ता भौंकता है तो कौआ उड़ जाता है । कुत्ता अब चौखट पर बैठे रक्खे की ओर मुँह करके भोंकता है । रक्खे कुत्ते को हटाने को प्रयास में असफल रह कर अंत में कुएँ की सिल पर जाकर लेट जाता है । कुत्ता लौट आता है और मलबे के एक कोने में लेट जाता है ।

रक्खा साढ़े सात साल तक अपने को मलबे का मालिक मानता रहा, पर उसे लोगों की स्वीकृति नहीं मिल पाई थी । अंत में एक कुत्ता भी उस मलबे पर लेटकर अपने को मालिक घोषित कर देता है । इधर रक्खा भी बाहरी तौर पर मलबे से हट जाता है और भीतरी तोर पर पश्चात्ताप करता है ।

3.4.3 चरित्र-चित्रण :

अब्दुल गनी - अब्दुल गनी अमृतसर के बाजार बाँसा की एक गली का बाशिंदा था जो भारत -विभाजन से पहले लाहौर चला गया था । अपने बेटे चिराग से भी अनुरोध किया था कि सभी वह जगह छोड़कर चले जाएँ । लेकिन चिराग दो कारणों से अपनी पुश्तैनी मिट्टी छोड़कर जाने को राजी नहीं हुआ था । एक तो उन्होंने नया मकान बनवाया था और दूसरे में उसका गली के लोगों पर खास करके रक्खे पहलवान पर पूरा भरोसा था ।

पुश्तैनी वतन को देखने का मोह - गनी खाँ को भारत -विभाजन के समय हुए हिन्दू-मुसलमान संघर्ष में उसके परिवार के सभी सदस्यों की मौत हो जाने का अभास मिल गया था । पर वह पुश्तैनी वतन को एक बार देख लेने का लोभ छोड़ नहीं सका था इसलिए हॉकी मैच देखने लाहौर से अमृतसर आने वाली मुसलमानों की टोली में वह आ जाता है और गलियाँ पार करते हुए अपनी गली के पास पहुँच जाता है ।

पुत्र-शोक से जर्जर - गनी मियाँ अपनी गली के पास पहुँचकर वहाँ आई भारी तबदीली को देखकर असमंजस में पड़ जाता है कि वह सही जहग पर आया है या नहीं । फिर वह उसी ओर आ रहे मनोरी को पहचान लेता है । मनोरी जब एक मलबे की ओर इशारा करके बताता है कि यही उसका घर था, तब गनी मियाँ अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पाता कि उसका नया मकान मलबा बन गया है । जले हुए घर की यही निशानी देखकर वह निराश हो जाता है । चौखट को पकड़कर अपने बेटे चिराग और पोतियों किश्वर और सुलताना का नाम लेकर रोने-बिलखने लगता है । रक्खे को वह अपना हाल बताता है - ''मेरा हाल पूछा तो वह मेरा खुदा ही जानता है । मेरा चिराग साथ होता, तो और बात थी ।''

बेटे के अड़ जाने पर पश्चात्ताप - गनी खाँ को पता नहीं है कि वही रक्खे उसके परिवार का हत्यारा है । उसे रक्खे भरोसेमंद लगता है । इसलिए वह उससे आत्मीयता भरी बातें करता है । वह याद करता है कि उसने चिराग को उसके साथ जाने के लिए बहुत समझाया था । वह रक्खे से कहता है कि बेटे का गली के लोगों पर पूरा भरोसा था, इसलिए वह नया मकान छोड़कर जाने को हुआ था । बेटा तो भोला कबूतर था । उसे अपनी गली से तो खतरा नहीं था, पर बाहर से खतरा आया और

मकान के लिए चारों ने जान दे दी । वह पहले से अकेले चले जाने को अपनी बदवख्ती मानता है । गनी अपनी गली के पास एक रोते हुए बच्चे को देखता है तो उसे पुचकारकर अपने पास बुलाता है और पैसा देना चाहता है । वह मनोरी को पहचानकर उससे शालीनता से बात करता है । अब्दुल गनी को पता नहीं था कि भाईचारे का फर्ज निभानेवाले रक्खे ने मकान के लालच से उसके बेटे-बहू और पोतियों को मौत के घाट उतार दिया है । इसलिए वह रक्खे से बड़ी शालीनता से बातचीत करता है । वह अपने बेटे के संबंध में कहता है -''अगर वह चाहता तो तुममें से किसी के घर में नहीं छिप सकता था ? उसे इतनी भी समझ नहीं आई ?''

गनी यह भी बताता है कि चिराग का रक्खे पर बहुत भरोसा था । गनी जाते समय रक्खे के कंधे पर हाथ रखकर कहता है -''जी हल्का न कर, रक्खिआ ! जो होनी थी, सो हो गई । उसे कोई लौटा थोड़े ही सकता है ? खुदा नेक की नेकी रखे और बद की बदी माफ कर दे ! मेरे लिए चिराग नहीं, तो तुम लोग तो हो ! मैंने तुमको देख लिया तो चिराग को देख लिया । अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे । जीते रहो और खुशियाँ देखो ।''

अब्दुल गनी की इस प्रकार की बात में जो सादगी और सहृदयता थी, उससे रक्खे जैसे दैत्य के हृदय -परिवर्तन के लक्षण दिखाई पड़ते हैं ।

दुःखी जीवन - अब्दुल गनी का भरा-पूरा संसार यहीं उजड़ गया था । अपना मकान देखने आकर जब वह उसका मलबा देखता है तब उसकी अन्तरात्मा रो उठती है । यद्यपि वह रक्खे से कहता है कि मेरा मन यह मिट्टी भी छोड़कर जाने को जी नहीं करता, फिर भी वह उसे छोड़कर जाता है । देश के विभाजन से किसी को क्या मिला, यह अलग बात है, पर गनी को जो एकाकीपन, संत्रास, असहायता, पीड़ा , छटपटाहट मिली उससे उसका जीवन दुःखी हो जाता है ।

अब्दुल गनी एक अच्छे इन्सान के रूप में सभी पर अमिट छाप छोड़ जाता है ।

3.4.4 कहानी - कला की दृष्टि से :

कहानी -कला की दृष्टि से 'मलबे का मालिक' कहानी की निम्नलिखित तत्वों की समीक्षा की जा सकती है -

ये हैं 1) कथावस्तु, 2) चरित्र-चित्रण, 3) संवाद, 4) देश-काल तथा वातावरण, 5) भाषा-शैली, 6) उद्देश्य तथा 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

'मलबे का मालिक' मोहन राकेश की बहुचर्चित कहानी है, जिसमें देश-विभाजन के परिणाम स्वरूप लोगों को जो पीड़ा, बेचैनी, निराशा हुई, अपनी जो बर्बादी देखनी पड़ी, उसका यथार्थ चित्रण मिलता है । देश-विभाजन के समय अनेक अमानवीय घटनाएँ घटने पर भी लेखक परवर्ती समय में पात्रों के सहनशीलता और शालीनतापूर्ण आचरण के माध्यम से दुष्ट चरित्र में हृदय- परिवर्तन की संभावना का संकेत देकर मानवता और सांप्रदायिक, सद्भाव की प्रतिष्ठा करने का स्तुत्य प्रयास करते हैं ।

देश विभाजन के ठीक साढ़े सात साल के बाद लाहौर से मुसलमानों की एक टोली हॉकी मैच देखने के बहाने अमृतसर आती है, ताकि इसके सदस्य अपने -अपने घरों को देख सकें, जो अब उनके लिए पराए हो गए थे । वे अमृतसर के बाजार में लोगों से बड़ी आत्मीयता से मिलते हैं । इस समय अमृतसर में बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका था । कई जगह नये मकान बन गए थे तो पास में मलबे के ढेर भी थे ।

इन लोगों में अब्दुल गनी नाम का एक बूढ़ा था जो पहले से लाहौर चला गया था । उसने अपने बेटे चिरागदीन से भी अमृतसर छोड़कर चले जाने को कहा था । पर बेटा अपना नया मकान छोड़कर जाने को राजी नहीं हुआ था और उसे अपनी गली के लोगों और रक्खे पहलवान पर पूरा भरोसा था । इसलिए वह अपनी पत्नी जुबैदा, दो बेटियों किश्वर और सुलताना के साथ वहीं रह गया था ।

विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के समय रक्खे पहलवान ने गनी के नए घर पर कब्जा करने के इरादे से चिराग और उसके परिवार के सभी को मौत के घाट उतार दिया । लोग दो दिन तक उस घर का सामान लूटते रहे । बाद में किसीने उसी मकान में आग लगा दी । तब घर मलबा बन गया । फिर भी रक्खे अपने को उस मलबे का मालिक मानता हुआ उस पर कब्जा बनाए रखता है ।

गनी की भी चाहत थी कि वह अपना मकान एक बार देख ले । लेकिन अपने मकान की जगह मलबे को देखकर वह सन्न रह जाता है । वह बिलख-बिलख कर हाय ओए चिरागदीन कहकर रोने लगता है । लौटते समय रक्खे पहलवान से उसकी मुलाकात हो जाती है । उसे मालूम नहीं है कि रक्खे ही उसके परिवार का हत्यारा है । इसलिए रक्खे के साथ बड़ी आत्मीयता से मिलता है और खेद प्रकट करता है कि अगर चिराग में समझदारी होती तो वह रक्खे के घर पर आश्रय लेकर अपने परिवार को बचा सकता था । गनी के विश्वास और दर्द-भरी बात सुनकर रक्खे के निष्ठुर हृदय में पश्चात्ताप की भावना जागृत होती है । उसकी आवाज में अस्वाभाविक गूँज, मूँछों के नीचे पसीना माथे पर किसी चीज का दबाव और गले की नसों में तनाव आ गया । वह प्रसंग बदलने के लिए पाकिस्तान का हाल पूछता है । पर गनी अपनी दर्द भरी कहानी सुनाता है । वह कहता है कि चिराग की जान पर आ बनी तब

रक्खे के रोके भी नहीं रुकी । रक्खे यद्यपि अपने मुँह से अपराध स्वीकार नहीं करता, फिर भी उसके मुँह से अनायास निकल पड़ता है -''हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तूही है, तू ही है ।'' इस समय रक्खे को दु:खी देखकर गनी उसके कंधे पर हाथ रखकर जी हलका न करने को कहता है । वह कहता है -'' जो होनी थी, सो हो गई । उसे लौटा थोड़े ही सकता है ? खुदा नेक की नेकी रखे और बद की बदी माफ करे ।'' ..... मैंने तुझ को देख लिया तो चिराग को देख लिया । अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे । जीते रहो और खुशियाँ देखो ।'' इसके बाद गनी चला जाता है । इस समय वह बाह्य और आंतरिक रूप से ध्वस्त हो चुका है ।

गनी से मिलने के बाद रक्खे के व्यवहार में भी परिवर्तन दिखाई पड़ता है । वह उस रास्ते से गुजरने वालों को रोज आवाज देकर बुलाता था और सट्टे के गुर और सेहत के नुस्खे बताता था, पर उसी रात वो लच्छे को अपनी वैष्णव देवी की यात्रा का विवरण सुनाता है जो उसने पंद्रह साल पहले किया था ।

इसके बाद मलबे के पास आकर वहाँ से एक भैंस को हटाता है । फिर एक कौवा आकर चौखट पर बैठ जाता है । वहाँ लेटा हुआ कुत्ता भौंकता है तो कौआ उड़ जाता है । कुत्ता रक्खे की ओर मुँह करके भौंकता है । रक्खे उसे हटाने की कोशिश करते हुए भी हटा नहीं पाता । अंत में वह वहाँ से लौटकर कुएँ की सिल पर लेट जाता है और कुत्ता मलबे पर लौट आता है ।

लेखक एक कुत्ते को मलवब पर बिठाकर यह बता देना चाहता है कि कुत्ता को किसी भी समय दुरदुराकर भगाया जा सकता है । भैंस, कौआ ओर कुत्ता ये तीनों मलबे के मालिक के रूप में परिवर्तित होते हैं । इससे रक्खे के हृदय -परिवर्तन का संकेत मिल जाता है ।

चरित्र-चित्रण :

'अब्दुल गनी वृद्ध और अकेला आदमी है' अब्दुल गनी अमृतसर का मूल बाशिंदा है । वह विभाजन के समय होने वाले हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष से पहले लाहौर चला गया था । उस समय वह भी चाहता था कि उसका बेटा अपने परिवार सहित उसके साथ चला जाए । बेटा नया मकान छोड़कर राजी नहीं हुआ तो वह अकेला लाहौर चला गया था । बाद में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष में उसका बेटा और बहू और पोतियाँ मारे जाते हैं । साढ़े सात साल के बाद हॉकी मैच देखने के बहाने अमृतसर आने वाली टोली में वह शरीक हो जाता है ताकि अपना वतन और नया मकान, जो अब पराए हो चुके थे, फिर एक बार देख ले । दुबला पतला बूढ़ा गनी उसकी दाढ़ी सफेद हो गयी थी छड़ी टेकते हुए अपनी गली में आता है । अपने परिवार में वही केवल अकेला आदमी रह गया है ।

शरीफ इन्सान - गनी के व्यवहार में शराफत पाई जाती है । गली में जाने से पहले एक रोते हुए बच्चे को देखकर वह उसे पुचकार-पुचकारता है और उसके हाथ में कुछ पैसे देना चाहता है । वह मनोरी को देककर उससे प्यार से पूछता है -''बेटे, तेरा नाम मनोरी नहीं है ?'' उसके व्यवहार से प्रभावित होकर मनोरी उसकी बांह पकड़कर उसे मलबे तक ले जाता है । गनी जब रक्खे पहलवान से मिलता है तो दोनों बाँहें फैलाकर उसे स्वागत करने जैसी मुद्रा में आ जाता है । गनी रक्खे से आत्मीयता भरी बात करता है । उसकी भलमनसाहत की तारीफ करता है । उसके बेटा का रक्खे पर कितना दृढ़ विश्वास था, उसका वर्णन करता है । अंत में रक्खे की कुशल-मंगल की कामना करके बिदा लेता है ।

वात्सल्यमय पिता - गनी को शायद देश के निश्चित विभाजन की ओर जाति के आधार पर दंगे के खतरे की आशंका हो रही थी । इसलिए उन्होंने लाहौर को सुरक्षित स्थान मानकर अपना परिवार सहित अमृतसर छोड़कर चले जाने को बेटे से कहा था । पर बेटा नया मकान छोड़ने को राजी नहीं हुआ तो गनी अकेला लाहौर चला गया था । पर उसकी आशंका सच निकली । उसका बेटा और उसका परिवार मारे गए । साढ़े सात साल बाद उसे अमृतसर आने का मौका मिलता है । वह अमृतसर आकर अपने मकान का मलबा देखकर रो पड़ता है । वह मलबे की मिट्टी नाखूनों से खोद-खोद कर अपने ऊपर डाल रहा है और बिलख-बिलख कर कहता है -''बोल चिरागदीन, बोल ! तू कहाँ चला गया ओए ? ओ किश्वर ! ओ सुलताना । हाय मेरे बच्चे ओए ऽऽ ! गनी को कहाँ छोड़ दिया, ओए ऽऽऽ ।''

रक्खे पहलवान एक बर्बर आदमी है । विभाजन के समय उसकी लोलुप दृष्टि चिराग के नए मकान पर पड़ती है । वह उसे अपने कब्जे में लेने के लिए चिराग और उसकी पत्नी और दोनों बेटियों को मौत के घाट उतार देता है । लेकिन रक्खे को वह मकान मिल नहीं पाता, क्योंकि किसीने उसमें आग लगाकर उसे मलबे में बदल दिया है । तब से वह अपने को उस मलबे का मालिक मान लेता है ।

गनी के व्यवहार से गली के लोग भी नाराज हैं । वे मानते हैं कि मलबा सरकार की मलकियत है । पर रक्खा वहाँ किसी को गाय का खूँटा तक लगाने नहीं देता ।

रक्खे की जब गनी से मुलाकात होती है वह गनी की सज्जनता और सरलता से प्रभावित होकर अपने किए पर पश्चात्ताप करता है । उसकी आवाज में कुछ अस्वाभाविक -सी गूँज होती है, ओंठ लार से चिपक जाते हैं । मूँछ के नीचे पसीना आ जाता है । माथे पर किसी चीज का दबाव पड़ता है । रीढ़ की हड्डी दर्द कर रही थी । उसके मुँह से निकल पड़ता है -''हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तू ही है, तू ही है ।''

रात हुई तो रक्खा दुकान के तख्ते पर आ बैठता है । रोज वह लोगों को बुलाकर उन्हें सय्टे के गुर और सेहत के नुस्खे बताकर अपना अभिमान व्यक्त करता था । पर आज लच्छे को पंद्रह साल पहले की गई अपनी वैष्णोदेवी की यात्रा का विवरण सुनाकर आस्तिकता और समर्पण भाव व्यक्त करता है ।

लच्छे को बिदा करके रक्खा मलबे के पास आकर वहाँ से एक भैंस को खदेड़ देता है । फिर एक कौआ आकर चौखट पर बैठ जाता है तो कुत्ता भौंककर उसे हटा देता है और वह रक्खे को भी वहाँ से भौंककर हटा खुद मलबे के मालिम जैसा वहाँ लेट जाता है ।

इस प्रकार चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह कहानी अत्यंत यथार्थ प्रतीत होती है ।

संवाद :

इस कहानी के संवाद पात्रानुकूल हैं । उनमें सहजता, रोचकता और सांकेतिकता के गुण हैं । संवाद पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व और मनोभावों को बड़ी कुशलता से अभिव्यक्त कर देते हैं ।

लाहौर से आए लोग आपस में जो बातचीत करते हैं उससे अमृतसर में आए परिवर्तन का परिचय मिल जाता है । एक आदमी कहता है -''देख, फतहदीना, मिसरी बाजार में अब मिसरी की दुकान पहले से कितनी कम रह गई हैं । उस नुक्कड़ पर सुक्खी भठियारिन की भट्टी थी, जहाँ अब पान वाला बैठता है ।''

एक किशोरी रोते हुए बच्चे से कहती है-''चुप कर मेरा वीर । रोएगा तो तुझे वह पकड़ कर ले जाएगा, मैं बारी जाऊँ, चुप कर ।'' इससे मुसलमानों के प्रति भय और अविश्वास भाव स्पष्ट हो जाता है । गनी जब नवयुवक से पूछता है -''बेटा, तेरा नाम मनोरी नहीं है ?'' तब इससे आत्मीयता और वात्सल्य टपक पड़ता है । गनी चौखट पर सिर लगाकर बिलखता है -'' हाय ! ओए चिरागदीन ! ' इससे पितृहृदय की वेदना भरी करुणा आर्तनाद मुखरित हो जाती है । जब रक्खे के मुँह से निकल पड़ता है -'' हे प्रभु सच्चिआ, तू ही है, तूही है, तू ही है ।'' तब उसकी आत्मग्लानि का परिचय मिल जाता है और उसके हृदय -परिवर्तन का संकेत मिल जाता है । रक्खे का कुत्ते को हट-हट - दूर - दूर कहना और कुत्ते का बऊ-बऊ भौंकना ये दोनों सूचित कर देते हैं कि मलबे का स्वत्व स्थायी नहीं है । संवादों के द्वारा गनी और रक्खे की चारित्रिक विशेषताएँ और मानसिक हलचल उजागर हो जाती हैं ।

देश-काल तथा वातावरण :

कहानी में देश-काल तथा वातावरण का निर्वाह इस प्रकार किया गया है कि संपूर्ण कार्य-व्यापार यथार्थ प्रतीत होता है । वातावरण कहानी का प्राण है । इसकी स्वाभाविकता से कहानी जीवंत

लगती है । इसमें देश -विशेष और काल -विशेष की परिस्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है । विभाजन के बाद उत्पन्न तबाही और अविश्वास के वातावरण में पात्र वाह्य तथा आंतरिक रूप से ध्वस्त हो जाते हैं । घटना -क्रम में एक मकान का मालिक मलबे से भी अलग हो जाता है और भावुकता से मलबे पर बैठकर आँसू बहाता है । रक्खे नामक वर्बर मनुष्य मनुष्यता के मलबे पर बैठ कर व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए संत्रास फैलाता है । ये दोनों समाज के यथार्थ हैं । अंत में लेखक उस निष्ठुर हृदय में विक्षोभ उत्पन्न करके हृदय परिवर्तन और मानवता की पुन:प्रतिष्ठा का संकेत देते हैं । गनी के आंतरिक उद्‌गार मानसिक परिवेश का चित्रण करते हैं तो अमृतसर का परिवर्तन विभाजन के परवर्ती स्थिति को उजागर करता है । गनी के उपस्थिति में गली में निस्तब्धता छा जाना और उसके चले जाने पर पहले की चहल-पहल लौट आना भय के वातावरण को व्यक्त कर देते हैं ।

बिम्ब विधान द्वारा परिवेश की अस्वाभाविकता इससे स्पष्ट हो जाती है - गली के सामने जहाँ पहले ऊँचे-ऊँचे शहतीर रखे रहते थे, वहाँ अब एक तिमंजिला मकान खड़ा था । सामने बिजली के तार पर दो मोटी-मोटी चीलें बिलकुल जड़ होकर बैठी थीं ।

भाषा -शैली :

इस कहानी में अरबी-फारसी शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है, क्योंकि अब्दुल गनी इसका मुख्य पात्र है । रक्खे पहलावान की भाषा में उसकी बर्बरता, अश्लीलता और गुंडापन झलकता है । भावुकता पूर्ण प्रसंग में भाषा में चित्रात्मकता आ जाती है, जैसे - पेट की अंतड़ियों के पास जैसे कोई चीज उसकी सांस को जकड़ रही थी । .... उसे अपनी जबान और होंठ के बीच का अंतर कुछ ज्यादा महसूस हो रहा था । कुछ ध्वन्यात्मक शब्दों - हट-हट दुर्र्र्र्र-दुरे वउ-अउ-अउ से मलबे के मालिक के बदलने का संकेत मिलता है । गनी रक्खे से विदा लेते समय जिस भाषा का प्रयोग करता है, वह सरल, स्वाभाविक लगता है । लच्छे की भाषा में पूरी अमानवीयता और उद्दण्डता परिलक्षित होती है ।

उद्देश्य :

इस कहानी का उद्देश्य है - विभाजन के दौरान हुए हिन्दू -मुस्लिम संघर्ष के परिणाम -स्वरूप हुई तबाही को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना और भूलुंठित मूल्यबोध और मानवता को हृदय -परिवर्तन द्वारा पुन: प्रतिष्ठित करना । लेखक भोगे हुए यथार्थ को सामने लाकर पाठक को सोचने को विवश कर देते हैं कि नितांत व्यक्तिगत लोभ के लिए कुछ बर्बर लोग उपद्रव मचा देते हैं और बाकी लोग उनका विरोध करने का साहस जुटा नहीं पाते और आगे चलकर सच का सामना कर नहीं पाते । ऐसी रुग्ण

मानसिकता का निर्मोक उतार फेंकना अपेक्षित है । उदारता और आदर्श में विश्वास करने वाले गनी जिस प्रकार हिन्दू -मुसलमानों को सिर्फ इंसान के रूप में देखता है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को सांप्रदायिक सद्भावना की प्रतिष्ठा करके इंसानियत को बचाना है । रक्खे के मन में प्रायश्चित की पीड़ा का अनुभव दिखाकर लेखक यह भविष्यवाणी कर देता है कि भले ही कोई स्वार्थांध होकर किसी के प्रति विश्वासघात करे, पर अन्ततोगत्वा उसे पश्चात्ताप होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । यह कहानी पाठक में संवेदना उत्पन्न करती है, चेतना प्रदान करती है । मलबा का स्वामित्व छोड़ देना मानवीय मूल्यों की पुन: सर्जना का संदेश देता है । सट्टे का गुर बताने में जो अहंकार है वह वैष्णो देवी की यात्रा के वर्णन में समर्पण भावना द्वारा दूर हो जाता है । अहंकार में सुख नहीं है, शांति नहीं है, समर्पण में सुख है, शांति है । इस कहानी में गली के अनुभव की प्रमाणिकता समय की प्रामाणिकता बनकर उसकी गहरी संवेदना का अभिव्यक्त करती है । उद्देश्य की दृष्टि से यह एक सशक्त और सफल कहानी है ।

परिन्दे

3.5.1 लेखक परिचय :

'परिन्दे' कहानी के लेखक निर्मल बरमा का जन्म ३ मार्च 1929 में शिमला में हुआ था । वे दिल्ली विश्वविद्यालय के सेंट स्टीफेंस कॉलेज से इतिहास में एम.ए. पास करने के बाद कुछ वर्ष अध्यापक रहे । उन्होंने शिमला के भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में फेलो के रूप में मिथक चेतना पर कार्य किया । उन्होंने 1959 में चकोस्लौवाकिया के प्राच्य विद्या संस्थान की ओर से आमंत्रित होकर समकालीन 'चेक साहित्य' पर शोधकार्य किया ।

सम्मान :- 1993 में साधना पुरस्कार , 1994 में कव्वे ओर कालापनी' पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार, 1995 में उत्तर प्रदेश संस्थान से राममोहन लोहिया अतिविशिष्ट सम्मान, मूर्तिदेवी पुरस्कार, 1999 में ज्ञानपीठ पुरस्कार ।

कृतियाँ : - कहानी संग्रह : परिन्दे, जलती झाड़, पिछली गर्मियों में,

उपन्यास : - वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, रात का रिपोर्टर

नाट्यकथा : - तीन एकांत

निबन्ध तथा संस्मरण : - चीड़ों पर चांदनी, शब्द और स्मृति, हर बारिश में, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए ।

3.5.2 कथासार :

'परिन्दे' कहानी में आधुनिक परिवेश में आधुनिक मानव की अन्तर्कथा कही गई है । इस कहानी में कुमाऊँ के कान्वेंट स्कूल के कर्मचारी विभिन्न चरित्रों के रूप में आते हैं । वे सब भारतीय पारिवारिक परिवेश से भिन्न एक परिवेश में रहते हैं, जहाँ वे अपूर्णता का अनुभव करते हैं और संत्रास, घुटन, अकेलापन और मृत्युबोध से तिल-तिल जलते हैं । वे इस आशा से जीवन ढोते हैं कि उनका सपना कभी साकार होगा । पर यह प्रतीक्षा अंतहीन हो जाती है, जिसके पूरा होने की संभावना नहीं है ।

लतिका स्कूल के हॉस्टल की अभिरक्षक है । उस पर रात को छात्राओं के कमरों की जाँच करने का दायित्व है । जांच करके लौटते समय एक कमरे में लड़कियों के हँसी ठहाके के स्वर सुनकर

रुक जाती है और दरवाजा खटखटाती है । लड़कियाँ दरवाजा खोलती हैं और छुट्टियों की पहली रात को वहाँ हेमंती के गाने के कार्यक्रम होने की बात बताती हैं । वहाँ लतिका जूली को देखकर उससे मिलकर जाने को कहकर चली जाती है । सीढ़ियों तक आते-आते वह डॉक्टर मुखर्जी और मिस्टर ह्यूबर्ट से मिलती है । वे लतिका को डॉक्टर के कमरे में आयोजित कन्सर्ट में आने का निमंत्रण देते हैं । डॉ. मुखर्जी के आग्रह से उनके साथ जाती है ।

मि. ह्यूबर्ट स्कूल के संगीत शिक्षक हैं और बड़े भावुक हैं । डॉ. मुखर्जी बरमा से आए हुए डॉक्टर हैं जो प्राइवेट प्रेक्टिस के अलावा कान्वेंट स्कूल में हाईजीन फिजियोलाजी पढ़ाते हैं और इसलिए हास्टल के एक कमरे में रहते हैं । बरमा पर जापानियों का आक्रमण होने के बाद बरमा से आते समय रास्ते में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी ।वे मरने से पहले बरमा एक बार जाने की बात करते हैं लेकिन कभी नहीं जाते । अगले दिन स्कूल छुट्टियों के लिए बंद होने वाला था । स्कूल बंद होने के दिन दो प्रोग्राम होते हैं - चैपल में स्टेशन सर्विस और उसके बाद निप में पिकनिक । लतिका को पिकनिक शब्द याद आ जाने से उसकी स्मृति-पटल पर वह घटना उभर आती है जब वह स्कूल में आने के पहले साल पिकनिक के बाद डॉक्टर के साथ क्लब में गई थी और वहीं कुमाऊँ रेजिमेंट के कैप्टन गिरीश नेगी से पहली मुलाकात में उसका प्रेम हो गया था ।

गिरीश नेगी कश्मीर गए थे और वहीं उनकी मौत हो गई थी । लतिका उनकी स्मृति को आधार बनाकर प्रतीक्षा कर रही है । लतिका को लगता है कि वह भी एक दिन प्रिंसिपल मिस बुड की भाँति बूढ़ी हो जाएगी । बूढ़ी हो जाने की कल्पना से उसके समूचे शरीर में झुरझुरी -सी दौड़ जाती है । फिर उसे याद आता है मि. ह्यूबर्ट ने उसे भावुकता और यातना से भरा हुआ एक प्रेमपत्र दिया है । अर्थात् दूसरों की नजर में अब भी उसमें आकर्षण है और उम्र नहीं बीती है । वह मि. ह्यूबर्ट के इस काम को बचकाना हरकत मानती है ।

सबेरे के समय करीमुद्दीन उसे बताता है कि रात को मि.ह्यूबर्ट उसे जगाने आये थे । छाती में कुछ तकलीफ महसूस हुई थी । यह सुनकर लतिका उधेड़बुन में पड़ जाती है कि वह क्यों मि. ह्यूबर्ट की गलतफहमी को दूरकर नहीं पाती, न उसे अपनी विवशता बता पाती है ।

स्पेशल सर्विस के लिए सब स्कूल चैपल में इकट्ठे होते हैं । फादर एलमंड के बाइबिल पढ़ने के बाद लीड काइंडली लाइट संगीत गाया जाता है । तबीयत खराब होने के बावजूद मि. ह्यूबर्ट पियानो बजाने आते हैं । लतिका चैपल शीशो से वीपिंग विलोज की कांपती टहनियों को देखकर गिरीश नेगी से मिलन के मुहूर्त याद आ जाते हैं । वहीं गिरीश ने उसके क्लिप के नीचे बुरुंस का फूल खोंसकर अपना मिलिटरी हैट उसके सिर पर रखकर उसकी बिंदी को अपने होंठों से छूकर उसे चिढ़ाने के लिए मैन ईटर आफ कुमाऊ कहा था ।

स्पेशल सर्विस समाप्त होने के बाद मिस बुड बारिश होने की आशंका से परिवर्तित कार्यक्रम के बारे में बता देती है कि मिडोज में पिकनिक का आयोजन किया जाएगा । फादर आलमंड मिस वुड से जब पता कर लेते हैं कि पिछले कई सालों से छुट्टियों में लतिका और डॉक्टर हॉस्टल में रह रहे हैं, तो यह बात फादर को अखरती है, पर प्रिंसिपल को डॉक्टर के चरित्र के बारे में कोई संदेह नहीं है और वह मानती है कि लतिका छोटी बच्ची नहीं है ।

मैंदान में चलकर स्कूल के गेट के पास पहुँचते ही मि. ह्यूबर्ट लतिका से पूछते हैं -'' आप छुट्टियों में कहीं जाती क्यों नहीं ?'' लतिका कहती है कि मुझे यहाँ रहना अच्छा लगता है । मि. ह्यूबर्ट को डॉक्टर ने लतिका और गिरीश नेगी के संबंध के बारे में पहले से बता दिया था । यह सुनकर मि. ह्यूबर्ट को लगता है कि लतिका को प्रेमपत्र लिखना उसकी गलती थी । इस एकांत का मौका पाकर वे लतिका से कहते हैं -'' उस पत्र के लिए मैं लज्जित हूँ । आप उसे वापस लौटा दें, लतिका कोई उत्तर दे नहीं पाती ।

लंच समाप्त होने के बाद लतिका जूली से मिलती है । वह जूली को उसके नाम पर आया पत्र दिखाकर पूछती है कि चिट्ठी कहाँ से आई है । जूली को वह चिट्ठी कुमाऊँ रेजिमेंट के किसी मिलिटरी अफसर ने भेजी थी, पर जूली उसे झांसी में रहने वाले भाई की चिट्ठी बताती है । लतिका को असलियत का पता है इसलिए वह जूली को सावधान कर देती है और छुट्टी के बाद मिलने को कहती है ।

दूसरे क्षण वह सोचती है कि हो सकता है यह जूली का प्रथम परिचय और प्रथम अनुभूति हो । इसके साथ वहीं देवदार के नीचे गिरीश नेगी से मिलने की बात उसे याद आ जाती है । उसने अपने क्लिप से देवदार की छाप पर गिरीश नेगी का नाम लिखा था और गिरीश नेगी ने उसका नाम, जो आज अधमिटे होकर उस मिलन का साक्ष्य दे रहे हैं ।

शाम हो आई और मिस्टर ह्यूबर्ट की छाती के दर्द के बारे में बातें करते हुए डॉक्टर और लतिका लौटते हैं । लतिका ह्यूबर्ट की बात सुनकर अनमनी हो जाती है । वे देखते हैं कि पहाड़ छोड़कर पक्षियों का एक झूंड उड़ता हुआ आ रहा है । वे बर्फ के दिनों की प्रतीक्षा करते हैं । बर्फ गिरने से पहले मैदानी क्षेत्र में उड़ जाएँगे । पर डॉक्टर मि. ह्यूबर्ट और उसकी प्रतीक्षा का कोई अंत नहीं है ।

कुछ देर बाद क्लब की बार से नशे में चूर मि. ह्यूबर्ट को सहारा देकर डॉक्टर लाते हैं । लतिका लैंप लेकर उनके साथ जाती है । मि. ह्यूबर्ट सो जाते हैं तो दोनों वहाँ से चले आते हैं । डॉक्टर को बिदा करके लौटते समय जूली के कमरे में लाइट देखकर वहाँ लतिका जाती है और जेब से उसका प्रेमपत्र निकाल कर उसे सो गई जूली के तकिए के नीचे रखकर चली आती है ।

3.5.3 चरित्र-चित्रण :

लतिका :

निर्मल बरमा की कहानी 'परिन्दे' की मुख्य नारी पात्र लतिका है । वे कुमाऊँ के छोटे से पहाड़ी शहर में कान्वेंट स्कूल में अध्यापिका के पद पर हैं और हॉस्टल में रहती हैं । लतिका जब से इस स्कूल में आई, तब से हॉस्टल का उत्तरदायित्व उस पर है । बच्चों को डांट-फटकार अनुशासन बनाए रखने में उनका विश्वास है । इसलिए वे रात को चक्कर लगाकर स्थिति का जायजा लेती है ।

लतिका एक प्रतिनिधि पात्र है । उसकी व्यक्तिगत विशेषताएँ आधुनिक नारी की विशेषताएँ हैं । इसलिए उसके व्यक्तित्व की मुख्य पहचान प्रतिनिधिक(टाइप) के रूप में होती है ।

मुक्ति की तलाश आधुनिक नारी की एक विशेषता है । लतिका अपने वर्तमान जीवन से मुक्ति पाने के लिए अतीत प्रेम की स्मृति में जीना चाहती है । वह कहती है -''मेरी जिन्दगी के कुछ खूबसूरत प्रेम-प्रसंग इस नींद के कारण अधूरे रह गए हैं । अर्थात् लतिका वर्तमान से छुटकारा पाने के लिए स्मृति का आसरा लेती है ।

लतिका स्कूल में योगदान करने के पहले साल डॉक्टर मुखर्जीके साथ क्लब में गई थी तो वहाँ कुमाऊँ रेजिमेंट के कैप्टन गिरीश नेगी से प्रेम -संबंध स्थापित हो गया था । वे चीड़ के नीचे मिलते थे । नेगी उसे चिढ़ाने के लिए 'मैन ईटर आफ कुमाऊँ' कहा करता था ।

गिरीश नेगी कश्मीर जाता है और वहीं मारा जाता है । लतिका उसकी स्मृति को लेकर जीती है । स्कूल में प्रार्थना होते समय भी वह गिरीश की स्मृति में खो जाती है । वह मानती है कि धीरे-धीरे अनजान में गिरीश का चेहरा सोचती है कि क्या मैं एक खूसट बुढ़िया की तरह अपने अभाव का बदला जूली से ले रही हूँ । लतिका मानती है कि यदि यह जूली का प्रथम परिचय हुआ होगा, तो उस अनुभूति में एक दर्द होता है । जो आनन्द से उपजता है और पीड़ा देता है । वह जूली के प्रथम प्रेम की कोमलता को समझकर जूली के सोते समय उसके तकिए के नीचे उसका प्रेमपत्र चुपके से रखकर चली आती है । अतीत -प्रेम में जी रही लतिका यथार्थ -प्रेम में जीने को चाहने वाली जूली के प्रति हमदर्दी दिखाती है ।

लतिका में कुछ कमजोरियाँ भी हैं । अतीत -मोह के कारण वह गिरीश नेगी को भूल नहीं पाती । वर्तमान से भी वह घुलमिल नहीं सकती । इसलिए वह मि. ह्यूबर्ट के प्रेम को स्वीकार नहीं सकती । भविष्य के लिए वह आशावादी बनकर प्रतीक्षा करती है, जो कभी साकार नहीं होगा । अर्थात् सपनों की दुनिया में जीकर वह अंतहीन प्रतीक्षा करती है । उसकी आधुनिक मानसिकता उसके जीवन को विसंगतियों और वेदना से भर देती है ।

मि. ह्यूबर्ट :

मि. ह्यूबर्ट कुमाऊँ के कान्वेंट स्कूल में संगीत -शिक्षक हैं । उनको संगीत से बेहद लगाव है । प्रार्थना -सभा में वे पियानो बजाते हैं । जिस समय वे उदास हो जाते हैं उस समय पियानो बजाकर मन को तसल्ली देते हैं । लतिका से तो बेहद प्यार करते हैं । लतिका छुट्टियों में चली जाएगी, इस आशंका से वे दु:खी हो जाते हैं ।

मि. ह्यूबर्ट अकेले जीवन व्यतीत करते हैं । वे लतिका को जीवन साथी के रूप में पाना चाहते हैं, पर उसके सामने प्रेम-प्रस्ताव रख नहीं पाते । इसलिए उसे प्रेम-पत्र लिखते हैं । पर जब उन्हें मालूम हो जाता है कि लतिका अपने प्रेमी की मौत के बाद भी उन्हें भूल नहीं पाती और उनके प्रेम की स्मृति में जीना चाहती है, तब वे पश्चात्ताप करते हैं और लतिका से प्रेम-पत्र वापस लेने का अनुरोध करते हैं ।

मि. ह्यूबर्ट को मृत्यु-भय सताता है । डॉक्टर उससे छह महीने आराम करने को कहते हैं तो वे अकेलेपन के भय से छटपटा उठते हैं । वे छाती के दर्द को मामूली मानते हैं । कोई भी उनकी तबीयत का जिक्र करने से वे खीझ उठते हैं । वे जिन्दगी की ऊब से बचने के लिए शराब पीते हैं । वे डॉक्टर से पूछते हैं, क्या मैं मर जाऊँगा ?

मि. ह्यूबर्ट अपना परिवार बसा न पाने के दु:ख से छटपटाहट महसूस करते हैं ।

डॉक्टर मुखर्जी :

डॉक्टर मुखर्जी की नाक थोड़ी दबी हुई और आँखें छोटी-छोटी होने से वे आधे बरमी लगते हैं । वे बरमा के मूल बासिन्दा हैं । बरमा पर जापानियों का आक्रमण हो जाने से वे बरमा छोड़कर इस कुमाऊँ के छोटे शहर में आ बस गए हैं । वे प्राइवेट प्रैक्टिस के अलावा कान्वेंट स्कूल में हाइजीन - फिजियालॉजी पढ़ाते हैं । इसलिए हॉस्टल के एक कमरे में रहते हैं । लोग कहते हैं कि बरमा से आते समय रास्ते में उनकी पत्नी की मौत हो गई थी । पर डॉक्टर मुखर्जीअपने अतीत -जीवन के बारे में किसी से कुछ नहीं कहते । उनकी अभिलाषा है कि मरने से पहले वे जरूर एक बार बरमा जाएँगे ।

डॉ. मुखर्जी में एक साथ जिजीविषा और मृत्युबोध मिलता है । बरमा से आते समय उनकी पत्नी की मौत हो गई थी । उस समय उन्हें अपना जीवन बेकार लग रहा था । फिर भी वे जीना चाहते हैं । लतिका से वे कहते हैं -'' आज इस बात को अर्सा गुजर गया और जैसे कि आप देखती हैं मैं जी रहा हूँ । ..... उम्मीद है कि काफी अरसा और जीऊँगा । जिन्दगी काफी दिलचस्प लगती है, और उम्र की मजबूरी न होती तो शायद मैं दूसरी शादी करने में भी न हिचकता ।''

डॉ. मुखर्जी के बारे में फादर एल्मंड की राय अच्छी नहीं है, इसलिए वे नहीं चाहते कि छुट्टियों में डॉ. मुखर्जी के साथ लतिका अकेली रहे । लेकिन प्रिंसिपल मिस उड का डॉ. मुखर्जी के चरित्र में विश्वास था । डॉक्टर और फादर में कभी नहीं पटती थी ।

डॉक्टर मुखर्जी चाहने पर भी अपनी जन्मभूमि बरमा को भुला नहीं पाते । वे कहते हैं कि मरने से पहले मैं जरूर एक बार बर्मा जाऊँगा । यह सोचते ही उनका मन भारी हो जाता है । फिर बहुत दिनों के बाद एक अजनबी बनकर वहाँ जाने में उन्हें डर लगता है । इस उम्र में वहाँ जाकर रिश्ता जोड़ने से डरते हैं । वे आशंका करते हैं कि मैं यहीं शायद मर भी जाऊँगा ।

डॉ. मुखर्जी को फादर का स्पेसल सर्विस प्रोग्राम नहीं सुहाता । वे यह किस्सा जल्दी खत्म हो जाना चाहते हैं । वे प्रार्थना में निष्ठा नहीं रखते । वे अनास्थावादी हैं । डॉ. मुखर्जीस्नेही व्यक्ति हैं । मि. ह्यूबर्ट के स्वास्थ्य का परीक्षण करके वे उन्हें छह महीने की छुट्टी लेकर आराम करने को कहते हैं । हर समय दूसरों से अच्छा संबंध बनाए रखते हैं ।

वे किसी बड़े शहर में जाकर प्रैक्टिस करना और पैसे कमाना नहीं चाहते । मन लग गया तो वे कुमाऊँ में रह गए । मिस उड उन्हें उच्छृंखल लापरवाह और सनकी समझती थीं, क्योंकि वे अपनी योग्यता के बल पर कहीं दूसरी जगह काफी चमक सकते थे ।

डॉ. मुखर्जी लतिका को अतीत की स्मृति में जीने की जिद को देखकर उसे गलती मानते हैं । वे कहते हैं -'' वैसे हम सबकी अपनी-अपनी जिद होती है । कोई छोड़ देता है, कोई आखिर तक उससे चिपका रहता है । किसी चीज को जानबूझकर न भूल पाना हमेशा जोंक की तरह उससे चिपटे रहना गलत है ।''

3.5.4 कहानी -कला की दृष्टि से समीक्षा :

कहानी -कला की दृष्टि से समीक्षा करते समय हम निम्नलिखित तत्वों पर प्रकाश डालते हैं । ये हैं -1) कथावस्तु, 2) चरित्र-चित्रण, 3) संवाद, 4) देश-काल तथा वातावरण, 5) भाषा-शैली, 6) उद्देश्य तथा 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

'परिन्दे' कहानी की कथावस्तु कुमाऊँ के कान्वेंट स्कूल के वातावरण में ही सीमित है । यह आधुनिक जीवन की कठिनाइयों और समस्याओं को लेकर विकसित हुई है । लतिका स्कूल के हॉस्टल

का उत्तरदायित्व संभालती है । वह हॉस्टल में ही रहती है । जब से वह यहाँ आई है, तब से सर्दी की छुट्टियों में भी कहीं नहीं जाती, हॉस्टल में ठहरती है । वह जब यहाँ आई, उसी साल स्कूल की पिकनिक के बाद डॉ. मुखर्जीके साथ मिलिटरी बार में गई थी । वहीं रेजिमेंट के कैप्टन गिरीश नेगी से उसकी मुलाकात हुई थी, जो प्रेम में बदल गई थी । पर कुछ दिनों के बाद लौटने का वादा करके गिरीश नेगी कश्मीर चला जाता है और वहीं उसकी मौत हो जाती है । लतिका उसके प्रेम को भूल नहीं पाती । यद्यपि वह जानती है गिरीश नेगी से उसका मिलन और संभव नहीं है, फिर भी वह उसकी अंतहीन प्रतीक्षा करती है । जीवन में अकेलापन झेलती है । अतीत प्रेम में जीना चाहती है ।

स्कूल के संगीत शिक्षक मिस्टर ह्यूबर्ट को यह बात मालूम नहीं है । वे लतिका का साहचर्य चाहते हैं । इसलिए उसे प्रेम-पत्र लिखते हैं । लतिका उन्हें प्रेम-पत्र न लौटा सकती है, न उनको अपनी मजबूरी बता सकती है, वरन छुपाकर पत्र अपने पास रखती है । मि ह्यूबर्ट की छाती में जब दर्द होता है और वे अस्वस्थ हो जाते हैं, तब लतिका दु:खी हो जाती है । जब सर्दी की छुट्टियों के दिन आ जाते हैं तो लतिका को छोड़कर दिल्ली जाने की आशंका से छटपटाते हैं । ह्यिूबर्ट माफी मांगकर वह पत्र वापस ले लेना चाहते हैं, पर लतिका कुछ उत्तर नहीं पाती ।

डॉ. मुखर्जी बरमा से आकर कुमाऊँ के इस छोटे-से शहर में टिक जाते हैं । वे यहाँ स्कूल में फिजियोलॉजी-हाइजीन पढ़ाते हैं और स्कूल के हॉस्टल में रहते हैं । वे दार्शनिक जैसी बात करते हैं । वे नहीं चाहते कि लतिका को प्रेमी गिरीश नेगी की स्मृति में अपनी जिन्दगी को भी बरबाद कर दे । वे खुद भी अकेले हैं । उनकी पत्नी की मौत बरमा छोड़कर कुमाऊँ आने के रास्ते पर हो गई थी । प्रिंसिपल बुड भी अकेली है । यहाँ सभी पात्र अनमने ढंग से जिन्दगी ढो रहे हैं । जीवन का कोई आकर्षण उन्हें मोहित नहीं कर पाता ।

इसी समय लतिका को जूली के नाम पर एक पत्र मिलता है । जिस पर रेजिमेंट सेंटर की मुहर लगी थी । पर जूली इसे झांसी में रहने वाले अपने भाई का पत्र बताती है । पहले बच्चों की इस प्रकार की हरकतों से बचाना वह अपना फर्ज समझती है पर बाद में सोचती है कि हो सकता है यह जूली के प्रथम परिचय की प्रथम अनुभूति रही हो । वह नहीं चाहती कि जो अभाव वह महसूरस करती है, उसे और कोई झेले । इसलिए जूली के सोते समय वह उसके तकिए के नीचे पत्र रखकर चली आती है ।

चरित्र-चित्रण :

इस कहानी में लतिका मुख्य चरित्र है । आधुनिकता के बोध के कारण वह स्वतंत्र जीवन बिताना चाहती है । वह अपनी अस्मिता की खोज में छटपटाती है और अकेलापन महसूस करती है ।

उसका प्रेम कुमाऊँ रेजिमेंट के कैप्टन गिरीश नेगी से हो जाता है जो बाद में कश्मीर चला जाता है और वहीं उसकी मौत हो जाती है । लतिका उसके प्यार को भूल नहीं पाती । अतीत-प्रेम के मोह में वह अतीत -स्मृति में जीती है । वह मिस्टर ह्युबर्ट के प्रेम को न स्वीकार कर पाती है न ठुकरा पाती है । वह जूली को पहले किसी के प्रेम में पड़ने की चेतावनी देने के लिए उसके नाम पर आए प्रेम-पत्र को उसे नहीं देती । लेकिन परवर्ती समय में यह प्रथम परिचय और प्रथम अनुभूति मानकर उसे आघात देना नहीं चाहती और पत्र उसके अनजान में उसके तकिए के नीचे रख देती है । वह अपने अतीत प्रेम के कारण जूली के वास्तव प्रेम को कुचलना नहीं चाहती ।

संगीत शिक्षक मि. ह्यूबर्ट अब तक अकेला जीवन व्यतीत करते हैं । वे लतिका का सानिध्य चाहते हैं । इसलिए उसे प्रेम पत्र लिख कर प्रेम की याचना करते हैं । पर जब वे जानते हैं कि लतिका का प्यार गिरीश नेगी से था, जो मर चुका है और लतिका अपने अतीत -प्रेम में जीना चाहती है तब उन्हें पश्चात्ताप होता है और एकांत पाकर क्षमा याचना करके अपना प्रेम-पत्र वापस ले लेना चाहते हैं । वे जब दु:खी होते हैं तब पियानो बजाते हैं । संगीत में दु:ख भूलना चाहते हैं । उनकी छाती में जब दर्द होने लगता है और डॉक्टर उन्हें छह महीने आराम करने को कहते हैं तो घबरा उठते हैं । उनको मृत्यु का डर सताता है । दु:ख भूलने को वे बार में ह्विस्की के नशे में चूर हो जाते हैं । डॉक्टर उन्हें वहाँ से लाकर उनके कमरे में पहुँचाते हैं ।

डॉ. मुखर्जी उस समय बरमा छोड़कर कुमाऊँ चले आए थे । जब बरमा पर जापान ने आक्रमण कर दिया । बरमा से आते समय रास्ते में उनकी पत्नी की मौत हो गई, तब से वे अकेले हैं । जीवन - काल में उनकी एक बार बर्मा जाने की तो इच्छा है, पर डर भी लगता है कि वहाँ वे लंबे अरसे के बाद अपरिचित लगेंगे और नए सिरे से रिश्ता जोड़ना आसान नहीं होगा । वे स्कूल में फिजियोलॉजी-हाईजीन पढ़ाने के कारण हॉस्टल में रहते हैं । शहर में मरीज मिल जाता तो उसका इलाज करते हैं । वे जब बोलते हैं तब एक दार्शनिक -सा बोलने लगते हैं । वे लतिका के प्रति सहानुभूति रखते हैं कि और नहीं चाहते कि लतिका मृत गिरीश नेगी की समृति में अपनी पूरी जिन्दगी बिता दे । वे मि. ह्यूबर्ट के अभिन्न मित्र हैं । तबियत खराब होते समय उनका इलाज करते हैं । उनको अपनी छाती का एक्सरे करने की सलाह देते हैं । जीवन से ऊब गए मि. ह्यूबर्ट को नशे की हालत में बार से लाकर उनके कमरे तक पहुँचाते हैं और जीने का आश्वासन देते हैं ।

जूली :

जूली का कुमाऊँ रेजिमेंट के एक अफसर से प्रेम संबंध है । वह लतिका की पकड़ में आ जाती है । लतिका के एक पत्र दिखाने पर वह घबरा उठती है और सच को छिपाने के लिए उस पत्र को झांसी

में रहने वाले अपने भाई का पत्र बताती है । वह लतिका से पत्र ले लेना चाहती है । पर लतिका पत्र वापस ले लेती है और छुट्टियों के बाद बातें करने को कहती है ।

फिर वह सोते समय जूली के तकिए के नीचे पत्र रखकर चली आती है ।

कहानी के अन्य पात्र हैं फादर एलमड , प्रिंसिपल मिस वुड, करीमुद्दीन, सुधा आदि । वे कहानी के अन्य चरित्रों के बारे में अपने मंतव्य देते हैं या परिवेश का निर्माण करते हैं ।

फादर एलमंड हर साल छुट्टी के पहले दिन स्कूल के चैपल में बाइबिल पाठ और धार्मिक संगीत की व्यवस्था करते हैं । उनको छुट्टी में हॉस्टल में लतिका और डॉक्टर का रहना अच्छा नहीं लगता क्योंकि डरते हैं कि इसको लेकर स्कूल की कहीं बदनामी न हो ।

प्रिंसिपल मिस वुड उम्र में बूढ़ी हो चली है । वह जरा-जरा-सी बात पर चिढ़ जाती है, कर्कश आवाज से बोलती है । इसलिए सब उसे ओल्डमेड कहकर पुकारते हैं ।

संवाद :

कहानी में संवाद का स्थान महत्वपूर्ण है । इस कहानी के संवादों की भाषा अत्यंत सहज, विदग्धतापूर्ण, संकेतपूर्ण, संवाद में शामिल पात्रों के तथा दूसरों के मनोभावों की व्यंजक है ।

लतिका से लड़कियाँ पूछती हैं -''मैडम, छुट्टियों में क्या आप घर नहीं जा रही हैं ?'' लतिका का उत्तर -''अभी कुछ पक्का नहीं है - आइ लव द स्नो फॉल !'' छात्राओं में अविश्वास भाव उत्पन्न कर देता है । डॉक्टर जब वही प्रश्न लतिका से पूछते हैं तब लतिका कोई उत्तर नहीं दे पाती । इससे उसका अन्यमनस्कता भाव अभिव्यक्त हो जाता है ।

डॉक्टर अकसर कहा करते हैं - मरने से पहले मैं एक बार बरमा जरूर जाऊँगा । इससे उनके जन्मभूमि के प्रति लगाव व्यक्त होता है । डॉक्टर मि. ह्यूबर्ट से पूछते हैं - क्या तुम नियति पर विश्वास करते हो ? ह्यूबर्ट कोई उत्तर नहीं देने से पहले वे फिर प्रश्न करते हैं - मैं कभी-कभी सोचता हूँ, इन्सान जिंदा किसलिए रहता है - क्या उसे कोई बेहतर काम करने को नहीं मिलता ? इससे उनके अन्तर्द्वन्द्व, मृत्यु चेतना, भाग्यवादिता का स्वर सुनाई पड़ता है ।

लतिका विभिन्न लोगों के साथ बातचीत करते समय संवाद प्रसंगानुकूल होता है । वह करीमुद्दीन से बात करते समय आत्मीयता है तो जूली से बात करते समय गुस्से का स्वर है । वह नेगी से बात करते समय हृदय का प्रेमोच्छ्वास झलकता है । लतिका का स्वगत कथन भी उसकी अन्तर्व्यथा का संकेत करती है - ह्यूबर्ट ही क्यों, वह क्या किसी को भी चाह सकेगी, उस अनुभूति के संग जो अब नहीं रही, जो छाया -सी उस पर मंडराती रहती है, न स्वयं मिटती है, न उसे मुक्ति दे पाती है ।

देश-काल तथा वातावरण :

देश-काल तथा वातावरण की पृष्ठभूमि पर कथानक का विकास होता है । वातावरण स्वाभाविक और पात्रानुकूल होने से पात्र सजीव लगते हैं, घटना यथार्थ लगती है । इस कहानी के पात्र आधुनिक होने से वातावरण भी आधुनिकता का बोध करानेवाला है, जो स्वाभाविक पारिवारिक चहल-पहल से दूर है । सभी पात्रों की यौन-आकांक्षा अपूर्ण है । उसी के अभाव में सभी अपने को अधूरा अनुभव करते हैं । मन की गहराई के अभाव के भूलने के लिए मिस्टर ह्यूबर्ट संगीत का सहारा लेते हैं तो डॉक्टर दार्शनिक जैसी बात करते हैं । लतिका हॉस्टल के काम में व्यस्त रहकर पहले प्रेम की स्मृति में जीना चाहती है । कुमाऊँ का क्षेत्र भी किसी का अपना नहीं है । अत: स्थान की बेगानगी पात्रों की बेगानगी व्यक्त करती है । कहानी में स्थान का वातावरण इस प्रकार वर्णित है - वह अक्सर टहलते हुए सिमिट्री तक चली जाती थी । उससे सटी पहाड़ी पर चढ़ने पर वह बर्फ में ढंके देवदार वृक्षों को देखा करती थी, जिनकी झुकी हुई शाखाओं से रुई के गालों-सी बर्फ नीचे गिरा करती थी ।

काल के वातावरण के चित्रण द्वारा अन्तर्मन का चित्रण इस प्रकार है - धागे में बंधे चमकीले लट्टुओं की तरह वे एक लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी कतार में उड़े जाते हैं, पहाड़ों की सुनसान नीरवता से परे, उन विचित्र शहरों की ओर जहाँ शायद वह कभी नहीं जाएगी । इससे प्रतीत होता है कि परिन्दे अपना गंतव्य जानते हैं, इसलिए बर्फ से बचने चले जाते हैं । लतिका को अपना गंतव्य मालूम नहीं है, इसलिए वह अतीत स्मृति में जीना चाहती है ।

भाषा :

इस कहानी के सभी पात्र शिक्षित हैं । इसलिए उनके मुँह से परिनिष्ठित भाषा निकलती है । इस कहानी में शिक्षित पात्रों के अनुरूप अंग्रेजी शब्दों की भरमार है । चैपल, मी डोज, गुड नाइट, ब्लॉक, शोपाँ, सर्मन, स्पेशल सर्विस, लाइब्रेरी, ट्रैजिक, हाऊ क्लम्जी, मैन ईटर ऑफ कुमाऊँ, हिम बुक, प्रेयर हॉल, कॉयर आदि चूंकि करीमुद्दीन मिलिट्री में अर्दली रह चुका है, इसलिए उसकी भाषा की शुद्ध हिंदी है । कहानी में प्राय तत्सम शब्दों का ही प्रयोग मिलता है । लतिका की सोच में काव्यात्मकता का परिचय मिल जाता है - उसका सिर चकराने लगा । मानो बादलों का स्याह झुरमुट किसी अनजाने कोने से उठकर उसे अपने में समा लेगा । प्राकृतिक शोभा के वर्णन में काव्यात्मकता परिलक्षित है - उड़ते हुए बादल अब सुस्ताने लगे थे, उनकी छायाएँ नन्दादेवी और पंचचूली की पहाड़ियों पर गिर रही थीं । डॉक्टर की भाषा में दार्शनिकता है - कुछ लोगों की मौत अंत तक पहेली बनी रहती है ... शायद वे

जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे । उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का एहसास नहीं होता ... । लतिका का अन्तर्द्वन्द्व इसमें है -डॉक्टर सब कुछ होने के बावजूद वह क्या चीज है जो हमें चलाए चलती है । हम रुकते हैं तो भी अपने रेले में वह हमें घसीट ले जाती है ।

उद्देश्य :

'परिन्दे' नई कहानी की पहली कृति है । इसके पात्रों को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए । इसके पात्रों में अनास्था, निराशा, कुंठा, घुटन और पलायनवाद का स्वर अधिक मुखरित हुआ है । इनमें सामाजिक सचेतनता और सकारात्मक दृष्टि का अभाव है ।

ये पात्र स्वतंत्रता - प्रेमी हैं, अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत हैं, जिन्दगी में सुख-शांति चाहते हैं, लेकिन समाज और परिवार के तथाकथित सुरक्षा वलय से हट कर सन्नाटा भरे माहौल में रहने से जीवन में केवल अकेलापन और अधूरापन महसूस करते हैं ।

कहानी का मुख्य स्वर है - प्रेम की असफलता और उससे उत्पन्न अकेलापन, कुंठा, घुटन और पलायनवादी प्रवृत्ति जीवन -संघर्ष की कटुता से आँखें बंद करके वीरान-जिन्दगी बिताने की मानसिकता ।

इस कहानी में हम जाने -पहचाने भारतीय सामाजिक परिवेश का अनुभव नहीं कर पाते । इसलिए यह केवल क्षणिक प्रभाव डाल सकती है, पर पाठक के हृदय को झकझोर देने की क्षमता नहीं रखती । आधुनिक चेतना के स्पर्श से पात्र-पात्राएँ अस्मिता की खोज में यातनापूर्ण प्रतीक्षा करते हैं और इस प्रतीक्षा के अंत की कोई संभावना नहीं दिखती । फिर भी तमाम दु:ख-दर्द को झेलते हुए भी वे आशावादी हैं, न जाने किसी दिन वे अपने सपनों को साकार होते हुए देख सकेंगे ।

आधुनिक जगत के पात्र मुक्त जीवन के मोह में सेक्स, शराब और संगीत द्वारा अपने को तसल्ली देने का प्रयास करते हैं, पर सफलता का स्वाद उन्हें नहीं मिल पाता । सबमें जिजीविषा है, पर कारगर उपाय नहीं है ।

शीर्षक :

इस कहानी का शीर्षक 'परिन्दे' प्रतीकात्मक है । परिन्दे वर्तमान और भविष्य के प्रति सजग हैं । सर्दी का मौसम आ जाने से वे उस समय की प्रतीक्षा करते हैं जब बर्फ गिरनी और वे पहाड़ी क्षेत्र छोड़कर एक सुरक्षित स्थानों में चले जाएँगे, जो गंतव्य-स्थल उन्हें मालूम है ।

लेकिन कहानी के पात्रों की स्थिति परिन्दों की स्थिति से बदतर है । उन्हें अपना गंतव्य, अपना भविष्य मालूम नहीं है । उनकी प्रतीक्षा का अंत नहीं है । यही आधुनिक मानव की नियति है ।

जहाँ लक्ष्मी कैद है

3.6.1 लेखक परिचय :

राजेन्द्र यादव का जन्म 28 अगस्त 1929 को हुआ था । वे सामाजिक सजगता को मुखर बनाने वाले नई पीढ़ी के कहानीकारों में प्रमुख थे । वे कहानी लिखते समय प्रसंग-विशेष के साथ -साथ उसके परिवेश पर भी उचित ध्यान देते हैं, जो कहानी की प्राणशक्ति को बनाए रखने में समर्थ है । उनकी कहानियों में आधुनिक चेतना के साथ सामाजिक यथार्थ बोध भी मिल जाता है । उनके पात्र जीवन की विषमताओं और विडम्बनाओं से टूट जाते हैं और कुंठाओं से ग्रस्त हो जाते हैं । 2013 ई. में उनका देहांत हो गया

राजेन्द्र यादव की कहानियों के संबंध में डॉ. सुरेश सिन्हा कहते हैं - राजेन्द्र यादव ने कहानियों के माध्यम से यदि व्यक्तित्व की खोज की है, तो नए सामाजिक सत्यों, मानव मूल्यों एवं आधुनिकता के नवीनतम संदर्भों के नवीन आयामों में नई वाणी दी है । उन्होंने एक ओर नवमानवता पर बल दिया है , दूसरी ओर युग के यथार्थ - बोध को स्वाभाविक अभिव्यक्ति दी है ।

उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं - जहाँ लक्ष्मी कैद है, प्रतीक्षा टूटना, लंचटाइम, मेहमान, नए-नए आनेवाले, बिरादरी बाहर, भविष्य के आसपास मंडराता अतीत, पास-फेल, भविष्यवक्ता ।

रचनाएँ - कहानी संग्रह - देवता की मूर्तियाँ, जहाँ लक्ष्मी कैद है, अभिमन्यु की आत्महत्या, छोटे-छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, खेल-खिलौने, अपने पार, ढोल, श्रेष्ठ कहानियाँ ।

उपन्यास - सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, अनदेखे अनजाने, पुल, एक इंच मुस्कान ।

3.6.2 कथासार:

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' राजेन्द्र यादव की एक सामाजिक यथार्थ का बोध करने वाली सशक्त कहानी है । लाला रूपाराम पूर्व अनुभव के आधार पर एक अंधविश्वास से आक्रांत होकर अपनी बेटी को घर की लक्ष्मी मान बैठे हैं । उनको लगता है कि अगर बेटी का ब्याह हो जाएगा तो उनके घर की लक्ष्मी चली जाएगी । वे कंगाल बन जाएंगे और कहीं के नहीं रहेंगे । इस विचार से वे अपनी बेटी के

प्रति इतना अमानवीय और असंवेदनशील व्यवहार करते हैं कि उनके हृदय से दया, प्रेम, सहानुभूति और ममता जैसे मानवीय मूल्य लुप्त हो गए हैं । परिणाम स्वरूप पिता-पुत्री के संबंध की परिधि संकुचित होकर केवल स्वार्थ आत्मकेन्द्रित भाव और यांत्रिक जीवन से निरंतर संघर्ष करती हुई अंत में हार जाती है । उसके लिए मुक्ति की कोई नई रोशनी दिखाई नहीं पड़ती है । वह मनोरोगी बन जाती है । उसे मिरगी का दौरा आता है । उसके सुनहले सपने मुरझा जाते हैं । वह सिर्फ छटपटा कर रह जाती है ।

गोविन्द गाँव से इंटर पास करके शहर में कालेज की पढ़ाई पूरी करने के इरादे से आया है और वह किसी ट्यूशन या छोटे-मोटे काम की तलाश में है । इस उद्देश्य से वह अपने पिताजी के बचपन के साथी लाला रूपाराम से मिलता है तो लाला रूपाराम उसे आटा चक्की का हिसाब करने का काम सौंपकर चक्की के पास की कोठरी में रहने की इजाजत दे देते हैं । लालाजी गोविन्द को मुंशी जी संबोधित करते हैं ताकि उसका सम्मान कुछ और बढ़ जाए ।

यहाँ गोविन्द के अपने पहले ही दिन लाला रूपाराम के बेटे रामस्वरूप से उनकी मुलाकात हो जाती है, जो गोविन्द से लक्ष्मी जीजी के लिए पत्रिका मांगकर ले जाता है और तीसरे दिन उसे वापस करके दूसरी पत्रिका मांगता है । गोविन्द दूसरे दिन पत्रिका देने का वचन देता है ।

लक्ष्मी की लौटाई हुई पत्रिका का एक पन्ना मुड़ा हुआ देककर गोविन्द का ध्यान उस पर जाता है और वह उसे खोलकर पढ़ने लगता है तो उसका दिल धड़कने लगा । उस पन्ने में तीन लाइनों पर नीली स्याही से निशान लगाए गए थे । इन लाइनों में लिखा था -'' मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ । मुझे यहाँ से भगा ले चलो । मैं फांसी लगाकर मर जाऊँगी ।''

इन लाइनों को पढ़कर गोविन्द के मन में प्रेम की उमंगें हिल्लोरें लेने लगीं । कभी वह उसे भगा ले जाने पर सोचता है तो कभी अपने भविष्य - पढ़ाई के बारे में चिंतित हो उठता है । गोविन्द लक्ष्मी की उम्र, सुन्दरता आदि के बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ लगाता है । ऊपर की मंजिल की ओर झांकता है । कोई हम उम्र व्यक्ति के न होने के कारण वह लक्ष्मी के बारे में किसी से इसके संबंध में कोई पूछताछ नहीं कर सकता । वह मन में सोचता है कि कुछ दिन के बाद वह किसी पत्रिका में एक प्रेम पत्र रख देगा जो किसी दोस्त के नाम लिखा गया होगा । अगर वह पकड़ा गया तो चालाकी से 'भूल से चला गया' कहकर झंझट से मुक्त हो जाएगा । वह पहले सोचता है कि किताब में ये निशान किसीने मजाक में लगा दिए होंगे पर यह तर्क उसे निराधार लगता है । क्योंकि उसका इन तीन दिनों में किसी के साथ इतना गहरा परिचय नहीं हो पाया है कि कोई मजाक करने की हिम्मत करे । लकीर सीधी होने के कारण किसी बच्चे का काम भी नहीं है । लक्ष्मी ने निशान भी आवेश की स्थिति में नहीं लगाए होंगे ।

एक दिन खा-पीकर एक चक्कर लगाने के लिए लाला रूपाराम चक्की में आकर टीन की एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं तो इतने में ऊपर की मंजिल में आँगन के लोहे के नाल पर एकाधिक सामान गिरने

की आवाज सुनाई पड़ी ऊपर से कोलाहल भी सुनाई पड़ा तो गोविन्द किसी भारी विपत्ति की आशंका से भयभीत हो उठा । पर लालाजी परेशान तो जरूर होते हैं लेकिन उनके चेहरे पर भयभीत होने का कोई लक्षण दिखाई नहीं पड़ता । पास बैठे हुए चौकीदार दिलावर सिंह और मिस्त्री सलीम भी इस घटना से हँसते हैं और वे इसे जैसे रोज की एक् स्वाभाविक घटना मान रहे थे ।

चौकीदार मुस्कराते हुए जब गोविन्द को परेशान न होने को समझाकर कहता है कि आज चण्डी चेत रही है । सलीम बताता है कि लड़की पर 'जिन' का साया है, जिसका इलाज मौलवी बदरुद्दीन के पास है । चौकीदार बताता है कि 'जिन' का इलाज मौलवी के पास नहीं है । वह ऊपर हो रहे शोर-गुल के रहस्य को टालने के लिए बताता है कि ऊपर कोई चीज किसी बच्चे ने गिरा दी होगी । मिस्त्री सलीम चौकीदार की बात न टालकर साफ -साफ सही बात बोलने को कहता है, क्योंकि यह रहस्य मुंशीजी से ज्यादा दिन छिप कर रह नहीं पाएगा ।

चौकीदार को जब यह विश्वास हो जाता है कि लालाजी के बारे में गोविन्द को कुछ भी पता नहीं है, तब वह लाला रूपाराम का पूरा इतिहास बताता है । वह लालाजी को शहर का मशहूर कंजूस और मशहूर रईस बताता है । वह बताता है कि लाला रूपाराम अफसरों को रिश्वत देकर मिलिटरी ठेके लेकर कालाबाजारी, धूर्तता और चोरी करने लगे । वे लक्ष्मी फ्लोर मिल में गेहूँ पिसवा कर और उसकी सप्लाई करके मोटी रकम जमा करने में सफल हो गये, अब इनके पास साबुन की फैक्टरी, जूते का कारखाना है । इनके पास पच्चीस -तीस रिक्शे और पांच ट्रक चलते हैं । इनके दस-बारह मकानों से किराए के पैसे आते हैं और सूद का व्यापार भी है । इन्होंने भी गाँव में काफी जमीन ले रखी है । इन्हे दौलत जमा करने की हाय-हाय लगी रहती है ।

गोविन्द जब उनके परिवार का परिचय जानना चाहता है तो चौकीदार दिलावर सिंह बताता है कि लालाजी की चार संतान हैं । बीबी मर चुकी है । नातेदार-रिश्तेदार कोई नहीं आते । घर पर एक मरियल बुढ़िया रहती है जो घर का सारा काम -काज संभालती है, जो उसके बड़े भाई की बीबी है । इसके बड़े दो बेटे अपने बाल-बच्चों के साथ अलग रहते हैं और साबुन की फैक्ट्री का और जूते के कारखाने का काम संभालते हैं । लेकिन सारा हिसाब लाला रुपाराम रखते हैं ।

चौकीदार ने बताया कि उनकी बेटी लक्ष्मी जो कभी-कभी चंडी बन जाती है । सचमुच घर की लक्ष्मी है । क्योंकि लक्ष्मी के कारण ही लाला रुपाराम आज रईस बन बैठे हैं । पहले इनका बाप सामान्य दर्जे का आदमी था । उसके मर जाने के बाद रुपाराम ने सट्टे में अधिक रुपये कमाने के चक्कर में सारे रुपए गंवा दिए । बड़े भैया रोचूराम ने एक पनचक्की खोली । उसीमें रूपाराम काम करते रहे । इनके खानदान में लड़की को भगवान मानने का विश्वास था । रोचूराम के एक बेटी हुई । बेटी का नाम गौरी रखा गया । लड़की के पैदा होते ही रोचूराम की तकदीर पलट गई । यह देखकर रूपाराम भी एक बेटी

के लिए तड़पने लगे । मनौती मानने लगे । संयोग से रूपाराम को भी एक लड़की पैदा हुई । उसके बाद उनके सितारे चमकने लगे । उस लड़की का नाम लक्ष्मी रखा गया । सचमुच वह लड़की लक्ष्मी बनकर परिवार में आ गई । रूपाराम ने अलग से 'लक्ष्मी फ्लोर मिल' बनवा ली । उनकी संपत्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी । दोनों भाई गर्व से कहने लगे -" हमारे यहाँ लड़कियाँ लक्ष्मी बनकर ही आती है ।"

कुछ दिन के उपरांत गौरी शादी के लायक हो गई । उसके प्रेम व्यापार को लेकर अफवाहें फैली तो रोचूराम ने लड़की की शादी कर दी । उसके बाद उसकी बरबादी के दिन आ गए । मिल में आग लग गई । वह मुकदमा हार गया । सब कुछ मटियामेट हो गया । उसका छल्ला-छल्ला बिक गया । एक दिन उसकी लाश तालाब में फूली हुई मिली ।

इस घटना का जबरदस्त प्रभाव लाला रूपाराम पर पड़ा । उनको डर लगने लगा कि अगर उनकी बेटी की शादी कर दी जाए तो उनका भी दिवाला निकल जाएगा । इस आंतक से उसने बेटी लक्ष्मी पर पहरा कड़ा कर दिया । पढ़ाई बंद कर दी गई । ट्यूशन मास्टर को भगा लेने की आशंका से घर पर पढ़ाई का विचार भी उन्होंने मन से निकाल दिया । लक्ष्मी को घर में नजरबंद कर दिया गया । घर के भीतर न किसी को आने दिया गया न किसी को जाने दिया गया । लक्ष्मी बहुत रोई पर राक्षस बाप ने एक न सुनी । बेटी पराए घर में चली जाने से वह चौपट हो जाएगा । इस आशंका से लाला रूपाराम ने बेटी की शादी का विचार भी छोड़ दिया - पर वे उसकी हर बात मानने लगे - उसकी हर जिद पूरी की । लक्ष्मी पहले सबसे लड़ती थी । बाद में चिड़चिड़ी और जिद्दी हो गई । रात भर रोते रहने से धीरे-धीरे उसे दौरा पड़ने लगा । उसे दौरा पड़ते समय वह पागल-सा व्यवहार करने लगी । बुरी-बुरी गालियाँ देने लगी - बेमतलब रोने -हँसने लगी । चीजें फेंकने लगी । सामने जो भी चीज पड़ जाए उसे तोड़-फोड़ करने लगी । कभी -कभी वह कपड़े उतार कर फेंक देती और बिलकुल नंगी होकर छाती और जांघ पीटपीटकर बाप से कहने लगती कि तूने मुझे अपने लिए रखा है, मुझे खा, मुझे चबा, मुझे भोग । यह सब सुनकर बाप सह जाता, पर बेटी की मुक्ति की बात सोच नहीं सकता । यह सब कहते -कहते चौकीदार आवेश में आकर लाला के लिए फैसला सुना देता है कि इसकी तो बोटी-बोटी गरम लोहे से दागी जाए और फिर बांधकर गोली से उड़ा दिया जाए ।"

गोविन्द लक्ष्मी की जिन्दगी की यह राम कहानी सुनकर व्याकुल हो जाता है । वाक्यों के नीचे लक्ष्मी के तीन निशान तीन बातों की ओर संकेत कर रहे हैं । मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ - दुर्वार लालसा में प्यार साकार न होने की स्थिति में सेक्स के तनाव के कारण उत्पन्न विक्षिप्तता अभिव्यंजित है, 'मुझे यहाँ से भगा ले चलो ' - मैं बंधन से मुक्ति की छटपटाहट और व्यक्तित्व की खोज स्पष्ट हुआ है । 'मैं फांसी लगाकर मर जाऊँगी' - मैं जीवन की विषमता से संघर्ष करते हुए भी

सामाजिक रूढ़ि के कारण पराजय वरण करने की करुण परिणति का आभास मिल जाता है ।

इस घटना से गोविन्द के मन में तीन प्रश्न उभर कर सामने आते हैं । वे हैं - क्या मैं ही पहला आदमी हूँ जो इस पुकार को सुनकर ऐसा व्याकुल हो उठा है । क्या ऐसी पुकार को अनसुनी कर दी है ? अर्थात् समाज के सामने यह एक विकट प्रश्न खड़ा है कि यदि मनुष्य आत्मकेंद्रित और स्वार्थों का नग्न हनन करे, उस स्थिति में समाज कोई प्रतिकार -व्यवस्था न करके केवल तटस्थ नीति अपनाए तो उस समाज का भविष्यत् क्या होगा ? इस कहानी में लेखक यही संदेश देते हैं कि जिस समाज में श्रद्धा, विश्वास, करुणा, सहानुभूति, प्रेम, मूल्य आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता वह ढह जाएगा । एक संस्कृति का पतन हो जाएगा ।

3.6.3 चरित्र-चित्रण :

लाला रूपाराम महत्वाकांक्षी रईस :

चौकीदार दिलावरसिंह की समझ के अनुसार लाला रूपाराम शहर के मशहूर कंजूस और मशहूर रईस के रूप में परिचित हैं । जब उनके पिताजी मर गए तब उनके और उनके बड़े भाई रोचूराम के हिस्सों में लगभग एक-एक हजार रुपए आए होंगे । रूपाराम बड़े महत्वाकांक्षी थे । कुछ बड़ा करोबार खोलने के विचार से अपने सारे पैसे सट्टे में लगा कर सब कुछ गंवा देते हैं । फिर बड़े भाई नोचूराम की पनचक्की में काम काम करते हैं । फिर बाद में वे अलग से अपनी 'लक्ष्मी फ्लोर मिल' की प्रतिष्ठा करते हैं, मिलिटरी का ठेका लेकर कालाबाजारी करते हैं । इसके बाद वे एक बहुत बड़ी साबुन की फैक्ट्री और काफी बड़ा जूतों का कारखाना बना लेते हैं । रुपए सूद पर देते हैं, पांच ट्रकों और पच्चीस-तीस रिक्शों के मालिक भी बन जाते हैं । वे गाँव में काफी जमीन भी खरीद कर रईस बन जाते हैं ।

रूप रंग और पोशाक -लाला रूपाराम बूढ़े हैं । वे अपनी पोशाक से भी विचित्र लगते हैं । वे मैली-सी पूरी बांहों की मिरजई पहने, मैली चीकट पुरानी अंडी लपेटे, बेंत टेकते धीरे-धीरे हाँफते हुए आते हैं । टूटे हुए फ्रेम का मोटे शीशे का चश्मा पहनते हैं । उनके चेहरे पर गर्दन हमेशा हिलती रहती है । झुरियाँ आ गई है । उनकी मैली -कुचैली धोती, फटे-पुराने जूते उनको हास्पास्पद बना देते हैं ।

कंजूस - लाला रूपाराम बहुत कंजूस हैं । कहीं कोई बिजली का खर्च बेकार कर रहा हो, कहाँ बेकार नल खुला हो या पंखा चल रहा हो उस पर वे पूरा ध्यान देते हैं । उनके डर से गोविन्द देर रात को बल्ब न जलाकर मोमबत्ती जलाता है । लालाजी पैसे खर्च न हो, इसलिए अपने बेटे को मुफ्त के

चुंगी के स्कूल में पढ़ा रहे हैं । वे एक पैसे का फायदा देखते हैं तो दस मील धूप में हाँफते हुए पैदल जा सकते हैं । गरमी हो या जाड़े हर समय कमर में धोती आधी पहने और आधी बदन में लपेट काम चला लेते हैं । वे मकान की सफेदी , सफाई या मरम्मत कभी नहीं करते । वे पान-सुपारी नहीं लेते । उनके घर पर मेहमान नहीं आते । कोने में घर पर एक कुर्सी तक भी नहीं रखी ।

मुफ्त काम लेने में होशियार - लाला रूपाराम चालाकी से दूसरों से मुफ्त में काम लेने में अपनी होशियारी दिखाते हैं । जब अपने गाँव से आने वाला गोविन्द उनसे मिलता है तब उसे अपने सहपाठी का लड़का जानकर कहते हैं - ''भैया, तुम तो अपने ही बच्चे हो, जरा हमारी चक्की का हिसाब किताब घंटे -आध घंटे देख लिया करो, और मजे में चक्की के पास जो कोठरी है, उसमें पड़े रहो । अपना पढ़ो, आटे की तो यहाँ कमी नहीं है ।'' लाला मिस्त्री सलीम से भी अलग से काम लेते हैं । जब चक्की बंद रहती है तब मिस्त्री से सारे ट्यूबों का पंक्चर ठीक करता है ।

झक्की- लाला रूपाराम बड़े झक्की आदमी हैं । सभी नौकर उनके नाम पर रोते हैं । वे कितना ही क्यों न बोलें कोई उनकी बात ध्यान से नहीं सुनता । उनके पीछे लोग उनको नुकसान पहुँचाते हैं, उपहास करते हैं, गालियाँ देते हैं । वे पैसों के लिए घंटों रिक्शे वालों और ट्रकवालों से बहस करते हैं ।

अविश्वास करने वाला - लाला रूपाराम किसी पर विश्वास नहीं करते । यद्यपि उनका एक बेटा साबुन की फैक्ट्री संभालता है, और दूसरा लड़का जूते का कारखाना देखता है, फिर भी अपने पास पूरा हिसाब-किताब रखते हैं और हर शाम को वसूली के लिए पहुँच जाते हैं । मास्टरों पर अविश्वास होने के कारण वे बेटी को घर पर पढ़ाने के विचार को मन से निकाल देते हैं ।

चोरी और कालाबाजारी में उस्ताद -लाला रूपाराम आटा चक्की चलाते है, वे नौकरों को सिखाते हैं कि किस चालाकी से आटा बचाया जा सकता है । वे इस फायदे से रोज होटल वालों को आटा बेचते हैं । वे मिलटरी का ठेका लेकर घपले करते हैं । मिलटरी के गेहूँ बेचकर उसकी जगह रद्दी और सस्तेवाला गेहूँ खरीद कर आटे का कोटा पूरा करते हैं ।

दौलत जुटाने में सन्नद्ध -लाला रूपाराम बूढ़े हो गए, पर रात-दिन सुबह-शाम पैसे के पीछे हाय-हाय करते रहते हैं । वे भाग-दौड़ कर, लू-धूप की चिंता छोड़कर केवल पाई-पाई जमा करने

में लगे रहते हैं । वे उससे एक पाइ भी खर्च नहीं करते, जैसे वह धन किसी दूसरे का हो । वे धन के ऊपर बैठे हुए साँप की तरह हैं, जो खुद खा नहीं सकता और उसके सामने किसी को खाते ही देख नहीं सकता । चौकीदार दिलावर सिंह को तो लालाजी की इस प्रवृत्ति के लिए दया आ जाती है । वे खुद नहीं खाते , न अपने परिवार के किसी को खाने की इजाजत देते हैं ।

अंधविश्वास से जकड़बंद - लाला रूपाराम की ऐसी मान्यता है कि अपने खानदान में लड़की देवता होती है । उसके जन्म होते ही सौभाग्य -लक्ष्मी का आगमन होता है और वह शादी करके ससुराल चली जाने के बाद तकदीर फूट जाती है । सब कुछ बरबाद हो जाता है । इसी अंध-विश्वास के आधार पर वे लड़की के लिए बहुत दौड़-धूप करते हैं, मनौती मानते हैं । संयोग से उनके लड़की होती है और वे दिन दूना रात चौगुना फलते -फूलते हैं । जब उनके बड़े भाई नोचूराम की बेटी गौरी की शादी हो जाती है और नोचूराम उसके बाद इतना बरबाद हो जाता है कि उनके पास एक फूटी कौड़ी नहीं बचती, अंत में उनकी लाश तालाब में मिलती है । तब लाला रूपाराम बहुत डर जाते हैं । वे अपनी बेटी लक्ष्मी की पढ़ाई बंद कर देते हैं । घर की ऊपर की मंजिल में उसे नजरबंद करके रखते हैं । उसे किसी से मिलने नहीं देते और लड़की की शादी की बात मन से निकाल देते हैं । वे अपने स्वार्थ के लिए बेटी के भविष्य को अंधेरे में धकेल देते हैं ।

स्वार्थ के लिए अपमान सहने को तैयार - लाला रूपाराम जब स्वार्थ के लिए बेटी लक्ष्मी की शादी नहीं करते, तब अवदमित यौन - आकांक्षा पूरी न होने से बेटी को मिरगी का दौरा आता है । इस समय वह अपना होश-हवाश खो बैठती है तो उल्टा-सीधा जो मन में आता , बकती है, वह सामान फेंकती है, तोड़ती है । लाला सब बर्दास्त करते हैं । लक्ष्मी जब पागल की तरह कपड़े फेंक कर नंगी हो जाती है और जांघें और छाती पीटकर कहती है - ले , तूने मुझे अपने लिए रखा है, मुझे खा, मुझे चबा, मुझे भोग... तब वे पिटते हैं, गालियाँ खाते हैं सब कुछ चुपचाप सह जाते हैं, पर उस पर पहरा देने में ढील होने नहीं देते । लाला के आचरण से क्षुब्ध होकर चौकीदार कहता है -‘‘ इसकी तो बोटी-बोटी गरम लोहे से दागी जाए और फिर बांधकर गोली से उड़ा दिया जाए ।’’

मानवीय मूल्यों के प्रति उदासीन -लाला रूपाराम अपने स्वार्थ में कोई आंच न आए, इसलिए अपनी लड़की की शादी नहीं करते । वे उसकी यौन आवश्यकता को नजरअन्दाज करके राक्षस-सा व्यवहार करते हैं, यौन - आकांक्षा की पूर्ति न होने से बेटी को मिरगी का दौरा आता है ।

रूपाराम बेटी का इलाज नहीं कराते । उसकी सारी घिनौनी गालियाँ चुपचाप सह जाते हैं । उनके मन में तनिक भी सहानुभूति, दया उत्पन्न नहीं होती । धन के पीछे वे रात-दिन पड़े रहते हैं । एक साँप की तरह उसकी रखवाली करते हैं । उनमें मानवीय मूल्यों का बिलकुल अभाव है । ऐसे निष्ठुर पिता की कल्पना किसी सभ्य समाज में नहीं की जा सकती ।

3.6.4 कहानी-कला की दृष्टि से समीक्षा :

कहानी -कला की दृष्टि से खरा उतरने के लिए किसी भी कहानी में जो तत्व उपलब्ध होने आवश्यक हैं वे हैं -1) कथावस्तु, 2) चरित्र-चित्रण, 3) संवाद, 4) देश-काल तथा वातावरण, 5) भाषा-शैली, 6) उद्देश्य तथा 7) शीर्षक ।

कथावस्तु :

राजेन्द्र यादव इस कहानी 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' में परिवेश पर अधिक महत्व देकर पाठक के सामने सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत करके दिखाते हैं कि धन-अर्जन के मोह में आधुनिक मानव दावन के स्तर तक गिर जाता है और दूसरे को कुंठाओं, अभाव, तनाव, यौन-अतृप्ति, हीनता और विभीषिका भरी जिन्दगी ढोने को विवश कर देता है , जो अंतमें पराभूत होकर अपना अस्तित्व खो बैठता है ।

लाला रूपाराम गांव से आकर शहर में बस गए हैं । वे 'लक्ष्मी फ्लोर मिल' बिठाकर अपना व्यापर शुरू करते हैं और धीरे-धीरे साबुन फैक्टरी, जूते के कारखाने की प्रतिष्ठा करके रईस बन जाते हैं । उनके गाँव से गोविन्द कालेज में पढ़ने के इरादे से आकर रूपाराम के पास पहुँचता है । रूपाराम उसे स्नेह से अपनी चक्की के बगल की कोठरी में रहने और बदले में रात को चक्की का थोड़ा हिसाब-किताब देखने को कहकर अपने पास रख लेते हैं । लाला रूपाराम का बेटा रामस्वरूप जीजी के पढ़ने के लिए पहले दिन गोविन्द से एक पत्रिका मांगकर ले जाता है और उसे तीसरे दिन वापस कर देता है । गोविन्द पत्रिका का एक पन्ना मुड़ा हुआ देककर उसे उलटकर देखा है कि 47-48 वें पन्नों पर तीन लाइनों पर नीली स्याही से निशान लगाए गए हैं, जिन्हें पढ़कर गोविन्द के मन में खलबली उत्पन्न हो जाती है । ये लाइने हैं -''मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ । मुझे यहाँ से भगा ले चलो । मैं फांसी लगाकर मर जाऊँगी ।'' इन निशानों के पीछे लक्ष्मी की कौन-सी मानसिकता छिपी हुई है, गोविन्द उस वस्तु स्थिति को जानने को अपनी व्यग्रता निखाता है । संयोग से ऊपर की मंजिल से लाला रूपाराम आकर बैठते ही ऊपर से चीजों के गिरने की आवाज आने लगी तो फिर लालाजी बिना किसी हड़बड़ी से ऊपर चले गए । पास बैठा चौकीदार बताता है कि आज चंडी चेत रही है । इससे गोविन्द प्रयास करके सारी

घटनाओं का विवरण जान लेता है ।

लाला रूपाराम बेटी को भगवान मानते हैं । वे मानते हैं कि बेटी के जन्म होने के बाद से सारी समृद्धि हुई है और वह शादी करके पराए घर में चली जाने से फिर बरबादी आ जाएगी । इस भय से वे बेटी की शादी नहीं करते । उसे ऊपर की मंजिल में बंदिनी - जैसी जिन्दगी जीने को विवश कर देते हैं । परिणाम -स्वरूप यौन -अतृप्ति, मानसिक -चाप, पीड़ा और छटपटाहट से लक्ष्मी मानसिक रोगी बन जाती है । उसे मिरगी का दौरा आता है ।

अब गोविन्द के चिंतन के माध्यम से लेखक राजेन्द्र यादव पाठकों के सामने तीन प्रश्न रखते हैं ? क्या गोविन्द पहला आदमी है जो इस पुकार को सुनकर व्याकुल हो उठता है । क्या औरों ने पहले से इस पुकार को सुना था और सुनकर अनसुना कर दिया है ? क्या ऐसी पुकार को अनसुना कर दिया जा सकता है ? इन तीनों प्रश्नों के माध्यम से एक सामाजिक यथार्थ का चित्रण करके लेखक के मन में मानवी मूल्यों की पुन: प्रतिष्ठा के लिए सामाजिक सजगता उत्पन्न करने की ललक है ?

चरित्र-चित्रण :

इस कहानी में मुख्य चरित्र लक्ष्मी है, जो एक बार भी कहानी में उपस्थित नहीं हुई है । गोविन्द ही एक मात्र पात्र है जिसका विचार-संघर्ष पूरी कहानी में छाया हुआ है । जहाँ परिवेश मुख्य है जो अत्यंत अमानवीय है । लाला रूपाराम उस परिवेश के स्रष्टा हैं । वे धन जुटाने में लगे हुए हैं और इसके लिए परिवार के किसी की भी सुख-सुविधाओं की परवाह नहीं करते । उनके प्रति किसी की धारणा भी अच्छी नहीं है । वे साँप की तरह धन के ढेर पर कुंडली मारे बैठे हैं जो स्वयं धन का उपयोग नहीं करता और दूसरों को भोग करने का मौका भी नहीं देते ।

रूपाराम एक अंधविश्वास से जकड़ बंद हैं कि बेटी घर की लक्ष्मी होती है । पराए घर में जाने से फिर घर में तबाही आ जाएगी । इसलिए लक्ष्मी को बंदी- जीवन बिताने को विवश कर देते हैं । लक्ष्मी इस यातना से मानसिक रोगी बन जाती है । वह तोड़-फोड़ मचाती है, बाप को गंदी गालियाँ देती है पर निष्ठुर बाप धन के मोह से चुपचाप सहन कर जाता है । चौकीदार दिलावर सिंह और मिस्त्री सलीम कथा को गति प्रदान करते हैं । वे लाला रूपाराम और उनकी बेटी लक्ष्मी का सारा इतिहास गोविन्द को सुना देते हैं । लाला रूपाराम की कार्य-शैली और उसके प्रति लोगों की धारणा से गोविन्द अवगत हो जाता है । वह सामाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व क्या है उसे रेखांकित करता है ।

गोविन्द इंटर करके कालेज में पढ़ने के लिए शहर आकर पहुँचता है । अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह शहर में बसे अपने गाँव के लाला रूपाराम से मिलता है तो लालाजी उसे सस्नेह अपनी चक्की के पास के कमरे में रहने की अनुमति देते हैं, वह लाला रूपाराम के बेटे रामस्वरूप के

हाथ से उनकी बेटी लक्ष्मी के पढ़ने के लिए एक पत्रिका भेजता है, जिसे रामस्वरूप के लौटाते समय सैंतालीसवें पन्ने में तीन लाइनों पर नीली स्याही से निशान देखकर उसके मन में पहले यह प्रश्न उठता है कि किसने निशान लगाए हैं । वह इस सिद्धांत पर पहुँचता है कि निशान सीधी रेखा में पड़ने से यह छोटे बच्चे का काम नहीं है । उसकी जान-पहचान भी इतनी यहाँ विकसित नहीं हुई है कि कोई उसके साथ मजाक करने के लिए निशान लगा दिया हो । कोई भी मानसिक विक्षिप्तता में ऐसे गूढ़ार्थ निहित लाइनों पर निशान लगा सके । उसे लगता है जरूर संतुलित मानसिक स्थिति में लक्ष्मी ने ये निशान जानबूझकर लगाए हैं या वह चुहलबाज हो और छकाने को लिखा हो ।

वह रात को उस पत्रिका को तकिए के नीचे रखकर सो जाता है । रात को नींद टूट जाती है । वह बार-बार पढ़ी गई उन लाइनों को पढ़ने के लिए चाहता है । पर वह रूपाराम के डर से बिजली का बल्ब न जलाकर मोमबत्ती जलाकर उन लाइनों को पढ़ता है । उसे लगता है कि यह लक्ष्मी किसी राक्षस द्वारा जंगल के बीच के कीले में वंदिनी बनाई गई कोई राजकुमारी हो जो मुक्ति के लिए छटपटाती है । गोविन्द भी लक्ष्मी को एक सुन्दर लड़की होने की कल्पना करने से डरता है । उसे लगता है कि लाइनें उसी के लिए लिखी गई हैं । वह इस अप्रत्याशित सौभाग्य पर विश्वास नहीं कर पाता ।

ऊपर की स्थिति को भांपने के लिए चौक में जाते समय सिर उठाकर देखने की हिम्मत उसमें नहीं थी । अपनी कोठरी का दरवाजा बंद करके तख्त पर चढ़कर रोशनदान से झांकने पर भी उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ता था । लक्ष्मी को देखने का उतावलापन शांत नहीं हो पा रहा था । कोई हम उम्र और विश्वास पात्र न होने से वह इस नाजुक प्रसंग पर किसीसे पूछ नहीं सकता था । उसे डर है कि कहीं रूपाराम को इस रहस्य का पता न चल जाए । वह सोचता है कि कुछ दिन के बाद वह एक छोटा-सा पत्र रख देगा जो किसी दोस्त के नाम लिखा गया होगा । पकड़े जाने पर वह भूल से चला गया है -ऐसा कहकर अपने को बचा लेगा ।

उसके बाद गोविन्द के मन में प्रेम की हिलोरें उठती हैं । वह कल्पना करता है कि लक्ष्मी ने अपने कोमल हाथों से पत्रिका छुई होगी तकिए के नीचे सिरहाने रखी होगी, छाती पर रखकर सो गई होगी ।

गोविन्द के मन में कभी यह विचार आता है कि वह दौड़कर लक्ष्मी के पास पहुँच जाए और अपने को इस सौभाग्य के लायक न होने की वास्तविकता बता दे । वह फिर सोचता है कि अगर वह लक्ष्मी को लेकर भाग जाए तो कहाँ जाए ? उसकी पढ़ाई का क्या होगा ? पकड़े जाने पर उसकी अवस्था क्या होगी ?

दूसरे ही दिन जब लाला रूपाराम नीचे आ जाते हैं तब गोविन्द का दिल कांप जाता है कि कहीं बूढ़े को इस बात का पता न चल गया हो । उसी समय ऊपर कुछ चीजें गिरने की आवाज आई तो रूपाराम ऊपर चले जाते हैं । इस समय चौकीदार से पूछकर वह लक्ष्मी के बारे में सब जान जाता है ।

बाप एक अंधविश्वास का शिकार होकर अपनी बेटी की शादी नहीं कर रहा था और बेटी को कैद करके रखता था ।

गोविन्द लक्ष्मी के बारे में यही सोचता है कि लक्ष्मी प्रेम और यौन-तृप्ति से वंचित है । इसे पाने के लिए वह वर्तमान की स्थिति से मुक्ति चाहती है । उसे अगर मुक्ति नहीं मिलेगी तो वह छटपटाकर मर जाएगी ।

गोविन्द के मन में उसको लेकर तीन प्रश्न उभरते हैं । क्या लक्ष्मी की दर्द भरी पुकार सुनकर वह व्याकुल होने वाला पहला आदमी है ? क्या औरों ने यह सुनकर भी अनसुना कर दिया है, यानी उनके हृदय में कोई सहानुभूति और अन्याय के विरुद्ध लड़ने की सजगता उत्पन्न नहीं हुई है ? अंतिम प्रश्न है - क्या सचमुच जवान लड़की की आवाज को सुनकर अनसुना किया जा सकता है ? अर्थात् क्या किसी व्यक्ति की छटपटाहट, संत्रास, अस्तित्वहीनता परतंत्रता, बेगानेपन को दूर करने के लिए समाज में सहृदयता और मूल्यबोध का विकास नहीं होगा ? तब समाज रुग्ण बन जाएगा । वह जीना दुभर होगा ।

संवाद :

इस कहानी में संवाद पात्रों की मन:स्थितियाँ के अनुकूल, परिवेश के अनुकूल, स्वाभाविक और युगानुरूप हैं । इस कहानी में व्यंग्य का प्रयोग कहानी को प्राणवान बनाता है । कहानी में ज्यादा भाग गोविन्द के आत्म -चिंतन और विचार मंथन से भरा है । फिर भी संवाद का महत्व भी सर्वाधिक है ।

लाला रूपाराम का बेटा रामस्वरूप जब लक्ष्मी जीजी के लिए किताब मांगता है तब कहता है - मुंशीजी, लक्ष्मी जीजी ने कहा है -''हमें कुछ और पढ़ने को दीजिए । इसके उत्तर में गोविन्द को कोमलता के साथ कहना पड़ता है -''अच्छा , कल देंगे ।'' गोविन्द को 'मुंशी' शब्द से चिढ़ है पर वह मुँह खोकर इसका विरोध कर नहीं पाता । जब लालाजी भी उसका सम्मान बढ़ाने के लिए 'मुंशीजी' शब्द का प्रयोग करते हैं तब गोविन्द सोचता है कि वहाँ जम जाने के बाद वह विनम्रता से इस शब्द का विरोध करेगा ।

चौकीदार गोविन्द से कहता है - परेशान क्यों हो रहे बाबूजी ? .... आज चंडी चेत रही है । इससे किसी छिपे रहस्य की ओर संकेत मिल जाता है ।

गोविन्द के प्रश्न को टालने के लिए चौकीदार जब कहता है -''कुछ नहीं बाबूजी, ऊपर कोई चीज किसी बच्चे ने गिरा दी होगी ।'' और फिर मिस्त्री कहता है -'' जमादार साहब, झूठ क्यों बोलते हो ? साफ-साफ क्यों नहीं बता देते ? अब इनसे क्या छिपा रहेगा ?'' इससे गोविन्द की उत्सुकता बढ़ जाती है । उसे लगता है कि लक्ष्मी के संबंध में कोई गहरा रहस्य छिपा है ।

चौकीदार दिलावर सिंह के इस कथन से लाला रूपाराम की कंजूसी किस हद तक पहुँच गई है, उसका पता चलता है - लेकिन यह राक्षस तो जमा करने में ही लगा रहता है । इसे जमा करने की ही ऐसी हाय-हाय रही है कि दौलत किसलिए जमा की जाती है, इस बात को यह बेचारा बिलकुल भूल गया है ।

चौकीदार के इस कथन -''बाप है तो उसे भोग नहीं सकता और छोड़ तो सकता ही नहीं ।'' से लक्ष्मी की असहायता का पता चलता । रूपाराम के संबंध में यह कथन मानो लेखक का ही निर्णय है -इसको तो बोटी-बोटी गरम लोहे से दागी जाए और फिर बांधकर गोली से उड़ा दिया जाए ।

देश-काल तथा वातावरण :

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' नाम से पाठक का ध्यान एक पौराणिक परिवेश की ओर न चला जाए इसलिए लेखक स्पष्ट कर देते हैं कि यह एक लक्ष्मी नामक लड़की के बारे में है, जो कैद से छुटकारा चाहती है ।

यह कहानी आधुनिक युगीन स्वार्थान्वेषी मनुष्यों से संबंधित है, जिसके सामने मानवीय मूल्य निरर्थक हैं । कैसे एक आदमी धन जुटाने के जुनून में दूसरों के जीवन की सारी खुशहाली को तहसनहस कर देता है, उसी सामाजिक विकट यथार्थ को इस कहानी में दर्शाया गया है । लेखक ने समाज में घुन लग गए मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने के लिए एक चेतना नवयुवक गोविन्द के आत्म-विशेषण के माध्यम से दर्शाया है ।

लाला रूपाराम समाज में हो रही कालाबाजारी, धूर्तता, धोखाधड़ी, अविश्वासहीनता, स्वार्थपरता, निर्ममता, दन-लोलुपता आदि अवगुणों के अधिकारी हैं । किराए पर मकान लेने वालों को कैसे बिजली का खर्च कम करने को मकान मालिक हिदायतें देते हैं जहाँ उसकी एक झलक भी दी गई है ।

मालिक कैसे दूसरों से मुफ्त काम लेना चाहते हैं उसकी एक झलक गोविन्द के प्रति मिस्त्री के कथन से स्पष्ट हो जाता है - हाँ थोड़े दिनों में अपने फरजंद को भी आपसे पढ़वाएगा ।

भाषा -शैली :

इस कहानी में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है । भाषा पात्रों की योग्यता और संस्कार के अनुकूल है । पंक्चर जोड़ते समय मिस्त्री सलीम जैसी बात कहता है, उससे लाला रूपाराम की कंजूसी और मिस्त्री की झंझलाहट सामने स्पष्ट हो जाती है । वह कहता है - ''अब मैं बाबूजी को किस्सा बताऊँ या इन ट्यूबों से सिर फोड़ूँ ? साले सड़कर हलुआ तो हो गए हैं पर बदलेगा नहीं, मन तो होता है सबको

उठाकर इस अंगीठी में रख दूं, होगा सुबह तो देखा जाएगा ।''

चौकीदार की इस भाषा में अशालीनता लक्ष्य की जा सकती है - ''क्या जिन्दगी है बेचारी की । बाप है सो भोग नहीं कर सकता और छोड़ तो सकता ही नहीं । मेरी तो उम्र नहीं रही, वरना कभी मन होता है ले जाऊँ भगाकर, होगा सो देखा जाएगा ।''

लेकिन गोविन्द पढ़ा-लिखा युवक होने के नाते उसकी भाषा में शालीनता होती है - लक्ष्मी के बारे में अपनी अज्ञानता को बताते हुए आत्मसमर्पण के भाव से चौकीदार से कहता है -'' नहीं तो भाई, मैंने बताया तो, मैं इनके बारे में कुछ भी , कतई, नहीं जानता ।''

इस कहानी में व्यंग्य भी कहानी को जीवंत बना देते हैं । रामस्वरूप जब गोविन्द को 'मुंशीजी' कहकर संबोधित करता है, तब गोविन्द मन ही मन नाराज हो जाता है । क्योंकि मुंशी नाम के साथ जो एक कान पर कलम लगाए, गोल मैली टोपी, पुराना कोट पहने, मुड़े-तुड़े आदमी की तस्वीर सामने आती है, उसे बीस-बाइस साल का युवक गोविन्द संभाल नहीं पाता ।

कहानी में आलंकारिक प्रयोगों की भरमार है, जैसे -धीरे-धीरे उसे लगा, यह अक्षरों की पंक्ति एक ऐसी खिड़की की जाली है, जिसके पीछे बिखरे बालोंवाली एक निरीह लड़की का चेहरा झांक रहा है ।

'लक्ष्मी के बारे में प्रश्नों का एक झुंड उसके दिमाग पर टूट पड़ा, जैसे शिकारी कुत्तों का बाड़ा खोल दिया गया हो ।'

'एक बड़ी लोहे की तराजू कथकली की मुद्रा में एक बाँह ऊँची किए लटकी थी ।'

'आतिशबाजी के अनार की तरह दिमाग फट पड़ेगा ।' चौकीदार भी आवेश में आकर रूपाराम के लिए कह देता है -' लोग जमा करते हैं कि बैठ कर भोगें । लेकिन यह राक्षस तो जमा करने में ही लगा रहता है । यहाँ प्रश्न है कि जिस घर में बेटी बाप द्वारा कैद हो, वहाँ उसकी तकदीर कैसे खुलेगी ?

उद्देश्य :

लेखक ने इस कहानी में यथार्थ का मार्मिक चित्रण करने सामाजिक चेतना को उभारने का प्रयत्न किया है । समाज में लाला रूपाराम के कारण उत्पन्न विभीषिका को दूर करने के लिए मिस्त्री सलीम और चौकीदार दिलावर सिंह जैसे आदमी कुछ कर नहीं सकेंगे, केवल अपना असंतोष ही व्यक्त करेंगे । वास्तव परिवर्तन गोविन्द जैसे नौजवान ही कर सकेंगे । समाज को खोखला बान देने वाले अंधविश्वास को हटाना पड़ेगा नहीं तो कोई-न-कोई इसका शिकार हो जाएगा ।

शीर्षक :

शीर्षक कहानी का एक महत्वपूर्ण इकाई है यह चमत्कार उत्पन्न करके पाठक के मन को कहानी की ओर आकर्षित कर सकता है ।

इस कहानी का शीर्षक है -'जहाँ लक्ष्मी कैद है' यह शीर्षक पढ़ते ही पाठक के मन में कौतूहल उत्पन्न होगा कि विश्व नियंता विष्णु की पत्नी लक्ष्मी को कैद करने की शक्ति किसकी हो सकती है ? माया सीता को कैद बनाने वाले रावण का स्वर्णलंका सहित विनाश हो गया था । अब फिर कैद करने वाला कौन है ?

इसलिए कहानीकार पहले से पाठक का कौतूहल शांत करने के लिए कहते हैं -जरा ठहरिए यह कहानी विष्णु पत्नी लक्ष्मी के बारे में नहीं, लक्ष्मी नामकी एक ऐसी लड़की के बारे में है, जो अपनी कैद से छूटना चाहती है ।

लगता है कि यह आधुनिक युग की एक लड़की है जो अपनी अस्मिता और स्वाधिकार से वंचित है । उसको वंचित करने वाले का विनाश ही वही सचेतन और मूल्यप्रेमी युवक कर सकेगा जो विष्णु की तरह न्याय और धर्म की प्रतिष्ठा के लिए अपने हाथ में अस्त्र धारण करते हैं ।

अत: कहानी का शीर्षक प्रसंगानुकूल है ।

खोई हुई दिशाएँ

3.7.1 लेखक परिचय :

कमलेश्वर का जन्म मैनपुरी में 6 जनवरी 1932 ई. को हुआ था । उनकी प्राथमिक शिक्षा मैनपुरी में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई थी । प्रयाग विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी एम.ए. उपाधि प्राप्त की थी । वे आधुनिक कहानीकार के रूप में अपना स्थान सुरक्षित रखते हैं । उनकी पहली कहानी 'कामरेड' मासिक पत्रिका 'अप्सरा' में 1951 में एटा से प्रकाशित हुई थी ।

कमलेश्वर ने 'नई कहानी' की परंपरा में सशक्त लेखनी चलाई है । 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी संग्रह की भूमिका में उन्होंने अपने विचार इस प्रकार रखे हैं - पुरानी कहानी में व्यक्ति शारीरिक रूप में आता था और वैचारिक रूप से कथाकार । नई कहानी में यह विचार उसी शरीर में अव्यस्थित बुद्धि से उपजता है जिसे प्रस्तुत किया जाता है ... तब विचारों को हाड़-मांस प्रदान किया जाता था, अब हाड़-मांस के इंसान के विचारों को भी प्रस्तुत किया जाता है । वह भेद इसलिए है कि तब लेखक अपने को समाज का नियामक, पथ-प्रदर्शक और भविष्य द्रष्टा मानकर चलता था, अब वह अपने सहभोक्ता, पथ का जीवन साथी और स्थितियों का विश्लेषण और प्रस्तुत कर्त्ता मानता है .... इसलिए 'नई कहानी' किस्सागोई का परंपरावादी रूप नहीं है ।

नई कहानी में विषय, भाषा, शैली और उद्देश्य की दृष्टि से एक-से-एक नवीन प्रयोग हुए हैं । 'खोई हुई दिशाएँ' इस विशेषताओं को लेकर लिखी गई एक कहानी है ।

कृतियाँ : कहानी संग्रह - राजा निरवंसिया, खोई हुई दिशाएँ, मांस का दरिया, जिन्दा मुर्दे, मेरी प्रिय कहानियाँ, कस्बे का आदमी, बयान ।

उपन्यास - एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, वही बात, खोये हुए मुसाफिर, आगामी अतीत, तीसरा आदमी, काली आँधी ।

नाटक - चारुलता, अधूरी आवाज, कमलेश्वर के बाल नाटक ।

3.7.2 कथासार :

'खोई हुई दिशाएँ' कमलेश्वर की एक सशक्त कहानी है । जिसमें महानगरीय बोध होता है । इसका मुख्य पात्र ग्रामीण परिवेश में पला चंदर है जिसका भावुकतापूर्ण मनोभाव है । वह आत्मीयता चाहता है । जब वह गंगा के किनारे बसा अपना शहर छोड़कर राजधानी तथा महानगर दिल्ली आ जाता है वहाँ वह अपने में व्यक्तियों की भीड़ में वह परिचय तलाशता है । किन्तु उसे अपरिचय मिलता है, अकेलापन मिलता है । सहृयता की जगह उसे मिलता है अवसाद, संत्रास, घुटन, भटकाव । उसकी आकांक्षाएँ अधूरी रह जाती है । उसके सपने बिखर जाते हैं । यह पराया और अजनबी होने का भाव उसे झकझोर देता है ।

उसे लगता है कि उसके चारों ओर जो लोग हैं, सबके सब स्वार्थी हैं । वे केवल औपचारिकता निभाते हैं, लेकिन उनका मूल उद्देश्य अपना उल्लू सीधा करना है । दिल्ली के लोग, सड़कें, पड़ोसी, विशन कपूर, ऑटो ड्राइवर सरदारजी, मित्र आनन्द, पूर्व प्रेयसी इन्द्रा सब चन्दर को अजनबी लगते हैं । जो पहले आत्मीयता का दिखावा करते हैं, परवर्ती समय में उनकी असलियत पकड़ी जाती है और उनका परायापन अस्तित्व में आ जाता हैं । यह सब देखकर आधुनिक समाज के पात्र के रूप में केवल छटपटाता है और भयभीत हो जाता है ।

चन्दर के कनॉट प्लेस के रिगल बसस्टाप पर खड़े होकर घर लौटने के लिए बस की प्रतीक्षा करते समय अतीत की कुछ झाँकियाँ उसे याद आ जाती हैं । तीन साल पहले वह जिस शहर को छोड़कर चला आया था, वह आत्मीयता से भरा था, पर इस महानगर में उसे लगता है कि आस-पास सैकड़ों लोग गुजरते हैं पर उसे कोई नहीं पहचानता । हर इंसान उसे लापरवाह , दूसरों से कटा हुआ और मिथ्या दंभ में डूबा हुआ लगता है । यहाँ का परिवेश भी उसे अपना या अपने देश का नहीं लगता । यहाँ तक कि अपने किराए का मकान भी उसे अपनेपन का अनुभव करने नहीं देता ।

चन्दर को लगता है कि वह अब घर पहुँचेगा तो भी उसे मेहमान-सा व्यवहार करना होगा । न वह थकावट मिटाने के लिए बिस्तर पर लेट सकता है न अपनी पत्नी को बाँहों में लेकर प्यार कर सकता है । सभी पर जैसी मनाही है । बिस्तर पर सामान पड़ा होगा और घर में मिसेज गुप्ता की अनाकांक्षित उपस्थिति रही होगी । उसे न चाहते हुए भी आत्मीयता जताने के लिए मिसेज गुप्ता से बातें करनी होगी । मिसेग गुप्ता के जाने के बाद बड़ी खिड़की का परदा खिसकाना होगा । खुराना की तरफवाली खिड़की बंद करनी होगी । ये सब करते समय पत्नी से प्यार भरी बातें कहने का मन मुरझा जाएगा और उसके मुँह से अचानक झुंझलाहट से भरी बात निकल जाएगी । वह अजीब सा बेगानापन अनुभव करेगा । यही सोच चन्दर के मन में एक प्रकार का संत्रास और छटपटाहट पैदा कर देगी ।

पड़ोसियों के साथ कोई स्नेहपूर्ण संबंध न होना भी उसके अकेलेपन को बढ़ा देते हैं । गैरेज का मालिक सरदार हो या सामने रहने वाले जर्नालिष्ट बिशन कपूर हो, सब उसके लिए अजनबी हैं ।

चन्दर डायरी निकालकर अगले दिन के कार्यक्रमों की सूची पर नजर डालता है तो उसे याद आता है कि उसे अंग्रेजी दैनिक के संपादक से मिलना है, रिजर्व बैंक से चेक कैश कराना है, डाकघर जाकर मनीआर्डर करना है और रेडियो स्टेशन जाकर किसीसे मिलना है । इन जगहों पर लोगों की भीड़ होगी , पर उसमें से कोई उसके परिचित नहीं होंगे । जब काउंटर में उससे कलम मांगकर लिखने वाला उसे कलम लौटाएगा तो वह धीरे से थैंक यू कहेगा, जिसमें कोई आत्मीयता नहीं होगी । चन्दर को इस समय इलाहाबाद की घटनाएँ और वे लोग याद आते हैं, जिन्हें वह अच्छी तरह जानता था । यहाँ तो हर जगह अपरिचय और अनात्मीयता का माहौल कचोटता है । उसे लॉन में खेल रहे बच्चों की और गोलगप्पे खा रही माताओं को देखकर लगता है कि माताओं की आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा हुआ प्यार नहीं है वरन एक खुमार है । उसे दिल्ली में रहते हुए तीन साल बीत गए, पर कोई अपना नहीं हो पाया ।

चन्दर ने इस अपरिचय और सूनेपन से मुक्त होने के लिए हर शुक्रवार को शाम के सात बजे से नौ बजे तक अपने से मिलने की योजना बनाई थी । आज उसे अचानक याद आ जाता है कि आज शुक्रवार है और शाम के सात बजे हैं । पर उसका मन अपने से मिलने से कतराता है । किसी बहाने वह उस कार्यक्रम को टाल देना चाहता है । मन अपने से मिलने को घबराता है ।

चन्दर के पास कहीं से घूमता हुआ आनन्द पहुँच जाता है, जो दोस्ती का बहाना करता है, झूठी प्रशंसा करता है और अपनी मजबूरी बताकर कुछ पैसे उधार मांगता है, जो कभी लौटाए नहीं जाएँगे । चन्दर को आनन्द की बातों में अजीब-सा बनावटीपन दिखाई देता है ।

आनन्द से छुटकारा पाकर चन्दर जब टी-हाउस में प्रवेश करता है, वह वहाँ प्रेमी-प्रेयसी की एक ऐसी जोड़ी देखता है, जो न पहले से परिचित रहे होंगे न उनका परिचय आगे भी मजबूत होगा । एक अजनबी आदमी उससे परिचित होने का बहाना करके कुछ अटकलें लगाता है और अंत में निराश होकर चला जाता है ।

चन्दर टी-हाउस से बस स्टाप पर आता है तो उसके कानों में पेड़ से झड़ गए पीले पत्तों की कुचलने से निकली आवाज पड़ती है तो उसे अपनी पूर्व प्रेयसी इन्द्रा की याद आ जाती है, जो उसमें अशेष संभावना देखकर कहा करती थी - ''चन्दर, तुम क्या नहीं कर सकते ?''

चन्दर ने उससे जब कहा था कि तुम मेरी खातिर अपनी जिन्दगी क्यों खराब करोगी तो इन्द्रा ने विश्वास भरी सरलता से कहा था -''मैं तुम्हारे साथ हर हालत में सुखी रहूँगी ।'' लेकिन इन्द्रा की दूसरी

जगह शादी हो गई और दो महीने पहले वह इन्द्रा और उसके पति से मिला था । इस समय जब इन्द्रा ने उसे चिढ़ाने के लिए कहा कि उसे दूध से चिढ़ है और चाय में दूसरा चम्मच चीनी डाल देने से उसका गला खराब हो जाता है तब चन्दर को लगा था कि इस अनजानी और बिन जान पहचान से भरी नगरी में इन्द्रा ही एक अकेली है जो सालों बाद भी उसे पहचानती है और आत्मीय जैसी बात कर सकती है । इसलिए उसका मन इन्द्रा से मिलने के लिए छटपटाता है ।

तभी एक सरदार का ऑटो आ जाता है और वह करोलबाग के गुरुद्वारा रोड के लिए सवारियों को बुलाता है । वह जब चन्दर से आइए बाबूजी, कहता है, तो चन्दर को बड़ी खुशी होती है क्योंकि उसे कम-से-कम एक ने तो पहचान लिया । पर इस पहचान का विश्वास दूसरे क्षण चकनाचूर हो जाता है । जब सरदार पहली बार -'दो आने और दीजिए साहब' और दूसरी बार दो आने छै आने तो घट नहीं लें दे बादशाहों !' कहता है ।

चन्दर इन्द्रा से मिलता है तो इन्द्रा पहले अपने पति की देर की बात बताकर उसे चाय पीने का अनुरोध करती है तो चन्दर की सारी थकान दूर हो जाती है और उसका अकेलापन काफूर हो जाता है ।

दूसरे ही क्षण जब इन्द्रा पूछती है कि चाय में कितनी चीनी डालूँ और चन्दर का दो चम्मच कहने पर इन्द्रा दो चम्मच चीनी से गला खराब हो जाने की बात न कहकर चुपचाप दो चम्मच चीनी चाय में डाल देती है, तब चन्दर का मन इस मेहमानबाजी से भारी हो जाता है, शरीर की थकान बढ़ जाती है, माथे पर पसीना आ जाता है, वह जैसे-तैसे चाय पीकर भाग आता है ।

चन्दर घर पहुँचता है । खाना खाने को मना करते हुए लेट जाता है । वह निर्मला को ऐसी नजर से देखता है जैसे उसमें पुरानी पहचान ढूँढ रहा हो । उसे घर का सारा सामान अपना लगता है । उसे लगता है कि रात के अंधेरे में भी वह टटोलकर कोई भी चीज छूकर पहचान सकता है । उसे लगता है कि वह अकेला नहीं है । अजनबी नहीं है । वह निर्मला के अंग-अंग को छूता है । सब कुछ उसे पहचाना हुआ लगता है । उसका तनहा मन निर्मला की परिचित गंध और पहचाने स्पर्शों में डूबता जाता है । उसे तो केवल परिचय की एक मांग है । वह पुरानी प्रतीति चाहता है । वह निर्मला को बाँहों में लेकर प्यार करता है । पर दूसरे ही क्षण निर्मला करवट बदल देती है और गहरी नींद में सो जाती है, तब चन्दर अपने को फिर बेहद अकेला महसूस करता है । वह निर्मला के सारे शरीर को टटोलकर उसे पहचानने की कोशिश करता है, उसके बालों को सूंघकर उसकी गंध को पहचानने की कोशिा करता है । उसे डर है कि कहीं निर्मला जाग न जाए और उसे अजनबी मानकर चौंक न जाए । निर्मला की नींद नहीं टूटती तो चन्दर को लगता है कि क्या निर्मला उसके स्पर्श को नहीं पहचानती ।

चन्दर निर्मला को झकझोर कर पूछता है -''मुझे पहचानती हो ? मुझे पहचानती हो निर्मला ?''

3.7.3 चरित्र-चित्रण :

चन्दर अकेलेपन की पीड़ा झेलनेवाला - चन्दर के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती है । चन्दर दिल्ली महानगर में रह रहा है जो हर कदम पर अकेलापन महसूस करता है । यही छटपटाहट उसका मानसिक संतुलन बिगाड़ देती है । उसे अपने शहर का चप्पा-चप्पा मालूम था । गंगा किनारे पर भी उसे कोई अनजान आदमी मिल जाता था तो फिर भी नजरों से पहचान की एक झलक तैर जाती थी । उसे इलाहाबाद के सबसे बड़े कपड़े मालिक का इतिहास भी मालूम था यहाँ सभी अपरिचित हैं । बैंक में इलाहाबाद का क्लर्क अमरनाथ सहृदयता से काम कर देता था । यहाँ किसे से सहृदयता की आशा रखना मूर्खता है । यहाँ तक कि काऊंटर में लिखने के लिए पेन मांगकर लेने वाला आदमी भी धीरे से थैंक यू कहकर बाएँ हाथ से पेन लौटाते समय कोई आत्मीयता दिखाइ नहीं देती । यहाँ चन्दर बसों का आना-जाना, सवारियों को उतरना चढ़ना और अपने काम में व्यस्तता से चले जाना आदि यांत्रिक कार्य कलाप देखकर ऊब जाता है । यहाँ कोई किसी को नहीं पहचानता, किसी की परवाह नहीं करता । चन्दर को जर्नलिस्ट बिशन कपूर से कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं है उनके घर पर आनेवाली मिसेज गुप्ता से भी केवल औपचारिक बातचीत का संबंध है ।

चन्दर को राजधानी की कोई भी चीज अपनी नहीं लगती । वह सोचता है कि यहाँ बहुत-सी सड़के हैं, पर वे कहीं नहीं पहुँचाएँगी, वरन भूलभुलैया में डाल देंगी । यहाँ सड़क के किनारे घर हैं, पर फाटक खोलकर जाने को मनाही है । बगीचे में फूल खिले होंगे पर तोड़ना मना है ।

चन्दर अकेलेपन से इतना संत्रस्त है कि वह अपनी योजना मुताबिक हर शुक्रवार को शाम को सात बजे से नौ बजे तक मिलने से कतराता है । कोई-न-कोई बहाना बानकर दूसरे काम में लग जाता है ।

उसे लगता है कि थका-मांदा होकर रात को घर पर पहुँचने पर भी उसे अपनी पत्नी से दिल खोलकर बात करने का अवसर भी नहीं मिलेगा, क्योंकि वहाँ अनचाहे मेहमान की तरह मिसेज गुप्ता उपस्थित रही होंगी । ऐसे समय में उसका प्यार मुरझा जाता है और वह झुंझला उठता है । तथा एकाकीपन महसूस करता है ।

लोगों के स्वार्थी मनोभाव से ऊब : - चन्दर महानगरीय परिवेश में लोगों का स्वार्थी मनोभाव देककर ऊब जाता है । दोस्त आनन्द न लौटाए जाने वाले उधार के लिए दोस्ती जोड़ता है और दो चार चापलूसी बातें कहकर वह अपना स्वार्थ हासिल करने के चक्कर में रहता है । ऑटो ड्राइवर एक सवारी पाने के लिए सहृदयता के साथ परिचित होने का भाव दिखाता है, पर ऑटो से उतरते समय अधिक किराए के लिए बड़ी रुखाई से पेश आता है । काउंटर में पेन मांगकर लेने वाला भी अपने

व्यवहार में कोई एहसान प्रकट नहीं करता । चन्दर को ये सब खटकते हैं । मनीआर्डर के काउंटर में इतनी बड़ी भीड़ में भी जब उसे कोई नहीं पहचानता तो वह बिलकुल अकेला पड़ जाता है ।

प्रेयसी के बदले हुए आचरण से विक्षुब्ध :

चन्दर से इन्द्रा बहुत प्यार करती है । उससे शादी करके वह हर हालत में सुखी रहने का विश्वास दिलाती है । पर चन्दर स्पष्ट कर देता है कि मैं खानाबदोश की तरह जिन्दगी भर भटक सकता हूँ । मैं नहीं चाहता कि अपनी जिन्दगी मेरी खातिर बिगाड़ लो ।

वही इन्द्रा दूसरी जगह शादी करके दिल्ली में रह रही है । उसके और उसके पति के साथ चन्दर की मुलाकात हो जाती है तो इन्द्रा अपनी बातचीत में बड़ी आत्मीयता दिखाती है । वह चन्दर को चिढ़ाने के अन्दाज में अगर दो चम्मच चीनी डाल दी गई तो चन्दर का गला खराब हो जाता है । इससे चन्दर की स्मृति ताजा हो जाती है । वही इन्द्रा अपने घर पर चन्दर को नौ बजे रात को आते हुए देखकर अपनी बातचीत में केवल औपचारिकता का निर्वाह करती है । लौटने में पति की देर हो जाने से अपनी चिंता प्रकट करती है । चन्दर से जब वह पूछती है कि चाय में चीनी कितनी दूं, तब यह सुनकर चन्दर अपरिचय के भय से संत्रस्त हो जाता है । उसके माथे पर पसीना आ जाता है । यह भी कोई रिश्ता जोड़ने के लिए वह दो चम्मच कह देता है ताकि पुरानी स्मृति फिर ताजी हो जाए । पर जब सचमुच इन्द्रा दो चम्मच चीनी डालकर उसे चाय बढ़ा देती है तब चन्दर की इच्छा हुई कि दीवार पर सिर पटक दें । वह किसी तरह वहाँ से भाग आता है । इन्द्रा चन्दर से एक मेहमान की तरह बातचीत करती है । इसमें कोई आत्मीयता नहीं है, केवल औपचारिकता का निर्वाह है, एक अनचाहे मेहमान से राहत पाने की प्रतीक्षा है । नौकरानी का आकर चाय रख जाना भी अनात्मीयता का सूचक होता है ।

आधुनिकता से मोहभंग :

चन्दर आधुनिकता के रंग में रंगे हुए लोगों के बनावटी हाव-भाव को देख कर ऊब जाता है । लॉन में बच्चों की शक्लें और शरारतें देखकर उसे बहुत पहचानी-सी लगती हैं, पर उसे गोलगप्पे खाती हुई मम्मियाँ अजनबी लगती है, जिनकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं होता ।

चन्दर टी-हाउस में आने वाले एक जोड़े को देखता है जिससे लगता है कि उनका परिचय बहुत पुराना नहीं है । उनके पास सहृदयता भरी बातचीत करने के लिए कोई विषय नहीं है, इसलिए वे केवल समय बिताते हैं । टी-हाउस में चन्दर से कोई अपरिचित आदमी परिचित होने का नाता जोड़ता है, पर सारी अटकले जब निराधार साबित होती है, तब वह उठ जाता है ।

टी-हाउस की दीवार पर टंगी घड़ी हमेशा वक्त से आगे चलती है तो आधुनिकता की दौड़ के प्रतीक के रूप में आती है । इस आधुनिकता की झलक डान्स की तैयारी और बोल्गा पर जम रही भीड़ से मिल जाती है । जिन से चन्दर अपने को समायोजित नहीं कर पाता ।

अपनी पत्नी से भी अजनबीपन का बोध :

चन्दर घर पहुँचता है तो पत्नी निर्मला मुस्कराकर धीरे से बाँहों पर हाथ रखकर उससे पूछती है, 'बहुत थक गए ?' निर्मला खाना लगते हुए उससे हाथ-मुँह धो लेने को कहती है तो चन्दर उसे प्यार से देखता है । मकान किराये का होने पर भी उसे अपना लगता है । उसको लगता है कि रात के अंधेरे में भी वह प्रत्येक चीज को छू सकता है, पहचान सकता है । वह निर्मला के अंग-अंग में पुरानी पहचान अनुभव करता है । पर निर्मला को प्यार करते समय पहचाने स्पर्शों में डूबता जाता है । पर निर्मला जब करवट बदल कर गहरी नींद में जाती है, तब चन्दर अपने को बेहद अकेला महसूस करता है । वह उसके शरीर को पहचानने के लिए टटोलता है । उसकी सांसों की हलकी आवाज को सुनने और पहचानने की कोशिश करता है । चन्दर को लगता है इस स्पर्श से निर्मला की नींद कहीं टूट न जाए और वह अजनबी की तरह चौंक न जाए । निर्मला जब सोते-सोते एक-एककर साँस लेती है, तब चन्दर को लगता है कि शायद निर्मला उसके स्पर्श को पहचान नहीं पाती हो, उसे डर-सा लग रहा हो या कोई भयंकर सपना देख रही हो । चन्दर अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है । वह निर्मला को झकझोर कर उठा देता है । बिजली जलाकर उसे पकड़ लेता है और डरी हुई आवाज से पूछता है -'' मुझे पहचानती हो ? मुझे पहचानती हो ?'' निर्मला इस घटना से आश्चर्य चकित हो जाती है और चन्दर उसमें पुरानी पहचान ढूंढता रहता है ।

इस प्रकार चन्दर आधुनिक पीढ़ी का एक चरित्र है जो लोगों में संबंध ढूँढता है और उसे हर कदम पर अपरिचय का अहसास होता है । वह अपने परिवेश से त्रस्त है, मुक्ति के लिए छटपटाता है, पर निकलने का मार्ग उसे दिखाई नहीं पड़ता । अपनी नियति को भोगने के लिए वह अभिशप्त है, उसे कोई दिशा-निर्देश कर नहीं पाता । मूल्यहीनता के परिवेश में परिचयहीनता का शिकार होकर वह अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ता है, पर हार उसके हाथ लगती है ।

3.7.4 कहानी -कला की दृष्टि से समीक्षा :

कहानी -कला की दृष्टि से कहानी की समीक्षा करते समय इसके तत्वों पर चर्चा की जाती है । ये तत्व हैं -१) कथावस्तु, २) चरित्र-चित्रण, ३) संवाद, ४) देश-काल तथा वातावरण, ५) भाषा-शैली, ६) उद्देश्य, ७) शीर्षक ।

कथावस्तु :

कमलेश्वर की कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' नई कहानी आंदोलन की एक सशक्त प्रतिनिधि कहानी है । इसका मुख्य चरित्र चन्दर है, जो आधुनिक युगीन परिवेश में आत्मीयतापूर्ण संबंध चाहने पर भी हर जगह उसे औपचारिकता, स्वार्थपूर्ण , बनावटी संबंध और बेगानापन ही मिलता है जिससे वह छटपटाता है । चन्दर तीन साल पहले गंगा के किनारे पर बसा हुआ अपना शहर छोड़कर महानगर राजधानी दिल्ली में आकर बस गया है । अपने पुराने शहर में उसे जो आत्मीय का परिवेश मिलता था, आज बदलते समय में आधुनिकता के चपेट में आए महानगर दिल्ली में उसे नहीं मिल पाता । वह अकेलेपन और अजनबीपन से छटपटाता है, उसे कहीं भी आत्मीयता परिचय अस्मिता की स्वीकृति नहीं मिल पाती । उसे इलाहाबाद के बारे में बहुत -सी जानकारियाँ थीं । गंगा के किनारे मिलने वाले जाने-पहचाने लगते थे । दिल्ली के बैंक काउंटर में इलाहाबाद वाला अमरनाथ जैसा सहृदय क्लर्क भी मिल जाता था, इन्द्रा से भी प्यार हो गया था ।

पर दिल्ली में आकर उसे आनन्द जैसा मतलबी साथी मिलता है । टी-हाउस में अटकलें लगाकर परिचय और दोस्ती बढ़ाने के अजनबी लोग भी मिल जाते हैं । बिशन कपूर जैसे पड़ोसी हैं जिससे उसकी एक बार भी मुलाकात नहीं होती । मिसेज गुप्ता अपने स्वार्थ के लिए उनके मकान में आकर उसका समय खराब करती है । ऑटो ड्राइवर अटो में बिठाते समय परिचित होने की आत्मीयता दिखाता है, पर उतरते समय किराए के लिए दुर्वचन भी कहता है । उसे टी-हाउस में ऐसे प्रेमी-प्रेयसी मिलते हैं, जिनका परिचय केवल उसी समय तक सीमित है । वह दिल्ली में अपनी पूर्व प्रेयसी इन्द्रा से मिलने जब उसके घर पर पहुँचता है तो इन्द्रा अपने पति की देर के लिए चिंता प्रकट करती है और एक मेहमान की तरह चन्दर से केवल औपचारिकता निभाने के लिए बातचीत करती है । यह जानते हुए भी कि चन्दर की चाय में दो चम्मच चीनी डाल देने से उसका गला खराब हो जाता है, फिर भी उससे अनजान की तरह कितनी चीनी डालूँ, यह पूछती है और सचमुच दो चम्मच चीनी डाल देती है । जैसे कि पुरानी स्मृति खो गई हो । तब बहुत निराश होकर चन्दर घर लौटता है पर पत्नी निर्मला की प्यार भरी बात से खुश हो जाता है उसे अपनत्व का बोध होता है । अकेलेपन के नागपाश से मुक्ति मिल जाने का विश्वास हो जाता है । उसे किराए का मकान भी अपना लगता है । वह पत्नी निर्मला के अंग-अंग को छूकर उसे प्यार करते समय उसमें अपनेपन का अनुभव करता है, उसे गहरी पहचान की अनुभूति होती है । पर निर्मला जब करवट बदलकर गहरी नींद में सो जाती है, तब चन्दर को फिर अकेलेपन का अहसास होता है । वह निर्मला के शरीर को छूकर पहचानने की कोशिश करता है उसे डर लगता है कि क्या सचमुच निर्मला उसके स्पर्श को नहीं पहचानती ? चन्दर जब निर्मला को झकझोर देता है, तब

निर्मला चौंककर उठ जाती है और आँखें मलते हुए प्रकृतिस्थ होने की कोशिश करती है । तब बिजली जलाकर चन्दर उससे पूछता है - 'मुझे पहचानती हो, मुझे पहचानती हो निर्मला ?'' चन्दर निर्मला में पुरानी पहचान ढूँढता है ।

चरित्र-चित्रण :

इस कहानी में मुख्य चरित्र चन्दर है, इन्द्रा, निर्मला, जर्नालिस्ट बिशन कपूर, आँटो का पंजाबी ड्राइवर, टी हाउस में आनेवाले प्रेमी-प्रेयसी, आनन्द संबंध जोड़ने की कोशिा करने वाला अजनबी आदि गौण पात्र हैं, जो कथानक को गति देते हैं और अपनी चारित्रिक विशेषताओं को व्यक्त करते हैं ।

चन्दर गंगा के किनारे बसे अपने शहर को छोड़कर तीन साल पहले महानगर तथा राजधानी दिल्ली में आ गया है । तब से वह अपरिचय और अकेलेपन की यातना झेल रहा है । यहाँ तक कि पूर्व प्रेयसी इन्द्रा भी अपने व्यवहार में औपचारिकता मात्र निर्वाह करती है तब चन्दर घुटन, पीड़ा, संत्रास से छटपटाता है । वह अगले दिन के कार्यक्रमों को याद करता है तो उसे लगता है कि हर जगह वह दूसरों से अपरिचित होगा । वह अकेलेपन के डर से इतना घबराता है कि अपने से मिलने के कार्यक्रम को टालता रहता है । मित्र आनन्द हो या ऑटो ड्राइवर हो सभी में उसे स्वार्थ की गंध मिलती है । उसे लॉन में खड़े पेड़ भी तनहा लगते हैं । कनाट-प्लेस की इतनी बड़ी भीड़ में भी वह अपने को अकेला महसूस करता है । लॉन में बच्चों को लाई हुई मम्मियाँ भी उसे ममतामयी मालूम न होकर खुमार से भरी लगती हैं । अंत में वह अपनी पत्नी में अपनी पुरानी पहचान ढूँढता है । उसे प्यार करते समय तो चन्दर को अपनेपन का अनुभव होता है, पर उसके सो जाने के बाद चन्दर अनजान बन जाने के डर से भयभीत हो जाता है । वह पत्नी निर्मला को झकझोर कर उठाकर पूछता है कि वह पहचानती है या नहीं । मूल्यबोधों की गिरावट आई आधुनिकता के साथ वह अपने को ढाल नहीं सका, अपितु विगत दिनों की सहानुभूति, आत्मीयता लिए तड़पता है । वर्तमान में छटपटाता है ।

इन्द्रा चन्दर की पूर्व प्रेयसी है, जो चन्दर को जीवन -साथी बनाने की लालसा से उसके साथ हर हालत में रहने का निर्णय ले चुकी थी । परवर्ती समय में उसकी शादी दूसरी जगह हो जाती है । संयोग से दिल्ली में उनकी मुलाकात होती है तो उससे मिलने चन्दर उसके घर पर पहुँचता है । वह केवल चन्दर से मेहमान की तरह औपचारिक बातें करके चन्दर के मन को ठेस पहुँचाती है । चन्दर का दोस्त आनन्द झूठी चापलूसी करके न लौटाने वाले उधार के लिए मौका ढूँढता है । पंजाबी ऑटो ड्राइवर सवारी से सहृदयता पूर्ण बात पहले तो करता है पर अधिक किराया ऐंठते समय कड़ाई से बात करता है । जर्नलिस्ट बिशन कपूर के साथ पड़ौसियों का कोई तालुक नहीं है । मिसेज गुप्ता भी एक स्वार्थी पड़ोसिन

है ।

संवाद :

कहानी में संवाद का स्थान महत्वपूर्ण है । इससे कहानी में जान आ जाती है । इस कहानी में पात्रों के मुँह से संवाद केवल चन्दर और इन्द्रा, चन्दर और ड्राइवर, चन्दर और आनन्द के बीच थोड़े समय के लिए है । बाकी सब पूर्व दीप्ति के रूप में चन्दर की सोच को कहानीकार बताता जाता है । पहली बातचीत में जहाँ इन्द्रा में सहृदयता, प्रेम के पुलक गहरे विश्वास की झलकें मिलती हैं, वहाँ दूसरी मुलाकात में औपचारिकता , अनमनेपन और अपरिचित जैसे भाव उभर आते हैं । चन्दर के साथ दोस्त आनन्द और पंजाबी ड्राइवर जिसे ढंग से पेश आते हैं, उससे स्वार्थी मनोभाव का परिचय मिलता है ।

देश-काल तथा वातावरण :

'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में देश-काल और वातावरण का जीवंत चित्रण हुआ है । जिससे चन्दर के अन्तर्मन के अकेलेपन के साथ बाह्य जगत प्रकृति के अकेलेपन का भी चित्रण हो जाता है । लॉन में खड़े तनहा पेड़ आसमान में उड़ रही चीलें, गंदले आसमान के नीचे अजीब दीख रही जामा मस्जिद के गुंबद और मीनार आँखें लाल -पीली करने वाली बतियाँ बिना पहचान के सैकड़ों लोगों की आवाजाही, वक्त से पहले चलने वाली घड़ी, टी हाउस की खोखली हँसी डान्स की तैयारी, चोली का विज्ञापन, बोल्गा पर विदेशियों की भीड़, किसी भी मकान के फाटक पर कुत्तों से सावधान रहने की चेतावनी , फूलों को तोड़ने की मनाही, झाड़ियों की सूखी टहनियों में लटका आइसक्रीम का खाली कागज, शराब की खाली बोतल ये सारी बातें अकेलेपन और अजनबीपन की ओर संकेत कर रही हैं ।

यही बात हर इंसान में पाई जाती है । मतलब दोस्त आनन्द का अचानक कहीं से टपकना, किले के खंडहर के बारे में गाइडों का मनगढंत वर्णन, मिसेज गुप्ता का चन्दर के कमरे में अनाकांक्षित रूप से उपस्थित रहना, इन्द्रा की नौकरानी का चाय लाना, सजी-धजी महिला का टी-हाउस में आना, गैरेज मालिक सरदार का पंद्रह साल पुराने मैकेनिक पर भी विश्वास न करना, काउंटर में अपरिचित लोगों के साथ खड़े रहना - आदि भी बेगानेपन की ओर इशारा कर रहे हैं ।

चन्दर तीन साल पहले अपना शहर छोड़कर दिल्ली आया है उसे इस परिवर्तित समय और परिवेश में सब कुछ पराया लगता है । वह सभी के लिए अजनबी है । सब यहाँ अपने काम तथा स्वार्थ में व्यस्त हैं, लापरवाह हैं । यहाँ एक ऐसा परिवेश है, जहाँ जरूरत पड़ने पर किसी की सहायता की

संभावना भी नहीं है । दिल खोलकर बात करने के लिए किसी के पास समय नहीं है । यहाँ मानवीय मूल्यों में गिरावट नजर आती है ।

भाषा-शैली :

इस कहानी की भाषा बहुत नपी-तुली और प्रतीकात्मक है । आधुनिक युगीन परिवेश को उजागर करने के लिए अंग्रेजी शब्दों की भरमार भी है । किसी स्थिति की बेदर्दी को बताने के लिए भी वैसी भाषा का प्रयोग किया गया है । जैसे बसें जूँ-जूँ करती आती हैं - एक क्षण ठिठकती हैं - एक ओर से सवारियों को उगलती है और दूसरी ओर से निगल कर आगे बढ़ जाती हैं । पर इन्द्रा के इस कथन में प्यार टपक पड़ता है - ऐसी बातें क्यों करते हो चन्दर मैं तुम्हारे साथ हर हालत में सुखी रहूँगी ।

लेखक किसी वर्णन में अलंकृत शैली का प्रयोग करते हैं, जैसे - उसकी कंटीली बरौनियों से विश्वास भरी मासूमियत छलक रही थी और इंद्रा के कान में पड़े हुए कुंडल पानी में तैरती मछलियों की तरह झलक जाते थे ।

पंजाबी ऑटो ड्राइवर की आँखों में जब पहचान की परछाई तक नहीं होती तब वह बड़ी रुक्षता से चार आने ... असी ते छै आने तो घट नहीं लेंदे बादशाहो !

आनन्द भी अपने मतलब से किताबी तरीके से चन्दर से कहता है - हलो, यहाँ कैसे, क्यों लड़कियों पर जुल्म ढा रहे हो ?

उद्देश्य :

नई कहानी आंदोलन को आगे बढ़ाने वालों में कमलेश्वर का नाम अग्रगण्य है । इस कहानी में नई कहानी के तत्व परंपरागत संबंधों और आस्थाओं से मोह भंग , जीवन में अकेलेपन और अजनबीपन का अहसास उपलब्ध है । आधुनिक युग के संदर्भ में चन्दर का महानगरीय बोध यहाँ यथार्थ प्रतीत होता है । यहाँ नितान्त आत्मग्रस्त वैयक्तिक सत्य को कथानक का रूप दिया गया है और चन्दर के बदलते परिवेश में हुए मानसिक विक्षेप को भावुकता और करुणा द्वारा अभिव्यक्त किया गया है । इस कहानी में कहानीकार का उद्देश्य है - समस्त सामाजिक मूल्यों का विरोध करते हुए मूल्यहीनता, हताशा, संत्रास , छटपटाहट को प्रकट करना । चन्दर को महानगर में जो अनुभव होता है - समसामायिक जीवन की विसंगतियाँ वह है आत्मीयता के दिखावे के भीतर छिपी हुई पराएपन की असलियत । यही भोगा हुआ यथार्थ है । इसमें समाज के प्रति अविश्वास उत्पन्न हो जाता है । सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों पर पुनर्विचार करने के लिए पाठक के सामने प्रश्न खड़े कर दिए गए हैं । इस कहानी में चन्दर की एक रास्ता

पाने की छटपटाहट मुखरित है ।

शीर्षक :

कहानी में शीर्षक का स्थान भी महत्वपूर्ण है । यह नाम प्रतीक के रूप में सामान्य अर्थ से उठकर विशेष अर्थ का द्योतक बन जाता है ।

खोई हुई दिशाएँ' एक प्रतीकात्मक शीर्षक है । आधुनिक संदर्भ में जीवन बहुत जटिल बन गया है । मनुष्य के सामने कोई निश्चित दिशा नहीं है । उसकी मंजिल कहाँ है, इसका पता उसे नहीं है । जिन मानवीय मूल्यों के भरोसे वह जीना चाहता है वे सब तिरोहित हो गए हैं । अनिश्चित दिशा में आगे बढ़ना मानव की नियति बन गई है । यही विचार शीर्षक में स्पष्ट हो जाते हैं ।

<u>संदर्भ ग्रंथसूची</u>

- हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-2005.
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली-2015.
- हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2006.
- हिंदी साहित्य की भूमिका, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2006.
- हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ. जयकिशन खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2006.
- प्रेमचंद का गोदान, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2008.
- प्रेमचंद का गोदान: विश्लेषण एवं समीक्षा, डॉ. धर्मवीर भारती, साहित्य संगम प्रकाशन, वाराणसी- 2005.
- गोदान, मुंशी प्रेमचंद, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2013.
- रागदरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2008.
- हिंदी कहानी संग्रह, संपादक- भीष्म साहनी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली- 1.
- हिंदी कहानी का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2018.
- हिंदी कहानी का इतिहास (vol- 1,2), गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2008.
- हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली- 2016.
- हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2010.